भूलोक-परिचय

(अर्थात् मिडिल क्लास भूगोल का संशोधित और
परिवर्धित संस्करण)

लेखक

रुद्रनारायण

अंसिस्टेन्ट मास्टर, गवर्नमेण्ट हाईस्कूल
प्रतापगढ़

संशोधक

रामेश्वर प्रसाद, बी० ए०

रजिस्ट्रार, प्रयाग महिला विद्यापीठ

प्रकाशक

रामनारायण लाल

बुकसेलर व पब्लिशर
प्रयाग

] १९३० [मूल्य १)

द्वितीयावृत्ति

—०—

त्रुटियों के होते हुये भी हमारे हिन्दी-भाषा के रसिकों ने ...
आशातीत अपनाया। मै चाहता था कि इसी सस्करण में ...
और इसमें बढ़ा घटा दिया जाय, परन्तु ग्राहकों की माँग ने ऐसे
करने का अवसर ही न दिया और २० हीं दिन के भीतर इसक
द्वितीयावृत्ति निकालनी पड़ी। आशा है कि अन्य सस्करण
बहुत कुछ सुधार कर दिया जाय, यद्यपि कुछ सुधार कर भ
दिया गया है।

प्रयाग
१५-७-१९१७

विनीत निवेद
रुद्र नाराय

पञ्चमावृत्ति

योरपीय महासमर की सन्धि से परिवर्तन हुए हैं, उनका पुस्तक में यथासम्भव संशोधन कर दिया गया है। एक बात और भी की गई है—योरप, अफ्रिका और उत्तरी अमेरिका के महाद्वीपों के देशों का विवरण भी विस्तृत रूप से आया है, और आस्ट्रेलिया के बाद निउजीलैण्ड के द्वीपों के भी वर्णन दिये जाने की आवश्यकता समझी गई।

आशा है कि इस नवीन परिवर्तन और काट छाँट से 'भूलोक-परिचय' की उपयोगिता और भी बढ़ जायगी।

प्रयाग
१५-१०-१९२२

निवेदक—
रुद्र नारायण

सप्तमावृत्ति

संशोधक का निवेदन

यों तो पुस्तक सर्वांग सुन्दर थी ही लेकिन जो कुछ छोटी मोटी त्रुटियाँ भी थीं उसे मैंने यथाशक्ति दूर करने की चेष्टा की है। यदि इससे पाठकों की असुविधायें दूर हुई तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूँगा।

सब से पहिली बात जो मुझे खटकी वह यह थी कि भूगोल की पुस्तक होते हुये भी इसमें देश तथा भौगोलिक अन्य विषयों के चित्र न थे। इसका होना अत्यन्त आवश्यक था और इसलिये इस आवृत्ति में इनका यथास्थान में समावेश कर दिया गया है।

दूसरा संशोधन यह है कि सन् १९२२ के बाद देश में जो राजनैतिक परिवर्त्तन हुये हैं उनका यथास्थान पर वर्णन है।

इस पुस्तक के अच्छाई का पूरा श्रेय मूल पुस्तक के लेखक श्रीरुद्रनारायण जी को है। मैंने जो कुछ भी किया है वह केवल कुछ काट छाँट है।

फटरा, प्रयाग
१५—१०—३०

रामेश्वर प्रसाद

विषयानुक्रमणिका

खगोल विद्या

विषय	पृष्ठ
१—संसार	१
२—सौर जगत्	२
३—भूग्रह	३
४—चन्द्रमा	४
५—पृथ्वी का आकार, परिमाण और गति	५
६—दिशाओं का ज्ञान, पैमाना, मानचित्र, अक्षांश और देशान्तररेखाएँ	११
७—दिन-रात और वर्ष	२३
८—ग्रहण	३६—४६
(१) चन्द्र ग्रहण	३६
(२) सूर्य्य ग्रहण	४२
(३) ग्रहण के कुछ चमत्कार	४३
९—ज्वार भाटा	४६

भूगोल विद्या

विषय	पृष्ठ
१—वायु मंडल	५३
२—मेघविद्या और हिमतुषारादि	६५—८०
शीत व ओस	६८
बादल	७०
वर्षण	७५
बर्फ या तुषार	७६
मेघ के चमत्कार	७८
इन्द्र धनुष	७९

विषय	पृष्ठ
३—भूगर्भ और भूतल	८१—६२
पृथ्वी के गर्भ में बड़ी गर्मी है	८४
ज्वालामुखी पर्वत	८५
गेसर	८६
पर्वत	८७
भूकम्पन	९०
खनिज पदार्थ	९१
४—समुद्र और जल के अंश	९७

भूज्ञान

१—प्रस्तावना	१००—१०६
महासागरों का विस्तार	१०५
महाद्वीपों का विस्तार	१०६
२—भूखंड और यूरेशिया	१०७

एशिया

(१) सीमा, लम्बाई, चौड़ाई और विस्तार	११०
(२) पर्वतमाला और भूप्रकृति	१११
(३) नदी और उसके बेसिन	११७
नदी के कार्य्य	११६
(४) एशिया के समुद्र उपकूलादि	१२१
३—जलवायु	१२८
ध्रुवों के पास सर्दी अधिक क्यों है ?	१३२
४—एशिया के उद्भिद्, जीवजन्तु और मनुष्य जाति	१४४
५—एशिया के देश समूह	१५३
(१) एशियाईरूस	१५६
साइबेरिया	१५६
रूसी-तुर्किस्तान	१६२

विषय	पृष्ठ
(२) चीन का प्रजातन्त्र राज्य	१६६
चीन (खास)	१६७
चीन में दूसरे देशों का अधिकार	१७५
मचूरिया	१७५
मगोलिया	१७६
तिब्बत	१७७
पूर्वी (चीनी) तुर्किस्तान	१७८
(३)—जापान साम्राज्य	१७६
कोरिया	१८२
४—एशियाई टर्की	१८४
एशिया माइनर (कोचक)	१८७
५—एशियाई टर्की मे वृटिश अधिकार	१८६
दक्षिणी मेसोपोटेमिया	१६०
वृटिश पैलस्टाइन	१६१
साइप्रस द्वीप	१६४
६—अरब	१६४
७—ईरान (फारिस)	१६८
८—अफगानिस्तान	२०२
६—लङ्का	२०४
१०—पूर्वी द्वीप समूह	२०८
द्वीप-समूह को तालिका	२११
११—इन्डो चीन	२१२
स्याम	२१२
कम्बोडिया	२१४
कोचीन	२१५

विषय	पृष्ठ
अनाम	२१५
टानकिन	२१६

भारतवर्ष

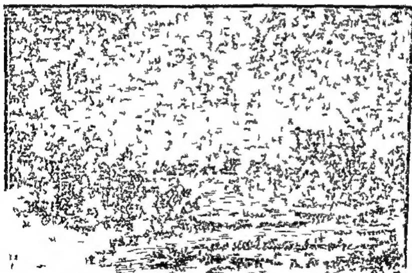
१—साधारण दृश्य	२१७
२—प्राकृतिक दशा	२२०
पहाड़	२२१
नदी	२२३
झीलें	२२८
खानें	२२९
३—वर्षा, जल-वायु और उपज	२२९
४—जनसंख्या निवासी, धर्म और भाषा	२३६
भारतवर्ष की भाषाओं की सूची	२४१
५—शासन-प्रणाली शिक्षा और सभ्यता	२४३
अङ्गरेज़ी भारत	२४८
६—रेल, तार, नहर और हवाईजहाज़	२५३
७—मद्रास	२५७
८—बम्बई	२६३
९—बृटिश बिलोचिस्तान	२६९
१०—पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त	२७०
११—पंजाब	२७३
१२—दिल्ली प्रान्त	२७८
१३—संयुक्त प्रान्त आगरा व अवध	२७९
१४—मध्यप्रदेश और बरार	२९५
१५—बिहार और उड़ीसा	२९८
१६—बङ्गाल	३०२

भूलोक परिचय

खगोल-विद्या

१—संसार

रात को जो चमकते हुए अगणित तारे देख पड़ते हैं, उनमें से
एक तारा एक सूर्य्य है। हम लोगों का सूर्य्य भी केवल एक
छोटा सा तारा है। ऐसे बहुत से तारे हैं जो सूर्य्य से बहुत बड़े हैं।
साधारण दृष्टि से हम लोगों को ६००० से अधिक तारे नहीं
दिखाई पड़ते, परन्तु दूरबीन से देखने पर कई करोड़ तारे दिखाई



नहीं मालूम कि और कितने तारे हैं, जो दूरबीन से
ते।

यह ब्रह्माण्ड अतिविशाल है, यह समझना चाहिये कि केवल जितना हम देखते हैं अथवा देख सकते हैं उसी पर ससार की सीमा खतम नहीं है, हम लोगो के सूर्य्य के अतिरिक्त जो तारा पृथ्वी से सब से निकट है उससे हमारे पास तक प्रकाश आने मे ४½ वर्ष लगते हैं यह भी मालूम होना चाहिये कि प्रकाश एक सिकड मे १,८०,००० मील चलता है। फिर वह तारा कितनी दूरी पर है ? हिसाब लगा कर समझ लो। बहुत से तारे इतनी दूरी पर हैं कि उनसे प्रकाश आने में लाखों वर्ष लग जाते हैं। कुछ तारे तो इतनी दूरी पर हैं कि उनका प्रकाश जब से पृथ्वी उत्पन्न हुई है आज तक चल रहा है और अभी यहां तक पहुँचा भी नहीं। यही नहीं कि यह तारे सब सूर्य्य ही हैं किन्तु इनमे सूर्य्यों के भी सूर्य्य और उनके भी सूर्य्य हैं। अभिप्राय यह है कि ससार अनन्त है, उनका पता केवल ईश्वर ही को है, परन्तु मनुष्य को उसने ऐसा बनाया है कि ज्यों ज्यों वह अधिक ज्ञानवान् होता जाता है त्यो त्यों उसके सामने ससार की विचित्रतायें प्रकट होती जाती हैं। इसलिये मानव सन्तान का मुख्य कर्त्तव्य है कि वह संसार के जानने का प्रयत्न करे।

२—सौर जगत्

इन असख्य तारों मे—हम लोगों के तारे को—अर्थात् सूर्य्य को घेर कर बुध, शुक्र, पृथ्वी, मङ्गल, बृहस्पति, शनैश्चर, युरेनस और नेपच्यून यह आठ ग्रह तथा बहुत से छोटे छोटे उपग्रह अपने निर्दिष्ट पथ पर भ्रमण कर रहे हैं। इनमें से जो बड़े बड़े ग्रह हैं उनके भी कई उपग्रह उनकी परिक्रमा कर रहे हैं। इनके अतिरिक्त सैकड़ों धूमकेतु तथा उल्कापुज सूर्य्य के चारो ओर घूमते रहते हैं। इन ग्रह, उपग्रह, धूमकेतु तथा उल्कापुंज से वेष्टित सूर्य्य द्वारा

ाण्ड का जो भाग अधिकृत है उतने हिस्से को "सौर जगत्"
ते हैं। सूर्य इनके बीच में है। ग्रहों में बृहस्पति सब से बड़ा
था नेपच्यून सब से दूर है। सूर्य से नेपच्यून की दूरी पृथ्वी
दूरी से तीस गुनी है।

मध्याकर्षण* के नियमानुसार ग्रहादि निर्दिष्ट पथ पर भ्रमण
रहे हैं। उनकी गति सर्वतोभाव से इस नियम के अधीन
परन्तु सौर जगत् की बनावट में कुछ विचित्रता है जिससे
ध्याकर्षण" के नियम से कुछ सम्बन्ध नहीं है। यह ग्रह सब
काश में इधर उधर छितरे बितरे नहीं हैं किन्तु उनका पथ
एक ही समतल पर है। हाँ छोटे छोटे ग्रहों के पथ में कुछ
भाव अवश्य है।

सूर्य अपने अक्ष पर पश्चिम से पूर्व की ओर घूमता है और
प्रकार समग्र ग्रह भी पश्चिम से पूर्व, सूर्य्य की परिक्रमा
रहे हैं। ग्रहगण भी अपनी अपनी धुरी पर उसी प्रकार पश्चिम
ूर्व की ओर चक्कर लगा रहे हैं। परन्तु यूरेनस और नेपच्यून
नहीं करते। ग्रहों के समान उपग्रह भी उसी समतल पर
स्थित हैं और उसी प्रकार उसी दिशा में भ्रमण कर रहे हैं।
त युरेनस के उपग्रह इस नियम से बहिर्भूत हैं।

३—भूग्रह

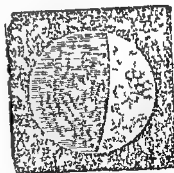
जिस प्रकार बुध, मङ्गल, बृहस्पति इत्यादि सूर्य्य की परिक्रमा
ी हैं, उसी प्रकार भूमण्डल भी—सूर्य के चारों ओर—पश्चिम
ूर्व की ओर एक निर्दिष्ट समय में भ्रमण कर आता है। पृथ्वी

* जिस शक्ति से सारा ब्रह्माण्ड स्थिर है और जिसके न होने पर यदि
ऊपर उछलते तो ऊपर ही चले जाते उस शक्ति का न्यूटन ने पता लगाया
कोई कोई इसे "आकर्षणशक्ति" भी कहते हैं।

की अपेक्षा सूर्य्य १५ लाख गुणा और यह कम से कम ६ करोड़ १० लाख और अधिक से अधिक ६ करोड ३० लाख मील दूरी पर है। सूर्य से पृथ्वी तक प्रकाश के आने में ८ मिनट लग जाते हैं। भूमडल में चन्द्रमा, और कई छोटे छोटे अन्य उपग्रह भी शामिल हैं। भूमडल का विस्तृत विवरण आगे दिया जायगा।

४—चन्द्रमा

पृथ्वी की भाँति चन्द्रमा भी एक गोला है। यह पृथ्वी से बहुत छोटा है। इसका व्यास २१७२ मील है, अर्थात् पृथ्वी के व्यास के चौथाई के बराबर। इसकी दूरी हमारी पृथ्वी से २,४०,००० मील है। यद्यपि देखने में चन्द्रमा सूर्य के समान ही प्रतीत होता है। परन्तु चन्द्रमा सूर्य के निकट उसी प्रकार है जैसे गौरीशकर शिखर के निकट एक सेंटीमीटर ऊँचा पत्थर का टुकडा। दोनों के बराबर दिखाई देने का कारण यह है कि पृथ्वी से सूर्य बहुत ही दूर है परन्तु चन्द्रमा निकट है गणित के जानने वाले भली प्रकार जानते हैं कि दूर की चीजें छोटी दिखाई देती है। जिस प्रकार पृथ्वी का गोला सूर्य के चारो ओर घूमता है उसी प्रकार चन्द्रमा भी पृथ्वी की परिक्रमा करता है। तात्पर्य यह कि चन्द्रमा भी भूमडल में होने के कारण सूर्य्य के चारो ओर घूम आता है। यदि पृथ्वी अचल होती तो चन्द्रमा को अपने एक भ्रमण मे २७ दिन ८ घटे लगते परन्तु पृथ्वी भी भ्रमण किया करती है इसलिये चन्द्रमा को एक परिक्रमा में २९½ दिन के लग भग लग जाते हैं।



चन्द्रकक्षा* और क्रांतिमडल दोनों † एक ही धरातल में नहीं हैं किन्तु दोनो धरातलो मे ५ अश का कोण बनता है। इसी तिरछेपन के कारण चन्द्र-कक्षा का अर्द्धभाग क्रान्ति मडल में उत्तर की ओर रहता है और आधा दक्षिण को ओर। इसलिये वह एक परिक्रमा मे क्रान्ति-मडल को दो बार काटता है।

चन्द्रमा गेंद के समान गोल है परन्तु हमको सदा गोल नहीं दिखाई देता, हां महीने भर मे एक ही बार पूरा दिखाई पड़ता है और वह भी सदा एक ही अर्द्धांश। इसका कारण आगे चल कर बताया जायगा।

चन्द्रमा के इसी भ्रमण काल पर हिन्दुओ के चान्द्र मास की गणना की जाती है और मुसलमानो के वर्ष का भी हिसाब इसी पर लगाया जाता है अत चान्द्र वर्ष ३५४ दिन का होता है।

५—पृथ्वी का आकार, परिमाण और गति

पृथ्वी का आकार प्राय गेंद सा है जिसके दोनों सिरे चिपटे हैं और मध्य भाग फूला हुआ है। इसका प्रमाण यह है कि जब पृथ्वी सूर्य और चन्द्रमा के बीच में आजाती है तो इसकी छाया जो पूर्ण चन्द्रमा पर पड़ती है गोलाकार देखने में आती है।

पृथ्वी के गोलाकार होने के कई प्रमाण हैं, जैसे—

१—समुद्र के किनारे पर खड़े हों अथवा जहाज पर चढ़े

---

* जिस मार्ग से चन्द्रमा भ्रमण करता है।

† जिस मार्ग में होकर पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है।

हों तो समुद्र के धरातल का थोड़ा सा भाग दिखाई देता है और जहाँ तक दृष्टि जाती है उस भाग की सीमा एक वृत्त से परिमित होती है। इसी प्रकार ज्यों ज्यों ऊँचाई पर जाते हैं त्यों त्यों पृथ्वी तल का अधिक भाग दिखाई देता है अर्थात् यह वृत्त बढ़ता जाता है। अतः ऐसा आकार गोले के अतिरिक्त किसी दूसरी आकृति का नहीं हो सकता।



२—स्थल पर तो पेड़, पहाड़ और टीले इत्यादि पृथ्वी के धरातल को नहीं देखने देते, परन्तु समुद्र में तो यह बात है नहीं, वहाँ की धरातल तो समतल होती है। यदि पृथ्वी चपटी है तो दूर तक दिखाई देनी चाहिये परन्तु नहीं, आते हुए। जहाज़ का पहले ऊपरी भाग फिर ज्यों ज्यों वह निकट आता है त्यों त्यों निचला भाग भी दिखाई देने लगता है।

३—किसी स्थान से पश्चिम या पूर्व को चलें और दाहिनी या बाईं ओर बिना मुड़े हुए सीधे चले जावें तो लौट कर उसी स्थान पर आ जाते हैं जहाँ से चले थे। यदि पृथ्वी चपटी अथवा सीधी होती तो यह असम्भव था। मेजलन नामक स्पेनिश महाशय ने सन् १५१९ ई० में ऐसा भ्रमण करके इसको सिद्ध कर दिया है।

४—कोई तारा यदि किसी स्थान पर सिर की सीध में हो तो उस स्थान के उत्तर अथवा दक्षिण की ओर दूसरे स्थानों पर सिर की सीध में नहीं होता। चूँकि मनुष्य सीधा खड़ा रहता है इसलिये यदि पृथ्वी चपटी होती तो तारे को सिर की सीध ही में

होना चाहिये था, परन्तु जब ऐसा नहीं होता तो पृथ्वी भी चपटी नहीं है—अर्थात् गोल है।

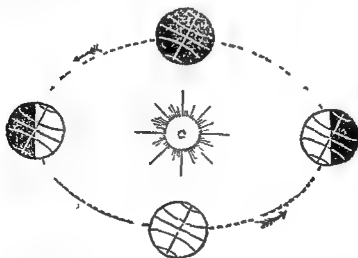
५—लेवलिंग करने वालों को मालूम होता है कि यदि वह नहर अथवा रेलवे लाइन की पैमाइश बराबर करते जाँय तो फी मील ८ इञ्च को ऊँचाई पड़ती जाती है अर्थात् एक मील लम्बाई के बीच—दोनों सिरो के बीच में—पृथ्वी ८ इञ्च उभरी हुई मालूम होती है। समुद्र मे जल के धरातल से बराबर बराबर ऊँचाई पर लकड़ियों के गाडने से भी बीच की लकड़ियाँ मिलान करने पर ऊँची दिखाई पड़ती हैं।

वास्तव में पृथ्वी गेंद के समान गोल है। चूँकि अभी हमने बताया है कि मील पीछे ८ इञ्च की ऊँचाई पड़ती है अत मापविद्या की रीति से पृथ्वी का व्यास $\frac{१७६० \times ३ \times १२}{८}$ मील =७९२० मील या ठीक ठीक ७९२६ मील है।

वास्तव में पृथ्वी के व्यास की लम्बाई इतनी ही है भी। पृथ्वी की परिधि २४, ९०० मील है। हम यहाँ यह भी चाहते थे कि ताराओं अथवा ग्रहों की परिधि निकालने की रीति लिख दें परन्तु विषय गूढ़ हो जायगा जिसको हमारे स्कूल के लड़के कठिनता से समझ सकेंगे। क्षेत्रफल लगभग १९,७७,२८४७० वर्गमील है जिसमें से ¾ अंश पर तो जल है और शेष ¼ से भी कुछ कम अंश स्थलीय है।

पृष्ठ ३ पर भूग्रह के वर्णन में हमने बताया है कि पृथ्वी सूर्य्य की परिक्रमा करती है, यह भ्रमण पथ ठीक वृत्ताकार न होकर वृत्ताभास है जिसको अङ्गरेजी में Ellipse कहते हैं

केपलार साहिब ने सब से पहिले सिद्ध किया है कि यह पथ वृत्ताभास क्षेत्राकार है। पथ का आकार इस प्रकार का होने से सूर्य्य साल भर पृथ्वी से बराबर दूर पर नहीं रहता। कभी कुछ ज़्यादा दूरी पर हो जाता है और धीरे धीरे चलता हुआ दिखाई देता है और कभी निकट आ जाता है और जल्द जल्द चलता हुआ दिखाई देता है। जाड़े के दिनों (दक्षिणायन) में सूर्य पृथ्वी के निकट आ जाता है और शीघ्र शीघ्र चलता हुआ दिखाई देता है, परन्तु गर्मियों (उत्तरायण) में दूर रहता है और शनै शनै चलता हुआ मालूम पड़ता है। इसीलिये उत्तरायण में सूर्य १८७ दिन और दक्षिणायन में केवल १७८ दिन रहता है।



कुछ पुराने विद्वानों का मत था कि पृथ्वी नहीं चलती, किन्तु सूर्य्य ही पृथ्वी की परिक्रमा करता है परन्तु आधुनिक सिद्धान्त यह है कि सूर्य्य की परिक्रमा पृथ्वी करती है और यही सिद्धान्त भारतीय विज्ञ ज्योतिषियों का भी रहा है। सूर्य्य सिद्धान्त के रचयिता ने आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व यह सिद्ध कर दिया था कि

पृथ्वी ही सूर्य के गिर्द घूमती है। यहाँ पर कल्पना को जगा कर सोचा जाय और मान लिया जाय कि ग्रहगण निर्दिष्ट समय में सूर्य्य को बीच में रख कर घूम रहे हैं तथा सूर्य्य उन सब को साथ लिये हुए पृथ्वी को बीच में रख कर एक नक्षत्र चक्र में घूम रहा है—तथा सूर्य्य पृथ्वी के पूर्व की ओर से प्रदक्षिणा कर रहा है—यह मानने से जो नतीजा निकलता है—पृथ्वी सूर्य्य को पूर्व की ओर से परिक्रमा कर रही है, कहने से भी वही फल होता है। अर्थात् दूसरे ग्रह जिस प्रकार सूर्य्य की प्रदक्षिणा करते हैं उसी प्रकार पृथ्वी भी सूर्य्य की परिक्रमा करती है। अर्थात् सूर्य्य स्थिर है पृथ्वी भी एक ग्रह है। इन दोनों सिद्धान्तों के कारण कोई हानि नहीं होती, किन्तु इनसे समान ही फल निकलता है।

परन्तु वास्तव में पृथ्वी ही सूर्य्य की परिक्रमा करती है। इसी भ्रमण के कारण अर्थात् उत्तरायण और दक्षिणायण ही के होने से ऋतु परिवर्तन और दिन रात की घटती बढ़ती होती है। नीचे इसका सबूत दिया जाता है कि पृथ्वी सूर्य्य की परिक्रमा करती है—

१—यदि एक ऐसा छोटा सा हिंडोला बनावें कि उसके खम्मे एक पटरी में जुड़े हों और धुरी भी उसमें टिकी हो, अब हिंडोले की रस्सी को पेंग दे दें तो वह बराबर हिलती रहेगी और यदि पटरी को चलाने लगें या उसकी दिशा बदल भी दें तो भी रस्सी पटरी की उसी दिशा पर ज्यों की त्यों घूमा करेगी।

२—दूसरी परीक्षा यह की गई है कि एक ऊँचे मकान की छत से एक भारी लोहे का गोला कोई २०० फुट लम्बे तार से

लटकाया गया, इस गोले के नीचे एक मेज़ रख दी गई। ज
गोला स्थिर था तो वह ठीक मेज़ के केन्द्र के ऊपर था। मेज
धरातल पर कुछ रेखाएँ मेज़ के केन्द्र पर एक दूसरी को काट
हुई खींच दीं। गोले को एक ओर ले जाकर धीरे से छोड़ दिय
गोला हिलने लगा। पहले गोले को गति की सीध मे मेज़ पर चि
कर दिया गया। थोड़ी देर पीछे गोला दूसरी ओर हिल
लगा।

पहिली परीक्षा से फल निकला था कि हिलने वाला गोल
अपनी गति की दिशा नहीं बदलता, परन्तु दूसरी परीक्षा में गो
की दिशा और मेज की दिशा में अन्तर पड़ गया। इस कारण
यह मानना पड़ा कि मेज को दिशा बदल गई और उसके सङ्ग स
घर की दिशा पलट गई और घर की दिशा पलटने पर तभी नह
मालूम पड़ती है जब सारी पृथ्वी फिरती हो, अन्यथा नहीं।

इसके अतिरिक्त एक और भी गति पृथ्वी मे है जिसक
अक्ष-भ्रमण कहते हैं।। अक्ष पर भ्रमण करने के कारण रात दि
होता है।

पृथ्वी सूर्य के गिर्द ३६५ दिन ५ घन्टे ४६ मिनट मे अपन
चक्कर पूरा करती है और अपने अक्ष पर २३ घन्टे ५६ मिन
में घूम आती है, परन्तु वार्षिक गति के कारण उसे २४ घन
लग जाते हैं जैसे कि चन्द्रमा को २७½ दिन के स्थान पर २६
दिन लग जाते हैं। इसी प्रकार पृथ्वी ३६५ दिन में ३६६ चक
अपने अक्ष पर लगा जाती है।

इन दोनों भाँति की गति को समझाने के लिये घूमते हुए लट्
अथवा भँवरे का उदाहरण बहुत उपयुक्त है जैसे लट्टू घूमता हुआ

एक वृत्त पर चक्कर लगाता है उसी प्रकार पृथ्वी अपने अक्ष पर २४ घन्टे में घूमती हुई ३६५¼ दिन में सूर्य की परिक्रमा भी कर लेती है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—पृथ्वी की परिधि कितने मील है और यह कैसे जाना गया ?

२—पृथ्वी का व्यास कितना है ?

३—पृथ्वी और सूर्य्य तथा चन्द्रमा का परस्पर मिलान करो।

४—ऋतुओं में परिवर्तन कैसे होता है ?

५—दिन रात होने का कारण क्या है ?

६—पृथ्वी अपने अक्ष पर ठीक ठीक कितनी देर में घूमती है ? फिर रात दिन २४ घन्टे का क्यों होता है ?

७—सूर्य्य उत्तरायण और दक्षिणायण में कितने कितने दिन दिखाई देता है, दोनों अयनों में अन्तर क्या है और यह क्यों ?

८—इसका प्रमाण दो कि पृथ्वी गोल है।

९—इसको कैसे समझा सकते हो कि पृथ्वी ही चलती है सूर्य्य नहीं ?

१०—जब पृथ्वी चलती है तो हमारे घर और देश की दिशा क्यों नहीं बदल जाती है ?

११—क्रान्तिमण्डल अक्ष, और सौर जगत् किसे कहते हैं ?

१२—चान्द्र वर्ष और सौरवर्ष में क्या अन्तर है ?

६—दिशाओं का ज्ञान, पैमाना, मानचित्र, अक्षांश और देशान्तर रेखाएँ

जब कोई मनुष्य मकान बनाना चाहता है तो सब से पहले वह यह कार्य करता है कि, कागज पर उसका (भावी मकान का)

चित्र बना लेता है। इस चित्र के देखने से यह भी पता चल जात
है कि मकान किस आकर प्रकार का होगा, उसमें कितने दरवाज़े
और कितनी खिड़कियाँ होंगी। तात्पर्य्य यह कि एक अजनबी
व्यक्ति भी उस चित्र को देख कर—सैकड़ों मील की दूरी से—
चित्र की वस्तु को समझ लेता है।

चित्र दो प्रकार के होते हैं। एक को खाका कहते हैं और
दूसरे को प्रतिबिम्ब। खाके से हम वस्तु की लम्बाई चौड़ाई आदि
नाप सकते हैं। क्योंकि खाका पैमाने के हिसाब से बनाया
जाता है।

इस में कोई सन्देह नहीं कि किसी मकान अथवा जिले
या देश का पूरा पूरा चित्र उसी आकार और परिमाण
में नहीं बना सकते, क्योंकि फिर तो उसी वस्तु के बराबर
कागज लेने की आवश्यकता पड़ेगी जिसको परत करके रखने
में भी बड़ी असुविधा होगी। ऐसी दशा में जिस वस्तु अथवा
स्थान का खाका या चित्र खींचना होता है उससे छोटे आकार में
उसका चित्र अथवा खाका बनाया जाता है। भूगोल में प्रत्येक
स्थान पर असली वस्तु से उसका चित्र अथवा खाका छोटा
होता है। परन्तु अन्य विषयों में कहीं कहीं चित्र वा खाका
वास्तविक वस्तु से बड़ा बनाया जाता है। जैसे मलेरिया के
कीड़ों के चित्र।

अतः पैमाना वह हिसाब है जिसके अनुसार किसी स्थान या
वस्तु का चित्र बनाया जाय। जैसे हिमालय पहाड़ की सब से
ऊँची चोटी २९००० फीट ऊँची है। इसलिये यदि कागज़ में
इस शिखर की ऊँचाई २९ इञ्च दिखाई जाय तो इसका यह
अर्थ हुआ कि २९ इञ्च=२९,००० फीट अर्थात् १ इञ्च बराबर

है १०,००० फीट के। इसलिये १ इञ्च १०,००० फीट के लिये पैमाना हुआ।

रहा चित्र का विषय—सो चित्र किसी वस्तु का प्रतिविम्ब होता है। जैसे मूर्तियां असली चीज की नकल हैं, उसी प्रकार किसी वस्तु का प्रतिविम्ब जो काग़ज पर लिया जाता है अथवा किसी धरातल पर बनाया जाता है वह उसका चित्र है। चित्र को देख कर हम वस्तु के प्रकार और रूप का ज्ञान कर सकते हैं।

जहाँ नक़शा बनाने मे पैमाने की बड़ी आवश्यकता है, वहाँ नकशे में किसी स्थान की स्थिति स्थिर करना भी कुछ कम कठिन कार्य नहीं है।

आज हमने अपने लड़के से कह दिया कि सोमेश्वरनाथ महादेव जो प्रयाग से ५ मील की दूरी पर हैं, तुम जाकर उनका दर्शन कर आओ। अब वह बेचारा प्रयाग से किसी ओर ५ मील चल कर सोमेश्वर का स्थान तो पाने से रहा? हाँ यदि वह कुछ अधिक बुद्धिमान् है तो ५ मील के अर्द्ध व्यास पर चल कर एक वृत्त बनायगा। उस वृत्त में अर्थात् $\frac{५ \times ४४}{७} = \frac{२२०}{७}$ = ३१ ४२ मील के चक्कर में कहीं न कहीं सोमेश्वर का स्थान मिल ही जायगा। परन्तु याद रक्खो जा स्थान केवल ५ मील की दूरी पर है, दिशा के न बताने से उसके लिये ३१ ४२+५ अर्थात् ३६ या ३७ मील का सफ़र हो सकता है। अतएव किसी स्थान के बताने के लिये "दिशा" का ज्ञान आवश्यकीय है। जैसे भारद्वाज के आश्रम से सोमेश्वर ५ मील पूर्व ओर दक्षिण के कोण पर हैं।

विस्तृत वसुन्धरा के ज्ञान के लिये उसके नक्शे का जानना अति आवश्यक है, अत नक्शा कैसे बनाया जाता है और नक्शा बनाने के कौन कौन से मुख्य आधार हैं ? इनका ज्ञान आवश्यक प्रतीत होता है।

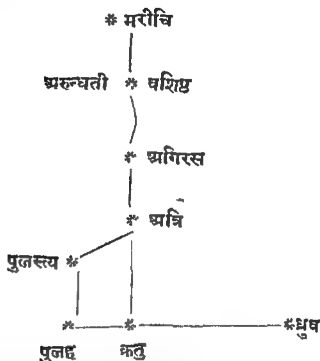
मुख्य दिशाएँ चार हैं। उत्तर, पूर्व, दक्षिण और पश्चिम। परन्तु इनके अतिरिक्त ४ दिशायें इनकी मध्यवर्त्तिनी हैं, नैर्ऋत्य आग्नेय, वायव्य और ईशान। बहुत लोग आवश्यकता पड़ने पर इनके भी विभाग कर लेते हैं। ऊपर (ऊर्ध्व) और नीचे (अध) यह दो दिशाएँ और भी हैं परन्तु इन १० दिशाओं की आवश्यकता स्थूल पिंड में पडती है और ८ दिशाओं से धरातल मे काम लिया जाता है।

दिशाओं के पहिचानने के कई उपाय हैं जैसे जब सूर्य उदय हो उस समय यदि कोई मनुष्य उसकी ओर मुँह करके खड़ा हो तो सामने पूर्व, पीठ पीछे पश्चिम और दाहिने हाथ दक्षिण और बायें हाथ उत्तर होगा। इसी प्रकार यदि सध्या समय—जब सूर्य्य अस्त हो रहा हो—उसकी ओर मुँह करके निरीक्षण करें तो सामने पश्चिम, पीठ की ओर पूर्व और दाहिने हाथ उत्तर तथा बायें हाथ दक्षिण होगा।

इसी प्रकार रात के समय यदि बादल न हों, तो भी दिशाओं का ज्ञान हो सकता है। हिन्दू सन्तान से यह बात अविदित नहीं है कि 'ध्रुव' ईश्वर के पक्के भक्त थे। उन्हीं के नाम से आकाश में एक स्थिर तारा भी प्रसिद्ध है।

रात के समय जितने तारे दिखाई देते हैं वह सब के सब अस्थिर हैं अर्थात् प्रतिक्षण अपना स्थान बदलते जाते हैं। परन्तु

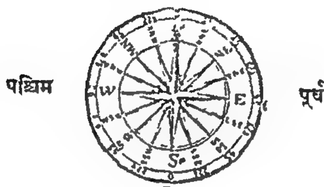
एक तारा ऐसा है जो कभी अपने स्थान से एक तिल भी नहीं खिसकता। इसका नाम ध्रुव है।



ध्रुवतारा के ढूँढने की यह रीति है कि जिस रात को आकाश निर्मल हो उत्तर की ओर देखने मे तारो का वह समूह दिखाई देगा जिसका रूप ऊपर दिखाया गया है। इस समूह में ७ बड़े बड़े तारे हैं जिनके नाम चित्र मे उनके पास ही लिख दिये गये हैं। इन तारों में चार तो एक चौखटा सा बनाते हैं और बाकी तीन तारे इस चौखटे की पूँछ की भांति लगे हैं।

यह तारे गरमी की ऋतु मे सध्या को दिखाई देते हैं और कभी रात के पिछले प्रहर को। तात्पर्य यह कि ध्रुव के ज्ञात करने पर भी दिशाओं का ज्ञान हो जाता है। जिधर ध्रुव तारा है वह

उत्तर है और शेष दिशायें स्वयम् ज्ञात हो जायँगी। इनके अतिरि
एक ध्रुव-दर्शक-यन्त्र भी है जिसका चित्र नीचे दिया जाता है।



इसका एक यह विचित्र गुण है कि यदि इसे समतल ध
तल पर रख दिया जाय तो इसकी सुई का सिरा सदैव—उ
की ओर—ध्रुव की तरफ रहेगा। अङ्गरेजी में इसे कम्पास कहते
ध्रुव तारा और (ध्रुव-दर्शक-यत्र इतने आवश्यकीय हैं कि इ
द्वारा समुद्र में जहाज चलाना, किसी विकट स्थान की स्थि
बताना अब सुगम हो गया है। इनके आविष्कृत होने के
समुद्र में जहाज चलाना अथवा किसी जगह का पता लगा
बड़ा ही कठिन कार्य था)

हमारे इतने कथन से तुम समझ गए होगे कि दिशाओं
ज्ञान कितना आवश्यकीय है। अब इनके चमत्कार और प्रये
का भी हाल जानना आवश्यक है।

तुम पहले ही पढ़ चुके हो कि पृथ्वी जिस पर हम रहते हैं नार
के समान गोल है। इसका चित्र बनाना कठिन है। ग्लोब द्वा

इसकी प्रतिमूर्ति तो दिखाई जा सकती है परन्तु पुस्तक में इसका चित्र लगाना कठिन ही नहीं असम्भव सा कार्य्य है तथापि विद्वानों ने युक्ति निकाल ही ली है और उससे काम भी चल ही जाता है। (देखो पृथ्वी का नक्शा)।

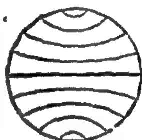
पृथ्वी के गोले का व्यास ८००० मील के निकट है और परिधि २५००० मील। अब समझ सकते हो कि इसका क्षेत्रफल कितना है? मनुष्य को इसके धरातल से काम पड़ता है, सब स्थानों में आना जाना होता है। इस कारण प्रत्येक स्थान का ठिकाना नियत करना आवश्यकीय है। जब एक कागज़ के विन्दु अथवा ब्लैकबोर्ड के एक चिन्ह का स्थान निर्धारित करने के लिये दो बातों का बताना आवश्यक होता कि यह बाएँ किनारे से इतनी दूर है और ऊपर या नीचे के किनारे से इतने अन्तर पर है, फिर पृथ्वी के गोले पर किसी स्थान का ठौर बताने के लिये प्रकृति रूप से केवल दोनों ध्रुवों के दो विन्दु हैं।

अब इन नियत स्थानों से हम आगे अपना काम चलाते हैं— दोनों ध्रुवों से बराबर अन्तर पर—पृथ्वी के मध्य—से कल्पित रेखा खिंची हुई मानी गई है, उसे विपुवत् वा विशव-रेखा कहते हैं।

इसके समानान्तर जितनी रेखाएँ उत्तर अथवा दक्षिण खींची जाती हैं उनको अक्षांश, अथवा समानान्तरवृत्त-रेखाएँ कहते हैं।

इन रेखाओं में विपुवत् रेखा का वृत्त सब से बड़ा है और अन्य रेखाओं का वृत्त ज्यों ज्यों वह ध्रुवों के निकट होती जाती है अथवा विपुवत् रेखा से दूर होती जाती है छोटा होता जाता है।

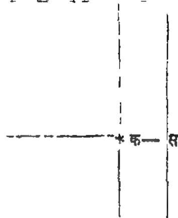
विपुवत् रेखा से उत्तर-दक्षिण की ओर जो दूरी किसी स्थ
की होती है उसको उस स्थान का अक्षांश कहते हैं। यह दू
उत्तर और दक्षिण दोनो ओर होती है, इस कारण विपुवत् रे
से उत्तर की ओर उत्तरी अक्षाश और दक्षिण की ओर दक्षि
अक्षाश कहलाते हैं।



नाप की सुगमता के लिये विपुवत् रेखा से उत्तरी ध्रुव तक जितनी दूरी है उसके ९० तुल्य भाग करके विपुवत् रेखा के समानान्तर वृत्त खींच देते हैं। इसी प्रकार विपुवत् रेखा से दक्षिण की ओर दक्षिण ध्रुव तक ९० ही तुल्य भा
करके वृत्त खींचते हैं।

तात्पर्य्य यह है कि समानान्तरवृत्त पृथ्वी के धरातल
उन कोणों को प्रकट करते हैं जो पृथ्वी के केन्द्र पर बनते है
पृथ्वी के धरातल पर का एक अंश ६९ मील के निकट हो
है। यदि एक स्थान दूसरे स्थान से ६९ मील उत्तर या द
दक्षिण हो तो इन दोनों के अक्षांश में एक अंश का अन्त
होगा।

स्थान निर्धारित करने के एक साधन का हाल तो हम
समानान्तर वृत्तों और विपुवत् रेखा तथा अक्षांश में बता दि
अब दूसरा साधन और है।



जैसे मान लो कि पृथ्वी पर के किसी धरातल का यह चित्र है। उसके क स्थान की स्थिति बताना है। अक्षांश के बयान में तो बताया गया कि उत्तर अथवा दक्षिण की म ओर चलो। इसी प्रकार इस नक्शे में मान लो कि क स्थान नीचे के भुज से ३/४ इञ्च ऊपर है। अब ऊपर ३/४ इञ्च की ऊँचाई पर म स रेखा खींच दी, बस इसमें क स्थान अवश्य है। पर कहाँ है किस विन्दु पर ? यह बताना कठिन है। इसके लिये दाहिने या बाएँ से भी दूरी बताना आवश्यकीय है। अत. मान लो कि क विन्दु दाहिनी ओर से ३/४ इञ्च पर है अत पूर्वी रेखा से ३/४ इञ्च के अन्तर पर य ल रेखा खींच दी गई। अत जहाँ य ल और म स रेखाएँ एक दूसरे को काटती हैं वही क विन्दु है।

विपुवत् रेखा एवम् अक्षांश रेखा द्वारा हम किसी स्थान के सम्बन्ध में इतना बता सकते हैं कि वह ध्रुवों से अथवा विपुवत् रेखा से किधर और कितनी दूरी पर है। परन्तु चित्र से जैसे क स्थान को निर्धारित करने में कठिनता पड़ी उसी प्रकार पृथ्वी के किसी भी स्थान के लिये सम्भव है। अत जिस प्रकार विपुवत् रेखा की हमने कल्पना कर ली है उसी प्रकार एक ऐसी रेखा की भी आवश्यकता है जो दोनो ध्रुवों में से होकर आर पार निकल जाय—अथवा विपुवत् रेखा के प्रतिकूल हो।

विपुवत् रेखा को शून्य स्थान मान कर जिस प्रकार दक्षिण १, २ मान कर डिग्री की गणना करते हैं उसी प्रकार पूर्व पश्चिम निर्दिष्ट करने की रेखा कहाँ है ? भिन्न भिन्न देश के पण्डितों ने इस उद्देश के साधनार्थ भिन्न भिन्न रेखा मान रक्खी हैं। अङ्गरेजों ने ग्रीनिच नामक स्थान को मध्यरेखा मान रक्खा है। यहीं से उन्होंने उसकी गणना निश्चित की है * ।

विपुवत् रेखा जिस प्रकार पृथ्वी को उत्तर दक्षिण के दो समान भागों में विभक्त करती है, उसी प्रकार यह वृत्त भी पृथ्वी को पूर्व पश्चिम से दो समान भागों में बाँटता है।

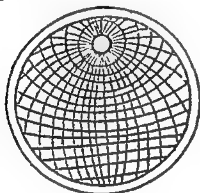
सम्पूर्ण विपुवत् रेखा के ३६० बराबर भाग कर डालो। इन भाग-विन्दुओं को वृत्तो द्वारा दोनों ध्रुवों तक मिला दो। यह वृत्त द्राघिमारेखा अथवा देशान्तर रेखा कहलाती है। इस प्रकार ग्रीनिच से होती हुई जो रेखा ध्रुवों के आर पार तक वृत्त बनाती है वह मध्यगत रेखा है और उसके पूर्व १८० रेखाएँ और पश्चिम भी १८० रेखाएँ हैं।



* भारतवर्ष के ज्योतिषियों ने उज्जैन को मध्य रेखा मान रक्खा था। सवाई जयसिंह ने उसी आधार पर बनारस, दिल्ली और जयपुर में वेधशालाएँ स्थापित की थीं। यद्यपि यह वेधशालाएँ अब भग्नावस्था में हैं परन्तु हैं वह बड़ी महत्व की। उनके द्वारा जो प्रतिफल निकलता है वह आजकल के सिद्धान्त से नितान्त तुल्य है।

इन रेखाओं द्वारा स्थानों का निश्चय हो जाता है। किसी गाँव के, किसी देश के नक्शे को देखो उसमें चारों ओर से रेखायें खिंची हुई दिखाई देती हैं। उनको देख कर जान सकते हो कि यह स्थान पृथ्वी के किस भाग में है। उसका क्षेत्रफल अथवा लम्बाई चौड़ाई क्या है।

पृथ्वी पर खिंची हुई रेखाओं का अनुमान



अब यहाँ एक प्रश्न हो सकता है कि स्थल भाग पर तो हम नदी, पहाड़ आदि के द्वारा निश्चय कर सकते हैं परन्तु अगम समुद्र में जहाँ चारों ओर जल ही जल दिखाई देता है कौन सी सीमा या चिन्ह निर्धारित करें—भला कहीं पानी में भी लकीर हो सकती है? यद्यपि हमने इसके आरम्भ ही में लिखा है कि अक्षांश और देशान्तर रेखाओं के ज्ञात हो जाने से जहाज़रानी में बड़ी सुविधा हो गई। परन्तु वह सुविधा यह है कि पहले जहाँ जहाजों को स्थल के पास पास से ले जाना होता था वहाँ अब बीच समुद्र में—घोर अन्धकार में—चौबीस घण्टे ले जा

हैं। क्योंकि इनके द्वारा और कम्पास की मदद से सब ठीक हो जाता है। इसका कुछ विवरण दिन रात के बयान में आएगा।

अभ्यासार्थ प्रश्न

(१) पैमाना किसे कहते हैं ?

(२) पैमाना से क्या लाभ है ?

(३) मुख्य दिशाएँ कितनी हैं ?

(४) दिशाओं के बोध से क्या लाभ है ?

(५) नक्शा बनाने में किन किन चीजों की आवश्यकता है ?

(६) ध्रुव कितने हैं, ध्रुव तारा में क्या विशेषता है ?

(७) सप्तर्षियों के नाम बताओ ? अरुन्धती तारा कहाँ है ?

(८) ध्रुव तारा के ज्ञात करने की क्या रीति है ?

(९) विषुवत् रेखा की परिभाषा लिखो ?

(१०) अक्षांश और देशान्तर रेखा किसे कहते हैं। इनसे क्या लाभ है ?

(११) ध्रुव-दर्शक-यन्त्र से क्या लाभ है ? इसके बनाने की विधि लिखो ?

(१२) प्राचीन और अर्वाचीन जहाजरानी में क्या परिवर्तन हो गया है और वह क्यों ?

(१३) कलकत्ता, मदरास, प्रयाग, बम्बई, चेरापूँजो, पेशावर और बस्ती के अक्षांश और देशान्तर बताओ ?

(१४) सर्वे करने में अक्षांश, देशान्तर, ध्रुव तारा और ध्रुवदर्शक-यन्त्र से क्या काम लिया जाता है ?

(१५) नक्शे से ५२½° उत्तर अक्ष, १६½° पूर्व देशान्तर, २८° उत्त

अक्ष, ७७° पूर्व देशान्तर, २१° उत्तर अक्ष, ४०° पूर्व देशान्तर के निकटवर्ती प्रधान स्थानों के नाम बताओ ?

७ दिन-रात और वर्ष

यह सभी जानते हैं कि रात के बाद दिन और दिन के पीछे रात आया करती है। फिर यही दिन जाड़ों में छोटा और गर्मियों में बड़ा हुआ करता है। इसके विपरीत जाडों में कड़ाके की रात लम्बी और वैशाख-ज्येष्ठ म वही सोने भर के लिये भी नहीं मिलती। यह भी नहीं कि, पृथ्वी के समान भाग पर यदि दिन बडा है तो सब जगह समस्त रूप से बड़ा हो। कहीं ८ घन्टे की रात है तो कहीं १२ घन्टे की और यह मात्रा बढ़ते बढ़ते २० घन्टे तक चली जाती है। साइबेरिया के बहुत उत्तरी भागों मे २२ घन्टे तक की रात हो जाती है और दिन केवल २ ही घन्टे का रह जाता है। इसी प्रकार ठीक ६ महीने के पश्चात् २ घन्टे की रात और २२ घन्टे के दिन हो जाते हैं। एक बात और भी है, यदि उत्तरी ध्रुव की ओर रात बढ़ने लगती है तो दक्षिणी ध्रुव की ओर दिन लम्बा होने लगता है। तात्पर्य यह कि उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवो के दिन-रात मे रात दिन का अन्तर है।

" कुक " आदि जिन महानुभावों ने ध्रुवों की यात्रा की है उनका कथन है कि ठेठ ध्रुवो पर तो ६ महीने तक अँधेरा रहता है और साल के दूसरे ६ मास मे उजेला। इससे रामायण की यह कथा कि जब बालि ने रावण को अपनी कांख मे दाब लिया था और रात हो जाने के कारण उसे ६ महीने तक

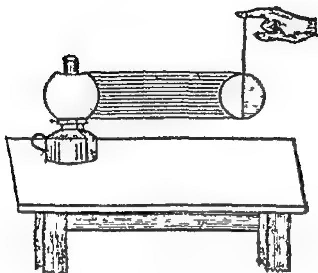
ी न रही—६ महीने की रात का होना सिद्ध हो जाता है। ास्तव मे है भी ऐसा ही।

रात-दिन के घटने बढ़ने के साथ ही साथ एक बात का ौर भी अनुभव होता जाता है, वह यह कि ऋतुओं में क्रमा ुसार परिवर्त्तन होता रहता है। कभी वर्षा है तो कभी शिशिर फिर वसन्त तत्पश्चात् कड़ाके की लू चलने लगती है और उसके ीछे फिर वर्षा का आनन्द आने लगता और "दादुर धुनि चहुँ ओर सुहाई" का पाठ याद आ जाता है।

अब तुम लोग यह कहोगे कि दिन रात तथा ऋतुओं मे बड़ा परिवर्तन हुआ करता है। यह परिवर्तन नियमानुसार है। फिर इनका होना और इनमें परिवर्तन का कारण क्या है? साधारणत इस प्रश्न का उत्तर तो दो शब्दों में यह है कि पृथ्वी में दो प्रकार की गति है एक दैनिक या अपने अक्ष पर और दूसरी वार्षिक अथवा सूर्य्य के चारों ओर अपने नियमित पथ पर—क्रान्ति मण्डल पर दैनिक गति से रात दिन होता है और वार्षिक गति ऋतुओं के परिवर्त्तन का कारण है। चूँकि पृथ्वी अपने अक्ष पर २४ घण्टे में घूमती है इसलिये दिन-रात २४ घण्टे में बदलते हैं। इसी प्रकार वार्षिक भ्रमण ३६५ दिन ५ घण्टे से कुछ अधिक में पूरा होता है अत एक वर्ष इतने ही दिन का होता है परन्तु इतने ही से काम नहीं चलता, हम आगे इसके समझाने का उद्योग करते हैं—

सूर्य के निकलने से दिन और छिप जाने से रात हो जाती है अर्थात् पृथ्वी पर प्रकाश सूर्य से आता है। इस कारण एक गेंद को पृथ्वी का गोला मान कर अँधेरे में दिया के सामने ले जावें अथवा दिन में घाम में ले जाकर देखें तो दिया अथवा सूर्य्य का प्रकाश केवल आधी गेंद पर पड़ेगा और आधी

गेंद पर अँधेरा होगा। मानो उसके एक ओर रात है और दूसरी ओर दिन।



परन्तु यदि गेंद को अपने स्थान पर और दिया को अपनी जगह पर स्थिर रहने दें तो गेंद पर जो अँधेरा उजेला है वह ज्यों का त्यों समान रूप से उसी स्थान पर बना रहेगा। अब गेंद को पृथ्वी और दिया को सूर्य मान लो तो रात दिन क्या है ? विदित हो गया। परन्तु हम देखते हैं कि पृथ्वी पर गेंद की तरह जहाँ प्रकाश है वहाँ वह बना नहीं रहता और न एक ही स्थान पर सदैव रात ही बनी रहती है। यहाँ इनमें परिवर्त्तन होता रहता है।

अब गेंद को स्थिर रख कर दिया को गेंद के चारों ओर फिरायें तो गेंद के स्थान स्थान पर क्रमानुसार ताप और प्रकाश आता रहेगा। इसी प्रकार यदि दिया को स्थिर रख कर गेंद को इस प्रकार फिरावें कि वह जहाँ का तहाँ रहे परन्तु उसका पिंड ऊपर से

नीचे को अथवा नीचे से ऊपर को कुम्हार की चाक की भाँति अपने अक्ष पर घूमे तो भी परिणाम वही होगा। गेंद के किसी स्थान पर अँधेरा आ जायगा और धीरे धीरे वह बढ़ता हुआ फिर प्रकाश की आभा मे प्रकाशित हो जायगा।

चाहे गेंद को अक्ष पर घुमाओ अथवा दिया को गेंद के चारों ओर फिराओ—इन दोनों बातों मे रात-दिन का उदाहरण मिल जायगा। इसलिये कुछ लोगो ने सूर्य्य को पृथ्वी के चारो ओर घूमता हुआ मान लिया है और पृथ्वी को स्थिर समझ रक्खा है। इस सिद्धान्त के अनुयाइयों में भारतवर्ष के अर्वाचीन ज्योतिषियों का स्थान उच्च है। आज कल के पञ्चाङ्ग और पत्रों मे इसी के अनुसार गणना होती है।

परन्तु भारतवर्ष के प्रसिद्ध प्रसिद्ध प्राचीन ज्योतिषविद्या के विशारदो और यूरोपीय विद्वानों का इस विषय में ऐक्य है कि "पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती हुई सूर्य की परिक्रमा करती है।" जिससे (१) अक्ष पर घूमने के कारण रात दिन और (२) सूर्य की परिक्रमा करने से ऋतुओं मे परिवर्तन होता है। इसकी पुष्टि में उनके यह सबूत विचारणीय हैं—

(१) जब नित्यप्रति यह देखा जाता है कि सन्ध्या के समय तमाम तारे पूर्व मे निकल कर धीरे धीरे पश्चिम को चलते हुए दिखाई देते हैं और ठीक २४ घण्टे में वह फिर अपने स्थान पर आ जाते हैं, इसी प्रकार चन्द्रमा और सूर्य की दशा भी है। परन्तु भली प्रकार से यह सिद्ध हो गया है कि सभी सितारे चलते नहीं और न सब की गति पूर्व से पश्चिम को है। फिर उनकी गति में यह समानता क्यो है? जैसे 'कमरू' होने वाले को ससार भर की वस्तुएँ पीली पीली दिखाई देती हैं और वह यही समझ रखता है कि वास्तव में मेरा देखना ठीक है परन्तु रोग दूर होने

पर उसे अपने भ्रम का पता चल जाता है। ठीक इसी प्रकार यदि पृथ्वी को पश्चिम से पूर्व को चलती हुई मान लें तो यह सारा पँवारा सिद्ध हो जाता है।

(२) पृथ्वी का पिंड ध्रुवों पर थोड़ा थोड़ा चिपटा हुआ और विषुवत् रेखा के निकट कुछ उभरा हुआ है। भू तत्व वेत्ताओं ने यह सिद्ध कर दिया है कि पृथ्वी का पिंड प्रथम प्रथम गले हुए धातु के स्वरूप में था, और गले हुए पिंड की आकृति उसी दशा में ध्रुवों के निकट चिपटी और मध्य में उभरी हुई हो जाती है जब कि वह घुमाई जाय अतः पृथ्वी घूमती है। पृथ्वी पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती है इस कारण दो स्थानों में से जो स्थान पूर्व की ओर होता है वहां पश्चिम वाले स्थान की अपेक्षा सूर्य पहले दिखाई देता है। क्योंकि पश्चिम की अपेक्षा पूर्व का स्थान पहले ही सूर्य के सामने आ जाता है। इसी आधार पर ज्यों ज्यों हम पूर्व को बढ़ते जाते हैं उतना ही सूर्य पहले दिखाई देने लगता है। इसके प्रतिकूल पश्चिम की ओर चलने में दिन बढ़ता हुआ और सूर्य बाद में दिखाई देता है।

कलकत्ता से बम्बई पश्चिम ओर है। अतः कलकत्ते में पहले सूर्योदय होगा और बम्बई में उसके पश्चात्। परन्तु अब यह देखना है कि दोनों स्थानों के समय में कितना अन्तर है।

पृथ्वी के गोले पर देशान्तर के ३६० अंश हैं और २४ घण्टे में प्रत्येक स्थान ३६० अंश का चक्कर लगाता है अर्थात्

$$\frac{२४ \text{ घन्टा}}{३६० \text{ अंश}} = \frac{२४ \times ६०}{३६०} = ४$$ यानी एक अंश में ४ मिनट का अन्तर होता है। जो स्थान एक दूसरे स्थान से १ अंश देशान्तर पर है उनके समय में ४ मिनट का अन्तर पड़ेगा।

चूँकि कलकत्ते का ८८ पूर्वी देशान्तर है और बम्बई का ७३
इसलिये ८८—७३=१५ . १५×४=६० । इसलिये बम्बई और
कलकत्ते से समय में एक घन्टे का अन्तर होगा अर्थात् जब कलकत्ते
में ९ बजेगा बम्बई में ८ ही बजा होगा।

इसी नियम से कलकत्ता ग्रीनिच से ८८ अंश पूर्व है।

इसलिये ८८×४=३५२ मि०=५ घन्टा ५२ मिनट अर्थात् जब
कलकत्ते में ५ बजकर ५२ मिनट होंगे उस समय ग्रीनिच में १२
बजे होंगे। अभिप्राय यह कि पूर्व की ओर चलकर यदि पृथ्वी की
परिक्रमा की जाय तो एक दिन बढ़ जाता है और यदि पश्चिम
की ओर जाकर भ्रमण करके उसी स्थान पर आ जाँय तो एक
दिन कम हो जाता है।

पृथ्वी का यह दैनिक भ्रमण ध्रुवों पर तो शून्य सा है परन्तु
ज्यों ज्यों विषुवत् रेखा की ओर बढ़ते हैं यह तेजी बढ़ती जाती है
और विषुवत् रेखा पर पहुँच कर प्रत्येक घन्टे में १००० मील के
हिसाब से घूमती है।

दैनिक गति का हाल तो समझ गए। अब ऋतुओं में क्यों
परिवर्तन होता है इसका हाल भी जानना चाहिये।

जिस प्रकार पृथ्वी के गिर्द चन्द्रमा के परिक्रमा करने के
समय को चान्द्र-मास कहते हैं, उसी प्रकार सूर्य की परिक्रमा
की अवधि को सौर्य वर्ष कहते हैं। कुछ ऊपर सत्तावन करोड़
मील का भ्रमण पृथ्वी को ३६५ दिन ५ घन्टे ४८$\frac{3}{4}$ मिनट में पूरा
करना पड़ता है। इसी काल को सब देश वालों ने सदैव से वर्ष
मान रक्खा है। चूँकि मनुष्यों के निकट इसी में सुगमता है कि
वर्ष के दिन पूरे हों अत एक वर्ष को उसने ३६५ दिन का मान
रक्खा है। परन्तु इस हिसाब से ५ घन्टे ४८$\frac{3}{4}$ मिनट हर साल

व रहते हैं। इसलिये प्रकट है कि इससे कुछ दिनो में बड़ी भूल
सकती है। इसी भूल को मिटाने के लिये हर चौथे वर्षका साल
६६ दिन होता है। जो सन् ईस्वी ४ पर भाग देने से पूरी पूरी
ट जाय उसके फरवरी के दिनों की सख्या २६ दिन की होती
। चूँकि ५ घन्टे ४८ मिनट के हिसाब से ४ वर्ष में केवल २३
न्टे १२ मिनट ही का लेखा आता है परन्तु हम २४ घन्टे मुजरा
ते हैं इस लिये १२ मिनट हर साल की बढ़वारी रह जाती है।
सको दूसरे ढग से ठीक करते हैं अर्थात् प्रत्येक शताब्दी के
रवरी को २६ दिन का नहीं मानते। इसी लिये जो शताब्दी
०० के भाग देने से कट जाय उसी वर्ष के फरवरी महीने को २६
दन का करते हैं। परन्तु यह हिसाब भी बहुत ठीक नहीं है। एक
ाख वर्ष के पश्चात् इसमें भी गड़बड़ी पड़ेगी। पर अभी बहुत
दनो तक २१ ही मार्च को सौर्य वर्ष का आरम्भ हुआ करेगा।
ग्रेजी कलेंडर में पहले यह हिसाब नहीं था इसलिये ११ दिन
ी वहाँ भी गड़बड़ी पड गई थी जो सन् १७५२ ई० में ३ सित-
बर के स्थान पर १४ सितम्बर मानना पड़ा। परन्तु फिर भी
र ३८६६ वर्ष में एक दिन की गड़बड़ी हो ही आवेगा। ×

यह तो हुई सौर्य वर्ष की बात। अब जरा चान्द्रवर्ष का विवरण
ुन लीजिये। भारतवर्ष में बहुत स्थानों पर अभी चान्द्रमास
ी गणना है। मुसलमानों के यहाँ सारे ससार में चान्द्रवर्ष है।
त्तरी भारत में भी चान्द्रवर्ष का चलन है। हमारे पञ्चाङ्गों में
ैत्र, वैशाख की गणना इसी पर है। तुम्हें मालूम होगा कि
न्द्रमा का बारह भ्रमण ३५४ ½ दिन के निकट है अत सौर्य-
र्ष से यह ११ दिन कम है। इसलिये हर तीसरे वर्ष एक लौंद
ा महीना जोड़ा जाता है। परन्तु इससे कुछ दिनों की सख्या
ढ़ जाती है जो कभी कभी १४१ वर्ष और कभी कभी १६ वा ३४

वर्ष मे एक मास क्षय हुआ करता है। लौंद का महीना ३१ महीना १५ दिन ८ घन्टे पर आता है और इससे एक साल १३ महीने का माना जाता है परन्तु मास-क्षय पर ११ ही महीने का वर्ष मान लिया जाता है।

परन्तु इसलाम-धर्म के अनुयायी अपना वर्ष ३५४ ही दिन का मानते चले आ रहे हैं। अत सन् हिजरी से सन् ईसवी आदि की गणना करने में बडी कठिनता पड़ती है। उदाहरणार्थ देखिये अकबर ने जब बङ्गाल में बन्दोबस्त कराया तो टोडरमल ने वही सन् हिजरी को सन् फसली के नाम से जारी कर दिया। देखिये ३०० वर्ष के भीतर कितना अन्तर पड़ गया। आज शव्वाल की २३ वी तारीख है और सन् १३३३ हिजरी। परन्तु फसली भादं ११ सन् १३२२ है अर्थात् वही सन् चान्द्र वर्ष से आज ११ वर्ष कम है।

अब एक प्रश्न हो सकता है कि फिर चान्द्रवर्ष और सौर्य्य वर्ष के मानने में लाभ है या हानि है? वर्ष वास्तव में उस समय का नाम है जिसके अन्दर अन्दर पृथ्वी सूर्य के चारों ओर एक चक्कर लगा जाती है





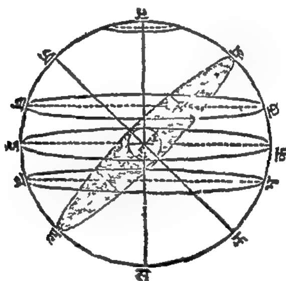


हम पहले बता आये हैं कि दीपक द्वारा परीक्षा करने में यदि पृथ्वी रूपी गेंद को सूर्य्य रूपी दीपक के ठीक आमने सामने घुमावें अर्थात् पृथ्वी की विषुवत् रेखा ठीक दीपक के सदैव सामने रहे तो, चाहे जितनी बार परीक्षा करें, परीक्षा-

फल यही निकलेगा कि गेंद के सभी भागो पर समान रूप से प्रकाश और अन्धकार पड़ेगा, न्यूनाधिकता न होगी; जैसा कि चित्र मे विदित है। परन्तु पृथ्वी पर दो दिनो को छोड कर और कभी यह दशा नहीं देखी जाती। यहाँ तो कभी दिन बढ़ता है और कभी रात। कभी जाड़े का दिन होता है और कभी गर्मी का। अत यह बात निश्चय है कि पृथ्वी सूर्य के गिर्द इस प्रकार नहीं घूमती कि जिसका फल सदैव दिन रात का बराबर होना हो। अनुभव से ज्ञात हुआ है कि २१ मार्च और २३ सितम्बर को दिन रात बराबर होते हैं और २१ जून को सबसे बड़ा दिन और २२ दिसम्बर को सबसे बडी रात होती है। अत परीक्षा के लिये दीपक के गिर्द गेंद को इस प्रकार घूमना चाहिये कि गमन पथ वृत्ताकार न होकर अंडाकृत हो। गेंद के अक्ष ठीक ऊपर नीचे न होकर कुछ झुके होने चाहिये। तब यह फल निकलेगा।

यदि पृथ्वी के अक्ष को क्रान्ति मण्डल पर लम्बरूप मान लेने के स्थान पर कुछ झुका हुआ मान लें और इसके साथ ही यह भी मानलें कि वार्षिक गति मे अक्ष की दिशा नहीं बदलती तो पृथ्वी पर दिन रात के घटने बढ़ने का कारण अति सुगमता से समझ में आ सकता है। यदि अक्ष लम्बरूप होता तो सूर्य सदैव विषुवत रेखा पर रहता। जितनी दूर तक भूमध्य-रेखा से उत्तर दक्षिण मे सूर्य खमध्य पर दिखाई देगा, उतना ही लम्बरूप से झुका हुआ होगा। इससे अब यह ज्ञात करना चाहिये कि विषुवत् रेखा से कितने अंश उत्तर और दक्षिण तक सूर्य खमध्य पर आ जाता है। यह सीमा २३½ अंश उत्तर क छ रेखा तक और २३½ अंश दक्षिण में घ भ वृत्त तक है। अत पृथ्वी का अक्ष लम्ब से ½ अंश झुका हुआ है।

परीक्षा से यह सिद्ध होता है कि विषुवत् रेखा से दोनों ओर कुछ दूरी तक सूर्य वर्ष भर में कभी न कभी खमध्य पर होता है और दोनों ध्रुवों के समीप कुछ स्थान ऐसे हैं जहाँ वर्ष भर में एक बार २४ घन्टे तक रात दिन होने का नियम नहीं रहता जैसे इस वृत्त के दूसरी ओर के म ज रेखा तक उत्तरी ध्रुव पर और ह क्ष रेखा के स्थान तक दक्षिणी ध्रुव पर। चित्र में



ह क्ष वाला स्थान दूसरे पृष्ठ को दिखाता है इस बात के विचार से पृथ्वीतल के अलग अलग भाग कर लिये गए हैं। २१ जून को सूर्य्य म ज बिन्दु वाले समानान्तर वृत्त पर होता है जो विषुवत् रेखा से २३½ अंश उत्तर को है इसी प्रकार २१ दिसम्बर को सूर्य्य ष भ खमध्य रेखा पर होता है जो सूर्य्य के खमध्य पर आने की दक्षिणी सीमा है। यह रेखा विषुवत् रेखा से २३½ अंश दक्षिण को है। ट क विषुवत् रेखा है, इस पर २१ मार्च और २३ सितम्बर को सूर्य की किरणें सीधी पडती हैं।

पृथ्वी के ध्रुव स्थानों तक सूर्य की किरणें लम्बरूप पड़ा करती हैं, अत: यहाँ से चारों ओर ९० अंश तक प्रकाश पहुँचता है, इससे एक एक वार आगे अँधेरा होता है।

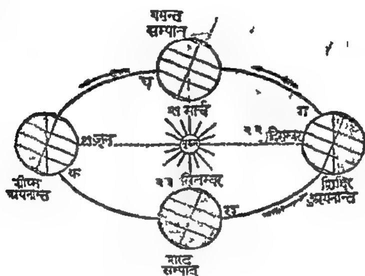
चूँकि २१ जून को सूर्य विषुवत् रेखा से २३½ अंश उत्तर की ओर हटा हुआ मालूम होता है अत विषुवत् रेखा के २३½ अंश उत्तर से भी २३ ½ अंश और आगे बढ़ जायेगा। ठीक इसी प्रकार २२ दिसम्बर को दक्षिणी ध्रुव की दशा होगी।

इस प्रकार पृथ्वी के क्रान्तिमंडल पर घूमने के कारण २२ दिसम्बर से २१ जून तक दिन बढ़ता हुआ मालूम होता है और २२ जून से २१ दिसम्बर तक छोटा होता हुआ। परन्तु यह बड़ाई छोटाई हमारे लिये है क्योंकि हमारा स्थान विषुवत् रेखा के उत्तर है। जो लोग विषुवत् रेखा के दक्षिण हैं उनके लिये २३ दिसम्बर से २१ जून तक तो दिन छोटा होता हुआ और २२ जून से २१ दिसम्बर तक दिन बढ़ता हुआ मालूम होगा। परन्तु विषवत् रेखा के उत्तर अथवा दक्षिण सभी स्थानों पर २१ मार्च और २३ सितम्बर को दिन और रात बराबर होंगे।

अगले पृष्ठ पर चित्र के बीच में सूर्य्य है। अण्डाकृत क्रान्ति-मंडल पर पृथ्वी उसके गिर्द परिभ्रमण करती है। वह बायें से दाहिनी ओर चल रही है। बाईं ओर पृथ्वी के उत्तरी-ध्रुव पर प्रकाश है। नीचे पृथ्वी का एक अंश पर अन्धकार दिखाया गया है। दाहिनी ओर के पृथ्वी की दशा में उत्तरी ध्रुव तो अन्धकार में चला गया और दक्षिणी-ध्रुव प्रकाश में आगया। ऊपर वाले पृथ्वी के गोले में वह अंश प्रकाश में आ गया जो कि नीचे अन्धकार मय दिखाया गया था।

अब इस चित्र से भली प्रकार विदित हो जायगा कि ज्यों ज्यों उत्तरी ध्रुव की ओर सूर्य बढ़ता हुआ मालूम होगा

त्यों त्यों हमारे यहाँ गर्मी बढ़ती जायगी और दिन बड़ा होता जायगा। फिर जब सूर्य लौटता हुआ दिखाई देगा तो रात बढ़ती हुई मालूम होगी। इस प्रकार वर्ष के चार भाग किये जा सकते हैं —



विषुवत् रेखा से —

(१) २१ मार्च से २१ जून तक — उत्तरी ध्रुव की ओर, रात से दिन बढ़ता जाता है और दक्षिणी ध्रुव की ओर दिन से रात बढ़ती जाती है।

(२) २२ जून से २३ सितम्बर तक — उत्तरी ध्रुव की ओर दिन घटने लगता है, दक्षिणी-ध्रुव की ओर रात घटने लगती है।

(३) २४ सितम्बर से २२ दिसम्बर तक — उत्तरी-ध्रुव की ओर दिन से रात बढ़ने लग जाती है। दक्षिणी ध्रुव की ओर रात से दिन बड़ा होता जाता है।

(४) २३ दिसम्बर से २० मार्च तक — उत्तरी ध्रुव की ओर रात घटती जाती है। दक्षिणी-ध्रुव की ओर दिन छोटा होता जाता है।

जाड़े गर्मी का अधिक विवरण आगे बताया जायगा।

ज्योतिषियों ने क्रान्तिमंडल के १२ भाग कर लिये हैं और उन अंशों का ऐसा नाम रक्खा है जो कि नभमंडल में उनके सामने के तारागणों के आकार से प्रतिबिम्बित होता है। आश्चर्य तो यह है कि बारह राशियों के नाम सब देशों में समानार्थी हैं। जैसे—

संस्कृत	फारसी	अर्बी	लैटिन	इङ्गलिश
प	برة	حمل	Aries	Ram
पं	گاو گردوں	ثور	Taurus	Bull
थुन	دوپیکر	جوزا-توأم حمدس	Gemini	Twins
र्क	خرچنگ کاع ماہ	سرطان	Cancer	Crab
सह	شیر	اسد	Leo	Lion
न्या	خوشہ-خوشہ چرخ	سنبلہ	Virgo	Virgin
ुला	ترازو	میزان	Libra	Balance
ृश्चिक	کژدم	عقرب	Scorpio	Scorpion
नु	کمان کاع مشتری	قوس	Sagittarius	Archer
कर	دمالہ ملک مریمہ	جدي	Capricornus	Goat
म्भ	دول	دلو	Aquarius	Water carrier
ीन	ماهئی شہر	حوت	Pisces	Fishes

हिन्दी में इन्हीं महीनों का नाम चैत, वैशाखादि अङ्गरेजी में एप्रिल, मई, जून इत्यादि हैं। अधिक विस्तार इनका जन्त्री से देखा जा सकता है।

८—ग्रहण

ग्रहण लगते ही हिन्दू लोग हवन-दान आदि का अनुष्ठान करते हैं। मुसलमान-धर्मानुयायी भी अपने धर्म के अनुसार नमाज पढ़ते और ज़कात देते हैं। धर्म-ग्रन्थों में ग्रहण के अनेक कारण बताए गए हैं। परन्तु उनमें जो सबसे प्रसिद्ध है, उसका तात्पर्य यह है कि, जब देव और दानवों ने मिलकर समुद्र मथन किया तो १४ रत्नों के साथ अमृत भी निकला। अमृत पीने के लिये देव और दैत्य अपनी अपनी पंक्ति बना कर बैठ गए। मोहिनी ने चालाकी से पहले देवताओं की ओर से अमृत का पिलाना आरम्भ किया। दानव लोग तो मद्यपायी होकर मदान्ध हो गये थे, उन्हें मोहिनी की चाल की क्या खबर, परन्तु दैत्यों में से राहु नामक एक दानव ने इस चालाकी को ताड़ लिया और वह चन्द्र सूर्य के बीच में आ कर बैठ गया और अमृत पान भी कर चुका। जब देवताओं को मालूम हो गया कि एक दैत्य भी अमृत पीकर अमर हो गया तो उनके क्रोध का ठिकाना न रहा, तुरन्त सूर्य-चन्द्र ने उसकी गर्दन काट डाली। परन्तु राहु तो अमर हो ही चुका था, चाहे उसके जितने टुकड़े किये जाते वह मरता थोड़े ही? ऋषियों के समझाने बुझाने से अधिक अत्याचार उसके साथ नहीं किया गया। परन्तु राहु ने (एक के दो होकर) चन्द्रमा और सूर्य से कहा—इसका बदला हम तुमसे बराबर लेते रहेंगे। यही कारण है कि कभी कभी आकाश में वह सूर्य को और कभी चन्द्रमा को ग्रसित कर लेता है। राहु केतु

रथ का आकार बड़ा है और वह काले रङ्ग का है अत. जिस समय उसका आभास देदीप्यमान सूर्य वा चन्द्रमा पर पड़ता है तो उनके प्रकाश की ज्योति मन्द पड़ जाती है और यही कारण ग्रहण का बताया जाता है।

जो कुछ भी हो हमारा अभिप्राय यहाँ इस कथा के सत्यासत्य निर्णय करने का नहीं है। परन्तु इस सिद्धान्त की एक दो बातें काम की मिलती हैं। एक यह कि सूर्य और चन्द्रमा से प्रकाश का आभास होता है, दूसरे राहु-केतु के अन्धकार का प्रतिबिम्ब पड़ता है। दोनो ज्योतिषियों में कभी कभी मुठभेड़ हो जाती है परन्तु रोज रोज नहीं क्योंकि यह सब ग्रह चलित अर्थात् घूमने वाले हैं।

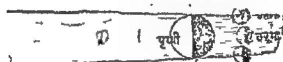
वास्तव मे आज कल के ज्योतिषियों ने जिन कारणों से ग्रहण होना सिद्ध किया है उनमें भी दो ही सिद्धान्त हैं। प्रथम तो यह कि पृथ्वी और चन्द्रमा के भ्रमण के कारण, दूसरे इनके उपच्छाया और प्रच्छाया के पड़ने से।

हर एक का पूरा हाल लिखने के पूर्व उचित प्रतीत होता है कि हम उदाहरण द्वारा इनके कारणों को समझा दें।

रात के समय जब कमरे में लैम्प जलाई जाती है तो उसका प्रकाश दीवारो पर खूब पड़ता है। परन्तु जिस समय, लैम्प और दीवार के बीच मे कोई वस्तु ऐसी आ जाय जो अपारदर्शक हो तो, दीवार पर उस वस्तु के आकार के अनुसार छाया पड़ जाती है। यद्यपि लैम्प रोशन है परन्तु पूरी दीवार पर प्रकाश नहीं पड़ता। यदि वह वस्तु लैम्प की ओर लायी जाय तो छाया बढ़ती जायगी और अगर वह दीवार की ओर हटाई जाय तो छाया कम होती जायगी। यह क्यों? इसका कारण ज्यामिति शास्त्र के जानने वाले भली भाँति जान सकते हैं और

चन्द्रमा पृथ्वी की प्रच्छाया की ओर केवल पूर्णमासी के दिन होता है। इस कारण कभी कभी पूर्णमासी की रात को सारी रात पूर्ण-चन्द्र का दर्शन होने के स्थान पर कुछ समय तक सारा चन्द्रमा या उसका कुछ भाग अँधेरे में आ जाता है और पृथ्वीतल पर जहां तक रात होती है वहां पूर्ण-चन्द्र का दर्शन जैसा चाहिए नहीं होता, इसे चन्द्र-ग्रहण कहते हैं।

। में सूर्य्य के स्थान से किरणें निकल रही हैं जो पृथ्वी



के स्थानों से होती हुई दो रेखाओं के रूप में क्षेत्र के आकार में प्रवृत होती हैं।

इन रेखाओं के मध्य में प्रच्छाया है और यह स्थान अधिक अँधेरा है।

अब चन्द्र-कक्षा जो पृथ्वी के गिर्द उसके क्रान्तिमडल पर गोल बिन्दी से दिखाया गया है, एक वृत्त है, जब चन्द्र उपच्छाया और प्रच्छाया के बाहर होगा तो ग्रहण न होगा।

परन्तु ज्योंही वह उपच्छाया में आ जायगा हलका धुँधला हो जायगा।

और काली लकीरों के क्षेत्र में आते ही तो घोर अन्धकार में लीन हो जायगा। अब प्रश्न यह होगा कि जब पृथ्वी की छाया

पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा ही की ओर होती है तो फिर प्रत्येक पूर्णमासी को चन्द्र ग्रहण क्यों नहीं लगता ? इसका उत्तर यह है कि क्रान्तिवृत्त का धरातल और चन्द्रकक्षा समधरातलीय नहीं हैं, किन्तु उनमें ५ अंश का कोण बनता है। अर्थात् चन्द्रकक्षा कुछ तिर्छी हैं, इस तिर्छेपन के कारण चन्द्र उत्तर में आधा चक्कर करके क्रान्ति वृत्त धरातल को पार करता है और फिर आधा चक्कर दक्षिण में करके क्रान्ति वृत्तधरातल से पार होकर उत्तर की ओर आ जाता है। इस प्रकार क्रान्ति वृत्त को चन्द्र एक परिक्रमा में दो वार काटता है। इसको 'पात' कहते हैं परन्तु तिर्छेपन के कारण पात-विन्दु पर प्रत्येक पूर्णिमा को पृथ्वी की छाया नहीं पड़ती। जब पात विन्दु पर उपच्छाया, और प्रच्छाया पड़ती है उसी समय ग्रहण होता है। बहुतेरे ज्योतिषियों का कहना है कि यही पात-विन्दु भारतवर्ष के "राहु-केतु" हैं।

यदि पात, प्रच्छाया से थोड़ा हटा हुआ हो और दोनों में १२$\frac{१}{१०}$ अंश से कम का अन्तर न हो तो ग्रहण न होगा, परन्तु अन्तर जितना ही कम होगा ग्रहण उतना ही बड़ा होगा। इसीलिये कभी लेश मात्र का ग्रहण, कभी खण्ड-ग्रहण और कभी सर्वग्रास होता है।

खण्ड ग्रहण



एक बात और भी है। छाया और चन्द्रमा की गति एक ही ओर की है परन्तु छाया और चन्द्रमा द्रुत गामी हैं इसलिये छाया से

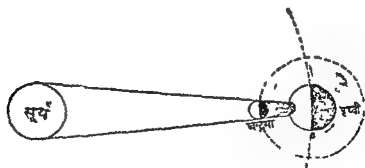
चन्द्रमा शीघ्र बाहर निकल जाता है। यदि ऐसी दशा दिन में हुई तो ग्रहण दिखायी न देगा।

चन्द्र ग्रहण का चक्कर २३ वर्ष में पूरा होता है। अर्थात् ८८७ दिन के पश्चात् फिर वह उसी क्रम से आता है जैसे कि पहले आ चुका है।

(२) सूर्य्य-ग्रहण

चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा करता है और प्रति चक्कर में अमावस्या के दिन वह सूर्य्य और पृथ्वी के बीच मे होता है उस समय चन्द्रमा की छाया पृथ्वी की ओर होती है। इसलिये यदि चन्द्रमा की उपच्छाया या प्रच्छाया* पृथ्वी के किसी अंश पर पड़ जावे और वहाँ उस समय दिन हो तो सूर्य्य ग्रहण दिखाई देगा।

चित्र देखने से विदित होता है कि चन्द्रमा की छाया बहुत ही छोटी होती है अत सूर्य्य ग्रहण भी पृथ्वी के बहुत कम



*पेज २४,२५ में जहाँ हमने गेंद और दीपक द्वारा परीक्षा करने को कहा है, उस विषय में सूर्य्य को दीपक, पृथ्वी को गेंद मान लेने से यह समझ में आ जायगा।

अंश पर पड़ता है। चन्द्रमा की प्रच्छाया तो पृथ्वी तक आते आते लेश मात्र धब्बा सी रह जाती है जो अधिक से अधिक १०० या १५० मील के व्यास की होती है। साराश यह कि सूर्य्य का पूर्ण ग्रहण पृथ्वी पर थोड़ी ही दूर तक पड सकता है। परन्तु खड-ग्रहण अधिक दूर तक दिखाई देता है। क्योंकि चन्द्रमा की उपच्छाया मे विस्तार में अधिक पड़ती है।

जिन कारणों से प्रत्येक पूर्णिमा को चन्द्र ग्रहण नहीं होता उन्हीं कारणों से प्रति अमावस्या को सूर्य्य ग्रहण भी नहीं होता यदि अमावस्या के दिन चन्द्रमा किसी बात से १८½ अंश से अधिक दूरी पर हो तो सूर्य ग्रहण नहीं होता क्योंकि चन्द्रमा की छाया उत्तर या दक्षिण होकर निकल जायगी और पृथ्वी पर उसका प्रतिबिम्ब नहीं पड़ेगा। लगभग ७½ वर्ष के पश्चात् सूर्य-ग्रहण का वही क्रम लौट आता है परन्तु दशा वही नहीं रहती।

(३) ग्रहण के कुछ चमत्कार

अ—कभी कभी मडलाकार सूर्य्य ग्रहण होता है जैसे अगले पृष्ठ के चित्र से विदित होता है—

चूँकि सूर्य्य बहुत बड़ा है और चन्द्रमा बहुत छोटा। परन्तु यह अपनी अपनी दूरी के कारण पृथ्वी पर प्राय समान ही आकार के दिखाई देते हैं। इसलिये सूर्य्य से छोटा होते हुए भी पूर्ण सूर्य्य ग्रहण में चन्द्रमा उसे पूरा पूरा ढक लेता है और बराबर चलते रहने पर भी कुछ मिनट तक उसे छिपाये रहता है।

परन्तु जिस प्रकार क्रान्तिमण्डल अंडाकार है उसी प्रकार चन्द्रकक्षा भी अंडाकृति ही है।

मण्डलाकार सूर्य्य ग्रहण



इसलिये जब पृथ्वी सूर्य्य के निकटतम स्थान पर पहुँच जाती है तो सूर्य्य का आकार कुछ बढ जाता है, ऐसी दशा में यदि चन्द्रमा अपने अक्ष पर दूरतम स्थान पर हुआ तो उसका आकार और भी छोटा हो जायगा फिर यदि कहीं पूर्ण सूर्य्य ग्रहण का संयोग लग गया तो छोटे आकार का चन्द्रमा बड़े आकार वाले सूर्य्य को पूरा पूरा ढक नहीं सकेगा। तब सूर्य्य का मध्यवर्त्ती अंश तो ग्रहण मे आ जायगा और चारों ओर मण्डलाकार ज्योति दिखाई देगी। इस दशा को मण्डलाकार-ग्रहण कहते हैं। यह बहुत दिनों पर होता है।

एक और भी कारण है कि जिसके द्वारा सूर्य्य में कभी कभी छोटे धब्बे का ग्रहण दिखाई देता है। इस ग्रहण को ज्योतिषियों के अतिरिक्त अन्य लोग कम जानते हैं। साधारण आँख से दिखाई भी कम देता है। इसको ग्रहों के द्वारा सूर्य्य ग्रहण कहते हैं।

इसका कारण चन्द्रमा नहीं है और न पृथ्वी की छाया आदि। यह ग्रहण ग्रहों के कारण पडता है, क्योंकि संयोग वश जब घूमते घूमते कोई ग्रह पृथ्वी और सूर्य्य के बीच में इस प्रकार से आ

ाता है जैसी स्थिति कि सूर्य ग्रहण के समय चन्द्रमा की होती
: तो सूर्य्य में कुछ धब्बा सा दिखाई पड़ जाता है। परन्तु यह
शा केवल बुध और शुक्र के कारण हो सकती है। क्योंकि
न्य ग्रह पृथ्वी की अपेक्षा सूर्य्य से अधिक दूरी पर हैं। हाँ
सी प्रकार का सूर्य्य-ग्रहण अन्य ग्रहों पर भी दिखाई देता
ागा। बुध के आ जाने से ७ जून सन् १९१४ ई० को सूर्य्य-ग्रहण
ुआ था।

सूर्य्य और चन्द्र ग्रहण १६ वर्ष १८ दिन के पश्चात् फिर
सी क्रम से आते हैं। अर्थात् १६ वर्ष १५ दिन में उनका एक
क्कर पूरा होता है परन्तु ग्रहणों के आकारादि में प्रत्येक
शा में भेद भाव रहता है। यह प्रत्येक ग्रहण में समान अंशी
ाहीं रहते।

अभ्यासार्थ प्रश्न

(१) दिन क्यों होता है और रात होने का क्या कारण है?

(२) किसी स्थान पर कब दिन बड़ा हो सकता है और कब रात बड़ी हो सकती है।

(३) दिन और रात किन तारीखों को बराबर होते हैं?

(४) सूर्य्य कितने दिन उत्तरायण में और कितने दिन दक्षिणायन में रहता है।

(५) ध्रुवों पर किन किन तारीखों को रात नहीं होती और २४ घन्टे तक बराबर दिन ही दिन रहता है?

(६) जाड़ और गर्मी के क्या कारण हैं?

(७) सूर्य्य-ग्रहण किसे कहते हैं? और क्यों कर सूर्य्य ग्रहण पड़ता है?

(८) चन्द्र ग्रहण के कारण को समझाओ,--बताओ कितने दिनों बाद इसका एक चक्कर पूरा होता है?

(९) खंड-ग्रहण, मण्डलाकार और पूर्णग्रास ग्रहण कब होता है ?
(१०) उपच्छाया और प्रच्छाया को समझाओ।
(११) बुध और शुक्र के कारण सूर्य ग्रहण क्यों होता है ? क्या कभी ऐसे ग्रहण पड़ते सुना है ?
(१२) चन्द्रकक्षा का सम्बन्ध क्रान्ति-मण्डल के साथ कैसा है ?
(१३) प्रत्येक अमावस्या, वा पूर्णिमा को ग्रहण क्यों नहीं पड़ते ?
(१४) सूर्य्य ग्रहण अधिक व्यापी होता है या चन्द्र-ग्रहण ?
(१५) चन्द्र ग्रहण दिन में क्यों नहीं पड़ता ? राहु केतु कौन हैं, इनसे ग्रहण का क्या सम्बन्ध है ?

६—ज्वार भाटा

जब समुद्र मथन हुआ था तब चन्द्रमा भी चौदह रत्नों में से एक निकला था अत चन्द्रमा समुद्र-जात है। फिर जब पूर्णिमा को उसका पूर्ण प्रकाश होता है तो कौन ऐसा है जो अपने आत्मज को वृद्धि देख कर आनन्दित न हो ? इसलिये मानों समुद्र पूर्णमासी को मारे उमङ्ग के फूल जाता है और मौजें मारने लगता है। यह ज्वार-भाटा के सम्बन्ध, हिन्दुओं के पुराने विचार हैं। इनसे पता चलता है कि हिन्दुओं को यह मालूम था कि ज्वार-भाटे का कारण चन्द्रमा ही है।

वास्तव में आधुनिक विद्वानों ने भी यही सिद्ध किया है कि ज्वार भाटा चन्द्रमा के कारण होता है और कुछ दखल सूर्य्य का भी है।

ज्वार-भाटा दो शब्द हैं। असाधारण समुद्र के पानी के चढ़ाव को "ज्वार" और नियमित धरातल से समुद्र के पानी के घट जाने की दशा का नाम "भाटा" है।

समुद्र-तट के रहने वाले भली प्रकार से जानते हैं कि प्रत्येक दिन रात मे दो बार समुद्र में चढाव आता है और दो ही बार पानी का उतार भी होता है।

पूर्णिमा और अमावस्या के दिन इसका बड़ा जोर होता है और ज्यों ज्यों यह तिथियाँ दूर होती जाती हैं, ज्वार-भाटे का जोर भी कम पड़ता जाता है और अष्टमी के दिन प्राय ज्वार भाटे का नाम ही मात्र रहता है।

ज्वार भाटे के इस नियम की पड़ताल करने से अवश्य यह विचार उत्पन्न होता है कि इसका सम्बन्ध चन्द्रमा से ही है।

यद्यपि सूर्य्य और चन्द्रमा की आकर्षण-शक्ति सारे भूतल पर पड़ती है तथापि उसका प्रभाव स्थल की अपेक्षा जल ही में दिखाई देता है।

हमारी इच्छा थी कि इस विषय की भली प्रकार से विवेचना करें, परन्तु गणित विद्या की अच्छी जानकारी के बिना हमारे स्कूल के विद्यार्थी इस विषय को जैसा चाहिये समझ न सकेंगे अत उन कारणों का कुछ दिग्दर्शन करा दिया जायगा।

जैसा कि हम पहले बता चुके हैं कि जितने पिंड आकाश में हैं वे परस्पर की आकर्षण शक्ति के बल पर नियमित रूप से स्थित हैं। विश्व में प्रत्येक परमाणु दूसरे परमाणुओं को अपनी ओर खींचता है, इसे आकर्षण-शक्ति कहते हैं। प्रत्येक वस्तु में उसके परमाणुओं की अधिकता और न्यूनता पर यह शक्ति निर्भर है। यदि उसके परमाणु अधिक हैं तो उसमें आकर्षण शक्ति अधिक होगी और इसके कम होने पर कम

इस शक्ति की कमी-बेशी का एक और भी कारण है—ज्यों ज्यों दूरी बढ़ती जायगी—परस्पर आकर्षण शक्ति कम होती जायगी।

आकर्षण-शक्ति पर गति-रोध के कारण केन्द्रोन्मुख* और केन्द्र परांमुख शक्तियों का भी प्रभाव पड़ता है।

चित्र में देखो इसे पूर्णमासी अथवा अमावस्या की दशा समझो, जब कि सूर्य, चन्द्र और पृथ्वी एक सीध में आ जाते हैं।

सूर्य पृथ्वी से दूर है अत उसकी आकर्षण-शक्ति पृथ्वी पर कम पड़ेगी। परन्तु चन्द्रमा के निकट होने के कारण खूब ज़ोर लगावेगा।

पृथ्वी के परमाणु इस आकर्षण शक्ति के प्रभाव से प्रभावित होकर सूर्य वा चन्द्रमा की ओर जाना चाहते हैं परन्तु स्थल

बृहद् ज्वार-भाटा



के परमाणु तो परस्पर इस प्रकार चिमटे हैं कि उनका निकल भागना कठिन है।

पृथ्वी का धरातल अधिकांश मे जल से आवेष्ठित है।

---

*केन्द्रोन्मुख और केन्द्र-परामुख शक्ति का दृश्य गोफन में देखा जा सकता है। केन्द्रोन्मुख शक्ति द्वारा वस्तु अपनी कक्षा से दूर नहीं जा सकती और केन्द्र परामुख शक्ति द्वारा वस्तु अन्य पिंड की परिक्रमा करती है।

पृथ्वी के चित्र में गोले के चारों ओर बिन्दी देकर जल का स्थान दिखाया गया है।

विशेषतः जल के परमाणु चिपके तो हैं नहीं, अतः वह आकर्षणशक्ति के वशीभूत होकर सूर्य्य वा चन्द्रमा की ओर चल पड़ेंगे।

अतः शक्ति का प्रभाव वस्तुओं के सामने पड़ता है और पृथ्वी का जल दोनों ओर—ठीक एक दूसरे के सामने सामने आकर फूल जायगा।

सामने सामने तो जल फूल गया क्योंकि वहाँ शक्ति का प्रभाव है—परन्तु ठीक उन स्थानों के ६०,६०, अंश के स्थान का जल—जहाँ शक्ति नहीं लग रही है—धरातल ठीक* रखने के लिये घट जायगा।

क्योंकि वहाँ का जल दोनों ओर खिंच जायगा।

इस प्रकार किसी एक की शक्ति से ऐसा होता है। परन्तु अमावस्या या पूर्णिमा के दिन एक ही स्थान पर दुहरी शक्तियाँ सूर्य्य और चन्द्रमा की लगती हैं अतः दो स्थान पर जोर का ज्वार और दो स्थानो पर जोर का भाटा होता है।

विशेषतः पृथ्वी अपने अक्ष पर २४ घंटे में घूमती है अतः उसके धरातल का प्रत्येक भाग क्रमागत वा चन्द्रमा के

---

*जल का यह नियम है कि वह सदैव (१) अपना धरातल सम रक्खेगा (२) जिस आकार के बर्तन में रक्खा जावे चाहे जितनी कठिनता पड़े उसी आकार का हो जाता है (३) नम्रता के कारण सदैव नीचे की ओर ढुलकता है (४) उसके हृदय में द्रावक-शक्ति अधिक है (५) हलके को सिर पर चढ़ाता है (६) भारी को डुबकी दिलाता है (७) चोट खाने पर चर चर नहीं होता (८) गर्मी लगे तो हवा पर उड़ता फिरे (९) सर्दी लगे तो पत्थर बन जाय (१०) उसका किनारा प्रत्येक पात्र से मिल जाता है।

सामने आता जावेगा। इसलिये ज्वार-भाटे की लहर भी २४ ही घण्टे में पृथ्वी के प्रत्येक स्थान पर घूम जावेगी।

इस बड़े ज्वार-भाटा को वृहद् ज्वार-भाटा और अङ्गरेजी में वृहद् ज्वार को "स्प्रिंगटाइड" और वृहद् भाटे को "नीप टाइड" कहते हैं।

यह प्रत्येक अमावस्या वा पूर्णिमा को हुआ करता है परन्तु शरद् पूनो अर्थात् क्वार की पूर्णिमा को जल का चढ़ाव उतार बहुत अधिक होता है।

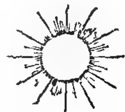
अब दूसरी दशा सुनिये—

ज्यों ज्यों सूर्य्य चन्द्रमा और पृथ्वी परस्पर एक सीध में होने से हटते जायंगे त्यों त्यों ज्वार-भाटे की शक्ति भी कम पड़ती जायगी। यहाँ तक कि सप्तमी वा अष्टमी को, पृथक् पृथक्—सूर्य्य का दो ज्वार-भाटा और चन्द्रमा का दो ज्वार-भाटा होगा।

परन्तु यह एक दूसरे के ठीक उल्टे स्थान पर होंगे अतः जहाँ चन्द्रमा का ज्वार होगा, वहाँ सूर्य का भाटा और जहाँ चन्द्रमा का भाटा होगा वहाँ सूर्य का ज्वार।







परन्तु सूर्य्य की शक्ति कम पड़ती है इसलिये सूर्य का

कम ज्वार+चन्द्रमा का अधिक भाटा=भाटा (देखो चित्र में पृथ्वी के दायें बायें अंश को।

चन्द्रमा का ज्वार+सूर्य का कम भाटा=ज्वार (देखो चित्र में पृथ्वी के ऊपर और नीचे के स्थान को)।

फल यह होगा कि चन्द्रमा का ज्वार भाटा प्रधान रहेगा।

यदि सूर्य-चन्द्रमा पृथ्वी के केन्द्र के साथ ९० अंश का कोण न बनाकर किसी और अंश का कोण बनायें तो उनके ज्वार-भाटे पृथक् पृथक् होंगे।

यदि पृथ्वी का समस्त धरातल जल-मय होता तो यह ज्वार भाटे का लहर निस्सन्देह पृथ्वी के गिर्द एक चौड़ी जल की पेटी के आकार में चक्कर लगाती। परन्तु स्थल के किनारों, समुद्रों के कहीं उथले और कहीं अधिक गहरेपन के कारण तथा समुद्र के अन्यान्य तरङ्गों और वायु के प्रबल प्रकोपादि के बाधक होने से इनकी लहर में अन्तर पड़ जाता है। इन्हीं कारणों से कम लम्बे चौड़े समुद्रों, खाड़ियों और जलडमरूमध्य के बीच में इसकी गति धीमी पड़ जाती है। कभी कभी तो ३ फीट की ऊँची लहर किसी नदी के सङ्गमस्थान पर चढ़ कर धीरे धीरे पानी की तङ्गी के कारण ५० फीट या १०० फीट तक ऊँची हो जाती है। इसके कारण इतना अधिक पानी हो जाता है कि जल की द्रुतगामिनी भीत बन जाती है जो नदी में प्रलय मचा देती है। इस प्रकार की लहर को 'बान' कहते हैं।

चन्द्रमा और सूर्य्य के आकर्षण में ७ और ३ का सम्बन्ध है इस कारण अमावस्या और पूर्णमासी के दिन ७+३=१० ज्वार-भाटे का परिणाम होगा परन्तु अर्द्ध चन्द्र की दशा में जब सूर्य्य और चन्द्र पृथक् पृथक् पृथ्वी के साथ ९० अंश का कोण बनायेंगे तो ७—३=४ की दशा होगी।

अभ्यासार्थ प्रश्न

(१) ज्वार, भाटा की परिभाषा लिखो।

(२) ज्वार-भाटे के क्या कारण हैं ?

(३) कब कब ज्वार, भाटा अधिक आता है और कब कब कम ?

(४) चन्द्रमा, का ज्वार-भाटा सूर्य्य के ज्वार-भाटे से क्यों अधिक प्रबल होता है ?

(५) केन्द्रोन्मुख शक्ति से ज्वार-भाटे पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

(६) केन्द्र परामुख शक्ति किसे कहते हैं ?

(७) पानी ही पर आकर्षण शक्तियों का क्यों प्रभाव पड़ता है ?

(८) सूर्य्य और चन्द्रमा की शक्तियों में क्या सम्बन्ध है ?

(९) चौथ को किस दशा का ज्वार-भाटा होगा ?

(१०) पानी का क्या स्वभाव है इसका प्रभाव ज्वार-भाटे पर क्या पड़ता है ?

(११) पृथ्वी के किन स्थानों पर ज्वार और किन स्थानों पर भाटा हुआ करता है ?

(१२) दो दो ज्वार-भाटा होने का क्या कारण है ?

(१३) शक्ति तो एक ओर लगती है फिर दूसरी ओर वही दशा क्यों हो जाती है ?

भूगोल विद्या

१-वायु-मण्डल

यह वायु-मण्डल जो पृथ्वी के गिर्द आवेष्टित है, यद्यपि दिखाई नहीं देता तथापि इसके अस्तित्व का ज्ञान हमको है। क्योंकि वायु द्वारा दबाव पैदा होता है* इसके चलने से धक्का लगता है और वायु ही के कारण संसार के प्राणी-मात्र जीवित हैं। वायु-मण्डल पृथ्वी के धरातल से लगभग २०० मील की ऊँचाई तक प्रति स्थान पर फैला हुआ है।

वायु में दो प्रकार के अंश मिले हुए हैं एक स्वच्छ तत्व दूसरे मिश्रित पदार्थ। स्वच्छ तत्वों में आक्सिजन, नेट्रजन, कार्बोनिक एसिड गैस और मिश्रित पदार्थों में जल के वाष्प,

*इसके दबाव के जानने की सुगम रीति यह है कि, मान लो कि पानी में एक 'काक' तैर रहा है, किसी बर्तन को उल्टा कर 'काक' पर रख दो। देखोगे कि बर्तन के अन्दर कोई वस्तु है जो काक को नीचे दबा रही है। यही वायु है। इसी आधार पर 'वायु मान' नामक यन्त्र बनाया गया है जिसका नाम अङ्ग्रेजी में "बैरोमीटर" है। बैरोमीटर को एक इटली निवासी विद्वान ने १७ वीं शताब्दी में बनाया था। यह एक काँच की नली में पारा भर कर बनाया जाता है। इसके अन्दर ३० इञ्च पारा होता है। इससे प्रत्यक्ष प्रमाण मिलता है कि वायु-मण्डल का आभार पारे के उस समुद्र के समान है जो पृथ्वी पर ३० इञ्च ऊँचा है। चूँकि पारा पानी से १३.६ गुना भारी है, इसलिये पानी, के समुद्र की गहराई $\frac{3}{12}$ × १३.६=३४ फीट के निकट होनी चाहिये। परन्तु पानी, वायु से ७७३ गुना भारी है अतः वायु मण्डल ७७३×३४=२६८२ फीट ऊँचा होना चाहिए था, जब कि समान रूप से प्रत्येक स्थान पर उसके परमाणु हों, परन्तु ऐसा नहीं है अपि वह इससे भी अधिक ऊँचा होगा।

कुछ गर्द और मिट्टी के कणादि हैं। मिश्रित पदार्थों का अंश उतना ही पाया जाता है जितना कि वह वायु वेग से उड़कर चले जाते हैं। ऊँचाई ज्यों ज्यों बढ़ती जाती है यह कम होते जाते हैं। इनसे बहुत काम निकलते हैं, जिनमें से एक यह भी है कि यह पानी के वाष्प को बढ़ा करके बादलों की दशा में उन्हें परिवर्तित करते हैं।

वायु-मण्डल सूर्य की उष्णता को सोख नहीं सकता अर्थात् सूर्य्य की किरनें वायु को गर्म नहीं करतीं, किन्तु उनके भीतर से पार होकर पृथ्वी तल पर आ पड़ती हैं। जब भूतल उत्तप्त हो जाता है तो वायु भी उसे स्पर्श करके गर्म हो जाता है। इस प्रकार नीचे का वायु उष्ण होता है। यद्यपि यह बात कुछ गड़बड़ सी जान पड़ती है कि एक ही वस्तु एक ओर से तो उष्णता को ग्रहण करे और दूसरी ओर से ऐसा न करे। चाहिये तो यह था कि ऊपर का वायु गर्म होता और नीचे का ठंडा क्योंकि ऊपर सूर्य्य निकट है न कि नीचे? परन्तु इस असमञ्जस का कारण यह है कि, स्वच्छ वायु उष्णता को जरा भी स्वीकार नहीं करता इसलिये ऊपर की वायु से गर्मी छन कर नीचे चली आती है परन्तु साथ ही इसके यह भी ज्ञात हुआ है कि सूर्य से जितनी उष्णता पृथ्वी की ओर आती है उसका चतुर्थांश वायु मण्डल में लीन हो जाता है। यदि ऐसा न होता तो पृथ्वी पर इतनी गर्मी पड़ती कि जीवों का रहना असम्भव हो जाता।

इस प्रकार हमें तीन बातें मालूम हुईं। (१) वायु-मण्डल ऊपर से उष्णता को ग्रहण नहीं करता। (२) वही वायु-मण्डल नीचे से गर्मी शोषण करता है (३) सूर्य्य से आई हुई बहुत सी गर्मी वायु-मण्डल में रह जाती है। यद्यपि यह बातें

एक दूसरे के प्रतिकूल हैं तथापि इनका कोई कारण होना चाहिये।

हमको यह बात अनुभव से मालूम हुई है कि शुष्कवायु की अपेक्षा तर वायु उष्णता को अधिक ग्रहण करता है। इसलिये जिस वायु में जल-कण और खाक के जर्रे अधिक होंगे वह उतना ही अधिक गर्मी को खींचेगा। इससे यह फल निकलता है कि गर्मी के सोखने वाले पदार्थ जल-वाष्प और मिट्टी के कण हैं। यदि इनका सम्मिश्रण वायु में न होता तो सूर्य्य की उष्णता कुल की कुल सीधे पृथ्वी पर चली आती और पृथ्वी से लग कर भी वायु-मण्डल गर्म न होता। इस सिद्धान्त से यह सिद्ध हो गया कि ज्यों ज्यों हम वायु-मण्डल के ऊपर चढ़ते जाते हैं सर्दी अधिक मालूम होती है। पहाड़ों पर इसलिये मैदान की अपेक्षा अधिक सर्दी पड़ती है क्योंकि वहां का वायु मण्डल अधिक स्वच्छ होता है। फिर जो पहाड़ जितना ही ऊँचा होता है वहां उतना ही अधिक शीत का अनुभव होता है। बड़ी ऊँची पर्वत श्रेणियां इसलिये सदैव हिमाच्छादित रहा करती हैं। धरातल की अपेक्षा पहाड़ों पर वायु, इसीलिये स्वच्छ और हलका होता है कि वहां पार्थिव-कण वायु में कम रह सकते हैं।

वायु में भार और दबाव दोनों पाये जाते हैं। यह तौला भी जा सकता है और प्रत्येक वस्तु को चारों ओर से दबाता भी है। वायु हलकी वस्तु अवश्य है परन्तु ऐसा नहीं कि इसमें वजन न हो। पृथ्वी तल पर इसका आभार प्रतिवर्ग इञ्च ७½ सेर के लगभग है। इस दशा में विचार कीजिये कि हमारे शरीर पर वायु का कितना बोझ पड़ता है? यदि भीतर से भी

इतना ही दवाव न पड़ता होता तो हमारा शरीर दब कर पची हो जाता। सरजान हर्शल ने गणित द्वारा जोड़ा है कि वायुमण्डल का बोझ छप्पन शङ्ख मन से कुछ अधिक है।

वायु का दबाव भी ऊपर की ओर कम होता जाता है और अठारह हजार फीट की ऊँचाई पर केवल आधा रह जाता है। ऊपर के वायु का दबाव विषुवत् रेखा के निकट सबसे अधिक होता है और वहाँ से ध्रुवों की ओर कम होता जाता है। इसका कारण यह है कि ज्यों ज्यों वायु ऊपर होता जाता है त्यों त्यों उसको अपने ऊपर कम भार सँभारना पड़ता है, इसलिये वायु फैल जाता है।

३½ मील की ऊँचाई पर 'वायु-मापक-यन्त्र'* में पारे की ऊँचाई ३० इञ्च के स्थान पर केवल १५ ही इञ्च रह जाती है। इससे स्पष्ट होता है कि वायु मण्डल का अर्द्धांश नीचे रह गया।

---

*वायु-मापक-यन्त्र या वायुमान् द्वारा पहाड़ों की ऊँचाई नापी जाती है। क्योंकि ज्यों ज्यों हम वायु में ऊपर को बढ़ते जाते हैं पारा घटता है। इसकी परीक्षा थर्मामीटर से की जाती है कि थर्मामीटर का पारा सर्दी पाकर अंश अंश नीचे उतरता जाता है। पानी का खौलाव थर्मामीटर में २१२ अंश पर है और बर्फ़ पिघलने का ३२ अंश पर। अब पारा २१२ अंश से ज्यों ज्यों नीचे उतरेगा सर्दी की बढ़ती मालूम होती जावेगी।

वायु के दबाव की घटती के कारण बेरोमीटर (वायु-मापक यन्त्र) का पारा घटता बढ़ता रहता है इसलिये मैदान में जब कभी बेरोमीटर का पारा ऊपर को बढ़े समझ लेना चाहिये कि वायु का दबाव अधिक होगा अर्थात् आँधी आने वाली है। इसी प्रकार घटने पर आकाश के स्वच्छ होने का पता चलता है। कई प्रकार के कीड़े मकोड़े और पशु-पक्षी भी ऐसे हैं जो थर्मामीटर और बेरोमीटर का काम करते हैं।

१०½ मील की ऊँचाई पर पारा बैरोमीटर में केवल ३½ इञ्च ऊँचा रहता है जिससे ऊपर केवल ½अंश और वायु-मण्डल का पता चलता है। वास्तव मे ऊँचाई ज्यों ज्यो बढ़ती जावेगी वायु हलका होता जायगा। परन्तु ऐसी ऊँचाई कोई नहीं है जहाँ वायु का कुछ पता न हो। वास्तव में ५ या ६ मील की ऊँचाई पर वायु इतना शीतल और हल्का होता है कि वहाँ मनुष्य का जीवित रहना कठिन हो जाता है।

पहाड़ की अधिक ऊँचाई पर चढने अथवा गुब्बारे या वायु-यान द्वारा वायु-मण्डल मे ऊपर निकल जाने पर प्राणियों को बड़ी कठिनता होती है क्योंकि वहाँ की सरदी असह्य हो जाती है। दूसरे वायु-मण्डल के हलका होने के कारण शरीर के भीतर के वायु का दबाव बाहर के वायु पर पड़ता है जिसको वह सँभाल नहीं सकता इसलिये प्राणामात्र का शरीर टूटने लगता है नक्सीर फूट जाती है, धमनियों से रुधिर गिरने लगता है, सिर मे चक्कर आने लगता है और सारा शरीर शीत के कारण ठिठुर जाता है।

सूर्य की गर्मी के कारण, वायु मण्डल मे एक और भी प्रभाव पडता है। उष्णता से वायु फैलता रहता है और वायु के फैलने से उसमें गति-विधि हो जाती है। सारे पिंड चाहे वह ठोस हों या द्रव, गर्म हो जाने पर फैलते हैं और फैल कर अधिक स्थान घेरते हैं। इस कारण यदि एक पदार्थ के दो समान पिंड लिये जाँय, जिनमें से एक गर्म हो और दूसरा ठंढा, तो गर्म ठढे की अपेक्षा हलका होगा। यदि पिंड के अणु स्वतन्त्रता से घूम फिर सकें जैसे गैसों के, तो हल्का पिंड भारी पिंड के ऊपर चला जायगा, जैसे काक जो पानी से

हल्का है, बराबर उतराता है। इसी सिद्धान्त पर हैड्रोजन
जैसी हल्की गैस के भर देने से गुब्बारा वायु मण्डल में ऊँचा
होता जाता है।

वायु-मण्डल भी इसी नियम का नियामक है। यह गर्मी
पाकर फैलता है और फैलने से उसमें गति आ जाती है। इस
प्रकार वायु संचालन क्रिया होने लगती है।

वायु-मण्डल स्थिर नहीं है। उसमे कई प्रकार की गति पाई
जाती है। उन गतियों की दो दशाएँ होती हैं एक साधारण गति
दूसरे विशेष सचार।

यद्यपि वायु दिखाई नहीं देता और इसी कारण इसकी
गति विधि को भी हम नहीं देख सकते तथापि शीतल मन्द
सुगन्धित वायु जब चलता है तो प्राणी मात्र को उसका अनुभव हो
जाता है और वह आनन्द से आनन्दित हो जाते हैं। इसी प्रकार
आँधी के आने पर गाँव घर मे धूल भर जाती है, पेड़ उखड़ कर
धराशायी हो जाते हैं, मकानों के शीशे चकनाचूर हो जाते हैं
और भूला भटका कमजोर बटोही मार्ग से पतित होकर, वायु
वेग में कहीं से कहीं चला जाता है। जब बगूला आता है तो
धूलगर्द का एक लम्बा सा स्तम्भ आकाश मे चलता-फिरता
दिखाई देता है। वायु की गति में आने से बादल भी आकाश में
दिखाई देते हैं, नहीं तो उन्हें यहां आने की क्या आवश्यकता।

अब प्रश्न यह होगा कि फिर वायु क्यों चलता है? सुनिये।
जैसा कि हम पहले बता चुके हैं पृथ्वी से स्पर्श करके वायु
उष्ण हो जाता है, फिर उष्ण-वायु ऊपर उठता है और उसके
स्थान पर सर्द मुकामों से, शीतल वायु चला आता है और वह

वायु में कई प्रकार की गतियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। इन गतियों पर, पृथ्वी के अक्षभ्रमण क्रिया का भी प्रभाव पड़ता है। जो स्थान विषुवत् रेखा पर हैं वह १००० मील से अधिक फी घण्टे के हिसाब से चलते हैं। जो स्थान त्रिपुवत् रेखा से उत्तर या दक्षिण की ओर हैं वह कम तेजी से घूमते हैं*. इसलिये चलने वाली हवा पर, इसका यह प्रभाव पड़ता है कि उनकी चाल कुछ पश्चिम की ओर झुक जाती है और यह भी प्रत्यक्ष है कि जो वायु पृथ्वी के साथ चलता है उसकी गति बढ़ जाती है और जो पृथ्वी की चाल के प्रतिकूल दशा में चलता है उसकी गति घट जाती है।

वायु मे गति-विधि आने के इतने कारण हैं (१) गर्मी सर्दी का भाव (२) पृथ्वी को अपने अक्ष पर घूमने और (३) वायु-मण्डल विभिन्न प्रकार के शीतोष्ण स्थल। इस प्रकार वायु के प्रधान तीन गति हैं—

(१) विषुवत् रेखा के निकट वर्ती स्थानो का वायु, ध्रुवों के समीप वाले वायु से अधिक उष्ण होता है अत वायु मण्डल के निचले अंश की हवायें विषुवत् रेखा की ओर, और ऊपरी भाग में विषुवत् रेखा की ओर से ध्रुवों की ओर चला करती हैं। उन्हें "स्थिरदिशावाहकवायु" कहते हैं।

(२) स्थल और समुद्र समान शीतोष्णवाहक नहीं होते इस लिये जिधर गर्मी अधिक होती है वहाँ की हवा ऊपर से ठंढे देश की तरफ चलती है और ठंढे स्थान का वायु, वायु-मण्डल के निचले भाग से पृथ्वी के साथ गर्म स्थानों की ओर जाता है। इस प्रकार वर्ष में कुछ दिन तो समुद्र से वायु-स्थल की ओर

---

* कारण और विवरण पृष्ठ २७ में देखो।

और कुछ दिन स्थल का वायु समुद्र की ओर चला करता है इसे मौसमी हवायें कहते हैं।

(३) यह दशा बहुत ही कम देखने में आती है कि किस देश में सभी स्थानों पर समानांशी शीतोष्ण हो, कोई न कोई कारण अवश्य ऐसा पड़ जाता है। जिससे कहीं गर्मी अधिक और कहीं सर्दी अधिक पड़ जाय। इसलिये वायु मण्डल के निचले भाग में अस्थिर रूप से वायु का गमनागमन हो जाता है।

स्थिर-दिशागामी-वायु का मुख्य स्थान विपुवत् रेखा के निकटवर्ती स्थान है और पृथ्वी की दैनिक गति के कारण कुछ उसकी दशा तिरछी पड जाती है और प्राय वह एक ही दिशा में चला करती है, इसलिये जहाजवालों को जहाजरानी में उससे बडी सुगमता होती है अत इस वायु का नाम करण संस्कार गुण कर्म स्वभावानुरूप 'व्यापारिक-वायु' किया गया था। इसके गमन पथ का दो दिशाओं की ओर झुकाव है। जिसके अनुसार उत्तर पूर्वी और दक्षिण पूर्वी व्यापारिक वायु के नाम से यह पुकारा जाता है। यह हवायें विपुवत् रेखा से दोनो ओर—उत्तर दक्षिण के २५ पचीस अंश तक बहा करती हैं क्योंकि सूर्य्य की किरणें इन्हीं स्थानों में प्राय ऊर्ध्व रूप पड़ा करती हैं जिनके कारण यह गर्मी अधिक पड़ती है।

व्यापारिक वायु विपुवत् रेखा के निकटवर्ती कटिबन्ध* में

---

* पृथ्वी में गर्मी सर्दी के हिसाब से ५ भाग माने जाते हैं। विपुवत् रेखा के पास जहाँ गर्मी अधिक पडती है उस भूभाग को (१) उष्ण कटिबन्ध। उष्ण कटिबन्ध के उत्तर (२) उत्तरी समशीतोष्ण कटिबन्ध और (३) दक्षिण में दक्षिणी समशीतोष्ण कटिबन्ध, तथा दोनों ध्रुवों का निकटवर्ती स्थान (४) उत्तरी शीत कटिबन्ध और (५) दक्षिणी शीत कटिबन्ध कहा जाता है। जल वायु के प्रकरण में इसका सविस्तार वर्णन किया जायगा।

चला करता है अत उसका स्थान भरने के लिए और हवाओं का उस कटिबन्ध से निकलना आवश्यक है। इसलिये वायु-मण्डल के ऊपरी भाग का वायु विषुवत् रेखा से ध्रुवों की ओर जाता है। इस प्रकार वायु मण्डल के निचले भाग में व्यापारिक वायु के प्रतिकूल वायु सचार होता है जो पृथ्वी की दैनिक गति के कारण कुछ उत्तर, दक्षिण को झुक जाता है। अत इसे व्यापारिक-वायु का प्रतिद्वन्दी वायु कहना चाहिये। परन्तु इससे भी वही लाभ है, जो उससे। अत इसके दोनो ओर झुकने के कारण उत्तरी गोलार्द्ध में दक्षिण-पश्चिम से और दक्षिणी गोलार्द्ध में उत्तर पश्चिम से वायु चलते हैं। वस्तुत दक्षिणी गोलार्द्ध में उत्तरी गोलार्द्ध की अपेक्षा जल का भाग अधिक है अत दक्षिणी गोलार्द्ध में नियमानुसार इसकी गति है। इससे जहाजरानी में बड़ी मदद मिलती है अत उन लोगों ने इसका नाम "वीर पश्चिमीवायु" (Brave west wind) रक्खा है। इस वायु का गमन स्थान विषुवत् रेखा से ४० और ५० अंश दक्षिण तक है और वहाँ यह इस वेग से चलता है कि सारा समुद्र तरङ्गों से भर जाता है। इसके कारण न्यूज़ीलैंड वाले अपने जहाज़ इतने द्रुतगामी बना लेते हैं कि वह स्टीम से चलने वाले जहाजों की प्रतिद्वन्दिता कर सकते हैं और सारे भूमण्डल की परिक्रमा भी कर आते हैं।

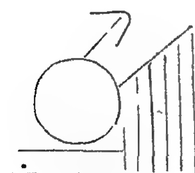
जहाँ यह सब कुछ है वहाँ विषुवत् रेखा पर एक ऐसा भी कटिबन्ध है जिसमें वायु का गमन पूर्णता रुद्ध रहता है। इसका नाम डोलड्रिमज़ है। मल्लाह लोग इस स्थान से बड़े भय-भीत रहा करते थे क्योंकि वायु के न चलने से उनका जहाज वहीं कई महीने पड़ा रहता था।

ध्रुवों पर भी डोलड्रिमज़ के कटिबन्ध हैं, जिन पर वायु का भार बहुत ही कम है। ✓

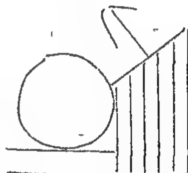
मौसमी वायु दो प्रकार का है। एक तो वह जो किसी मौसम मे चलता है जैसे "मानसून" दूसरे वह जो २४ घन्टे में अपनी दिशा बदल लेते हैं। जैसे सवेरे का शीतल वायु।

सवेरे के शीतल वायु के चलने का यह कारण है दिन में गर्मी पड़ने के कारण स्थल भाग उत्तप्त हो जाता है इसलिये स्थल का वायु उष्ण होकर ऊपर को चढ़ता है और उसके स्थान पर समुद्र की ओर का शीतल वायु आता है। जैसे चित्र (२) में दिखाया गया है कि रात के समय स्थल-भाग शीघ्र ठंढा पड़ जाता है और पास के समुद्र से अधिक शीतल हो जाता है इसलिये (१) समुद्र का वायु ऊपर को चढ़ता हुआ स्थल की ओर बढ़ता है और वहां से नीचे की ओर झुकता हुआ फिर समुद्र का मार्ग लेता है। जैसे—चित्र (१) मे दिखाया गया है।

[१]



[२]



साँझ सवेरे के वायु की दशा

यह वायु समुद्र के निकट प्राय उष्ण कटिबन्ध मे बड़े नियम से चलते हैं। किन्हीं किन्हीं देशो को इनसे बड़ा लाभ पहुँचता है

मानसून*

जो दशा २४ घन्टे में शीतल वायु की होती है वही दशा एक वर्ष के भीतर "मानसून" की होती है। स्थल भाग का अधिकांश उत्तरी सम शीतोष्ण कटिबन्ध में स्थित है। अत यहां गर्मियों में गर्मी की और सर्दी के मौसम में शीत की अधिकता होती है इसलिये गर्मी में समुद्र की ओर से वायु आता है और जाड़ों में समुद्र की ओर जाता है इसी का नाम मानसून है। मानसून अर्बी का शब्द "मौसम" का बिगड़ा हुआ अंग्रेजी संस्कार है इसी के कारण जल वर्षा होता है अत यह परमावश्यक वायु है, इस वायु का प्रभाव भारतवर्ष पर अधिकांश रूप से पड़ता है।

अस्थिर-वायु

उपरोक्त दशाओं के अतिरिक्त और सभी प्रकार के वायु परिवर्तित हुआ करते हैं। परन्तु इनमें भी इतनी स्थिरता अवश्य हुआ करती है, कि प्राय वह प्रत्येक वर्ष के एक विशेष समय में चला करते हैं। इनके चलने की यह रीति है कि या तो वह केन्द्र के भीतर की ओर चलते हैं अथवा केन्द्र के बहिर्मुख आते हैं। पहली दशा को बगूला या बवंडर कहते हैं और दूसरे को आंधी, अंधड़ या तूफान।

बगूले का गमनपथ चक्करदार होता है और ज्यों ज्यों उसका केन्द्र बदलता जाता है त्यो त्यों वह आगे बढ़ता जाता है। इसका क्षेत्र विभिन्न प्रकार का होता है। कोई कोई तो १०० मील व्यास का होता है और कोई २००० मील तक का। छोटा

---

* मानसून का अधिक बयान जल-वायु के अध्याय में लिखा गया है।

बघडर तो स्थल पर सभों ने देखा होगा । गर्द गुबार का चलता फिरता स्तम्भ, बगूला है। इसके भीतर की पड़ी हुई चीजें बहुत ऊपर चढ़ जाती हैं सन् १९०० ई० में मैंने देखा कि गोंडे के बन्दोबस्त कचहरी में कुछ पटवारी बाहर बैठे, कागज लिख रहे थे, उनका कागज वर्क वर्क था—जिल्दबन्दी न थी,—ज़ोर का बगूला आया और उनके कागज उसमें आ रहे। गोलाकार नीचे से ऊपर तक चक्कर लगाते हुए वह कागज चढ़ने। लगे देखने से मालूम होता था कि कागज का एक चक्कर खाता हुआ स्तम्भ ऊँचा हो रहा है। देखते देखते हजारों गज दूर निकल गया और न मालूम कितना ऊँचा हुआ होगा।

जिस समय दूसरे प्रकार का अस्थिर वायु जिसे तूफान कहते हैं, कहीं बङ्गाल की खाड़ी अथवा प्रशान्त महासागर में चीन और जापान के तटों से कुछ दूरी पर आ जाता है तो प्रलय मचा देता है। संसार के विभिन्न स्थानों में इनका अनेकानेक नाम है। यदि जहाज इनके फन्दे में आ गये तो उनका बचना कठिन हो जाता है परन्तु ईश्वर को धन्यवाद है कि यह तूफान बहुत दूर होता है और जहाज के कप्तान को 'बैरोमीटर' से उसकी खबर लग जाती है। फिर वह या तो अपने जहाज को रोक देता है अथवा उसकी मार से साफ बच कर दूसरी ओर निकल जाता है।

वायु मण्डल के और भी आश्चर्य जनक-चमत्कार हैं इसी के कारण आकाश नीला दिखाई देता है नहीं तो वह काला दिखाई देता। दिन को रंगीन और रात को श्वेत रङ्ग के धनुष का दर्शन इसी की बदौलत मनुष्य करता है। सन्ध्या और सवेरे अम्बर-डम्बर वायु मण्डल ही की बदौलत फूलता है। मरुभूमि में

मृग तृष्णा सरोवर और लहलहाते कुंज के झूठे दर्शन कराके असख्य प्राणियों का वध यही कराते हैं। समुद्र मे ऊपर टँगे हुये उल्टे जहाज और दुर्ग तथा सिपाही के भयानक दृश्य के नियामक आप ही हैं। सूर्य और चन्द्र का सायम् प्रात आकार यही बढ़ा दिया करते हैं। मैदानो मे चन्द्रमा पूर्णमासी के दिन, दिन दोपहर आप ही की कृपा से असमय में उदित होते हैं। समुद्र में कभी कभी जल का स्तम्भ सैकड़ों गज़ ऊँचा होकर इधर उधर चलने लगता है और उसके टूटने पर कभी कभी स्थल निकट होने के कारण समुद्र की मछलियाँ और समुद्री जीव जन्तु आकाश से स्थल पर गिरने लग जाते हैं, इस प्रकार आप दानवी खेल भी खेलते हैं। अत हे वायु शास्त्रों के देव! आपकी गति अगम है क्योंकि आप ही प्राण, उदान, समानादि नाम से धनञ्जय होकर हमारी रक्षा करते हैं।

२—मेघविद्या और हिमतुषारादि

प्राकृतिकभूगोल का जितना सम्बन्ध वायु-मण्डल से है उससे कहीं अधिक सम्बन्ध वायु-मण्डल के परिवर्तन से है। इन परिवर्तनो का मूल कारण सूर्य्य की उष्णता है अत इसका विवरण आवश्यक प्रतीत होता है।

यदि एक ईंट और पानी से भरा हुआ एक ग्लास, दोनों को आस पास रख दें और बिना रोक टोक उन पर सूर्य्य का प्रकाश पड़े तो थोड़ी देर में विदित हो जायगा कि पानी की अपेक्षा ईंट अधिक गर्म हो गई है और उसने ताप को शीघ्र खींचा है। फिर ग्लास में यह परिवर्तन होगा कि उसका पानी

धीरे धीरे अदृश्य होता जाता है। यद्यपि ईंट तप तो गई है परन्तु उसके आकार परिमाण में कोई अन्तर नहीं आया है और यहाँ ग्लास का जल कम होता जाता है अर्थात् उसका आकार परिमाण कम होता जाता है।

यदि ईंट और पानी को खूब गरम करके साये मे या किसी ठंडे स्थान में रख दें तो पानी की अपेक्षा ईंट शीघ्र ही ठढी हो जायगी। अर्थात् ईंट जितनी जल्द गर्म होती है उतनी ही शीघ्रता से वह ठढी भी होती है, परन्तु पानी देर में गर्म होता है और विलम्ब करके ठढा भी होता है।

जो वस्तुएँ शीघ्र गर्म होती और शीघ्र ही ठंढी पड़ जाती हैं उन्हें (Conductor) "चालक" कहते हैं जैसे मिट्टी लोहादि और जो वस्तु देर में गर्म होती है और देर ही में ठढी हो जाती है उसे (Non-Conductor) "अचालक" कहते हैं जैसे जल, कांच इत्यादि।

जिस प्रकार ग्लास का जल धीरे धीरे शुष्क होता है उसी प्रकार पृथ्वी के जिन जिन स्थानों पर जल है वहाँ भी जल अदृश्य होता रहता है। यह अदृश्यता क्या है इसे वाष्प बनना कहते हैं अर्थात् 'वाष्प-क्रिया' कहते हैं क्योंकि ग्लास का पानी वाष्प के आकार में अदृश्य होता रहता है। इस प्रकार बराबर भाप उठती और वायु-मण्डल मे एकत्रित होती रहती है। जब द्रव वस्तु गर्मी पाकर भाप की दशा में परिणत हो जाता है तो इस क्रिया को जैसे ऊपर बताया है वाष्प-क्रिया वा भाप का बनना कहते हैं। भाप बनने का मुख्य कारण गर्मी ही है। ज्यों ज्यों किसी वस्तु को उष्णता अधिक मिलेगी त्यों त्यो उस वस्तु के परमाणु भिन्न भिन्न होते जांयगे। भाप का बनाना सूर्य्य की उष्णता का एक प्रसिद्ध कार्य है।

सूर्य्य ताप के कारण वायु-मण्डल में एक और बड़ा कार्य्य होता है जिसे वायु-सचार कहते हैं।

यदि भाप को सर्दी पहुँचाई जाय तो वह थोड़ी देर मे फिर पानी के आकार मे परिवर्तित हो जायगा। इसके लिये यह परीक्षा कर सकते हो कि किसी ग्लास में बर्फ रख दो। अब देखोगे कि ग्लास के ऊपर कुछ जल कण एकत्रित हो गए और वह धीरे धीरे बढकर एक दूसरे से मिल कर बहने लगेंगे। क्या बर्फ पिघल कर ऊपर आ गई? नहीं, क्योंकि हम तौल कर जान सकते हैं कि बर्फ ज्यों की त्यो है। अत वह ग्लास के ऊपर जल कहाँ से आया? जैसा कि हमने पहिले बताया है कि वायु मडल में वाष्प का अश अवश्य रहता है इसलिये ग्लास के आस पास के वायु को जब ठढक पहुँचती है तो उसके भाप शीत पाकर जमने लगते हैं फिर वह अधिक भारी होने के कारण वायु में न टिक कर ग्लास पर आ लगते हैं और वहाँ अधिक शीतलता पाकर और गाढ़े हो जाते हैं। इससे निश्चय हुआ कि जिस प्रकार गर्मी पाकर जल का भाप बन जाता है, उसी प्रकार भाप को सर्दी लगने से वह फिर पानी के आकार मे लौट आता है। इसलिये वह नियम समझ लेना चाहिये कि ज्यों ज्यो अधिक गर्मी पहुँचेगी त्यो त्यो जल भाप की दशा मे परिणत होता जायगा और वह अदृश्य होता रहेगा और ज्यो ज्यो पानी को सर्दी मिलेगी त्यो त्यो वह भाप से पानी और पानी से भी गाढा होता जायगा।

पानी में गर्मी सर्दी की कमी बेशी के कारण कई परिवर्तन होते हैं। उसके तीन आकार हैं—(१) दृढ वा ठोस, जैसे बर्फ, ओला, पाला और तुषार। (२) द्रव जैसे पानी, राल (३) गैस वा वाष्पीय जैसे भाप।

पानी जिस प्रकार गर्मी से भाप बन जाता है उसी तरह से भाप सर्दी पाकर जमता है। इसे 'भाप का जमना' कहते हैं। यह दो क्रियाएं 'भाप का बनना' और 'भाप का जमना' बड़े महत्व की हैं।

जैसा कि अभी लिखा गया कि गर्मी के बढ़ने से भाप का बनना और भी शीघ्र शीघ्र होगा अर्थात् ज्यों ज्यों वायु अधिक उष्ण किया जाता है त्यों त्यों उसमें जल-कण के सामने का स्थान बढ़ता जाता है। यदि जल-कण से पूर्ण वायु को फिर गर्म किया जाय तो यह फैलेगा और फैलने के साथ ही साथ उसमें और भी भाप सोखने की गुंजायश निकल आयेगी। अब यदि इस वायु को ठढा कर दिया जाय तो उसमें से भीगे हुए स्पञ्ज के समान जल निकलेगा। अतः भाप बनने की विपरीत क्रिया को 'भाप का जमना' कह सकते हैं।

भाप जमने की क्रिया उसी समय हो सकती है जब कोई ठोस वस्तु मौजूद हो कि जिस पर भाप जम सके। इसलिये पृथ्वी के कण (धूल-राख) वाष्प के जमने मे बड़ी सहायता देते हैं।

सीत वा ओस

जैसा कि पहले बताया गया कि ग्लास के धरातल पर ठढ लगने से जल के कण वायु से पृथक हो जाते हैं, ठीक उसी तरह 'ओस' भी भाप के गाढ़े हो जाने से पैदा होती है। इसका कारण यह है कि जब वायु की उष्णता कम हो जाती है तो भाप के अणु जम जाते हैं। वायु में उष्णता की न्यूनता सूर्य्य के छिपने

र होती है और ज्यो ज्यो रात बढ़ती जाती है वायु में तापमान के अंश से उष्णता घटती हुई मालूम होती है। कुछ ही घन्टे में पृथ्वी इतनी ठंढी हो जाती है कि वायु को भी ठंढ कर देती है, इसलिये उसमें जल-कण के सोखने की शक्ति घट जाती है। अत जो वस्तुयें खुले मैदान में पड़ी होती हैं उन पर ओस के कण पड़े हुए दिखाई देते हैं। जैसा कि हम पहले बता आये हैं, कुछ चीजें ऐसी हैं जो शीघ्र ठंढी हो जाती हैं और कुछ देर में। इसलिये याद रक्खो, जो देर मे ठंढो होती हैं उन पर ओस देर मे पड़ती है और जो चीजें शीघ्र ठंढी पड़ जाती हैं उन पर ओस भी जल्द पड़ने लगती है। विशेषत घास से गर्मी शीघ्र निकल जाती है और वह चालाक है इसलिये जब ओस पड़ती है तो घास पर अवश्य दिखाई देती है, परन्तु मिट्टी, पत्थर और चट्टानों पर जो अचालक हैं, ओस बहुत कम दिखाई देती है।

जिस रात में बादल छाये होते हैं, ओस नहीं पड़ती। इसका कारण यह है कि ऐसी रात में पृथ्वी शीघ्र ठंढी नहीं होने पाती, यद्यपि उसकी उष्णता निकलती अवश्य है तथापि वह वायु में उतनी ही दूर तक जाती है कि जितनी ऊँचाई पर बादल हैं, फिर बादलों के कारण गर्मी रुक जाती है और वायु मे कैद होकर वह फिर पृथ्वी की ओर लौट आती है अत जल कण जमने नहीं पाते।

यही कारण है कि रात के समय पेड़ों के नीचे गर्मी होती है और खुले मैदान में उसकी अपेक्षा सर्दी, फिर दिन में पेड़ों के तले सर्दी और खुले मैदान मे गर्मी। क्योंकि रात को गर्मी और दिन को सर्दी पृथ्वी से निकल कर वायु मंडल में लीन हुआ करती है, जिसको वृक्ष अपने सघन पत्तों की छतरी मे रोक लेते हैं। इन

उदाहरणों से तात्पर्य्य यह निकला कि बादल अथवा वृक्ष
का काम देते हैं। चतुर लोग गर्मी के दिनों में इसी लिये रा
तो खुले मैदान और दिन में वृक्षों के तले रहते हैं तथापि जा
दिनों में गर्मी पाने के लिये रात में पेड़ों का सहारा
हैं।

यदि जाड़े के दिनों में सर्दी इस कड़ाके की हो कि इधर
बने और उधर तुरन्त जम जाय तो उसको पाला कहते
इस प्रकार ओस के स्थान पर भूतल, तुषार कण की चादर
हुए दिखाई देती हैं।

जब जल कण या भाप भूधरातल के निकट जम जाते
वह जैसी उनकी दशा होती है ओस अथवा पाला के ना
पुकारे जाते हैं परन्तु कभी कभी ऐसा भी होता है कि
अचानक मे ठढा हो जाता है और जल कण मिट्टी के कणों
सर्द होकर जम जाते हैं और बहुत छोटे छोटे पानी के बूं
बन जाते हैं फिर धीरे धीरे गिरते और चलते फिरते दिखाई
हैं। इनके कारण थोड़ी दूर की चीज़ें भी दिखाई नहीं देतीं
बादल सा पृथ्वी के निकट चारो ओर छाया हुआ मालूम
है, इसे कुहरा कहते हैं। यदि कुहरा किसी बड़े शहर में
और वहाँ धुवाँ भी हो तो धुवें और कुहरे के मिश्रण से
धुन्ध के नाम से पुकारा जाता है।

बादल

जब वायु गर्म हो जाता है तो वह ऊपर की ओर चढ़
और ऊपर चढ़ने में ठढा पड़ जाता है, क्योंकि यह प्रा

नियम है कि चाहे कोई काम किया जाय उसमें उष्णता का ह्रास अवश्य होगा। जब गर्म वायु ऊपर चढ़ता है तो पृथ्वी की आकर्षण-शक्ति उसे ऊपर जाने से रोकती है अत वायु को ऊपर चढ़ने में आकर्षण शक्ति के प्रतिकूल काम करना पड़ता है, इसलिये क्रम क्रम से वायु शीतल हो जाता है अन्त मे एक विशेष ऊँचाई पर पहुँच कर वायु में जल कण को भाप की दशा में रखने की शक्ति जाती रहेगी, तब जलकण मिट्टी के कणों से छू जाने पर जमने लग जायेंगे और कुहरा पैदा हो जायगा, जिसको हम देख सकते हैं। इस दिखाई देने वाले कुहरा को जो कि वायु मण्डल में, पृथ्वी धरातल से अधिक ऊँचाई पर होते हैं— बादल वा मेघ अथवा 'अभ्र' कहते हैं। बादल पर पृथ्वी की आकर्षण-शक्ति दूर पड़ने के कारण, अधिक जोर नहीं डाल सकती और नीचे से वायु उन्हें ऊपर उठाये रहता है अत वह नभमण्डल में लटके हुये दिखाई देते हैं। वायु-मण्डल में गति विधि होती है अत बादल जो वायु के आधार पर टिके रहते हैं चलते फिरते दिखाई देते हैं।

वायु के कई स्तर हैं। विभिन्न वायु के स्तरों में उत्ताप की भी न्यूनाधिकता है। सर्व्वोपेक्षा ऊपर के बादलो की अवस्था जैसी है सब से नीचे वाले बादल उस अवस्था के नहीं। वायु के मध्यमस्तर वाले मेघ की दशा भी विभिन्न प्रकार की है। जल वृष्टि इन्हीं तीन जातियों के मेघों से हो सकती है।

सब से ऊँचे रहने वाले बादलों का नाम अङ्गरेजी मे Cirius सिरस है। इसको हम 'कस मेघ' कह सकते हैं। पृथ्वी से प्राय यह १० मील की ऊँचाई पर उत्पन्न होते हैं। यह बादल सूत्राकार और विमलश्वेतवर्ण रेखा के समान दिखाई देते हैं

अङ्गरेजी में इसे 'अश्वपुच्छ' वा 'चँवर' कह कर पुकारते हैं। स्वच्छ आकाश मे जिस समय इनका दृश्य दिखाई देता है मालूम होता है कि किसी ने आकाश में सूत्र फैला दिये हैं। इनके दर्शन से प्राय. इनके अवर्षण ही का बोध होता है। बहुत दे८ तक यह एक ही आकार के प्राय निश्चल से दिखाई देते हैं।

यूरोपीय विद्वानों का मत है कि इस जाति के मेघ सूक्ष्म बर्फ द्वारा बने हैं। बहुत ऊँचाई पर होने के कारण यहाँ के वायु का उत्ताप बर्फ की अपेक्षा भी अधिक शीतल है, इसलिये नीचे के बादल इनसे विभिन्न प्रकार के हैं। यह सब नीचे क्यों नहीं आ पड़ते ? इसका समुचित उत्तर अभी तक आधुनिक विद्वानों ने नहीं दिया। किसी किसी का कथन है कि, किसी प्रकार के वैद्युतिकस्रोत से यह मेघ गठित हैं जिससे उन पर पार्थिव आकर्षण काम नहीं करती। इन बादलों से चन्द्रमा वा सूर्य्य के गिर्द जो मडल दिखाई देता है उसका रङ्ग मयूर के कण्ठ के रङ्ग जैसा होता है। जब कई दिन बाद वर्षा होने को होती है तो आकाश में इस भाँति के मेघ दिखाई देते हैं। नीचे वायु की गति यदि पूर्व को है तो यह मेघ कभी कभी वायु की गति के विपरीत, पश्चिम की ओर चलते दिखाई देते हैं। परन्तु दो तीन दिन के पीछे नीचे के वायु की गति भी उन्हीं के समान हो जाती है। यह निश्चय है कि इस प्रकार के बादल वर्षा नहीं करते यदि बरसते हैं तो शिला वृष्टि करते हैं।

एक प्रकार के बादल का नाम(Cumulus) क्यूम्यूलस है। मेघविद्या-विशारद इस जाति के बादल को "क्षितरि" बादल कहते हैं। वर्षाकाल में इस जति के मेघ प्राय नित्य ही दिखाई देते हैं। अश्वपुच्छ जातीय मेघ के नीचे ही वाले प्रस्तर में यह सूत्राकार

मेघ दिखाई देते हैं। यह भी उच्चजातीय मेघ हैं। कभी कभी सारा आकाश इसी प्रकार के टुकडे वाले बादलों से भरा हुआ दिखाई देता है जो धीरे धीरे चलते हुए मालूम होते हैं। वर्षाकाल में इन्हीं की गति अनुसार वर्षा होती है।

सीरोस्ट्रेटस (Cirro stratus) वा 'कसाउ मेघ । वायु के जिस स्तर में सिरोम्यूलस जातीय मेघ रहता है उसी के उच्च स्थल में एक प्रबल मेघ उत्पन्न होता है। दूर से ही देखकर इसे पहचान सकते हैं। एक छोटा सा टुकड़ा पहले आकाश में आता हुआ दिखाई देता है जो धीरे धीरे सारे आकाश को आच्छादित कर लेता है। यद्यपि नीचे के वायु का गमन विपरीत दिशा में होता है तथापि यह बादल अपनी दिशा पर चला ही जाता है। इससे वर्षा कम होती है, परन्तु जब यह बरसता है तो कई दिन की खबर लेता है।

मध्यम स्तर का पुष्कर मेघ (Comulus वा Cumulus) ग्रीष्म काल मे प्रतिदिन वायु-मण्डल के मध्यस्तर मे अर्थात् ई मील की ऊँचाई पर पर्वताकार शुभ्र-मुक्ता के समान जो मेघ दिखाई देता है उसी में विद्युत-प्रभाव और गर्जन शब्द होता है। वज्रपात और नाना प्रकार का वैद्युतिक चमत्कार इसी की अनुग्रह से दृष्टिगोचर होता है। सध्या सवेरे इसी जाति के बादल विचित्र रङ्ग धारण किया करते हैं। अन्धकारमयी रजनी मे इसी बादल से प्रकाश दिखाई पड़ जाता है।

विशेषत इस बादल में वैद्युतिक-शक्ति बड़ी प्रबलतर रहती है, अत जब कभी वेग के साथ यह ठीक ऊपर आ जाता है तो समस्त वैद्युतिक यन्त्र परिवर्तित हो जाते हैं। वायुमान यन्त्र मे भी अड़चन पड़ जाती है।

का और बड़े से बड़े की ३ इञ्च तक परिधि होती है। जब यह वायु-मण्डल मे भारी हो जाते हैं तो शिला-वृष्टि करते हैं। इसी का नाम ओला, बिनौला, पत्थर और शिला है। इसकी वर्षा से बड़ी हानि होती है।

मेघ के चमत्कार

जब दो प्रकार के बादल आपस में टकराते हैं तो उन में विद्युत्-शक्ति उत्पन्न हो जाती है, जिससे चमक और प्रकाश पैदा होते हैं, इसे बिजली का कौंदना या चपला की चमक कहते हैं। यह याद रहे विद्युत् शक्ति दो प्रकार की है एक को पाजीटिव और दूसरे को निगेटिव या धन, ऋण कह सकते हैं। जब इन दोनों प्रकार के बिजली वाले बादल आमने सामने आते हैं तो यह बड़े ज़ोर से दौड़ कर मिलते हैं, फिर मिल कर बड़े वेग से हट जाते हैं। इस प्रकार परस्पर की रगड़ से बिजली पैदा होती है और आने जाने से वायु मे जो धक्का लगता है उससे शब्द या घड़ घड़ाहट या गर्जन होता है। यद्यपि चपला की चमक और वायु सघर्षण साथ ही साथ होते हैं परन्तु विद्युत् की गति एक सिकंड में १८०,००० मील होने के कारण वह पहले दिखाई देती है और शब्द की गति ११४६ फीट एक सिकंड में है अत वह देर में सुनाई पड़ता है। इसलिये यदि बिजली चमके और गर्जन सुनाई न पड़े तो समझ लेना चाहिये कि वर्षा करने वाले बादल अभी दूर हैं। यदि ठीक ऊपर बिजली चमके और गर्जन देर में और मन्द सुनाई पड़े तो समझ लेना चाहिये कि उच्च प्रस्तर या उच्च जातीय मेघ में सघर्षण हो रहा है। सम्भव है कि शिला-वृष्टि वा अन्य कोई उपाधि हो।

ससार की प्रत्येक वस्तु में विद्युत् शक्ति है। जब ऊपर मेघ मे युत्-क्रिया हो जाती है तो यह शक्ति बड़े वेग से या ता चे की ओर चलती है अथवा नीचे के वस्तु को बिजली ऊपर ाने का प्रयत्न करती है। इस धमाचौकड़ी के कारण, शीघ्र शक्ति चालन द्वारा वस्तु के अवयव अस्तव्यस्त हो जाते हैं, इस दुर्घटना ा नाम वज्र पात है।

इन्द्र धनुष

सूर्य्य-रश्मियों में सात प्रकार के रङ्ग हैं। जब किसी ओर जल ण वायु-मण्डल में फैले होते हैं और ठीक सामने सूर्य्य प्रकाशमान् ाता है तो उसकी किरणें जल-कणो पर पड़ कर उसके रङ्गों का श्लेषण हो जाता है और बादलों की ऊँचाई नीचाई के अनुसार क रङ्गीन अर्द्ध वृत्त का दृश्य सामने आ जाता है। इसे इन्द्र धनुष हते हैं। सन्ध्या सबेरे यह दृश्य उत्तम होता है, परन्तु मध्यान्ह- ाल में ऐसा सयोग आने पर सूर्य्य के गिर्द मडल सा दिखाई ता है परन्तु मडल प्राय उज्ज्वल रङ्ग का होता है। इन्द्र धनुष ा दृश्य सूर्य्य के सामने पानी का फौवारा छोड़ कर जब चाहे ख लो। बिलौरी शीशी में देखने से भी प्रकाश का विश्लेषण ो कर यही सात रङ्ग दिखाई देते हैं।

यही मण्डल चन्द्र के चारो ओर रात को दिखाई देता है। रन्तु चन्द्रमा का इन्द्र-धनुष कम दिखाई देता है और उसका रङ्ग सिर्फ सफेद होता है।

यह मडल आकार में जितने छोटे होते हैं, वह उतने ही उच्च ाति के मेघों द्वारा बनते हैं। अत मण्डल जितना बड़ा होगा, तने ही शीघ्र वर्षा की सम्भावना है।

हर तहसील के सदर मुकामों और कहीं कहीं प्रसिद्ध नग में वर्षा जल-मापक यन्त्र रक्खा होता है। इससे पता चल जाता कि आज कितनी वर्षा हुई। इसका नाम "रेन गेज" है।

इन सब बातों पर यदि ध्यान पूर्वक विचार किया जाय स्पष्ट हो जाय कि वर्षा क्यों होती है? और कब होगी? वास्तव मेघ और वायु एक दूसरे से कार्य्य और कारण का सम्ब रखते हैं। वायु की दशा और गति-विधि पर वर्षा का होना निर्भर है

अभ्यासार्थ प्रश्न

(१) मेघ के प्रकार के हैं, उनमें परस्पर क्या सम्बन्ध है ?
(२) वायु और मेघ में क्या घनिष्ठता है और वह क्यों ?
(३) वर्षा का कारण बताओ।
(४) बादल और कुहरे में क्या अतर है ?
(५) ओला, पाला, ओस और कुहरे में पारस्परिक क्या अतर है ?
(६) तुषार, हिम और शिला-वृष्टि क्यों होती है कहाँ और कब होने सम्भावना है।
(७) मेघ के चमत्कार क्या हैं और वह क्यों ?
(८) वर्षा और आक्रमण के कारण लिखो।
(९) इन्द्र-धनुष क्यों होता है ?
(१०) हिम रेखा से क्या तात्पर्य है ?
(११) मण्डल छोटा बडा क्यों होता है और इसका क्या कारण है
(१२) उपल वृष्टि के कारण बताओ।
(१३) वर्षा के जल नापने के यन्त्र का हाल लिखो।
(१४) वर्षा अधिक क्यों कर होती है ?
(१५) बिजली की चमक और मेघ गर्जन क्यों होता है ?

भूगर्भ और भूतल

जिस पृथ्वी को आज हम मिट्टी का ढेला और दृढ़ स्वरूप में देख रहे हैं, यही रूप सदैव से नहीं है। पृथ्वी का पिंड कभी तरल पदार्थ था और धीरे धीरे उसका उत्ताप घटता गया जिससे उसकी ऊपरी परत (स्तर) ठंढी होकर, सुकड़ कर कड़ी पड़ती गई। पृथ्वी की उष्णता ज्यों ज्यों कम होती जाती है, उसका पिंड नित्य-प्रति कड़ा होता जाता है। इस क्रिया द्वारा भूगर्भ का अधिकांश वर्त्तमान रूप धारण करता गया है। यह सभी लोग जानते हैं कि जो वस्तुएँ गर्म करके पिघला कर जमाई जाती हैं उनमें परत नहीं होती, किन्तु उनके तोड़ने पर डले के डले निकलते हैं। इस प्रकार के आकार जो उत्ताप से बनते हैं उनको स्फटिक-मय या आग्नेय कहते हैं, जैसे कांचमणि, धातुएँ, सङ्गमरमर और ग्रेनाइट इत्यादि।

इनके अतिरिक्त कुछ खनिज पदार्थ ऐसे भी देखे गये हैं जिनमें परत पर परत होते हैं जैसे स्लेट का पत्थर बलुआ पत्थर और कई प्रकार की मिट्टी की परतें, जैसा कि पहले लिख चुके हैं, इस प्रकार की परतें तो आग्नेय हो नहीं सकतीं या यह उत्ताप द्वारा तो प्रस्तुत हुई नहीं, फिर इनके लिये अब कुछ और कारण ढूँढ़ना चाहिये ?

बरसात के दिनों में यदि नदी का गँदला पानी लेकर किसी शीशी में भर दिया जाय और शीशी को चुप चाप कुछ देर के लिये रख दिया जाय तो देखने से मालूम होगा कि शीशी के पेंदे

में एक तह (परत) जम रही है जो मिट्टी के कणों से बनती है। इस तह के ऊपर एक दूसरी तह भी बनती हुई देखी जायगी परन्तु इसमें वनस्पतियों और सड़े गले पदार्थों के अश अधिक होंगे। तात्पर्य यह कि भारी चीज़ नीचे बैठेगी फिर उससे हलकी उसके ऊपर और सब से हलका पदार्थ सब से ऊपर होगा, दूसरा उदाहरण नदियों का तट है। गङ्गा के किनारे जब कार्तिक वा अगहन के महीने में धार से जो कगारा कटता हुआ खड़ा होगा उसे ध्यान पूर्वक देखने से मालूम होगा कि उसमें कई परतें जमी हुई हैं। नीचे की परत में लमीली मिट्टी है, फिर काली मिट्टी की परत, उसके ऊपर बालुका-मिश्रित कुछ पदार्थों का स्तर और सब से ऊपर सड़ी गली घास फूस। यदि दूसरी बरसात में वह कगारा कटने के पूर्व ही बाढ़ से ढक जाय और उस पर फिर परत जमना आरम्भ हो जाय तो ऊपर के बोझ से दब कर वह खूब कड़ा पड़ जायगा। कभी कभी इन परतों के बीच में कङ्कड़ पत्थर वा हड्डी और पेड़ की डालियाँ भी पड़ जाती हैं जो दबाव के कारण वहीं रह जाती हैं और उसी स्थान पर अपनी जगह निकाल लेती हैं। इस प्रकार के स्तर को स्तर संहित, किट्टमय वा आंभस कहते हैं।

भूगर्भ विद्या में स्वाभाविक वस्तु के किसी समूह को, जो ठोस भूमि का एक खण्ड हो कत्तल वा चट्टान कहलाता है। इस प्रकार कत्तल दो प्रकार के हैं—एक आग्नेय वा ट्यामित चित्राकार, दूसरे ' किट्टमय ' वा ' जल द्वाराप्रस्तुतस्तर '। फारसी भाषा में इन्हीं कत्तलों को कत्तलआबी और कत्तलआतशी कहते हैं।

हमने अपनी आखों से सयुक्तप्रान्त की सन् १६१०—११ वाली प्रदर्शिनी में देखा था कि एक मधुमक्खी का छत्ता ज्यों का त्यों आकार रूप और रङ्ग मे छत्ता ही था परन्तु वह पथरा गया था। जिस तरह छत्ते मे अंडे होते हैं वहाँ भी थे, परन्तु वे भी पत्थर हो गये थे। मनुष्य का जबड़ा मसूड़े सहित पथराया हुआ था। एक नीम का छोटा वृक्ष जिसमें पत्ते लगे थे नस नस विलग थी, परन्तु पत्थर हो गया। यदि इसके लिये यह कहा जाय कि किसी ने पत्थर का बना दिया होगा तो यह बिलकुल ग़लत है। परन्तु विचार करने और अध्ययन करने से विदित होता है कि यह सब प्रकृति के खेल हैं, दैवी दुर्घटनाओं के कारण इनकी यह दशा हो गई। प्रयाग के सुजावन देव नामक स्थान को खोदते समय वहाँ से नीचे गड़ी हुई एक स्त्री ज्यों की त्यों निकली, मानो ओखली में मूसल अब चलाया चाहती है। मूसल उसके हाथ में था और ओखल नीचे रक्खी थी। बाबुल के खंडरात से भी ऐसे ही ऐसे दृश्य देखने में आये हैं। अभिप्राय यह कि भूडोल, भूकम्पन और ज्वालामुखी पहाड़ों की अग्निवर्षा से पृथ्वी के ऊपरी परत के पदार्थ भी आग्नेयकस्तल बन जाते हैं और जल-प्लावन, समुद्रों के रेले तथा पृथ्वी के धँस जाने आदि जैसी दैवी दुर्घटनाओं से भी किट्टमय स्तर बना करते हैं। परन्तु दबाव सब के लिये आवश्यकीय है।

इस प्रकार दो वस्तु ऐसी हैं जिनके प्रभाव से ठोस भूमि वर्त्तमान आकार मे परिणत हुई है, उनका नाम उत्ताप और जल (ठडक) है। कठिन आभार के कारण यह तहें दब कर लोहा-लाठ और पत्थर बन गई। स्लेट और बलुआ पत्थर इसी प्रकार

बना। गली सड़ी वनस्पतियाँ इस भाँति पिचक कर कोयला बन जाती हैं। सामुद्रिक जीवों के अंजर पजर, घोंघे और सीपों का ढेर लग जाने से खरिया मिट्टी और भुरभुरा पत्थर बनता है।

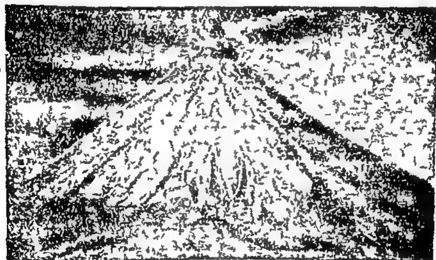
जैसा कि हम अभी बता चुके हैं पृथ्वी के पिंड मे अभी तक इन तहों के बनने की क्रिया चली जाती है और पृथ्वी का सख्त खोल बहुत मोटा नहीं है, जिसके नीचे पिघला हुआ द्रव पदार्थ अभी तक भरा हुआ है। यह देखा गया है कि जब किसी खान मे उतरते हैं तो उत्ताप बढ़ता हुआ दिखाई देता है अर्थात् प्रति ५० फीट की गहराई में तापमान मे एक अंश उष्णता बढ़ती जाती है। एक मील की गहराई तक जितनी परीक्षाएँ की गई हैं उनसे विदित होता है कि उष्णता की यह वृद्धि नियमानुसार है। इससे प्रत्यक्ष प्रमाण मिलता है कि उष्णता की यह वृद्धि इसी क्रम से होगी तो, पृथ्वी की ३० मील की गहराई पर मनुष्य की जानी सुनी सभी चीजें पिघल सकती हैं। यह ३० मील का मोटा दल पृथ्वी के ८०० मील वाले व्यास को सम्हालने के लिये सामर्थवान् नहीं हो सकता। परन्तु याद रखना चाहिये कि पृथ्वी के समस्त पिंड को सम्हालने वाला यह दल नहीं है किन्तु पृथ्वी की आकर्षण शक्ति और केन्द्रोन्मुख शक्ति है जो शेषनाग का काम कर रही है।

पृथ्वी के गर्भ में बड़ी गर्मी है

अब प्रश्न यह हो सकता है कि कैसे मालूम हो कि पृथ्वी के गर्भ में उत्ताप है ? जैसे हमने ऊपर बताया है कि खानों की गहराई के अनुसार गर्मी बढ़ती जाती है यह एक प्रमाण है, इसके अतिरिक्त भी कई प्रमाण और दिये जा सकते हैं। जैसे—

ज्वालामुखी पर्वत

पृथ्वी के अनेक स्थानों पर ऐसे छिद्र पाये गए हैं जिनके द्वारा भाप और पिघले हुए पत्थर निकला करते हैं अथवा यूँ कहो कि पृथ्वी के गर्भ का पिघला हुआ द्रव्य उबलता हुआ बाहर निकलता है, इसे अंग्रेज़ी में लावा कहते हैं । इन छिद्रों



ज्वालामुखी पर्वत

के आस पास जो वस्तुएँ उनमें निकलती हैं, बाहर एकत्रित होती रहती हैं और उनका आकार स्तूपाकार होता है, और वही कुछ दिनों में पहाड़ की भाँति ऊँचा हो जाता है । परन्तु छिद्र उसी का त्यों ऊपर बढ़ता जाता है क्योंकि प्रवाह के कारण उस पर कोई चीज रुक नहीं सकती । यद्यपि ज्वालामुखी

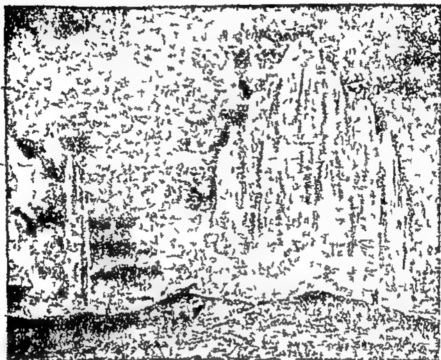
पहाड़—पर्वत नहीं है तथापि कुछ अंशों मे उनके सदृश हैं, अत. इनका हाल आगे लिखेंगे।

गेसर

दूसरा उदाहरण खौलते हुए पानी के स्रोत हैं। संसार उन स्थानो मे जहाँ ज्वालामुखी पर्वत हैं, गर्म पानी के उ हुए सोते अधिकता से पाये जाते हैं। कहीं कहीं खड्डों मे उष्ण जल मिलता है कि वह तापमान यन्त्र के खौलाव के अ पर पहुँचे होते हैं। इसका कारण यह है कि पृथ्वी के नीचे अग्नि विस्फोटन से या भूकम्पन के कारण पृथ्वी के दल में दरारें पड़ जाते हैं और यह दल फट या चिर जाते हैं। फिर यदि ऐसे दरारे समुद्र में हो गये तो समुद्र का बहुत सा पानी उस घुसता हुआ सीधे नीचे चला जाता है, परन्तु वहाँ गर्मी पाकर भाप बन जाती है, वही भाफ बड़े ज़ोर से फिर ऊपर आना चाहती है इस प्रकार वह भूमि तोड़ कर इधर उधर उबल पड़ती है इसे गेसर कहते हैं।

किसी किसी गेसर का जल तो २०० दो सौ गज तक ऊप उठता हुआ देखा गया है। न्यूजीलैंड में गेसर की बड़ी कृपा है ज़मीन में जरा सा गढ़ा खोद लिया फिर उसमें चावल की पोटली बाँधकर डाल दी। ५ मिनट में चावल पक कर भात हो गया। इस प्रकार के स्रोत जब पृथ्वी के किसी खनिज तह से होकर आते हैं तो उनका कुछ अंश अपने जल में घोल लेते हैं जिसके कारण उनका जल रोग-नाशक हो जता है। इस प्रकार के कोई कोई स्रोत फव्वारे के समान तो नहीं छूटते, परन्तु धरातल पर आन कर उबलने लगते हैं।

यङ्गाल का सीताकुण्ड इसी भांति के गेसरजल से बना



गेसर का दृश्य

हुआ है। नैनीताल में गन्धक का स्रोत भी ऐसा ही है जिसका जल बड़ा पाचक है।

पर्वत

अब तक पृथ्वी की उष्णता के सम्बन्ध में जिन चमत्कारों का हाल लिखा गया, उनकी क्रिया बड़ी तेजी से होती हुई जान

पड़ती है, परन्तु वह अधिक काल तक स्थायी रूप से नहीं रहती और उनका स्थान भी संकुचित और निर्धारित है। अब पृथ्वी के सिकुड़ने से जो जो क्रियायें होती हैं उनका हाल लिखा जाता है। सबसे उपर्युक्त और स्थायी दृश्य इस क्रिया का पहाड़ ही जाज्वल्यमान् उदाहरण है।

प्रत्यक्ष प्रकट है कि पृथ्वी बाहर की ओर से दृढ़ और पथराती जा रही है। अधिक सरदी पाने के कारण वह सिकुड़ती भी रहती है परन्तु धरातल एक बार कड़ा होकर फिर कठिनता से अपना आकार बदलता है, फिर भी सिकुड़ने का कार्य्य बराबर चला जाता है, इसलिये जहाँ पर पृथ्वी का दल थोड़ा, कच्चा और पतला होता है वहाँ तहें और सिलवटें पड़ जाती हैं। इससे धरातल ऊँचा वा नीचा हो जाता है जिससे पर्वत शृंखलाएँ और घाटियाँ बनती जाती हैं। इस प्रकार की क्रिया, स्थल पर और जल के नीचे धरातल पर, सदैव हुआ करती है, परन्तु इस की गति बड़ी मन्द है जो एक मनुष्य अपनी आयु में प्रत्यक्ष नहीं कर सकता। फिर भी नार्वे देश के समुद्र-वासी १०० वर्ष में देखते हैं कि उनकी भूमि [illegible] तल से १ [illegible] उठती जाती है। इस प्रकार करे [illegible] त भाग [illegible] रती हैं।

देखते हैं कि पर [illegible] में [illegible] हैं।

[illegible] जो [illegible] सिमिट

[illegible] से [illegible] हैं।

[illegible]

(२) निद्रित जो कभी कभी भभक उठते हैं और (३) प्रशान्त जिनसे आग धुआँ और लावे मनुष्य की जानकारी में कभी नहीं निकले और न निकलने के लक्षण ही कुछ दिखाई देते हैं, परन्तु उनकी बनावट कहे देती है कि यह कैसे साधु हैं ?

तीसरे प्रकार के पर्वत ऐसे हैं जो तलस्थ चट्टानों से बन गये हैं। इन्हें तलोत्थि पहाड़ कह सकते हैं। इन तीन प्रकार के पहाड़ों में यही अन्त वाली जाति के पहाड़ बड़े महत्व के हैं, अतः इन्हीं का कुछ हाल लिखते हैं।

इस प्रकार के पहाड़ों की तलोद्भव-प्रकृति का खोज बड़ा ही आश्चर्य वर्द्धक है, क्योंकि जान पड़ा है कि इस प्रकार के पर्वत जैसे हिमालयादि किसी समय समुद्रीतल में गोते खा रहे थे क्योंकि हिमालय के १६५०० फीट की ऊँचाई पर भी ऐसी वस्तुएँ मिलती हैं, जो समुद्र तल के अतिरिक्त अन्य स्थान पर नहीं हो सकतीं।

इस प्रकार जब हिमालय के गौरीशंकर शिखर की ऊँचाई को देखते हैं और उसकी बनावट पर ध्यान करते हैं तो पृथ्वी के इतिहास पर विलक्षण दृष्टि पड़ जाती है। आज तक यह चोटी बढ़ रही है और इसका क्रम १०० वर्ष में केवल ¼ इञ्च से अधिक नहीं है। अत २९००२ फीट ऊँचा गौरीशंकर शिखर १००×३×२९००२×१२=११,६७,०७२०० वर्ष में धरातल से ऊपर बढ़ा। परन्तु जब यह विचार किया जाता है कि यह पर्वत केवल धरातल ही से नहीं बढ़ा है किन्तु समुद्र के तल से उन्नत हुआ है तो यह अङ्क और भी बढ़ जाते हैं। फिर वर्षा, हिम वृष्टि, वायु सचालनादि के प्रभावों का ध्यान रख कर

गणित करने से चुप ही रह जाना पड़ता है। अतः समझ लीजिये कि पृथ्वी खर्वों वर्ष से है और नहीं मालूम कब तक रहेगी। परन्तु 'ससार परिवर्तन शील है' इसमें कोई भी सन्देह नहीं।

पर्वतों पर जब जल वृष्टि होती है तो उनके दरारों में पानी भर जाता है जो नीचे नीचे दूर तक समतल धरातलों में चला आता है। इस प्रकार पृथ्वी के तल में मनुष्य की नस-नाड़ियों की भाँति जलस्रोत जारी हैं जो जमीन में कुआँ खोदने से जल देते हैं। ज्यों ज्यों गहराई तक खोदते हैं जलस्रोत प्रवल मिलते जाते हैं। स्थानान्तर में इसका व्यौरा लिखा है।

भूकम्पन

ज्वालामुखी पहाड़ों के उत्थान और पतन, तथा समुद्र में दरारों द्वारा जल के भूगर्भ तक पहुँच जाने और पृथ्वी के दल के अचानक सिकुड़ने से, पृथ्वी में एक प्रकार का कम्पन्न उत्पन्न होता है, इसे भूकम्पन या भूडोल कहते हैं। क्योंकि जब नीचे की गर्मी जोर बाँध कर ऊपर निकलना चाहती है और ऊपर आने का रास्ता उसे नहीं मिलता तो वह पथरीले दल पर धक्का लगती है जिस आघात के कारण पृथ्वी का ऊपरी दल कम्पित हो [illegible] नीचे [illegible] अधिकता के कारण कहीं से फ[illegible] से नीचे [illegible]

भूतल पर तत्काल ही बड़ा परिवर्तन हो जाता है। नगर के नगर हजारों फीट की गहराई मे धँस जाते हैं। जहाँ अभी थियेटर हाल था, चन्द मिनट में वहाँ लम्बी चौड़ी झील बन जाती है। जो स्थान समुद्र के नीचे थे, और मनुष्य की दृष्टि मे छिपे हुए थे अचानक सैकड़ो फीट पानी से ऊपर उठ जाते हैं, उनके वासी जलचर मर जाते हैं और उनकी ठठरियों पर कालान्तर में बड़े बड़े वृक्ष और सुहावने उपवन और भवन दृष्टिगोचर होने लगते हैं।

खनिज पदार्थ

संसार की सारी चीजें तत्वों मे बनी हुई हैं। इन तत्वों के मिश्रण से, आकाश, पाताल, अन्तरिक्ष, सोना-चाँदी, जल-वायु, पौधे और सूर्य चन्द्रमा आदि सभी की सृष्टि हुई है। पृथ्वी मे भी कई तत्वों का सम्मिश्रण है और इन मूल तत्वों में परिवर्तन तभी होता है जब उन पर उत्ताप या विद्युत् शक्ति का प्रभाव पड़े। भूगर्भ मे उत्ताप की अधिकता है अत इसके स्थान स्थान पर—अपने अनुकूल सोना चाँदी प्लैटीनम और रत्नादि की खानें हैं और भूगर्भ में उनकी खानें बन रही होंगी। ज्यों ज्यों भूगर्भ विद्या में जन साधारण उन्नति करते जायेंगे त्यो त्यों उन पर लक्ष्मी की कृपा बढ़ती जायगी। अभी तक मनुष्य की गति ४००० मील लम्बे मार्ग में केवल १ ही मील तक की है। इधर उन्नति करने के लिये उसे बड़ी सुविधा है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

(१) भूगर्भ विद्या किसे कहते हैं ?

(२) पृथ्वी की आयु कितनी है, कुछ प्रत्यक्ष उदाहरण द्वारा समझाओ ?

(३) ज्वालामुखी पर्वतों का हाल लिखो, यह कितने तरह का होता है

(४) भूकम्पन और ज्वालामुखी पर्वतों से पृथ्वी के आकारादि में क्या परिवर्तन होते हैं ?

(५) गेसर, पर्वत, कतल और स्रोतों के भेद बताओ ?

(६) धरातल ऊँचा नीचा क्यों है ?

(७) भूगर्भ में गर्मी है, यह कैसे जाना जाय ?

४—समुद्र और जल के अंश

पृथ्वी के धरातल का ७२ प्रतिशत अर्थात् ¾ अंश जल से आवृत्त है । यह जल संसार के सारे खाली गड्ढों में, प्र नियमित धरातल तक भरा हुआ है । इस धरातल को Sea-level कहते हैं । इसी समुद्री धरातल के आधार पर पृथ्वी की ऊँचाई और गहराई का अन्दाज़ा लगाया जाता है । भूगोल-विद्या में प्राय समुद्र के ऊपरी धरातल का ही बयान लिखा जाता है और उसकी गहराइयों का केवल इतना ही हाल लिख दिया जाता है जिनके कारण समुद्र के जल में गति-रोध उत्पन्न होता है ।

समुद्र की तह की साधारण शक्ल यह है कि, एक विस्तृत मैदान मानो पानी के नीचे आ गया है । जिस भाँति स्थल पर ऊँचे ऊँचे पहाड़ और गहरे गहरे खड्ढ होते हैं वैसे ही समुद्र में भी होते हैं । इन डूबे हुए पहाड़ो के सबसे ऊँचे शृंग, द्वीप हैं जो जल के ऊपर दिखाई देते हैं । बहुत से स्थानों पर चोटियों का ढलान इतना कम है कि समुद्र के अधिक ग

खड्ड प्रायः स्थल के समीप ही हैं। समुद्र की अधिक से अधिक गहराई ३०,००० फीट है जो कि संसार की सब से ऊँची पर्वत की चोटी से अधिक है। समुद्र की गहराई सामान्य रूपसे १२००० फीट, परन्तु स्थल पर पहाड़ों की ऊँचाई का परता २००० फीट से अधिक नहीं है।

समुद्रों के जो विभाग माने गये हैं उनका हाल आगे लिखा जायगा। परन्तु बड़े बड़े समुद्र से जो आकार और विस्तार में छोटे होते हैं उनको 'सागर' कहते हैं। सागर तीन प्रकार के होते हैं। भीतरी सागर, बन्द या आवद्ध सागर और प्राय आवद्ध या उपसागर। समुद्र का जल खारी होता है।

खारी जल का सबसे विस्तीर्ण भाग जो संसार को घेरे हुए सा मालूम होता है महासागर कहलाता है। प्राकृतिक रूप से इसको कोई सीमा नहीं होती। परन्तु भीतरी सागर चारो ओर स्थल से घिरे होते हैं। यदि इस प्रकार का सागर बहुत बड़ा न हुआ और जल भी खारी न हुआ तो उसे झील कहते हैं। परन्तु खारी पानी के ऐसे सागर किसी न किसी समय महा सागार से अवश्य मिले रहे होंगे।

आवद्ध सागर प्राय स्थल से घिरे होते हैं और उनका सम्बन्ध समुद्र के द्वारा केवल एक पतली और तङ्ग प्राकृतिक नहर द्वारा होता है। ऐसी नहरों को 'जलडमरूमध्य' कहते हैं। जलडमरूमध्य जहाँ दो समुद्रो को मिलाते हैं वहाँ वह दो स्थल के बड़े भागों को पृथक् भी करते हैं। जल डमरूमध्य की प्रतिकूलता रखने वाले को "स्थलडमरूमध्य" कहते हैं।

अर्थात् स्थल के ऐसे तङ्ग भाग द्वारा स्थल के दो बड़े भागों को मिलाते हैं और दो समुद्र पृथक् हो जाते हैं।

प्राय: आबद्ध समुद्र जिस प्रकार वह खुले तौर से समुद्र से मिले होते हैं उसी भाँति वह स्थल से घिरे होते हैं। इन्हीं को उपसागर वा खलीज वा खाड़ी भी कहते हैं। इनमें स्थल से आ कर नदियाँ गिरती हैं।

नित्यप्रति हम कुएँ वा नदी का पानी पीते हैं, परन्तु कभी कभी पुराने शहरों के एकाध कुएँ का जल ऐसा मिल जाता है जिसके पीने को जी नहीं चाहता। यह क्यों ? इसलिये कि उसका जल कुछ खारी होता है। परन्तु याद रक्खो इन खारी कुओं से भी अधिक खारी जल समुद्र का होता है। जिन लोगों को समुद्र में जाने का अवसर मिला है वह जानते हैं कि समुद्र का जल कितना खारी होता है। जिस जल को हम पीते हैं वह खारी नहीं कहलाता। परन्तु 'मीठे जल' का नाम लेने से लोग यह न समझ लें कि चीनी या गन्ने के रस के समान स्वादिष्ट जल मीठा जल कहलाता है। नहीं, यही साधारण जल जो नदियों में बहता है, झीलों में भरा है, वृष्टि से गिरता है, बर्फ गलने से बनता है अथवा कुएँ से निकलता वा स्रोतों से उबलता है, मीठा जल कहलाता है। स्वच्छ वा अमिश्रित प्राकृतिक दशा के जल को मीठा जल कहते हैं।

इसके प्रतिकूल समुद्र का जल स्वच्छ नहीं होता। उसमें भिन्न भिन्न प्रकार के खनिज पदार्थ मिले होते हैं जो धुल कर समुद्र के जल में बने रहते हैं। समुद्र के जल में ऐसे पदार्थों का प्रति १०० अंश में ३½ भाग घुल जाता है जिनका ¾ भाग नमक होता है जिसके कारण समुद्र का जल नमकीन स्वाद का होता है यह खारीपन नित्य प्रति बढ़ता ही जाता है, क्योंकि स्थल से

ऐसी चीजें नदियों के पानी में घुल कर समुद्र में सदैव आया करती हैं। और यहाँ समुद्र, का जल भाप बन कर कम होता जाता है परन्तु भाप के साथ ऐसे खनिज पदार्थ तो उड़ते नहीं अत इन पदार्थों की आमदनी तो समुद्र को है परन्तु इनका खर्च कुछ भी नहीं है फिर जो वस्तु रोज रोज, आवे और निकले कभी न, उसकी अधिकता तो अवश्यम्भावी है। यह बात दूसरी है कि, चाहे वह थोड़ी ही आवे।

समुद्र का जल इन खनिज पदार्थों के मिश्रण के कारण साधारण जल से भारी होता है इसलिये उसमें तैराने की शक्ति अधिक होती है। जिन लोगों ने समुद्र में स्नान किया है उन्हें हमारी बात की सत्यता भली प्रकार विदित हो जायगी। इसलिये समुद्र में तैरना सुगम है। मल्लाह लोग समुद्र के इस स्वभाव से अधिक लाभ उठाते हैं, अर्थात् वह अपने जहाजों को नदियों में माल से खूब भर लेते हैं जिनका नदियों में चलना दुस्तर होता है परन्तु ऐसे जहाज समुद्र में आते ही कुछ उभड़ आते हैं, क्योंकि समुद्र का जल भारी होता है, मानो "अर्क मितीश " या " आर्कैमिडीज " के सिद्धान्त से वह भरपूर लाभ उठाते हैं।

समुद्र के ऊपरी धरातल के उत्ताप का अंश कुछ नीचे तक के जल में समान रूप से रहता है, परन्तु एक नियमित गहराई के पश्चात् घटता जाता है। अर्थात् ज्यों ज्यों गहराई पड़ती जाती है जल की उष्णता कम होती जाती है अत समुद्र-धरातल से एक ही काम नहीं लेते हैं। हाँ जहाँ उसने नीचे के स्थान से दोनों ओर—ऊपर और नीचे को—उष्णता या उत्तापमान का अंश कम होता जाता है इसका भी हिसाब लगाते हैं।

किन्हीं किन्हीं उपसागरों के गहरे स्थान का जल अन्य समुद्र जल की अपेक्षा अधिक उष्ण होता है इसका यह कारण

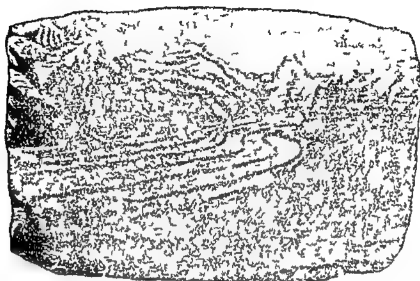
है कि उस पर स्थल के जल-वायु का प्रभाव पड़ता है और भूगर्भ की उष्णता वहाँ से बाहर वाले समुद्रों में जाने पाती।

महासागरों की निचली तह बहुत ठंडी होती है क्योंकि ध्रुवों और विषुवत् रेखा के बीच में कोई रोक टोक नहीं है जिससे भिन्न भिन्न सागरो का जल परस्पर मिल न सके। ध्रुवों की ओर से वहाँ का ठंडा पानी नीचे नीचे बहता हुआ विषुवत् रेखा की ओर चला आता है और विषुवत् रेखा का उष्ण जल जो ऊपर होता है धीरे धीरे बह कर ध्रुवों के समीप पहुँच जाता है।

उत्तरी और दक्षिणी शीत-कटिबन्ध के सागरों का जल जाड़े के दिनो मे सदैव जम जाया करता है, जिससे सैकड़ों मील तक बड़ी दलदार हिम जम जाती है। ध्रुवों के निकटवर्ती स्थलों पर भी सदैव बर्फ पड़ा करता है इसलिये वहाँ बर्फ का पहाड़ बन जाता है, जो दिन पर दिन अपने बोझ के कारण दब दब कर बर्फ की चट्टान पत्थर के समान कठिन होती जाती है। फिर वह चट्टानें बोझ के कारण ढालू भूमि की ओर—जो समुद्र की ओर होती है—ढुलुक जाती हैं इसलिये ऐसा दिखाई देता है कि मानों हिम का नद चलायमान हो रहा है जो समुद्र में गिरना चाहता है। इस प्रकार के हिम-पर्वतों को ' ग्लेशियर ' कहते हैं।

ऐसे ग्लेशियर पर्वतों को बर्फ से भी बनते हुए दिखाई देते हैं। चित्र में देखो—पर्वत से हिम नीचे की ओर ढुलकता हुआ दिखाई देता है। ज्यों ज्यों यह नीचे आता जाता है त्यों त्यों उष्णता की न्यूनता के कारण पिघलता जाता है और अन्त में यह जल

रूप में ढाल की ओर वह निकलता है जो मैदान में बहता हुआ



ग्लेशियर

नीचे की ओर चल कर पास के किसी समुद्र में गिर जाता है। इस प्रवाह को 'नदी' कहते हैं।

जब बर्फ पानी में तैरती है तो उसका ९/१० से ८/९ भाग तक पानी में छिपा रहता है और शेषांश पानी के ऊपर दिखाई देता है। शीत-कटिबन्ध के सागरों में बर्फ के ऐसे पर्वत सैकड़ों मील लम्बे और चार पांच सौ फीट से भी अधिक ऊँचे देखे गये हैं। इनके कारण कभी कभी रात में बड़ी दुर्घटनाएँ हो जाती हैं। सन् १९१२ ई० में संसार का सर्व श्रेष्ठ टिटानिक जहाज इसी तैरते हुए हिम-पर्वत से टकरा कर जलमग्न हुआ था और उसके साथ लगभग १८०० मनुष्य भी सदैव के लिये समुद्र में डुबकी लगा गये। इङ्गलैंड के प्रसिद्ध लेखक मिस्टर स्टेड भी जीवित न रह सके।

समुद्र में तीन प्रकार की गतियाँ हैं—(१) ज्वार-भाटा, जि
हाल खगोल विद्या के ६ वें अध्याय, पृष्ठ ४६—५१ में भली
से लिख दिया गया है। (२) लहर या तरङ्ग और (३) ध

तरङ्ग और धारा में बड़ा अन्तर है। तरङ्ग द्वारा जल
धरातल पर उठता और नीचे गिरता है, परन्तु आगे नहीं ब
लेकिन धारा या प्रवाह के उद्वेग से एक स्थान का
बह कर दूसरे स्थान पर चला जाता है। दूसरा अन्तर यह है
तरङ्गें केवल ऊपरी धरातल पर होती हैं परन्तु प्रवाह का
समुद्र की प्राय समस्त गहराई पर पड़ता है।

तरङ्गों के समझने के लिये एक रस्सी लो और उसे एक
पर पकड़ लो फिर जल्दी जल्दी ऊपर नीचे उसे हिलाओ,
क्रिया से देखोगे कि रस्सी का प्रत्येक भाग ऊपर-नीचे
रहता है परन्तु अपना स्थान नहीं बदलता। लहर के स
ऊँचे बिन्दु को चोटी और सब से निचले बिन्दु को तली
हैं। तरङ्ग की लम्बाई का अभिप्राय वह अवकाशान्तर है जो
चोटी से दूसरी चोटी तक या एक तली से दूसरी तली
नापा जाय।

आगे चलकर हम यह बतायेंगे कि वायु के विशेष दिशा
अधिक समय तक प्रवाहित होने के कारण समुद्र में धारा
चलती है जो आगे बढ़ती जाती है। परन्तु वायु के अ
समय तक चलने से तरङ्ग सम्बन्धित नहीं है। समुद्र की त
की विचित्र दशा है, किसी स्थान पर एक दिन तो पहाड़
समान ऊँची हो जाती हैं और दूसरे दिन उनकी शक्ति
पड़ जाती है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि वायु का रेला स
जल को आगे ले जाना चाहता है, परन्तु उसका कोई वश

गलता क्योंकि आगे का पानी उसे पीछे ढकेल देता है, हाँ यह
तना अवश्य कर पाता है कि पानी को ढकेल कर एक स्थान
र जमा कर देता है इससे समुद्र का धरातल कहीं ऊँचा और
कहीं नीचा हो जाता है, इसी दशा का नाम लहर वा तरङ्ग है।
कोई लहर बहुत छोटी होती है और कोई इतनी बडी कि ४० से
५० फीट तक ऊँची हो जाती है। जब कोई लहर समुद्र के तट
पर पहुँचती है तो समुद्र का धरातल पानी के चढाव और
उतार की गति रोध करता है। इस प्रकार तरङ्ग का पैर तो
पीछे रह जाता है और चोटी बल खाती हुई बडे जोर से आगे
बढ़ जाती है। ऐसी लहरो को "ब्रेकर्ज" अथवा समुद्र की
हिल्लोर कहते हैं। यदि छोटी नौका अभाग वश इसमें आ जाय
तो क्षण मात्र में उसका सर्वनाश हो जाय। यही लहरें तट को
धमाधम काटा करती हैं। अटलान्टिक महासागर में तरङ्गों का
वेग इतना प्रबल होता है कि १५०० मन भारी शिलाओं को कई
गज तक बहा ले जाता है।

समुद्र की धारा से जो जल एक ओर से दूसरी ओर
को बहता है उसको हम 'समुद्र की नदी' कह सकते हैं। इसी
को गल्फस्ट्रीम भी कहते हैं। नदियो की भांति इनके प्रवाह की भी
दिशा नियमित होती है। इनकी उत्पत्ति का मुख्य कारण
मौसमी वायु का सञ्चार है। अब तक लोग यही समझते थे कि
समुद्र-जल के विभिन्न अंश के उत्ताप से गर्म जल शीत-कटिबन्धों
की ओर और वहाँ का शीतल जल उष्ण कटिबन्ध की ओर आने
के कारण गल्फस्ट्रीम बनती है, परन्तु यह भ्रम है।

गल्फस्ट्रीम का प्रभाव देश के जलवायु पर अधिक पडा करता
है। जलवायु के अध्याय में इसका हाल लिखा जायगा।

भू-ज्ञान

१—प्रस्तावना

भूगोल-विद्या-विशारद एक विद्वान् का कथन है कि "भू-वृत्तान्त पाठ करने से प्रकृति की अति आश्चर्यमयी लीला का जितना परिचय मनुष्य को होता है और जिस प्रकार उसका हृदय आनन्द रस से गद्गद् हो जाता है उतना आनन्द और स्वाद किसी अन्य शास्त्र के अध्ययन से कदापि नहीं मिल सकता।" एक उत्तम वाष्पपिंड द्वारा समुद्रों की उत्पत्ति हुई, फिर क्रमानुसार समुद्रों से पर्वत मालाएँ विकसित हुईं, समुद्र से भाप उठी और धरातल पर वर्षा होने से पहाड़ों पर जलवृष्टि होने के कारण जल अपने स्वभावानुसार धीरे धीरे ज्यों ज्यों उसे नीचे की ओर मार्ग मिलता गया, पृथ्वी की आकर्षणशक्ति द्वारा खिंचता गया। यह जलमार्ग नदी के नाम से विख्यात हुआ। जहाँ की भूमि नीची थी वहाँ वर्षा का जल भर गया जो झील के नाम से प्रख्यात हुआ। जो स्थान जल से ऊँचा रहा स्थल कहलाया। इस प्रकार असंख्य नद नदी झील, अपरूप सौन्दर्य के आधार पर इस पृथ्वी का जन्म हुआ था। पृथ्वी के जब बचपन के दिन थे, जब भू-पृष्ठ पर किसी तरु-लता का चिह्न नहीं था, तब यहाँ किसी जीवजन्तु के रहने योग्य कोई स्थान भी नहीं था। फिर क्रमानुसार पृथ्वी पर बहुत से उद्भिज और कई प्रकार के अद्भुत जीव उत्पन्न हुए। धीरे धीरे उनके वंश की वृद्धि हुई। फिर धीरे धीरे नाना प्रकार के विचित्र नए नए तरुलताओं से पृथ्वी हरी हो गई। व

नूतन और विचित्र प्राणियों का आविर्भाव हुआ और कालान्तर पर हिमवृष्टि प्रलय द्वारा उनका नाश भी हो गया। इस प्रकार स्तर पर स्तर जमता गया। इस [illegible]ति करोड़ों वर्ष के जीवन मरण संग्राम के पश्चात् सृष्टिराजा मनुष्य ने पृथ्वी पर जन्म ग्रहण किया। शीत और ग्रीष्म के प्रचण्ड प्रभाव, दुर्दान्त हिंस्र-जन्तुओं के दुरात्म्य, आहार, वस्त्र और वासगृह के अभाव के कारण आदि अवस्था के मनुष्यों को न जाने कितना कष्ट भोगना पड़ा होगा, फिर न मालूम कितने उद्योग और परिश्रम के पश्चात् उसने प्रकृति पर विजयलाभ किया होगा, अथवा प्रकृति के नियमों का ज्ञान प्राप्त करके उसके अनुसार अपना कार्य्य आरम्भ किया होगा। इन बातों से बढ़ कर मनुष्य के लिये और कौन सी आश्चर्य्यमयी घटना हो सकती है जिससे उसका सम्बंध हो? भू-विज्ञान मानो मनुष्य वंश की प्रक्रिया है, फिर इसके जानने की उत्कण्ठा कौन न प्रकट करता होगा?

परन्तु हम भूगोल के समस्त चराचरों की कथा कैसे वर्णन कर सकते हैं? न जाने भूमण्डल में कितने बड़े बड़े देश हैं, महासमुद्रों का वारापार नहीं मिलता, नद, नदी, ह्रद और गिरिमालाओं का ठिकाना नहीं, फिर असंख्य जातियाँ पृथ्वी पर वास करती हैं, उनके अचार-विचार, वेष भाषा और जीवन-यात्रा के नियमों में न मालूम कितनी विभिन्नता है। इन्हीं सब विचित्र तथ्यों की तालिका के अध्ययन को हम 'भूगोल-शिक्षा' कहते हैं। जिस प्रकार हमको अपने शरीर के अवयवों का ज्ञान तो हो, पर हम यह न जानें कि उनका क्या क्या कार्य्य है, ठीक इसी प्रकार पृथ्वी के केवल स्थानों की तालिका जान लेने से काम नहीं चल सकता। हमारा लक्ष्य भूगोल पढ़ने का यह होना चाहिये कि जिससे अपनी जीवन-यात्रा सफल हो, अपनी जाति

गतिविधि सुधरे और मातृभूमि की उपयुक्त सेवा में भी ह्रास न हो।

पृथ्वी के मध्य मे क्या हम प्राण के कोई लक्षण नहीं देख सकते? एक साधारण पृथ्वी के चित्र की ओर आँख उठा कर देखो तो भला। उत्तर की ओर अधिक स्थल भाग पिंडाकार स्वरूप में दिखाई देगा, परन्तु दक्षिणी ध्रुव की ओर अधिकांश में जल भाग ही है। इस जल-स्थलमय पृथ्वी को चारों ओर से वायु-मण्डल ने आवृत कर रक्खा है। सूर्य के उत्ताप से यह जल और वायु उत्तप्त होते हैं। परन्तु सूर्य्य की गर्मी पृथ्वी के सब भागों पर समान रूप से नहीं पड़ती। विषुवत् रेखा के निकट सूर्य-रश्मियाँ लम्बरूप से अधिक समय तक पतित हुआ करती हैं। इसलिये पृथ्वी का वह भाग अधिक उत्तप्त रहता परन्तु दक्षिण और उत्तर में सूर्य्य की किरनें वक्र-भाव से जाती हैं। अत इस देश में शीत की प्रधानता है। इसका फल यह होता है कि मध्य भाग का वायु उत्तर और दक्षिण की ओर दौड़ता है। इस प्रकार उष्णता के विचित्र वितरण के कारण समस्त भूमण्डल के जल-वायु पर प्रभाव पड़ता है, जिससे स्थान स्थान के जीवजन्तु के आहार, वासस्थान पर तथा मनुष्य के रङ्ग रूप और भोजन छाजन में बड़ा अन्तर हुआ करता है।

सभी लोग जानते हैं कि एक घर में कई आदमी रहते हैं ऐसे कई घरों के समूह को गाँव कहते हैं। यदि गाँव बड़ा हुआ और उसमें व्यापार का भी कुछ प्रबन्ध रहा तो ऐसे गाँव को कस्बा कहते हैं। यदि कस्बा अधिक बड़ा हुआ और उसमें व्यापार सम्बन्धी सभी सुविधाओं के अतिरिक्त लड़कों के पढ़ने आदि का भी समुचित प्रबन्ध हो तथा राजकीय शासक और

प्रबन्धकर्त्ता भी रहता हो तो ऐसे कस्बे को नगर या शहर कहते हैं।

गाँव के आस पास कुछ खेत होते हैं, सिवाने में नाले भी बहते दिखाई देते हैं, ऐसे कई गाँव के समूह का नाम-किसी बड़े शहर के नाम से प्रख्यात होता है। ऐसे नाम धारी शहर को जिला कहते हैं। कई जिलों के समूह का नाम कमिश्नरी है। कई कमिश्नरियों के जुत्थ को प्रान्त कहते हैं। कई प्रान्तों से एक देश बनता है और पृथ्वी के जिस बड़े खंड में कई देश हों उसे महाद्वीप कहते हैं।

हम आज कल प्रयाग नगर में रहते हैं, यह एक जिला है। यह जिला इलाहाबाद की कमिश्नरी में है और यह कमिश्नरी संयुक्त-प्रान्त का एक भाग है। संयुक्त प्रान्त जैसे कई प्रान्तो द्वारा भारत वर्ष के कई विभाग हुए हैं। याद रक्खो जिस देश में हमारा वास है, उसका नाम भारतवर्ष, आर्य्यावर्त्त या हिन्दुस्तान है। हिन्दुस्तान एशिया महाद्वीप का एक प्राकृतिक भाग है।

यदि तुम्हारे सामने पृथ्वी का मानचित्र हो और उसकी ओर तुम ध्यान पूर्वक देखो तो तुम्हें विदित होगा कि भारतवर्ष के उत्तर एक विशाल स्थल पिंड पूर्व से पश्चिम की ओर विस्तृत होता गया है।

उसी भूखंड का भारतवर्ष एक छोटा सा अंश है। इस भू-भाग का साधारण नाम यूरेशिया है। यूरेशिया से मिला हुआ दक्षिण की ओर अफ्रिका का महाद्वीप है और इसी गोलार्द्ध में दक्षिण पूर्व की ओर नीचे आस्ट्रेलिया का द्वीप है जिसे हम महाद्वीप कह सकते हैं।

दूसरे गोलार्द्ध में अमेरिका महाद्वीप है। इसके दो भाग हैं एक उत्तरी अमेरिका और दूसरा दक्षिणी अमेरिका। इस प्रकार पाँचों महाद्वीप किसी न किसी प्रकार परस्पर मिले हुए हैं जैसा कि ग्लोब देखने से स्पष्ट हो जायगा।

परन्तु जितने भाग पर स्थल है उसका तिगुना भाग जल से आवेष्टित है। यूरेशिया के पूर्व और अमेरिका के पश्चिम वाले समुद्र का नाम प्रशान्त महासागर या पैसीफिक सागर है। अमेरिका के पूर्व तथा अफ्रिका और यूरेशिया के पश्चिम का सागर एटलाण्टिक महासागर कहलाता है। भारत वर्ष के दक्षिण का महासागर हिन्द-महासागर के नाम से प्रसिद्ध है। उत्तरी ध्रुव के पास का सागर उत्तरी सागर और दक्षिणी ध्रुव के निकट का सागर दक्षिणी सागर कहलाता है।

यूरेशिया के दो भाग माने जाते हैं—पश्चिमी भाग को यूरोप और पूर्वी भाग को एशिया कहते हैं। इस प्रकार पृथ्वी पर पाँच महासागर और पाँच ही महाद्वीप हैं—संक्षेप में इसका नक्शा नीचे दिया जाता है।

पृथ्वी का ५,२०,००,००० वर्ग मील स्थल है।

और १४,५५,००,००० वर्ग मील जल से घिरा है।

इस प्रकार पृथ्वी के समस्त धरातल का क्षेत्रफल—

१९,७५,००,००० वर्ग मील है।

महासागरों का विस्तार

ख्या	नाम	क्षेत्रफल वर्ग मील में	गहराई का औसत फेदम में
१	एटलान्टिक	५,४२,१०,०००	२०१०
२	पैसीफिक	७,६४,६०,०००	२१३०
३	हिन्द महासागर	३,०५,९०,०००	१८३०
४	उत्तरी सागर	१,२४,५५,०००	८५०
५	दक्षिणी सागर	८१,७५,५००	१०००

महाद्वीपों का विस्तार

सख्या	महाद्वीपो का नाम	क्षेत्रफल वर्ग मील	जन सख्या	घेरा मीलों मे
१	एशिया	१,७२,१२,६८०	८७,२०,००,०००	३५०००
२	यूरोप	३७,५९,९७०	४२,८०,००,०००	१९५००
३	अफ्रिका	१,१५,१४,७७०	१५,००,००,०००	१६०००
४	उत्तरी अमेरिका	७९,००,३५०	१२,००,००,०००	२४५००
५	दक्षिणी अमेरिका	६८,५४,१००	४,८०,००,०००	१४५००
६	आस्ट्रेलिया	२६,६४,०००	७०,००,०००	१००००

२—भूखण्ड और यूरेशिया

यूरेशिया के पश्चिम के भूभाग का नाम यूरोप है और पूर्व की ओर विस्तृत भाग को एशिया कहते हैं। इन दोनों भूखण्डों के बीच में विशेष रीति से कोई प्राकृतिक व्यवधान नहीं है।

इस विस्तृत महादेश के चारो ओर महासमुद्र और समुद्र उपस्थित हैं। उत्तर में उत्तरी महासागर, दक्षिण में भारत महासागर, लोहित (लाल) सागर और भूमध्य सागर, पूर्व में प्रशान्त महासागर और पश्चिम में एटलान्टिक महासागर हैं। भारत महासागर के पश्चिम में और यूरेशिया के दक्षिण पश्चिम एक दूसरा महादेश है जिसका नाम अफ्रिका है। लोहित सागर और भूमध्य सागर अफ्रिका को यूरेशिया से अलग करते हैं। पहले यह एक संकुचित भूमिखण्ड (स्थल-डमरूमध्य वा योजक) द्वारा एशिया से मिला था, जिसका नाम स्वेज था। परन्तु अब स्वेज योजक को काट कर नहर निकाल दी गई है। यूरोप से हमारे देश में सभी जहाज इसी नहर से होकर आते हैं और यहाँ से यूरोप को जाने वाले जहाजों को भी स्वेज से होकर गुजरना पड़ता है।

एशिया के पूर्व-दक्षिण में एक और स्थलपिंड दिखाई देता है, इसका नाम आस्ट्रेलिया है। इसके उत्तर में अनेक छोटे छोटे द्वीप हैं, इसलिये एशिया के साथ इसकी सन्निकटता है। यदि इन द्वीपपुञ्जों को एक कर दिया जाय तो आस्ट्रेलिया प्राय एशिया से मिल जाता हुआ दिखाई देगा।

ईसा की पन्द्रहवीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों तक सभ्यमानव जाति को यूरेशिया और अफ्रिका के अतिरिक्त किसी अन्य महादेश के अस्तित्व का पता नहीं था, परन्तु इसके बाद ही

सन् १४९२ ई० मे कोलम्बस ने एक और वृहदाकार स्थल पिंड का आविष्कार किया । यह भूखण्ड एशिया के और यूरोप के पश्चिम स्थित है। इसका नाम अमेरिका है। मानचित्र देखने से पता चलता है कि एशिया के उत्तर पूर्व एक उपद्वीप ने (प्राय जल-वेष्टित स्थल भाग) उत्तरी अमेरिका की ओर हाथी की सूँड की भाँति एक स्थल-भाग बढ़ा दिया है । इन दोनों महाद्वीपों के मध्य में केवल एक जल प्रणाली है जिसका नाम बेरिङ्ग है परन्तु अनुसन्धान से पता चलता है कि कभी एशिया और अमेरिका परस्पर मिले अवश्य थे।

पनामा योजक पर अमेरिका के भी दो भाग दिखाई देते हैं । स्वेज की भाँति पनामा को भी काट कर नहर बना दी गई है। इस प्रकार अटलान्टिक और पैसीफिक महासागर परस्पर मिल जाते हैं और उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका पृथक् हो जाते हैं।

यूरेशिया पूर्व पश्चिम मे फैला हुआ है, परन्तु अमेरिका उत्तर दक्षिण को ओर लम्बायमान है। जो महासागर यूरेशिया के पूर्व हैं वे अमेरिका के पश्चिम मे पड़ते हैं, इसी प्रकार अमेरिका के पूर्व का महासागर यूरेशिया के पश्चिम में है। यूरेशिया भूमण्डल के जिस स्थान पर है अमेरिका ठीक उसके सामने नीचे की ओर है, इन बातों पर विचार करने से स्पष्ट होता है कि अमेरिका में नूतनपन अवश्य है अत उसका नाम नई दुनिया है।

३—एशिया

एशिया का महाद्वीप पृथ्वी में सब से वृहत्तम देश है। यहाँ ही से प्राचीन समय में सभ्यता की उत्पत्ति हुई थी। बहुत

दिन हुए कि यूफ्रेटीस टाईग्रीस नदियों के तट पर वैवेलोनिया, असिरिया प्रभृति समृद्धिशाली जनपद विद्यमान थे। असिरिया की राजधानी निनेवा और प्राचीन वैवेलोनिया के ध्वसावशेष अद्यापि दर्शकों को स्तम्भित करते हैं। ईसामसीह ने एशिया ही में जन्म ग्रहण किया था। अरब देश के मक्का नामक स्थान में मुहम्मद साहिब पैदा हुए थे, उन्हीं के अमूल्य उपदेश को जगत् की मुसलमान-जाति ने ग्रहण किया है जिसके कारण ससार का नहीं मालूम कितना कल्याण साधित हुआ है। ईरान और भारत मे तो नहीं मालूम किस काल मे सुसभ्यता चरम सीमा को पहुँच गई थी। आर्य्य-सभ्यता आज तक सुसभ्यता की जड़ मानी जाती है। बुद्ध देव ने भारत ही में जन्म ग्रहण करके ससार के प्राणीमात्र का कल्याण किया है। चीन तो भगवान् जाने कब का पुराना देश है।

किन्तु एशिया केवल सुसभ्यता और धर्म ही की उत्पत्ति स्थल नहीं है, प्राकृतिक वैचित्र्य भी यहाँ के समान कहीं दिखाई नहीं देता। हिमालय के समान चिरतुषारमय गिरिमाला अभ्रभेदी पर्वत और कहाँ है? सब से उच्चशृग गौरीशकर ६ मील ऊँचा है, केवल कल्पना ही से उसकी भयङ्करता समझी जा सकती है? मध्य एशिया में जो तृणपूर्ण तरुहीन उच्च भूमि है जहाँ 'याक' नामक जानवर रहता है, उसके समान विस्तृत उच्च-भूमि और कहीं नहीं दिखाई देती है। भारतवर्ष का श्याम हिरन ससार के अलभ्य पदार्थों में है। मलायाद्वीप के समान अन्य कौन सा द्वीप ससार में शोभायमान है? पशु पक्षियो मे जितनी विभिन्नता यहाँ है उतनी और कहाँ? इसीलिये इसका भूगौलिक परिचय लाभ कराना प्रथम कर्तव्य है।

---

(१) सीमा लम्बाई चौड़ाई और विस्तार

यह महाद्वीप उत्तरी गोलार्द्ध में है और इसका सब से नीचे का सिरा रोमानियाँ अन्तरीप है। सब से ऊपर का भाग चिलिस्कन अन्तरीप है। इसकी सबसे दूर की पश्चिमी नोक बाब अन्तरीप है। इसी प्रकार पूर्वी नोक पूर्वी अन्तरीप है। बाबुल मन्दब* और स्वेज नहर के पास यह महाद्वीप अफ्रिका के अति निकट हो जाता है। इसी प्रकार दरेदानियाल और बासफोरस के मुहाने पर यह यूरोप से पृथक् होता है। बेरिङ्ग के मुहाने से एशिया अमेरिका से विलग होता है। पूर्व से पश्चिम तक की लम्बाई इसकी ६७०० मील है और इसी भाँति उत्तर से दक्षिण तक की चौड़ाई लगभग ५३०० मील है। लगभग स्थल-भाग का ⅓ एशिया से घिरा है, ग्लोब को देख कर इसकी सत्यता जानी जा सकती है।

एशिया का महाद्वीप आस्ट्रेलिया की भाँति चारो ओर से महासागरों से आवेष्ठित नहीं है। इसके उत्तर में उत्तरी महासागर है, दक्षिण में हिन्दमहासागर और पूर्व में पैसीफिक महासागर है जिसमे होकर अन्याय महाद्वीपों के साथ व्यापार होता है।

एशिया और यूरोप की सीमा पृथक् करने वाले ये हैं— उत्तर से—यूराल पहाड़, यूराल नदी, कस्पियन सागर और रूम

---

* बाबुलमन्दब में दो शब्द हैं باب बाब = दरवाजा और مندب मन्दब = रोना, चिल्लाना इसिये باب‌المندب का अर्थ है رونے کا در या रोदद्वार। रूम सागर में तूफान आने के कारण प्राय जहाज नष्ट हो जाते थे। इसलिये इस प्रणाली का यह नाम हुआ।

क्रातक

० १३० १५० १७० १९०

सागर

बेरिंग सागर

ओखटस्क सागर

लोपाटका अन्त०

क्यूराइल द्वीप

जापान सागर

फूजीयामा

पीला सागर

मंगोलिया का पठार

विशाल भित्ति

फारमोसा

फिलिप्पाइन द्वी० स०

प्रशान्त महासागर

बोर्नियो

न्यूगिनी

आस्ट्रेलिया

जावा

० १०

उत्तरी

यूरोप

४०

२०

यूराल

काला सागर

भूमध्य सागर

अनातूलिया का पठार

आर्मीनिया का पठार

कास्पियन सागर

अरल सागर

पामीर

फरात न.

दजला न.

ईरान का पठार

अरब का पठार

अरब सागर

दक्कन का पठार

१२०००′ मे अधिक
६,०००′ से १२००० तक
१५०० ६०००

ागर। इसी प्रकार लालसागर (Red Sea) [illegible]
थक् करता है।

(२) पर्वतमाला और [illegible]

पर्वत साधारणत भू-पृष्ठ से [illegible]
नकी ऊँचाई एकबारगी लम्बाकार नहीं [illegible]
। पृथ्वी से उभरते हैं, किसी [illegible]
े ४५ से अधिक का कोण नहीं बनाते, [illegible]
क यह कोण बहुत लम्बाकार नहीं है। [illegible]
ाकार धीरे धीरे वे आस पास [illegible]
है, फिर दूसरा उभार आरम्भ होता है, [illegible]
ाकार श्रेणियों पर श्रेणियाँ [illegible]
श्रेणियाँ प्राय १५०० मील लम्बी हैं।

किन्तु पर्वतमाला [illegible]
के यह एक ही आकार की है, [illegible]
मालाएँ उसमें होंगी कि [illegible]

यूरोपीय सोमा के [illegible] सागर
के मध्य में काकेसस की [illegible]
सागर के दक्षिण में [illegible]
फारस के उत्तर में [illegible]
पश्चिम में आर्मेनिया [illegible]
की मातृभूमि [illegible] और [illegible]
का देश ईरान [illegible]
पर्वत है। हिन्दूकुश [illegible] पामीर [illegible]
भूमि) है।

में होकर—इसकी प्रधान श्रेणी चली गई है। यहाँ गौरी शङ्कर (एवरेस्ट,) कांचनजंघा और धवलागिरि यह तीन श्रृंग सब से उच्च हैं। इसके दक्षिण में भी एक श्रेणी है जो क्षुद्र है जिस पर जङ्गलों की अधिकता है। हिमालय के उत्तर में भी एक श्रेणी है जो अति क्षुद्र और मरुमय है। हिमालय के उत्तर में नीचे की भूमि में वर्षा का अत्यन्त प्रादुर्भाव है, परन्तु फिर भी वृक्ष लतादि के उत्पन्न होने में कोई बाधा नहीं पड़ती। हिमालय की दक्षिण वाली श्रेणी का नाम शिवालक (सिवालिक) है।

इस समय पृथ्वी को जिस आकार में हम देख रहे हैं, पहिले पहल इसी स्वरूप में वह नहीं थी। परन्तु कब ऐसी न थी? उस समय का स्मरण भी हम नहीं कर सकते, इतना अतिकाल हो चुका है। युग युगान्तर के बहुपरिवर्त्तन के पश्चात् भूपृष्ठ ने यह आकार धारण किया है। इस समय हम देख रहे हैं कि महादेश के किसी स्थान पर दुरारोह पर्वत-माला है, कहीं शस्यश्यामल समतल प्रान्तर भूमि! क्या यूरेशिया, क्या अफ्रिका, क्या अमेरिका, सभी महादेशों में योजन पर योजन फलपुष्प आकीर्ण प्रान्त देखा जाता है। सभी देशों में आकाशस्पर्शी गिरिमालाएँ हैं, जो मेघराज के ऊपर तुषारमुकुट अपने मस्तक पर धारण करके सगर्व खड़ी हैं। सभी देशों में तृणाच्छादित समतल भूमि समुद्रवत् प्रसरित है। परन्तु एशिया महादेश में जो विचित्रताएँ दिखाई देती हैं वे अन्य कहीं दृष्टिगोचर नहीं होतीं। इनका कारण भी है।

भू प्रकृति के अनुसार साधारणतः हम एशिया के चार भाग मानते हैं। मध्य-भाग में पर्वतमाला और एक मालभूमि है। प्रथम भाग—मध्यवर्ती स्थान के पर्वतमाला और प्लेटो के उत्तर की ओर, कास्पियन हृद से उत्तरी महासागर तक हम एक

म्न भूमि देखते हैं। यह नीची भूमि यूरोप तक फैली चली ई है। वस्तुत यही विशाल समतल भूमि यूरोप के पश्चिमी ओर टलान्टिक महासागर तक चली गयी है। बीच मे केवल राल पर्वत बाधक है। एशिया के पश्चिम में एक समतल मि अतिशय प्रशस्त जो पूर्व मे सकीर्ण है, उपस्थित है। इसी ा अन्तर्भुक साइबेरिया है। इसका उत्तरी भाग तुषारमरु हलाता है। जाड़े के दिनो में साइबेरिया का उत्तरी भाग तुषार आवृत्त रहा करता है जो गर्मियो में पिघल कर जल रूप में रिणत हो जाता है, यहां तरुलताओं की उत्पत्ति ही नहीं होती। सका दक्षिण-पश्चिमी भाग जो नीचा है, बालुकामय मरुभूमि । यहां वर्षा नहीं होती और यहां का वायु वाष्पशून्य हता है।

द्वितीय भाग—पूर्वोल्लिखित पर्वत माला के दक्षिण और र्व की दिशा मे है। यह स्थान नदियों से परिपूर्ण और एक विस्तृत श्यामल समतल क्षेत्र के आकार में दिखाई देता है। इस ाग में मेसोपोटामिया (एराक अरब) और उत्तर में भारतव था दक्षिण में चीन है। कहा जाता है कि यही समतल भूमि सभ्यजाति का आदिम वास स्थान रहा होगा।

तृतीय भाग—एशिया के मध्यवर्ती पर्वतमाला और भूमि । पृथ्वी के बीच इस प्रकार वृहत् और उच्च भूमि दूसरी नहीं । इसका हाल पामीर और तिब्बत के प्लेटो के बयान में सवि-स्तर लिख दिया गया है।

चौथा भाग—एक बाहरी दक्षिण के ढालु पर दो प्लेटो हैं। इसमें अरब देश और भारतवर्ष का दक्षिणी भाग शामिल है। अरब के पश्चिम मे सामान्य बालुका भूमि है किन्तु इसके

में केवल बालुकामय मरुभूमि है। दक्षिण-पथ का हाल भी तुम्हें विदित है। इसके दोनों ओर—पूर्व और पश्चिम में—पर्वत-मालायें हैं और दक्षिण में नीलगिरि है। पूर्व की ओर यह भूमि निम्नतर है, अत नदियों का झुकाव उधर ही अधिक है और भारतवर्ष की प्रधान प्रधान और प्रायः समस्त नदियाँ बङ्गाल मे होकर बङ्गाल की खाड़ी मे गिरती हैं।

यूरोप के साथ इसकी तुलना नहीं की जा सकती क्योंकि हमने यूरोप की दशा का कभी कुछ वर्णन नहीं किया है।

परन्तु एक बात लिखने योग्य अवश्य है। एशिया के समस्त देश उत्तुग पर्वत वा उच्च भूमि वा सुवृहत् मरुभूमि द्वारा जिस प्रकार विच्छिन्न और परस्पर सरक्षित हैं उसी प्रकार कभी यह सुविधा के कारण भी थे, और अन्त मे भी इन्हीं द्वारा अध पतन होने की मम्भावना है।

प्रश्न

(१) पामीर से होकर निकलने वाली पर्वत श्रेणियों के नाम और उनके स्थान बताओ।

(२) मान चित्र में पर्वतों को दिखाओ और इससे एशिया के देशों पर जो प्रभाव पड़ा हो, बताओ।

(३) एशिया के प्लेटों के नाम बताओ और उनका वर्णन करो।

(४) हिमालय की लम्बाई चौडाई और श्रेणियाँ तथा शृगों के ना बताओ।

(५) एशिया के समतल क्षेत्रों के नाम और अवस्था का निर्देश करो।

(६) एशिया के दक्षिणस्थ मालभूमि का नाम बताओ।

(७) एशिया का साधारण भूपरिचय कराओ।

(८) पाँचों महाद्वीपों और महासागरों का नाम उनके विस्तार के अनु लिखो।

(३) नदी और उसके बेसिन

बरसात के दिनों में तुमने अपने गाँव ही में मार्ग के निकट [देख]ा होगा कि थोड़ा थोड़ा पानी एकत्रित होकर जिधर को [ढा]ल होता है, वह निकलता है। यदि साधारण रीति से तुम [इ]स प्रवाह के साथ ही साथ नीचे की ओर चलते जाओ तो [अन्]त मे तुम्हें मालूम होगा कि जल एकत्रित होकर किसी नाले [में] फिर नाले से नदी में पहुँच जाता है।

इस प्रकार से नदी भी बनती है। पर्वत पर जो वर्षा होती [है] उसका बहुत सा भाग वहाँ से बह कर ढाल की ओर चला [जा]ता है, शेष भाग पर्वत के भीतर से होकर छोटे छोटे झरनों [के] आकार में बाहर निकलता रहता है। इस प्रकार जल अपने [स्व]भावानुसार नीचे की ओर चल पड़ता है, जो स्रोत अधिक [बल]वान् होता है वही नदी बन जाता है।

पर्वत में दोनों ओर को ढलान हुआ करते हैं, इस प्रकार [पर्व]त का जल दो भागो में विभक्त हो जाता है। इस लिए [कभ]ी कभी जल को पर्वत की एक दिशा से घूम कर दूसरी [ओ]र आ जाना पडता है। हिमालय और आल्प्स के चित्र देखने [से] इस विषय का ज्ञान उत्तमता से हो सकता है। यद्यपि '[स]ाम्पू' हिमालय के उत्तर तिब्बत से निकलता है और उसका [स्थ]ान ठीक पीलीभीत के सामने हिमालय के उस पार है परन्तु [ज्यों] उसे ढाल मिलता गया वह पूर्व की ओर बढ़ता गया, [फि]र उसे पूर्व से पश्चिम को लौटना पड़ा और वहाँ से भूमि के [ढल]ान के अनुसार वह भारतवर्ष में बङ्गाल की खाड़ी में पतित [हुआ] है। बङ्गाल और आसाम में साम्पू का नाम "ब्रह्मपुत्र [नद]" है।

निचली भूमि में प्रतिदिशा के नाले या स्रोत आ कर को धीरे धीरे विस्तीर्ण करते हैं। इन छोटे छोटे धाराओं को उपनदी (Tributaries) कहते हैं। जिस स्थान से नदी प्रधान धारा या कई धारें प्रवाहित होती हैं जिसे हम नदी अपवाहिका (River-basin) कहते हैं। यदि हम किसी रे द्वारा नदी और उसकी सारी धाराओं को घेरे दें तो घेर समस्त देश का जल प्राय: उसी प्रधान नदी द्वारा बाहर ज हुआ दिखाई देगा।

हम यह देखते हैं कि इसी प्रकार एशिया के मध्य पर्वतमाला के दोनो पार्श्वों में में दो ढलान हैं। उत्तर के ढाल ओबी, यीनसी और लीना यह तीन प्रधान नदियाँ हैं। इन उद्गमस्थान उत्तराखण्ड की पर्वतमालाएँ हैं। इनका बे (अपवाहिक) कई हजार वर्गमील मे फैला हुआ है। पर इससे क्या हुआ? यह तो वर्ष के अधिकांश भाग मे तुषार आबद्ध रहा करती हैं एवम् जहाँ यह पतित होती हैं, अथ उत्तरी महासागर भी तुषारमय है।

एशिया के महादेश में अनेक स्थल ऐसे भी हैं जहाँ क वर्षा नहीं होती जिसमें उत्तरी प्लेटो प्रसिद्ध है, जो दक्षि पश्चिम से उत्तर-पूर्व पर्य्यन्त एक मरुभूमि के स्वरूप में फै हुआ है। अरब देश के दक्षिण से गोवी मरुभूमि तक यही द दिखाई देती है। इसलिये एशिया के मध्य में जितनी नदि हैं वह समुद्र तक नहीं पहुँच सकतीं, हाँ 'कास्पियन' अ 'अरल' नामक दो अत्यन्त गम्भीर शुष्कप्राय झीलों मे उनका ब खुचा जल पहुँच जाता है।

हिमालय और तिब्बत का प्लेटो बहुवृहत् नद नदियों जन्म-भूमि है। इसके उत्तर तो चीन का सपाट मैदान है अ

दक्षिण में भारतवर्ष। इन्हीं उभय दिशाओं में नदियों की बहुवृद्धि हुई है। चीन की ओर होयांगहो और इयांग सी-क्रियांग बहती हैं जो पीले सागर में गिरती हैं, दोनों का उद्गम स्थान चीन है। चीन की उत्तरी सीमा से अमूर नदी होती हुई उखटस्क सागर में पहुँचती हैं। भारतवर्ष की प्रधान नदियाँ सिन्धु गङ्गा और ब्रह्मपुत्र हिमालय से निकलती हैं। सिन्धु तो अरब सागर में और गङ्गा तथा ब्रह्मपुत्र बंगोपसागर में पतित होती हैं।

इनके अतिरिक्त इंडोचीन की मीकांग, साल्वीन और एरावती तथा मेसोपोटेमिया की समतल भूमि की यूफ्रेटिस (दजला), टाइग्रीज (फुरात) नदियाँ भी हैं। अन्य छोटी छोटी नदियाँ नक्शे से देखी जा सकती हैं और देश के वर्णन में उनका हाल दे दिया जायगा।

नदी के कार्य

हमने तुम्हें एशिया की नदियों और उनकी अनुवाहिकाओं का हाल बता दिया। अब कुछ नदियों के कार्य्य का विवरण बताना चाहते हैं। हम देखते हैं कि नदी की जन्मभूमि साधारणतः पर्वत उच्च स्थान हैं। नदी के जन्म का कारण भी हमें अवगत है। फिर भी हम तुम्हें वर्षाकाल की याद दिलाते हैं नालों और परनालों में जब बरसात का जल बहता है तो कैसा मैला और गंदला होता है, केवल यही नहीं, यदि तुम्हारे गाँव के पास कोई नदी हो और वहाँ जाकर उसके जल को देखो तो भी यही दशा दिखाई देगी। यह क्यों होता है? इसलिये कि नालों और परनालों का गंदला पानी नदियों में पहुँचता है

नदी को भी गँदला और मलिन कर देता है। फिर यही धीरे
क्रमागत समुद्र मे पहुँचता है। स्थान स्थान पर ज्यों ज्यों
के प्रवाह मे स्थिरता आती जाती है उसकी कीचड नीचे बै
जाती है जिससे नदियो मे तो डेलटा और समुद्रों मे छोटे
द्वीप बनते जाते हैं। इन डेलटाओं और द्वीपो की
बड़ी उर्वरा होती है अत यहाँ कृषि की उपज बड़ी उ
होती है।

जहाँ इनसे यह लाभ है वहाँ इनसे यह हानि भी है।
नए नए कगारे गिरते रहते हैं जिसके कारण बसी बसाई
लोप होती जाती है। मानों नदियाँ एक स्थान को उजाड
उसकी मिट्टी सुदूर ले जाकर फिर उसके द्वारा दूसरा
बसाती हैं—मुहम्मद तुगलक की भाँति दिल्ली से दौलताबाद
कार्य करती हैं।

कभी कभी जब जोर की बाढ़ आती है (जैसी लख
या प्रयाग में आई थी), तो यह नदियाँ बडा भयङ्कर रूप धा
कर लेती हैं, लाखो पशु बह जाते हैं, कृषि बरबाद हो जातं
गाँव के गाँव बह जाते हैं। जहाँ बाढ़ से यह हानि है वहाँ इ
कुछ लाभ भी है अर्थात् बाढ़ के द्वारा भूमि पर उपजाऊ मिट्टी
परत जम जाती है जिससे कई साल तक बिना खाद-पात
अच्छी फसल पैदा होती रहती है। सूखे और बञर स्थानों मे
तरायट पहुँच जाती है जिससे यहाँ के लता-वृक्षादि कुछ
के लिये फिर हरे भरे हो जाते हैं। ऊसर और रेहार भूमि की ख
मिट्टी बह जाती है।

पहाड़ों की चढ़ाई कितनी दुर्गम है? भला वहाँ का वृक्ष
मैदान में लाया जाय तो कितनी कठिनता पड़े? परन्तु पहाड़
लकड़ियाँ और देवदारु के बड़े बड़े लट्ठे भी पहाड़ी नदियों द्व

दान मे बहा लाए जाते हैं. किन्हीं किन्हीं नदियो की रेत में सोना भी निकलता है। गर्मी के दिनों में जब पानी कम मिलता है—पहाड़ो के तुषार का ठढा ठढा जल इसी के द्वारा मिल जाता है। नहरें काट कर अवर्षण काल में भी कृषि उत्पन्न की जाती है। यदि नदियाँ न होतीं तो वर्षा का जल यूँ ही पड़ा रहता और प्रत्येक स्थान में सील बनी रहती।

अभ्यासार्थ प्रश्न

(१) एशिया के उत्तरी ढाल की नदियों का नाम बताओ। वह किस ओर बहती हैं और क्यों ?

(२) चीन की समतल भूमि की नदियों के उद्गम और सद्म स्थान बताओ।

(३) मनूवाहिक (बेसिन) किसे कहते हैं। गङ्गानदी के बेसिन का निर्देश करो।

(४) एशिया की दक्षिण-वाहिनी नदियों का नाम लो। यह क्यों दक्षिण को बहती हैं।

(५) जो रेखा दो बेसिनों को पृथक् करे उसका नाम क्या है और यह नाम क्यों और किन कारणों से पड़ा (जल विभाजक)

(६) एशिया की नदियाँ इतनी बडी क्यों हैं सबसे बडी नदी जो एशिया में हो, नकशा देख कर उसका नाम बताओ।

(७) वह कौन सा स्थान है जहाँ से कई नदियाँ निकलती हैं परन्तु उन नदियों के सद्म स्थान में बड़ा अन्तर है। इस स्थान को कितने और किन किन बेसिनो का जल विभाजक कह सकते हैं। इन स्थान से कितने ढलान आरम्भ हैं ?

(४) एशिया के समुद्र-उपकुलादि

यदि ऐसा शरीर हो जो केवल मांस का एक लोथडा हो और हाथ पैर उसमें कुछ भी न हों तो इस शरीर से कोई ——

नहीं निकल सकता, केवल क्रमानुसार जहाँ पड़ा है—पड़ा रहेगा, न चल सकता है और न हिल डोल सकता है। यही नहीं कि वह चल फिर नहीं सकता, किन्तु वह कुछ कार्य भी सम्पादित नहीं कर सकता। ठीक इसी प्रकार यदि किसी महादेश के साथ उपद्वीप, द्वीप, सागर, किनारे आदि न हो तो वह भी मानो हस्त-पाद-रहित एक अपाहिज जन्तु का केवल पिंडमात्र है। फिर अङ्गहीन महादेश ही किस काम का ?

पृथ्वी निरी मिट्टी ही नहीं है, यह भी नहीं कि बस इससे केवल फलशस्य उत्पन्न होती हो। पृथ्वी मनुष्य का वासस्थान है। मनुष्य-जाति स्थावर वृक्षादि की भाँति एक स्थान का स्थायी निवासी नहीं है, "हजरतदाग जहाँ बैठ गये बैठ गये", इसका अनुगामी नहीं, अत एक देश से देशान्तर मे यह जाना चाहता है, वहाँ पहुँच कर उसके समस्त स्थानो को देखना चाहता है, ज्ञान लाभ कर लाभवान होना चाहता है। इसलिये समुद्र ही उसका पैर है, समुद्र उसकी आकांक्षा का बाधक नहीं। अत यह देखना चाहिये कि किसी देश का समुद्र के साथ कितना घनिष्ट सम्बन्ध है, उसी घनिष्टता के तुल्य उस देश की विद्या बुद्धि, कला कौशल, व्यापार-वाणिज्य आदि का अभ्युदय होगा। कारण इसका यह है कि मनुष्य किसी एक स्थान पर न चिरकाल तक रहा है और न रहेगा, यह मनुष्य जाति का स्वभाव ही है।

इसलिये जिन महादेशो के हाथ पैर हैं, अर्थात् जिन महाद्वीपों के अनेक द्वीप और अनेक उपद्वीप हैं वहाँ के निवासी मनुष्य उन्नतिशील होंगे। यूरोप के प्रकरण मे इस विषय का भली प्रकार से परिचय मिलेगा।

इस समय हम अपने पाठकों को एशिया के चारों ओर समुद्र द्वारा यात्रा कराना चाहते हैं। आप घबड़ाएँ नहीं, विलायत नहीं ले जायँगे, केवल जम्बूद्वीप की परिक्रमा कराना चाहते हैं, धर्म्मच्युत होने का कोई भय नहीं।

उत्तर महासागर में तो जहाज चलाना कठिन है क्योंकि वहाँ तो तुषार के कारण सारा समुद्र ही घनी-भूत हो रहा है। इस पथ से होकर पूर्व दिशा की ओर जाने के लिये कई यूरोपीय नाविकों ने अपना जहाज यहाँ डाला परन्तु तीव्र शीत के कारण उनका जहाज चकनाचूर हो गया और नाविक बेचारे प्राणहीन हो गये। इस प्रकार दल पर दल तुषार के बीच से होकर निकल जाने के लिये वृथा प्रयास करता रहा। रूस जाति ने जब साइबेरिया को विजय किया था उसी समय 'बेरिंग' नामक एक डेनमार्क वासी ने एक प्रणाली का आविष्कार किया था। उसी के नामानुसार उस प्रणाली का नाम 'बेरिंग' पड़ा। यह ३० मील चौड़ा जल-डमरूमध्य है जो एशिया के उत्तरी उप कूल पर अवस्थित है।

इस बार हम पूर्वी किनारे में होकर यात्रा करना चाहते हैं। बेरिंग प्रणाली तो देख ही लिया, शीत के कारण वहाँ का सारा जल तुषार हो रहा है। कमस्कटका नाम हमने एकाध बार पहले लिया है। उपद्वीप के पार करने के पश्चात् सागा-लिन नामक एक द्वीप मिलता है। यह द्वीप आरण्यमय पर्वत राशियों से जिस प्रकार घिरा हुआ है उसके देखने ही से भय लगता है। रूस की गवर्नमेन्ट, रूसी अपराधियों को इसी स्थान पर कैद करके रखती थी। मानों यह स्थान रूसी कैदियों का एण्ड-मान (हमारे यहाँ का कालापानी) था। इस द्वीप के पार

करने पर हम जापान सागर में पहुँच जाते हैं। यह समुद्र ठीक गोलाकार स्थल से घिर हुआ है। जापान अब हमारे पूर्व में रह जाता है परन्तु उसका किनारा हम से दूर नहीं है। हम जापान समुद्र से होकर कारिया के सकीर्ण प्रणाली पर पहुँचते हैं। कारिया का उपद्वीप किनारे से गिरिमय दिखाई देता है और पश्चिम बढ़ने पर फिर समुद्र का भाग दिखाई देता है, यहाँ जहाज का चलाना कठिन नहीं है, इसीलिये इस स्थान पर रूम ने एक दुर्ग निर्म्माण कराया था और एक बन्दर बनाया था जिसका नाम है, 'पोर्टआर्थर'। सन् १९०४—०५ के रूस जापान युद्ध में यह दुर्ग रूसियों से जापानियों ने विजय कर लिया था। इसके पश्चात् पीत-सागर से होकर हम दक्षिण को चल रहे हैं—अनेकानेक बन्दरों को पार करने पर फारमोसा द्वीप आता है। यहाँ हम एक बड़ा कौतूहल देखते हैं। एशिया के पूर्व में जिस प्रकार बहुत से उपसागर और प्रणाली हैं तद्रूप सर्प की भाँति टेढ़ा मेढ़ा कुटिलाकार बराबर बराबर एक द्वीप-पुज चला गया है। यहाँ बन्दर भी अधिक हैं। परन्तु अयोध्याजी के बन्दर नहीं, जो डार्विन और हक्सले के कथनानुसार मनुष्य-जाति के सहगोत्री हों। यहाँ बन्दर उस स्थान को कहते हैं जो समुद्र के स्थल के निकट—जहाजों का अड्डा हो जैसे शहरों में 'गाड़ियों का अड्डा' सड़कों के चौराहों पर हुआ करता है।

अब इन बन्दरों से पिंड छुड़ाते हुए चीन समुद्र में आ जाते हैं। पूर्व की ओर फिलीपाइन द्वीप-पुज है, यहाँ भी अनेक उपसागर हैं जिन में स्थल से आ कर नदियाँ गिरती हैं। इस किनारे से हम जहाँ के लिये जाने की तैयारी करते हैं उस देश का नाम इन्डोचायना है।

अब हम स्याम के उपसागर में पहुँच गए, जिसके पश्चात् मलाया उपद्वीप का उपकूल मिलता है।

इसके दक्षिण मे मलाया (मालय या मलका) का द्वीप-पुञ्ज— सुमात्रा, जावा, बोरनियों प्रभृति मालय (मलका) उपद्वीप के दक्षिण में—सिरे पर सिंगापुर नामक एक बन्दर है, इस बन्दर में देश देश के जहाज दिखाई देते हैं और सब प्रकार का वाणिज्य व्यापार होता है। सिंगापुर का नगर बड़ा हरा भरा और रमणीक है। फिर छोटे छोटे द्वीपों को पार करते हुए पश्चिम की ओर—सुमात्रा और मालय के बीच से होकर हम बङ्गाल के उपसागर में पहुँच जाते हैं। इस प्रकार हमारी यात्रा का पूर्वी किनारे का भ्रमण नि शेष हो गया।

अब दक्षिण की यात्रा प्रारम्भ हुई। यहाँ सब से पहिले बङ्गाल का सागर आता है। मलका की सकीर्ण-प्रणाली बङ्गालसागर का द्वार है। बङ्गालसागर के प्रधान द्वीप पुञ्ज का नाम एण्डमान द्वीप-पुञ्ज है। भारतवर्ष के गुरुतर अपराधी राजदण्ड-प्राप्त यहाँ ही कैद किये जाते थे। भारतवर्ष के दक्षिण में सीलोन या लङ्का नामी एक बड़ा द्वीप है। इधर कई अच्छे अच्छे बन्दर भी हैं। भारतवर्ष और लङ्का के मध्य में पाक या सेतबन्दरामेश्वर की प्रणाली है, परन्तु यह इतनी उथली है कि इसमें जहाज चलाना कठिन है, कदाचित् श्रीरामचन्द्रजी के शिल्पी -नल नील ने बाँध बाँधते समय उसकी गहराई को पाट ही दिया था? इसीलिये यह उथली है? लङ्का को पार करके हम अरब सागर में पहुँच जाते हैं। यहाँ से हम भारतवर्ष के किनारे किनारे पश्चिमी घाट मे जहाज चलाते हैं—देखते हैं कि भारत का पश्चिमी उपकूल पथरीला है। बम्बई पहुँच कर इस प्रसिद्ध

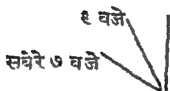
चन्दर का अवलोकन करना चाहिये। परन्तु पाठकगण! बम्बई का हाल भारतवर्ष के पाठ में पढ लेना। अभी और आगे चले चलिये। यदि फारसी पढने का शौक है तो सीधे हमारे साथ फ़ारिस की खाड़ी तक चले आइये। देखिये बसरे के बन्दर पर पहुँच गये यद्यपि बसरा टर्की के राज्य में है परन्तु आज कल अंगरेजों ने उसे विजय कर लिया है यहाँ की भाषा फार्सी है. क्या गज़ल सुनना चाहते हैं, ? फिर सुन लीजियेगा। आगे चलिये—लौटिये, उमान के तरफ से अरब के दक्षिण दक्षिण अदन की प्रणाली तक आइये सुन लीजिये अरब सागर के और भी द्वीप हैं जैसे, मालद्वीप, लाक़द्वीप, सकुतरा आदि। अदन का बन्दर प्रसिद्ध है जिसका नगर एक पहाड़ी पर बसा है। पहाड़ी पर से देखने से सारा स्थान शुष्क और मरुस्थल दिखाई देता है यहाँ बड़े जोर का तूफ़ान आया करता है। अदन प्रणाली से उत्तर हम लालसागर में पहुँच जाते हैं। यहाँ से अब पश्चिम की यात्रा आरम्भ होती है।

इस भ्रमण-भाग का नाम मरुभूमि यात्रा कहें तो कोई हर्ज नहीं। उत्तर की ओर चल कर हमको स्वेज की खाड़ी मिलती है। मक्का जो मुसलमानों का प्रसिद्ध स्थान है, स्वेज खाड़ी के जद्दा नामक बन्दर से निकट है, देखो न हाजियों से लदा हुआ जहाज जो बम्बई से चला था यहाँ ठहर गया। सुएज की नहर लालसागर का उत्तरी स्थान है। यह स्थान यूरोप से एशिया में आने का मानों प्रथम द्वार है। पोर्टसईद यहाँ का प्रसिद्ध बन्दर है जो रूमसागर या भूमध्यसागर में है। एशिया माइनर यहाँ का उपद्वीप है और आगे बढने पर साइप्रस नामक द्वीप मिलेगा। अब हम यदि और पश्चिम चलना चाहें तो आपका साथ छूट जायगा क्योंकि यहाँ विलायत (यूरोप के महाद्वीप)

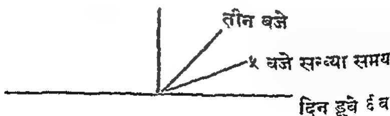
का साम्राज्य है। हम अब उत्तर की ओर अकेले बढ़ते हैं। टर्की राज्य की परिक्रमा करके, अनेकानेक उपसागरों और बन्दरों का दृश्य देखते हुए डरेडानियन पर पहुँच गये। हमारे बायें हाथ जो स्थल गेलीपाली दिखाई देता है वह यूरोप के अन्तर्भूत है। दक्षिण या पूर्व मे एशिया है, परन्तु यह दोनों स्थान टर्की के राज्य मे हैं। डरेडानियल से हमारा जहाज़ निकल कर मारमोरा सागर में पहुँच गया, यहाँ से आगे—उत्तर की ओर टर्की की राजधानी कुस्तुन्तुनियाँ मिलती है, जो यूरोप में है परन्तु बासफार्स की प्रणाली द्वारा हम काले सागर में पहुँच गये। अब फिर हमको उपद्वीप के उत्तरी किनारे से होकर पूर्व को लौटना चाहिये, पश्चिम और उत्तर उभय दिशा मे यूरोप है। काले सागर में रूस का कुछ नौ वाणिज्य है। अब यहाँ से जहाज द्वारा यात्रा बन्द हो जाती है, क्योंकि सामने काकेशश की उत्तुग गिरिमाला है। यद्यपि कास्पियन को सागर नाम दिया जाता है, परन्तु है यह एक बड़ी झील, क्योंकि इसका सम्बन्ध किसी सागर से नहीं है।

हमने अपनी दीर्घयात्रा समाप्त की। आपने देखा ? एशिया के पूर्वी भाग के स्थल का सम्बन्ध कितना अधिक समुद्र से है। द्वीप राशियाँ एक भारी गले का हार बन गई हैं, कितने उप सागर हैं और कितने उपद्वीप। भारतवर्ष और फ़ारस के उप-कूल समुद्र के कारण कितने प्रभावित हैं। परन्तु एशिया का उपयुक्त नहीं है। इसके अतिरिक्त एशिया के अन्य सभी भाग समुद्र के किनारे से दूर हैं। इससे उनके जल वायु और वहाँ के निवासियों पर कितना प्रभाव पड़ता है, स्थानान्तर में पढ़ लीजियेगा।

गर्मी बढ़ती जावेगी। यहाँ तक कि दोपहर को छाया शून्य जायगी और सूर्य मध्याह्न मे आ जायगा, फिर गर्मी की अ कता होगी (चित्र देखो)



(२) दोपहर के बाद फिर क्रमानुसार छाया बढ़ने लगे और सन्ध्या को बड़ी हो जायगी। इसी छाया की दीर्घता अनुसार फिर गर्मी कम होती जावेगी।



(३) दोपहर को छाया सब से छोटी है यहां तक कि शून् हो गई है, परन्तु यह दशा प्रत्येक ऋतु में नहीं रहती। हमारे दे में जाड़े के दिनो मे छाया दोपहर को भी होती है, परन्तु वह उत्त

को पड़ती है। हाँ, गर्मियों में सीधी होती है। यह क्यों ? इसलिये कि भारतवर्ष विषुवत् रेखा से उत्तर है, अत जाड़े में जब सूर्य्य दक्षिण को बढ़ता रहता है तो छाया उत्तर की ओर बढ़ती जाती है।

उपरोक्त कथन से स्पष्ट हो जाता है कि जहाँ जब छाया जितनी कम लम्बी पड़ेगी वहाँ उस समय उतनी ही अधिक गर्मी पड़ेगी।

(४) मध्याह्न में छाया जितनी छोटी होगी उसी रूप से सूर्य्य ऊपर आया हुआ बोध होगा और दिन बड़ा मालूम होगा। फिर ज्यों त्यों छाया की मात्रा बढ़ती जावेगी, दिन छोटा पड़ता जायगा।

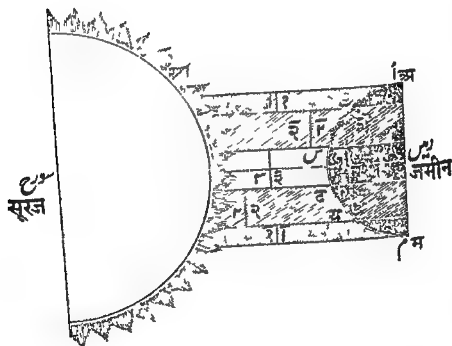
(५) छाया की दिशा सदैव एक सी नहीं रहती, नित्य कुछ न कुछ परिवर्त्तित होती रहती है, शीतकाल में सवेरे उत्तर पश्चिम को पड़ेगी, फिर क्रमानुसार दक्षिण को रुख बदलती जावेगी। एक दिन ठीक पूर्व में आ जायगी।

(६) दिन की बढ़वारी के साथ ही साथ गर्मी अधिक जान पड़ती है, इसी प्रकार दिन घटने के साथ ही साथ गर्मी भी घटती जाती है। इसलिये सूर्य के उत्ताप की ह्रास वृद्धि ही शीत ग्रीष्म का प्रधान कारण है। ज्यों त्यो दिन बढ़ता जाता है सूर्य्य की किरणें लम्बरूप से पृथ्वी पर पड़ती जाती हैं और दिन के घटते ही किरणें तिरछी होने लगती हैं। इन बातों का मुख्य सार यह निकला कि जहाँ किरनें अधिक सीधी और लम्बवत् पड़ती हैं वहाँ गर्मी अधिक होती है और जहाँ जितनी तिरछी पड़ती हैं वहाँ शीत की उतनी ही अधिकता होती है। कहाँ कहाँ की दशा कैसी है नीचे के चित्र में देख लो।

ध्रुवों के पास सर्दी अधिक क्यों है ?

अब तक जो कुछ हमने बताया उससे स्पष्ट हो जाता है कि ध्रुवों के पास शीत क्यों अधिक पड़ा करती है और विषुवत् रेखा के निकट गर्मी का आधिक्य क्यों है।

परन्तु नीचे हम विस्तार सहित उसका विवरण लिखे देते हैं



- चित्र में सूर्य को देखो उसकी किरणें पृथ्वी की ओर चल रही हैं।

पृथ्वी का अर्द्धपिंड जिस पर प्रकाश पड़ रहा है दिखाई देता है।

परन्तु पिंड का चित्र पूरा पूरा कागज पर दिखाया नहीं जा सकता इसलिये उसका आधा भाग दिखाया जाता है।

पृथ्वी के जिस भाग पर प्रकाश पड़ रहा है उसके धरातल के पाँच तुल्य भाग कर लो।

मान लो कि चाप के पाँच भाग म व, व स, स द, द य, और य म, हैं। म म ध्रुव हैं। स द चाप के मध्य में विषुवत् रेखा है।

यह पाँचों चाप बराबर हैं और सूर्य्य से किरणों भी इन पर पड़ रही हैं। विषुवत् रेखा द्वारा इस दशा में पृथ्वी ठीक २१ मार्च या २३ सितम्बर (के समय) प्रदर्शित कर रही है।

परन्तु इन चापों की लम्बरूपी दूरी १,१ २, २, ३ से अंकित रेखाओं द्वारा प्रकट हो रही है।

लम्ब १=१, २=२, है।

परन्तु इनमें ३ के अंक का लम्ब सब से बड़ा है, फिर २,२ का नम्बर है परन्तु १, १ सब से छोटा है।

अत चाप के परस्पर बराबर होते हुए भी लम्बों में बड़ाई छोटाई है, परन्तु इन लम्बों से सूर्य्य की भू पतित किरणों का परिमाण जाना जाता है इस लिये सिद्ध हुआ कि—

(१) { स्थान स द पर सब से अधिक किरणें पड़ती है, व स, द य पर साधारण और स्थान म व और य म पर स व से कम। दूसरी बात—

स द स्थान की किरणों को कम दूर चलना पड़ता है, और इसकी अपेक्षा स व, द य स्थानों पर कुछ अधिक परन्तु म व और य म स्थानों पर उन्हें अधिक दूर जाना पड़ता है।

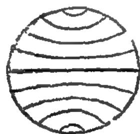
अधिक चलने या कार्य्य करने से उष्णता का अधिक हा
होता है।

इसलिये ध्रुवो के निकट कम किरणें पड़ती हैं और वह क
गर्म रहती हैं परन्तु विपुवत् रेखा के पास अधिक किरणें पड़त
हैं और वह कम दूर चलने के कारण अधिक गर्म रहती हैं।

"यदि बराबर स्थानो में से एक स्थान पर अधिक परिमाण
अधिक गर्म किरणें पड़ें और दूसरे स्थान पर कम किरणें जो का
गर्म हों, पड़ें, तो पहिला स्थान दूसरे स्थान की अपेक्षा अधिक
उत्तप्त होगा।"

अत विपुवत् रेखा की समीप वाली भूमि पर अधिक गर्म
पड़ती है और ध्रुवदेश शीत प्रधान होते हैं और मध्य के स्था
समशीतोष्ण।

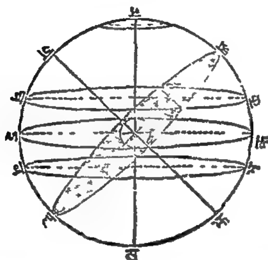
इसलिये पृथ्वी का धरातल पाँच भागो मे बाँट लिय
गया है।



इस चित्र में पृथ्वी का धरातल १० समान भागों में बाँट लिया गया है

ध्रुवों से ज्यों ज्यों विपुवत् रेखा की ओर चलोगे उत्ताप
बढ़ता जायगा। परन्तु विपुवत् रेखा से ध्रुवों की ओर गर्मी
घटती हुई मालूम होगी।

इस प्रकार पृथ्वी के स्थल शीतोष्ण के विचार से पाँच कटिबन्ध मान लिये गये हैं *।



इ क विषुवत् रेखा है,

इससे दोनों ओर घ भ, च ढ रेखाओं से घिरा हुआ भू-भाग उत्ताप की अधिकता के कारण उष्ण कटिबन्ध कहलाता है। उष्ण-कटिबन्ध के उत्तर च ढ भ ज धरातल उत्तरी समशीतोष्ण कटि-बन्ध है, रेखा ज भ के उत्तर का भाग उत्तरी शीत कटिबन्ध है।

इसी प्रकार दक्षिण की ओर—

नोट—अध्यापक को चाहिये कि इस विषय को ग्लोब (Globe) द्वारा भली प्रकार समझा दें क्योंकि विषय गूढ़ और रेखागणित से अधिक सम्बन्धित है।

४ भ क ह धरातल दक्षिण समशीतोष्ण कटिबन्ध है और आगे ह क रेखा से दक्षिण का भाग दक्षिणी शीत कटिबन्ध।

अब तक के कथनोपकथन का तारतम्य यह निकला कि—

(१) विषुवत् रेखा से दूरत्व के अनुपात से किसी स्थान के जल वायु में प्रकार-भेद होता है।

मानचित्र देखने से पता लगता है कि भारतवर्ष का अधिकांश भाग ग्रीष्म स्थान में पड़ता है। भारतवर्ष का अनेक स्थान विशेषत दक्षिण देश अत्यन्त उष्ण है। परन्तु जगन्नाथपुरी प्रभृति स्थान उष्णकटिबन्ध के अन्तर्गत होते हुए भी गर्म नहीं हैं। हिमालय के शृग तो चिरतुषारमय हैं। इसका क्या कारण है ? यह स्वाभाविक प्रश्न हो सकता है।

सूर्य का उत्ताप स्थल पर भी पड़ता है और जल पर भी किन्तु जल अचालक है अत उसमे गर्मी देर में और कम पहुँचती है। परन्तु मिट्टी चालक होने के कारण शीघ्र ही उत्तप्त हो जाती है और जल शीघ्र न गर्म होता है और गर्म होकर न फिर तुरन्त सर्द ही हो जाता है। इसके प्रतिकूल स्थल जितनी शीघ्रता से गर्म होता है उतना ही जल्द ठढा भी हो जाता है। इसी स्वभाव के कारण समुद्र मे सूर्य्य के उत्ताप का अधिक प्रभाव नहीं पड़ता। अत समुद्र के निकटवर्ती देशों की गर्मी सर्दी में भी अधिकता किसी की नहीं होने पाती। जिससे सिद्धान्त निकला कि—

(२) जो देश समुद्र के जितना ही समीप होगा उसके जल-वायु में शीतोष्ण की प्रखरता उसी प्रकार कम होगी।

फिर यदि कोई देश समुद्र से अधिक दूरी पर हो तब वहाँ का जल वायु वहाँ के स्थल के समान होगा—अर्थात् गर्मियों में अधिक गर्म और सर्दियों में अधिक शीतल रहेगा। एशिया के प्राय

अधिक स्थान समुद्र के निकटवर्ती नहीं हैं, इस लिये वह शरद् और ग्रीष्म ऋतुओं में अतिशय वैपरीत्य देखे जाते हैं।

परन्तु हिमालय तो समुद्र के निकट नहीं है और न किसी ध्रुव के पास ही है, फिर वह इतना अधिक शीतल क्यों है? हिमालय कितना ऊँचा है! जितनी ऊँचाई पर चढ़ते जाते हैं शीत की प्रबलता उतनी ही अधिक होती जाती है अत विषुवत् रेखा के निकट होते हुए भी ऊँचाई की अधिकता के कारण हिमालय अधिक ठंढा है।

पहिले कह आये हैं कि वायु के गतिरोध से जल वायु पर प्रभाव पड़ता है। अत यदि किसी स्थान के पर्वत से वहाँ का वायु रुक जाता है तो उस वायु का प्रभाव वहाँ अवश्य पड़ेगा जिसके कारण वर्षा की कमी वेशी होगी। फिर वहाँ दूसरा प्रभाव पड़ेगा।

सुतराम् किसी देश के जल वायु जानने के लिये इन बातों का जानना आवश्यकीय है—(१) विषुवत् रेखा से दूरी, ध्रुवों से निकटता तथा कटिबन्ध की स्थिति (२) समुद्र के पास है या दूर (३) समुद्र-धरातल से कितनी ऊँचाई पर है (४) वर्षा की क्या दशा है (५) निकट मे ऊँचा पर्वत है वा नहीं (६) वहाँ वायु किस ओर से आता है (७) क्या समीप में ज्वालामुखी पर्वत वा गेसर अथवा गल्फस्ट्रीम (Gulf Stream) है या नहीं?

जल-वायु का प्रभाव देश के उद्भिद, जन्तु और मनुष्य सभी पर पड़ता है। क्या अत्यन्त शीतप्रधान देश की भाँति अति उष्ण स्थान के जीव-जन्तु भी होते हैं? इसी भाँति गर्म मुल्क के रहने वाले

मनुष्य के आहार, विहार, आचार और कार्य मे भी विभिन्नता होती है। जल वायु वैचित्र्य के कारण उद्भिद, पशु-पक्षी और मनुष्य जाति में भी दिखाई देती है। केवल यही नहीं है, विषुवत् रेखा के समुद्र के जीव जन्तुओ में और ध्रुवों के समुद्रीय जीव जन्तुओ में भी बड़ा अन्तर है।

एशिया का जलवायु

अब तक हमने तुमको केवल उन नियमों के विषय मे बताये है जिनसे किसी स्थान के ताप पर प्रभाव पड़ता है। किसी देश के जलवायु जान लेने के लिये केवल वहाँ की गर्मी तथा सर्दी की ही अवस्था जानने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु यह भी जानना जरूरी है कि वहाँ कितनी तरी रहती है अथवा वहाँ कितनी वर्षा होती है। हिन्दुस्तान के पश्चिमी समुद्र-तट पर दकन के पठार की अपेक्षा अधिक वर्षा होती है। तुमको यह भी मालूम है कि सिंधु और गङ्गा की घाटी के मैदान में ज्यों ज्यों हम बगाल से पजाब की ओर जाते हैं त्यों त्यो वर्षा कम होती जाती है। थर के रेगिस्तान और सिंधु नदी के डेल्टा के मैदान मे वर्षा बहुत ही कम होती है। मानसून हवाएँ जो बगाल की खाड़ी और अरब सागर से चलती हैं, उन भागों मे वर्षा अधिक करती हैं जो उनके मार्ग में पड़ते हैं तथा वे भाग जो उनके मार्ग से अलग पड़ जाते हैं, सूखे रह जाते हैं। इन से पहाड़ों के उन ढालों पर अधिक वर्षा होती है जिधर से ये हवाएँ चलती हैं। पश्चिमी घाट के पश्चिमी ढालों पर वर्षा अधिक होती है और पूर्वी ढाल पर बहुत कम या बिल्कुल नहीं। काश्मीर मे लेह स्थान में, जो हिमालय पहाड़ की एक श्रेणी के उत्तर-पूर्वी ढाल पर है, बहुत कम

वर्षा होती है। इसी प्रकार लासा में जो तिब्बत पठार पर हिमालय पहाड़ की श्रेणी के दूसरी ओर बसा हुआ है, मानसून

वर्षा तथा हवाएं



(गर्मी की ऋतु) (मई से अक्टूबर तक)

हवाओं के न पहुँचने के कारण बहुत कम या बिल्कुल ही वर्षा नहीं होती है।

जो देश गर्म समुद्र से उठने वाली हवाओ के मार्ग में पड़ते हैं वहाँ वर्षा होने के कारण ताप भी कम हो जाता है। परन्तु जो हवाएँ ध्रुवो की ओर से चलती हैं और जिन दिशों मे हो कर जाती हैं वे उन देशों के जलवायु को बहुत ठढा कर देती हैं। जो देश पहाड़ों की उस ओर हैं जिधर से तर हवाएँ चलती हैं उनमें वर्षा हो जाती है। परन्तु उन देशो मे जो इन पहाड़ों की दूसरी ओर हैं वर्षा बहुत कम होती है।

तुम पढ़ चुके हो कि एशिया कई अक्षाशो मे फैला हुआ है और इसी कारण इसके भिन्न भिन्न भागो का ताप भी भिन्न है। दिये हुए नक्शो मे तुम एशिया के भिन्न भिन्न भागो में वर्षा का परिमाण और वायु की दिशा देख सकते हो। ताप और वर्षा के आधार पर हम एशिया को निम्नलिखित जल-वायु के प्रदेशों में बॉट सकते हैं—

(१) मानसूनी हवा का प्रदेश

इस में एशिया का दक्षिणी और पूर्वी भाग अर्थात् हिन्दुस्तान, ब्रह्मा, चीनी हिन्द और चीन शामिल हैं। इन देशो के मैदानों में गर्मियो मे मानसूनी हवाओं से वर्षा होती है जो दक्खिन पश्चिम या पूरब दक्खिन की ओर से चला करती हैं। जाड़े की ऋतु मे जब मानसून उत्तर पूरब की ओर से चलती है तब इसके पूर्वी तटों पर कुछ वर्षा हो जाती है। इस प्रदेश में अक्षाश के अनुसार गर्मी कम या ज्यादा होती है। इसका जलवायु चावल, चाय और कपास की पैदावार के लिये अनुकूल है।

(२) पश्चिमी पठार

इस भाग में बिलोचिस्तान, ईरान, अरब और एशियाई कोचक के ऊँचे भाग शामिल हैं। यहाँ का जलवायु जाड़ों में अच्छा होता



(जाड़े की ऋतु) (नोम्बर से अप्रैल तक)

है परन्तु गर्मियों में यहाँ बहुत गर्मी पड़ती है। वर्षा यहाँ बहुत कम होती है।

(३) मध्य एशिया के पहाड़ी प्रदेश

इस भाग मे वे सब ऊँचे पठार और पर्वत सम्मिलित हैं जो एशिया के मध्य मे हिमालय पर्वत के उत्तर में हैं। यहाँ गर्मी मे काफी गर्मी पड़ती है परन्तु उन भागो मे जो बहुत ऊँचे हैं गर्मी कम होती है। जाड़ों मे जाड़ा बहुत ज्यादा पड़ता है। यहाँ वर्षा बहुत कम होती है क्योंकि इन पठारो के चारो ओर बड़ी बड़ी पर्वत श्रेणियाँ हैं जो समुद्र से आने वाली तर हवाओ को रोक लेती हैं।

(४) रूम सागर के प्रान्त

इसमे वे भाग शामिल हैं जो एशिया के पश्चिम में रूम सागर के तट पर हैं। इनमे जाड़े की ऋतु में वर्षा होती है। ये भाग समुद्र तट के किनारे पर हैं। इस कारण यहाँ का जलवायु गर्मी और जाड़ों मे साधारण रहता है।

(५) शीतोष्ण प्रदेश के जगल

इसमें एशिया का वह भाग शामिल है जो मध्य के पठार और दक्षिण पश्चिम के रेगिस्तान के उत्तर मे है अर्थात् साइबेरिया के मैदान का वह दक्षिणी भाग है जो पूर्व से पश्चिम तक चला गया है। यहाँ जाड़ों मे ऐसी ठड पड़ती है कि जमीन पर कई फीट तक बर्फ जम जाती है। गर्मियो में गर्मी भी काफी होती है। यहाँ वर्षा की मात्रा कम होती है जो कुछ वर्षा होती है वह गर्मी मे ही हो जाती है। जब गर्मियो में बर्फ पिघलने लगती है तब इसके पश्चिमी भाग में गेहूँ पैदा किया जाता है परन्तु इसके अधिकाश भागों मे चीड़ के जगल हैं।

(६) टुड्रा

यह साइबेरिया का धुर उत्तरी भाग है जहाँ साल के अधि[illegible]श भाग में पृथ्वी बर्फ से ढकी रहती है। यहाँ साल भर बराबर [illegible]व जाड़ा पड़ता है और वर्षा बहुत कम होती है।

(७) भूमध्यरेखा का गर्म-तर प्रदेश

इसमें एशिया के दक्षिण पूर्व की ओर के वे द्वीप शामिल हैं [illegible]ो भूमध्यरेखा के दोनो ओर हैं। यहाँ सदैव खूब गर्मी पड़ती है और साल भर बराबर वर्षा होती रहती है।

प्रश्न

(१) एशिया के किन किन भागों में (अ) केवल जाड़ों में (ब) केवल गर्मियों में और (स) साल भर बराबर वर्षा होती है ?

(२) मध्य एशिया के पठारों का जलवायु कैसा है ?

(३) नीचे लिखे स्थानों में किस ऋतु में वर्षा होती है —बम्बई, मद्रास, स्मरना (एशियाई कोचक) और पीकिन ?

(४) तुम एशिया को किन किन प्राकृतिक प्रदेशों में बाँट सकते हो ?

(५) पहाड़ों की श्रेणियों की दिशा का प्रभाव किसी देश की वर्षा पर किस प्रकार पड़ता है ?

(६) इसका क्या कारण है कि लेह और लासा में बहुत कम वर्षा होती है ?

५—हिमालय उपद्वीप और अन्यान्य द्वीप पुञ्ज—जैसे लङ्का आदि का जलवायु। इन स्थानों में ग्रीष्म में भी गर्मी की अधिकता नहीं होती।

हमने एशिया के जलवायु का विभाग तो दिखा दिया। परन्तु हाँ के उद्भिद और अन्यान्य जीव जन्तुओं के सम्बन्ध में भी नई त बताने योग्य है। जैसे—

(अ) अन्य इतर प्राणियों की भाँति मनुष्य की भी निर्वाह द्भिद ही पर निर्भर है। हमारी ही भाँति कई जीव जन्तु, हार, जल, प्रकाश और स्वच्छ-वायु चाहते हैं। उद्भिदों का विनाधार पृथ्वी से रस चूसने पर है। इसके अतिरिक्त न्हें सूर्य्य का प्रकाश और उसका उत्ताप भी चाहिये। वृक्ष जितने बड़े होते हैं प्राय वे उतनी ही गहराई से स चूसते हैं अत जिस स्थान पर वर्षा अधिक होती है और सूर्य्य से गर्मी और रोशनी भी न्यून मिलती है वहाँ वृक्षों की अधिकता होती है, ऐसे स्थान की वनस्पतियों की गणना नहीं की जा सकती।

किन्तु जहाँ वर्षा की कमी है, भूमि में स्रोत अधिक गहराई र मिलते हैं, मिट्टी कड़ी कड़ी पथरीली या ककड़ीली है, या उष्णता की न्यूनता है अथवा सूर्य्य का प्रकाश कम पहुँचता है से स्थानों पर उद्भिद कम होती है और कारणों की न्यूनाधिकता से उपज में भी विभिन्नता आ जाती है।

(ब) उद्भिदों की भाँति जीव जन्तुओं पर भी पृथ्वी के जल वायु आदि का प्रभाव पड़ता है, जिससे उनकी प्रकृति में बड़ा अन्तर पड़ जाता है।

अधिकाश जन्तुओं के जीवन का आधार उद्भिज ही
अत जहां वनस्पति अधिक होगी वहां जीव जन्तु और
पक्षी भी अधिक होंगे। स्थानिक उपज के अनुसार वहां के जन्तु
के शरीर की बनावट भी उपयुक्त होगी। जिन पशुओं के
और दांत तीक्ष्ण नहीं हैं, वे दौडने और भागने में पटु होते
जिस भांति के खाद्य पर वे अपनी गुजर करते हैं, उसके सा
करने में जो बाधाएं पड़ती हैं उनसे बचने का उपाय भी
प्रकृति-देवी बता देती या सग्रह करा देती है। जैसे सुन्दर वन
व्याघ्र (बाघ) वहां की पीली पीली घासों के रङ्ग के अनुसार पी
खाल वाले होते हैं। इङ्गलैंड का शृगाल (सियार) अपने वा
स्थान के अनुरूप वर्ण का होता है। भारतवर्ष में तो
दिखाई ही देता है कि जिन पेड़ों पर जो पक्षी वास करते
उनका रङ्ग उसी पेड के रङ्ग से मिलता जुलता होता है। गङ्
के दोआबे में कई तितलियाँ ऐसी पाई गई हैं जो साधार
रीति पर देखने से ठीक पत्ते के आकार की मालूम होती हैं
धान वाले खेत के वाके (अखफोड़े) धान की पत्तो के ही
रङ्ग के होते हैं।

जल-वायु के साथ इनका बड़ा सम्बन्ध है। जैसे—

(१) उत्तरी ध्रुव के निकट वाले स्थान में शीत की अधिकत
और सदैव बर्फ पड़ने के कारण वहां कोई वनस्पति देखी नहीं
जाती, इसलिये वहां कोई कीड़े मकोड़े नहीं होते, फिर कीड़े
मकोड़े के न होने से उनके भक्षक पक्षी भी नहीं रहते। हां मांसा
हारी हिंसक पशु जैसे—भालू, दरियाई बछड़े और सील मिलते
हैं जो समुद्र की मछलियों और अन्य छोटे छोटे जीव जन्तुओं
को मार कर अपना पेट भरते हैं। वहां की पृथ्वी हिमाच्छादित

हती है अत तद्रूप वहाँ के जीवजन्तु भी शुभ्र उज्ज्वल रङ्ग के
ोते हैं। वहाँ का भालू भी सफेद रङ्ग का होता है।

साइबेरिया में कभी कभी सूर्य्य देव का दर्शन हो जाता है
त वहाँ की वर्फ कुछ दिनो के लिए पिघल भी जाती है, जिससे
छ पौधे उग आते हैं, परन्तु वह तीन फीट से अधिक ऊँचे
हीं होते, उनका रङ्ग कुछ फीका हरा हरा सा होता है। इसलिये
हाँ के पशु पक्षी भी वसन्त में तो कुछ हरे, पीले रङ्ग के रहते हैं
ौर जाडो मे वही वर्फ के समान सफेद रङ्ग के हो जाते हैं, सच
—'जैसा देश वैसा वेश'।

हम पहिले ही बता आये हैं कि शीतप्रधान देशों की नदी का
ल भी जम जाता है और लोग उस पर से सडक के समान रास्ता
काल कर विना खटके चले जाते हैं। ऐसे देशों में 'रेनडियर'
Rein Deer) नामक एक प्रकार का हिरण मनुष्यों का जान-
ा है। हमारे यहां के गृह पालित पशुओं की भांति साइबेरिया
यह गृह-पशु है। इसके दूध को वहाँ के निवासी पीते हैं, माँस
का लोग खाते हैं, चमडे को जो खूब रोयेंदार होता है पहनते,
ढ़ते और उसी से हमारी भांति कपड़े का सब काम लेते हैं। रेन
यर पर सवारी करते और वफ पर चलने वाली—विना पहिये
—स्लेज गाड़ी में इसे जोत देते हैं। इसके अतिरिक्त यहां श्वेत-
लू के समान एक प्रकार का श्वेत-शृगाल भी पाया जाता है।
शृगाल बडा अद्भुत जानवर है, भिन्न भिन्न ऋतुओं में यह अपने
ीर का रङ्ग बदलता रहता है, शीतकाल में जिस प्रकार
त रहता है ग्रीष्म में उसी भांति धूसर रङ्ग का हो जाता है।

त्तरी महासागर के निकट एस्किमो (Eskimo) जाति के
ष्य वास करते हैं। यह भालू के रोयेंदार चर्म से अपने सारे

शरीर को ढकते हैं। सील का शिकार करके उसके चमड़े को पहनने के काम में लाते हैं, चर्बी निकाल कर उसका व्यापार कर हैं। ह्वेल मछली का भी यही लोग शिकार करते हैं, जिसमे प मछली से हजारों मन चर्बी निकलती है और एक ह्वेल के मरने कई महीने तक वहां के हिंसक पशु पक्षियों को भोजन एकत्रि करने से अवकाश मिल जाता है।

(२) अब हम साइबेरिया के दक्षिण भाग की कुछ कहते हैं। यहाँ बड़ा सुनसान जगल है। जङ्गल में क्या है? इस भली भांति से अभी तक पता नहीं चला, क्योंकि सघनता कारण कोई बहुत दूर आगे तक नहीं बढ़ सकता। यहाँ बाँझ और इसी भांति के वृक्ष अधिक हैं। जङ्गली पशु जङ्गली बिलाव, शृङ्गाल, लोमड़ी, भालू, मृग, नकुल, (नेव बाघ इत्यादि बहुत हैं, परन्तु शिकारियों ने इनके वंश को न कर दिया है।

(३) मरुस्थल का हाल सुन लीजिये। यह साइबेरिय दक्षिण पश्चिम कास्पियन सागर से आरम्भ होता हुआ मैदान सा दिखाई देता है, जो श्यामलताशून्य बालुकामय मरु के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ बड़े बड़े वृक्ष तो नहीं पैदा होते, कुछ तृण उग आते हैं। परन्तु वहाँ के तृण हमारे देश के छोटे छोटे नहीं होते, कभी कभी वह इतने बढ़ जाते हैं कि उसमे छिप जाता है। इस प्रकार के तृणमय भूमि को अँ में 'स्टेप्स (Steppes) कहते हैं, यहाँ की भूमि को कहीं स कहीं से ऊबड़ खाबड़ और स्थान स्थान पर पथरीली जहाँ कहीं नदियों का किनारा मिल गया है वहाँ वृक्षलता देखी जाती हैं जो अति फली फूली होती हैं। यहाँ की

ऋतु बड़ी शाभायमान हाती है। बर्फ के गलते ही भूमी कीचड़ से भर जाती है और कुछ तृण उग आते हैं। एक भ्रमणकारी ने लिखा है कि "मरु भूमि में जब वसन्त ऋतु आती है तो लतागुल्म और उनके मनोहर रङ्ग विरङ्ग पुष्पों को सुगन्धि से मरु-भूमि भी नन्दन वन बन जाती है, तितलियाँ उन पर इधर से उधर फिरा करती हैं। जिनको ताक में गिरगिट भी तशरीफ लाते हैं, फिर भला नकुल क्यों चुप रहने लगे? वह गिरगिट को बेरहमी की सजा देने के लिये अपने पेट को कब्र बनाये तैयार रहते हैं। नेवलों का जुल्म लोमड़ी को बरदाश्त नहीं, चुपके से वह भी उसे मजा चखाने आ जाती है। इसी प्रकार ग्रीष्म के साथ ही साथ महाराज यमराज स्वयं महिष पर सवार वहाँ आ विराजते हैं और सारे पशु पक्षियों को उनके कर्मानुसार यमसदन पहुँचाने की आज्ञा दे देते हैं। कदाचित् इसी कारण ऐसे स्थान का नाम मरुभूमि पड़ा है क्योंकि सभों को अपने कर्मों का सब फल मिल जाता है जिसके कारण मर्त्यलोक से प्राण त्याग करके जीव सीधे स्वर्गधाम चले जाते हैं।"

यहाँ बकरी, ऊँट, गधे और घोड़े भी पाये जाते हैं। यहाँ भी कुछ मनुष्य वास करते हैं जो 'किर्गिज' और 'मगल' जातियों के नाम प्रसिद्ध हैं।

मरुभूमि के रेगिस्तान (बालुकामय स्थान) में आने पर देख जाता है कि यहाँ कभी वर्षा होती ही नहीं लतागुल्मों का कहीं नाम भी नहीं मिलता, कहीं कहीं बर्फ की गली हुई नदियाँ यहाँ आ कर लुप्त हो जाती हैं, परन्तु उनके किनारे कुछ हरियाली उग आती है। जिन्हें आसिस (Oasis) कहते हैं।

मरु-भूमि का जन्तु ऊँट ही अकेला है। यह जलाशयों से बहुत सा जल एकबारगी पीकर अपने पेट में भर लेता है, जो १२ या १५ दिन तक के लिये काफी होता है। इसलिये इसे मरु भूमि में चलने पर जल न मिलने के कारण कई दिन तक कोई विशेष कष्ट नहीं होता। इसका पैर भी ऐसा बना होता है कि जिसकी गद्दी रेत पर जम जाती है और उसे चलने में विशेष कष्ट नहीं उठाना पड़ता। जब प्रबल वायु के झोंके के साथ बालू उड़ कर आ जाती है तो ये आँख को अपने पपोटे से बन्द कर लेता है। अत हम ऊँट को यदि 'मरु-भूमि-सागर का जहाज' कहें तो अत्युक्ति नहीं है।

तिब्बत के उच्चस्थान पर 'याक' नामक जानवर रहता है जो गो-जाति का पशु है। इसका शरीर काले काले बालों से ढका रहता है। सींग अधिक बड़े बड़े और पैने होते हैं। तिब्बतियों के लिये यह पशु बड़े काम का है। तुर्किस्तान में भी यह देखा जाता है।

अब हम ईरान के माल-भूमि में पहुँच जाते हैं। यहाँ ईरान और अफगानिस्तान का दृश्य भली प्रकार दिखाई देता है। फारिस (ईरान) अत्यन्त शुष्क स्थान है, केवल कास्पियन सागर के निकट इसमें कुछ हरियाली दिखाई देती है। कुछ एक नदियाँ भी हैं इसलिये हम ईरान को मरु-भूमि के अन्तर्गत नहीं कह सकते।

यहाँ गोंद, जव और बाजरा उत्पन्न होता है। फारिस फल और मेवों के लिये प्रसिद्ध है। खजूर की बड़ी अधिकता है। यहाँ की पार्सी जाति बहुत पुरानी तथा सभ्य है। अफगानिस्तान में भी मे

अधिक पैदा होते हैं। परन्तु फारिस की अपेक्षा यह देश अधिक पर्वत मय है। काबुल के निवासी काबुली कहलाते हैं।

इसके पश्चात् अरब का नम्बर आता है। इसका दक्षिणी पश्चिमी और मध्य भाग बसने योग्य है, जहाँ की भूमि खूब उर्वरा है। काफी, ताड़, नारियल और छुहारे के वृक्ष अधिकता से पैदा होते हैं। परन्तु अरब का अधिक भाग बालुकामय है।

सभ्य अरब के अलावा एक बद्दू जाति भी यहाँ बसती है। बद्दू लोग घूमते फिरते हैं, कहीं एक स्थान पर जम कर नहीं ठहरते। इनका काम लूट मार करना और डाके डालना है। अरब के उत्तर में शाम देश है जहाँ यहूदियों की जाति आबाद है। उसके उत्तर तुर्क (टर्क) और आरमेनियन जाति के लोग रहते हैं।

(४) इस बार हम भारतवर्ष और उसके पूर्व के देश ब्रह्मा और स्याम प्रभृति का हाल लिखना चाहते हैं, परन्तु इन देशों का हाल आगे विस्तार पूर्वक लिखा जायगा अत यहाँ हम सक्षेप में कुछ लिखे देते हैं—

इन देशों मे वर्षा अधिक होती है, इस लिये लता गुल्म, वृक्ष इत्यादि की बाहुल्यता है। इसी के साथ नाना प्रकार के जीव जन्तु पशु-पक्षी भी पाए जाते हैं। मनुष्यो की कई जातियाँ आबाद हैं जो अधिक प्रसिद्ध हैं।

यहाँ भी हम एक प्रकार से एशिया का भ्रमण करा चुके हैं, परन्तु देश का हाल लिखते समय हम यहाँ का सविस्तर वर्णन करेंगे।

हमने पहले ही कहा था कि इस पृथ्वी मे एक वृहद् प्राण है और उसका सम्बन्ध मनुष्य प्राण से अधिक है। अत जहाँ के

मनुष्य सभ्य, उद्योग शील, चतुर और कार्य-पटु होते हैं वहाँ की भूमि भी अधिक भव्य और रुचिर हो जाती है।

साइबेरिया के दक्षिण भाग से लेकर ब्रह्मा, स्याम पर्य्यन्त पीत जाति के मनुष्य वास करते हैं। भारत के निवासी पीत जाति के लोग नहीं हैं। गाल की हड्डियाँ ऊँची हों, नाक भिची हो, आँखें छोटी हों और रङ्ग पीला हो ऐसे लक्षण चीनियों के हैं। भारतवर्ष और ईरान की माल-भूमि पर्य्यन्त तथा और भी पश्चिम तक आर्य जाति का प्रभुत्व है। इनकी नाक ऊँची, ललाट प्रशस्त और वर्ण प्राय शुभ्र है। इसके पश्चात् मालय उपद्वीप और उस निकटवर्ती द्वीप समूहों में जो लोग बसते हैं, वह ताँबे के रङ्ग वा कृष्ण-वर्ण होते हैं जो प्राय असभ्य हैं। इस प्रकार पीत, शु एवम् कृष्ण वा ताम्र वर्ण—ये तीन रङ्ग की जातियाँ एशिया मुख्य मनुष्य जाति हैं।

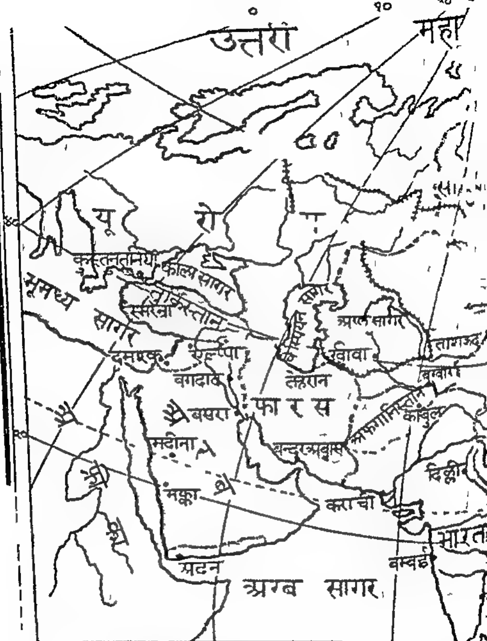
प्रश्न

(१) जल वायु के अनुसार एशिया के प्राय कितने भाग किये जा सकते हैं, उनके जल वायु का साधारण हाल लिखो।

(२) भारतवर्ष, अरब, फारिस और चीन ये किस विभाग में हैं, इनके जल-वायु और उद्भिद का कुछ हाल लिखो।

(३) एशिया में कितनी जातियाँ बसती हैं, उनका मुख्य स्थान निर्दे करो। इन जातियों का वर्णन और उनके पहचान करने के लक्षण हैं।

(४) याक, रेनडियर, भालू और ऊँट का कुछ हाल लिखो कि ये कि देश में और क्यों कर वहाँ के लिए उपयुक्त हैं?



एशिया राजनैतिक

हिन्द म



सागर
लीना नदी
याकुटस्क
बेहरिंग सागर
ओखोट्स्क सागर
बैकाल झील
आमूर नदी
ब्लाडीवास्टक
जापान सागर
टोकियो
योकोहामा
पीकिन
शंघाई
यन्नान
फारमूसा
हांगकांग
हैनान
फिलिपाइन द्वीप
स्याम
दक्षिणी चीन सागर
बोर्नियो
सिंगापूर
न्यूगिनी
जावा
आस्ट्रेलिया
प्रशान्त महा सागर
११०
१३०



(५) मरुभूमि की कुछ कथा बयान करो।

(६) वर्षा से जीवजन्तु और मनुष्य जाति से परस्पर क्या सम्बन्ध है?

---

(५) एशिया के देश समूह

हमने एशिया की भू प्रकृति, जलवायु और जातियों के सम्बन्ध मे बहुत कुछ बताया है कि एक एक प्राकृतिक अवस्था के कारण मनुष्य किस भाँति जीवन-यात्रा ग्रहण करने में बाध्य होता है। उत्तर एशिया के तुषार मरु और मध्य एशिया के उच्च-मरु स्थल में शीत ग्रीष्म के साथ संग्राम करते करते मनुष्य को और किसी विषय के विचारने का अवसर ही नहीं मिला, सारा समय, युग पर युग केवल अन्न चेष्टा करने ही मे व्यतीत हो गया, इन्हीं कारणों से प्रत्येक स्थान के मनुष्य सुसभ्य नहीं हो पाते। किन्तु भारतवर्ष, चीन और फारिस की भू प्रकृति अनुकूल होने से यहाँ के मनुष्य प्राचीन काल ही मे सुसभ्य हो गए थे। इन देशो के निवासियो ने राज्य का गठन किया था, सामाजिक संस्थाएं स्थापित की थीं, न्याय, धर्म और राजनीति के नियम बनाये थे। धर्म शास्त्र की व्यवस्था की थी। ज्योतिष, दर्शन, व्याकरण आदि शास्त्रों में पारदर्शिता प्राप्त करली थी। ये सब मनुष्य के इतिहास हैं, इनका जानना परमावश्यक है।

एशिया के समतल भाग में कई युगो से अनेक सभ्य जातियाँ राज्य, साम्राज्य, गठन करके राज करती चली आ रही हैं। एसिरिया और बेबीलोनिया प्रभृति राज्य एक समय वर्त्तमान थे, परन्तु अब नहीं हैं। यहूदियों की जाति एक समय प्रसिद्ध थी, परन्तु

अब उनकी वैसी ख्याति नहीं रही। अरब के मुसल
कभी प्रभावशाली हो गये थे, जो संसार-विदित है। मु
साहिब ने इस जाति को केवल एक ईश्वर की उपासन
उपदेश दिया था, इन्हें कुरान नामक सुप्रसिद्ध उत्तम धर्म
का अनुयायी बनाया था, परन्तु अब उनकी पुरानी दशा
रही। आर्य जाति के श्रीरामचन्द्र जी जैसे वीर, कृष्ण महाराज
नीतिज्ञ, हरिश्चन्द्र जैसे दानी किसी काल में संसार के
भाग में नहीं दिखाई देते हैं। ऋग्वेद जैसा शुद्ध पुराना ध
और कहाँ मिल सकता है? आज भी पारसी, हिन्दू और
जातियाँ विद्वान् हैं, परन्तु वह पुराना गौरव कहाँ? हाँ
जाति अवश्य हैं और बस।

सुतराम् एशिया के किन किन भागों मे स्वाधीन राज्य है
का जानना परमावश्यक है। फिर कौन जाति कब और
किसके अधिकार में आ गई इस विषय पर भी मनन करना
श्यक है, परन्तु इसका सम्बन्ध इतिहास से अधिक है
स्थान स्थान पर केवल इसका दिग्दर्शनमात्र करा
जायगा।

१ चीन, जापान द्वीप और अफगानिस्तान इस समय एशि
स्वतन्त्र राज्य और स्वतन्त्र जाति हैं। फारस और स्याम के
स्वाधीन राज्य कह सकते थे। अरब में तुर्कों और अङ्गरेज़
अमलदारियों के अतिरिक्त कतिपय स्थान खण्ड खण्ड में
वासियों का स्वायत्त शासन है जैसे 'उमान'।

भारतवर्ष, ब्रह्मदेश, साइबेरिया और अन्य द्वीप समूह यूरो

अब हम नीचे एक ऐसी तालिका दिये देते हैं जिससे विस्तार और जन संख्या आदि का भली प्रकार से पता चलेगा पर इसके रटने की आवश्यकता नहीं ।

संख्या	देश का नाम	क्षेत्रफल (वर्ग मीलों में)	सन् १९११ ई० की जन-संख्या	राजधानी	शासन-विधि
१	एशियाई रूस	६५ ६४,०००	२,४०,८२,२००	इरकोटस्क	स्वेट सोशियलिस्ट प्रजातन्त्र
२	चीनसाम्राज्य	४२,३४,०००	४०,७२,५३,०००	नानकिन	प्रजातन्त्र
३	भारतवर्ष	१६,४३,०००	३१,५०,०१,९९	दिल्ली	बृटिश गवर्नमेन्ट
४	अरब	१२,००,०००	१०,००,०००	मक्का	कुछ स्वतन्त्र कुछ भाग अन्य जाति अधिकार युक्त
५	एशियाई टर्की	७००,०००	१,५८,६३,२००	अन्तरा	टर्की गवर्नमेंट
६	फारिस	६ २८,०००	९५,००,०००	तेहरान	प्रजातन्त्र
७	अफगानिस्तान	२,२५,०००	४५,००,०००	काबुल	स्वतन्त्र
८	बलूचिस्तान	१,३०,०००	९,१५,०००	कलात	खण्ड राज्यों में बृटिश प्रभुत्व
९	फ्रेंचइण्डोचीन	२,५६,०००	१,५८ ६३,२००	हनोई	फ्रेंच गवर्नमेंट
१०	जापान	१,३१ ०००	३,९५,८१,९२८	टोकियो	नियमबद्धस्वतन्त्रता
११	लंका	२४,०००	४०,९२,९७३	कोलम्बो	बृटिश कालोनी
१२	कोरिया	८६,०००	१,२९,६०,०००	सिउल	जापानकाआधिपत्य
१३	स्ट्रेटसेटिलमेंट	} ३७,५००	६,३६,९६१	सिंगापुर	} बृटिश गवर्नमेंट या कालोनीज
१४	मालाया राज्य		१५,८४,४४०	,,	
१५	स्याम	२,१५,०००	६३ २०,०००	बकाक	देशी राज्य

एशिया में शक्तिशालीनता, सभ्यता और व्यापारादि में जापान सर्वश्रेष्ठ है। रूसी साम्राज्य का क्षेत्रफल अधिक है। चीन में मनुष्यों की आबादी सब से अधिक है। भारतवर्ष अन्य जातियो के भाग्योदय के लिये विख्यात है।

(१) एशियाई रूस

एशिया का चौथाई से कुछ अधिक भाग रूस के अधिकार में है। एशियाई रूस का एक कोना भारतवर्ष की सीमा से पामीर पर मिल जाता है। यह समस्त देश योरोपीय रूस के साथ मिलकर सोवियट सोशियलिष्ट रिपब्लिक बनाते हैं एशिया में इसके मुख्यत दो भाग हैं—१—साइबेरिया, २—रूसी तुर्किस्तान।

साइबेरिया

सोलहवीं शताब्दी में तातारियों के उस देश को जो इर्टिश नदी के किनारे था रूसी साइबेरिया कहते थे। जब रूसियों का राज्य इस ओर बढ़ा तो वह इस समस्त देश को साइबेरिया कहने लगे, यह देश उत्तर से उत्तरी महासागर, पूर्व से पैसीफिक महासागर और दक्षिण से चीन के राज्य और रूसी मध्य एशिया से घिरा हुआ है, इसके पश्चिम में यूरोपीय रूस है। ओबी, यनीसी, लीना और अमूर नदियों के बेसिन से यह देश बना हुआ है।

साइबेरिया के दक्षिण में अल्टाई और एयानशान आदि पहाड़ हैं। इसलिये इसका ढाल उत्तर की ओर है। याबलोन्वाय और स्टानोवाई पहाड़ों के कारण दक्षिण-पूर्व का ढाल पैसीफिक

महासागर की ओर है। इन विचारों से साइबेरिया के दो भाग हो सकते हैं, पश्चिमी साइबेरिया और पूर्वी साइबेरिया।

बेकाल झील यहाँ मुख्य है। इसका पानी मीठा है संसार भर की तमाम झीलों से यह अधिक गहरी है। अगारा नदी इसी झील से निकली है। इसकी गहराई ४,५०० फीट से भी अधिक है।

यहाँ की चारों बड़ी नदियों और उनकी सहायक नदियों का जल इस भाँति फैला हुआ है कि यदि कोई मनुष्य टोबल नदी से छोटी नाव पर सवार होकर यात्रा करे तो वह पैसीफिक महासागर तक पहुँच सकता है। परन्तु कहीं कहीं नाव को एक नदी से दूसरी नदी तक ले जाने में उसे उठाकर स्थल से होकर ले जाना पड़ता है। रूस के यात्रियों ने इसी प्रकार इस देश के भिन्न भिन्न भागों का पता लगाया था।

यनीसी और लीना का पाट बहुत ही बड़ा है, यनीसी की चौड़ाई का औसत १० मील है। समुद्र से २०० मील इधर इसकी चौड़ाई ६० मील है। कहीं कहीं लीना नदी १५ मील चौड़ी है। इतनी अधिक चौड़ाई का कारण यह है कि बर्फ के कारण इन नदियों के दहाने गर्मियों में भी पूरे पूरे नहीं खुले रहते। वर्ष भर में लगभग ८ इञ्च पानी बरसता है। इससे आश्चर्य होता है कि इन नदियों में इतना जल कहाँ से आ जाता है? कारण यह है कि वर्षा का जल बिन्दुमात्र भी इधर उधर नहीं जाता, न पृथ्वी सोखती है और न वाष्प बन कर उड़ सकता है जो बरसा तुषार बन गया फिर नदियों द्वारा उत्तरी सागर में पहुँच गया।

साइबेरिया का जल-वायु तो प्रसिद्ध ही है। परन्तु उत्तरी भाग की अपेक्षा दक्षिणी अंश अधिक गरम रहता है। अक्टूबर ही में झीलें, नदियाँ और दलदल आदि सब बर्फ से ढक जाते हैं। इन पर नौका के स्थल पर बिना पहिये की गाड़ी जिसका नाम 'स्लेज' (Sledge) है, चलती है। पेड़ों के भीतर भी बर्फ जम जाती है जो कुल्हाड़ी से काटे भी नहीं कटती। थर्मामीटर (तापमान) यन्त्र का पारा भी जम जाता है। उड़ती चिड़ियाँ बर्फ से लिपट जाती हैं, और धड़ाम से गिर पड़ती हैं। जिससे वे तो नहीं परन्तु उनकी आत्मा उड़ जाती है।

वर्खोयनस्क (Verkhoyansk) से बढ़कर संसार में शीत-स्थान अन्य कोई नहीं है। एक यात्री ने लिखा है कि "यहाँ तापमान यन्त्र का पारा शून्य स्थान से भी ६० अंश नीचे उतर आता है। कहीं ६०० फीट ऊँची बर्फ की तह जम जाती है। गर्मियों में यहाँ गर्मी भी अधिक पड़ती है, कभी कभी १०२ तक तापमान यन्त्र का पारा चढ़ आता है। भूमध्य-रेखा से सुदूर स्थान के लिये इतना उत्ताप अधिक है। परन्तु ग्रीष्म-ऋतु कुछ ही दिनों रहती है, नहीं तो वर्ष के ६ महीने केवल जाड़ा ही जाड़ा बना रहता है। दिन भी गर्मियों में १६ घण्टे तक बढ़ जाता है, इसी प्रकार रात भी बढ़ कर २४ घंटे को पूरा करना चाहती है। इसका कारण यह है कि यह स्थान विषुवत् रेखा से दूर और ध्रुव के निकट है। दक्षिण में ऊँचे ऊँचे पहाड़ होने के कारण उत्तप्त वायु का प्रवेश नहीं होने पाता, परन्तु उत्तरी ध्रुव का अति शीत वायु सीधा साइबेरिया में पहुँचता रहा है। यहाँ से समुद्र भी दूर हैं, जो पास हैं भी वे क्षुद्र हैं।"

उत्तरी भाग के बर्फीले मैदान की बर्फ गर्मियों में भी नहीं पिघलती, केवल ऊपरी धरातल कुछ हलकी हो जाती है, परन्तु

नीचे कई फीट का ऊँचा चट्टान ज्यो का त्यो बना रहता है। इस दलदल में 'काई' और 'आगास' नामक बेल तथा झरबेरी के समान एक झाड उगती है। अँगरेजी में ऐसे मैदान को "टुण्डरा" (Tundra) कहते हैं। यहाँ केवल वही मनुष्य-जाति बसती है जो घर बना कर नहीं रहती किन्तु इधर उधर घूमा करती है। जहाँ पर बर्फ के मैदान का अन्त और सपाट भूमि का आरम्भ है वहाँ पर भोजपत्र के छोटे छोटे पेड़, फिर क्रमानुसार उन्नत चीड़ के वृक्ष देख जाते हैं। इन वृक्षों का जङ्गल सहस्त्रों वर्गमील में विस्तृत है।

इन जङ्गलो से कुछ दूर जहाँ मिट्टी कुछ काली काली है, धान, गेहूँ, और जव की कृषि कुछ हो जाती है। काली मिट्टी वाला मैदान प्राय घास से ढका रहता है। यहाँ वृक्ष लतादि नहीं होते।

काश्गर और खुतन आदि नदियों की घाटियों में कुछ ऊँचे ऊँचे वृक्ष भी पाये जाते हैं। साइबेरिया के दक्षिण पश्चिम की ओर ओबी और आमूर नदियों की घाटियों मे गेहूँ, जव और राई की कृषि होती है।

साइबेरिया खनिज पदार्थों का तो आगार है। यूराल और यनीसी नदियो की घाटियों, अलटाई और स्यान के पहाड़ों और बैकाल के सूबे मे सोने की खानें हैं। इन सोने की खानों का क्रम यहाँ से आरम्भ होकर अमेरिका तक चला गया है। ताँबा, सीसा और चाँदी भी निकाली जाती है। शघालियन द्वीप में कोयले की खानें हैं।

एक प्रकार का ऐसा भी जन्तु न्यूसाइबेरिया और ल्याग्द्वीप के बर्फीले मैदानों में बर्फ के नीचे दबा हुआ मिलता है जो किसी काल में हाथी से भी अधिक बड़ा जानवर पृथ्वी पर वर्तमान था। उसके बाल, खाल और सब वैसे के वैसे

घने थे, किसी किसी के केवल दाँत कटे हुए थे। बर्फ के नीचे दबी हुई वस्तु सेकड़ों वर्ष तक गल सड़ नहीं सकती। अत: जब के ये जानवर हैं इस समय का पता लगाना भी कठिन है। इस जानवर को मैमथ कहते हैं। सन् १८०४ ई० में एक ऐसा ही जानवर मिला था जो १५ फ़ीट ऊँचा ९ फीट चौड़ा था और जिसके सारे शरीर पर ऊन था, कहीं कहीं गैंड़े भी दबे हुए मिलते हैं, परन्तु मैमथ जाति का हाथी अब ससार में नहीं पाया जाता।

जैसा कि हमने एशिया की पैदावर मे लिखा है, साइबेरिया में रेनडियर, मछलियाँ, नकुल, तुषार-देशवासिनी बिल्ली और कई के अन्य वन्य-पशु अधिक हैं। वृक्ष लताच्छादित भूमि मे समूर तथा काकुम के अतिरिक्त गिलहरी और साधारण बिल्ली भी रहती हैं परन्तु इन जानवरो की खाल का व्यापार अधिक किया जाता है। सपाट मैदानों मे भैंसें, भेड़, बकरी, घोड़े और बगदादी ऊँट भी होते हैं। बगदादी के दो कूबर (कोहान) होते हैं। यहाँ के निवासियों का व्यवसाय आखेट करना, मछली पकड़ना और खान से खनिज वस्तुएँ निकालना है।

यहाँ जाड़े में तो आना जाना सुगम है क्योंकि नदियाँ भी जमी रहती हैं, परन्तु गर्मी के दिन यात्रा करने के अनुकूल नहीं हैं। थोड़े दिन हुए कि लिनेनग्रेड* से मास्को होती हुई पैसीफिक महासागर तक एक रेलवे लाइन निकाली गई है जिससे पूर्व को पश्चिम से मिला दिया है।

*पेट्रोग्राड ('Petrograd) रूस प्रजातन्त्र की राजधानी का नाम है। इसे पहले St Petersburg कहते थे, परन्तु भीषणयुद्ध के आरम्भ होने से सितम्बर १९१४ ई० से इसका पेट्रो-ग्रेड हो गया, क्योंकि 'बर्ग' शब्द जर्मन भाषा का था। यह स्थान रूस में है। अभी हाल में पेट्रोग्राड (Petrograd) का नाम लेनिनग्राड (Leningrad) हो गया है।

साइबेरिया में कुछ शहरो को छोड़ कर और सब गांव ही
गांव आबाद हैं। सरकारी घर पक्के बने हैं, परन्तु प्रजा बल्लियों से
बने हुए घरो में रहती है। यहां के नगर प्राय अपनी पास की नदी
के नाम पर प्रसिद्ध है जैसे टोबलस्क। अर्थात् टोबलनदी, 'सक'
का अर्थ है नगर।

ओमस्क (Omsk) इर्तिश और ओम नदी के सगम पर
पश्चिमी साइबेरिया का व्यापारिक स्थान है यहां मक्खन अधिक
बनता है।

टोमस्क (Tomosk)—टाम नदी पर बसा हुआ है, यहां
साइबेरिया विश्वविद्यालय है।

क्राजनोयर्स्क—(Krasnoiarsk) यनीसी के प्रान्त में खनिज
पदार्थों का मुख्य व्यापारिक स्थान है।

टोबलस्क—यह एशियाई रूस की पुरानी राजधानी है।
यह मछलियों की मंडी है।

इर्कुटस्क—अब यह इर्कट नदी पर नहीं बसा है, हां अगरा
नदी पर आबाद है। और नगरो से इसकी आबादी अधिक है।
यहां पर भी अच्छे बने हैं। चमड़े का व्यापार खूब होता है।
पूर्वी साइबेरिया की यह राजधानी है। एक विद्वन्मडली भी यहां
है जो आस पास के भौगोलिक विषयों का अनुसन्धान किया
करती है।

नरचीनस्क—मे चांदी, सीसा, तांबा और लोहा निकाला
जाता है इसलिये यहां रेल की एक शाखा भी आई है।

व्लाडीवास्टक—ऐसा बन्दर है जो वर्ष में केवल कुछ ही दिन बर्फ के कारण बन्द रहता है। यूरोप के व्यापार का यही केन्द्र स्थान है।

इस देश का क्षेत्रफल हमारे संयुक्त प्रान्त से पचीस गुना है परन्तु जन संख्या केवल ५० लाख के लगभग है अर्थात् प्रति मील एक मनुष्य का पड़ता है।

रूसी तुर्किस्तान

(मध्य एशिया)

रूसी तुर्किस्तान या मध्य एशिया, यूरोप और एशिया के मध्य में साइबेरिया के दक्षिण और चीन के उत्तर में उप स्थित है। इसका दक्षिणी सिरा अफगानिस्तान के अति निकट तक चला गया है।

ओक्सिस या आमू नदी पामीर से निकल कर अर्ल झील में गिरती है। जक्सार्टेस या सर नदी थ्यानशान से निकल कर अर्ल झील में गिरती है। इनके अतिरिक्त, इली, अर्ल और मुर्गाब नदियाँ भी हैं।

यहाँ का जल वायु हद दर्जे पर पहुँचा हुआ है। गर्मियों में अधिक गर्म और सर्दियों में अधिक शीत रहता है।

यहाँ के निवासी तुर्क हैं जो प्राय मुसलमान हैं। केवल मील पीछे ७ मनुष्यों की आबादी है। नदियों की ऊपरी किनारों और पहाड़ों के नीचे अधिकतर लोग बसते हैं।

यहाँ के नगरों के प्राय चारों ओर परकोटा होता है, क्योंकि इस मरु भूमि के नगर प्राचीनकाल से लड़ाई झगड़े के घर रहे हैं।

इस भाग में तीन प्रजा तन्त्र राज्य हैं जिन मे सोवियट प्रणाली द्वारा शासन होता है।

(१) तुर्की मान (तुर्कमिनस्तान) इसकी राजधानी आशिकाबाद है। जो मर्व से कास्पियन सागर तक जाने वाली रेल पर बसा हुआ है। इस शहर को सिकन्दर ने मुर्गाब नदी के किनारे आबाद किया था। नदी के किनारे बसे होने के कारण बड़ा उपजाऊ है। यहा के खरबूजे (सर्दे) और अगूर प्रसिद्ध हैं।

(२) उजबेगिस्तान इसकी राजधानी समरकन्द है। यह नगर प्राचीन काल में बहुत प्रसिद्ध था। इसी मे बुखारा का नखलिस्तान और ताशकन्द का प्रसिद्ध शहर भी शामिल हैं। खीवा भी इसी देश मे है जहा के सर्दे प्रसिद्ध हैं।

(३) ताजिकस्तान उजबेगिस्तान के पूरब और अफगानिस्तान के उत्तर मे है। यह देश मध्य एशिया के सब भागो में कगाल है।

(२) चीन का प्रजा-तन्त्र राज्य

उत्तर में एशियाई रूस, पूव में प्रशान्त महासागर, दक्षिण मे प्रायद्वीप इन्डोचीन, हिंदुस्तान और पश्चिम मे रूसी तुर्किस्तान है।

चीन का राज्य ५ विभागों मे विभाजित है, जो कि (१) चीन (खास) (२) मचूरिया (३) मङ्गोलिया (४) तिब्बत और (५) पूर्वी (चीनी) तुर्किस्तान हैं। इनके विस्तार और मनुष्यगणना का पता अगले पृष्ठ के नक्शे से चलेगा।

संख्या	विभाग	क्षेत्रफल (वर्ग-मील)	जन संख्या
१	चीन	१५,३२,४२०	४०,७२,५३,०००
२	मञ्चूरिया	३,६३,६१०	१,६०,००,०००
३	मगोलिया	१३,६७,६००	२६,००,०००
४	तिब्बत	४,६३,२००	६५,००,०००
५	पूर्वी (चीनी) तुर्किस्तान	५,५०,३४०	१२,००,०००
*	चीनकासाराराज्य	४२,७७,१७०	४३,३५,५३,०००

चीन (ख़ास)

चीन ख़ास समस्त प्रजातन्त्र राज्य के दक्षिण पूर्वी भाग में स्थित है और राज्य भर मे सब से अधिक धनवान और अधिक आबाद है। नक्शे को फिर से देखने से ज्ञात होता है कि अन्य विभागों के क्षेत्रफल का योग इसके क्षेत्रफल से दुना है परन्तु उन सबकी जन संख्या का योग इसकी आबादी के चार हवें भाग से भी कम है।

धरातल—इसके पूर्वी भाग मे बहुत बड़े मैदान ह्वाङ्गहो और याङ्गटीसीकियाङ्ग नदियों के बेसिन मे स्थित हैं जो

* कोरिया अब जापान साम्राज्य के अधिकार में आगया है अत चीन का क्षेत्रफल केवल ४२,३४,००० वर्गमील और जन संख्या ४०,७२,५३,०० रह गई है।

उत्तर से दक्षिण तक ६०० मील लम्बे बहुत दूर तक भीतर चले गये हैं। ये मैदान बहुत उपजाऊ हैं क्योंकि विशेष कर पानी से भरे रहते हैं। ह्वाङ्गहो नदी के डेल्टा के दक्षिण शेनटङ्ग का उपद्वीप पूर्व की ओर फैला हुआ है और पिचेली की खाड़ी को पीले सागर से मिलाता है। पश्चिम दक्षिण की ओर का धरातल कुछ ऊँचा होता चला गया है और यह भाग विशेष कर उपजाऊ घाटियो मे भरा हुआ है जो एक पहाड़ी को दूसरे से पृथक् करती हैं। बहुत दूर पश्चिम में ब्रह्मा की सीमा पर एक बहुत बड़ा चौरस प्लेटो है जिसमें होकर बहुत सी पर्वत-श्रेणिया उत्तर से दक्षिण तक चली गइ हैं। ये घाटियाँ समुद्र के धरातल से २०० फीट से कम नीची नहीं हैं। तिब्बत के दक्षिण पूर्वी भाग से चीन के पूर्वी भाग तक के बीच में क्यून लन की श्रेणियाँ उत्तर से दक्षिण तक फैली चली गई है और ह्वाङ्गहो और याँगटीसीकियांग नदियों के बेसिनो को अलग करती हुई बहुत सी श्रेणियों के साथ पेकिङ्ग पर्वत के नाम से प्रसिद्ध है। इस वाटर शेड (Watershed)के कारण चीन खास दो प्राकृतिक भागो में विभक्त किया जा सकता है। उत्तर मे बहुत से नरम छिद्र युक्त चट्टान हैं जोकि आँधियो मे बन गये हैं। यह भाग मरुस्थल के समान बालू से भरा हुआ है और बहुत से स्थानों पर कई हजार फीट मोटा है। उन चट्टानो के छिद्र कदाचित् जङ्गली घासों के छिद्रों से बने हैं। ये चट्टानें बहुत ही उपजाऊ हैं क्योंकि उनमे पानी बहुत सरलता से जा सकता है। यह मिट्टी बहुत हलकी और पोली होती है, जो ह्वाङ्गहो (पीली नदी) में मिल कर पीले सागर तक पहुँच जाती है। इस समुद्र और नदी का नाम इसी मिट्टी के कारण पीली नदी और पीला सागर पड़ा है। पेकिङ्ग पर्वत के दक्षिण मे यह चट्टानी मिट्टी नहीं मिलती,

परन्तु यांगटीसीकियांग के बेसिन का पश्चिमी भाग लाल मिट्टियों का है और वह भी चट्टानी मिट्टी के समान उपजाऊ है। इसके दक्षिण में नानलिङ्ग पर्वत है जो कि पश्चिम से पूर्व की ओर समुद्र से २०० मील की दूरी तक चला गया है और जो यांगटीसीकियांग और कैनटन नदियों के बेसिनों को पृथक् करता है और उत्तर पूर्व की ओर मुड़ता हुआ ४०० मील तक समुद्र किनारे के समानान्तर चला गया है। फिर वहां से बहुत सी श्रेणियां चारों ओर फैली हुई हैं जिनके बीच में बहुत सी उपजाऊ घाटियां हैं।

नदियां—चीन की प्रसिद्ध नदी यांगटीसीकियांग तिब्बत के हिमाच्छादित पर्वतों से निकलती है और पहले पहल पूर्व की ओर बहती हुई फिर दक्षिण की ओर ५०० मील तक चलकर ब्रह्मा के उत्तर पूर्वी भाग में ५० मील चलकर मीकाङ्ग के समानान्तर बहती है। यहां से फिर मुड़ जाती हैं और पूर्व मे उत्तर और उत्तर से पूर्व टेढ़ी मेढ़ी बहती हुई चीन सागर मे गिरती है। इस नदी मे १,००० मील तक स्टीमर चल सकते हैं। परन्तु इसके बाद इसकी धार बहुत वेगवान् हो गई है और फिर इसमें ८०० मील तक छोटे जहाज जा सकते हैं। इसकी धारा छोटी छोटी डोंगियों के लिये अगम नहीं, इसलिये इसमे अनेक बार तोप ले जाने वाली नावें भाप के द्वारा खेई गई हैं।

होआंगहो (Hwang-Ho)—यह नदी भी तिब्बत के पहाड़ों से निकलती है और क्यूनलम पहाड़ों के तग रास्तों को काटती हुई कुछ दूर तक चीन खास के उत्तरी-पूर्वी भाग की कुछ दूर तक सीमा बनाती है, फिर मंगोलिया के इनशान पहाडों के दक्षिण मे ५०० मील पूर्व की ओर बह कर फिर चीन मे लौट आती है। और फिर ४०० मील दक्षिण पीलग पहाड के उत्तर तक बहती है। यहां

र यह अपनी मुख्य सहायक वी (Wei) से मिलती है जो पश्चिम से आती है। फिर पूर्व और उत्तर पूर्व की ओर बहती हुई पेचैली की खाड़ी (Gulf of Pechili) में गिरती है। परन्तु अब यह समुद्र से प्रायद्वीप शैनटंग के उत्तर ओर मिलती है। कुछ काल व्यतीत हुए कि यह अपनी नवीन धारा से ३०० मील दक्षिण की ओर चिनकांग के उत्तर समुद्र से मिलती थी। इस नदी का पाट उस बालू के कारण उठा हुआ है जिसको वह अपने साथ बहा लाती है, इसी कारण वह मैदान से कई फीट ऊँची है। कभी कभी यह अपने बाँधों और घेरो को तोड़ कर अपनी धारा बदल देती है जिससे इसमें बहुधा बाढ़ आया करती है। इससे इस प्रदेश में मृत्यु और नाना प्रकार की हानियाँ होती रहती हैं। इन घटनाओं के कारण इस नदी को "चीन का शोक" (China's Sorrow) कहते हैं। चीन की अन्य नदियों की भाँति इस नदी में भी वर्षा के दिनों में पानी अधिक आ जाता है जिससे इसका धरातल ४० फीट ऊँचा हो जाता है। हांगहो में मिट्टी की अधिकता होने के कारण बाढ़ के दिनों के अतिरिक्त इसमें स्टीमर नहीं जा सकता। १०० टन बोझ की देशी नावें इसमें सब जगह लेई जा सकती हैं।

पीहू (Pei-Ho) भी पिचैली की खाड़ी में गिरती है। यह बहुत से छोटे छोटे सोतों से मिल कर बनी है जो उत्तरी पहाड़ियों से निकल कर टीन्सटिन के पास मिल जाती है। इसमें १०० मील तक यात्रा की जा सकती है।

कानटन (सी क्यांग) दक्षिणी-पश्चमी ऊँचे मैदानों से निकल कर ठीक पूर्व की ओर बहती हुई समुद्र में गिरती है। इसके मुहाने से १२० मील तक इसमें जहाज चल सकते हैं। तत्पश्चात् इसकी

धारा तेज होती जाती है जिससे और आगे जहाज नहीं चल सकते, केवल छोटी छोटी नावें ढकेली जा सकती हैं।

चीन में नदियों के द्वारा व्यापार करने का उपाय संसार भर से अति प्रशसनीय है, इसलिये इस देश के प्रधान नगर नदियों के तट पर बसे हैं। एक राजकीय नहर उत्तर में मिन्सटिन से दक्षिण में हांगचाऊ तक खोदी गयी है जो ७०० मील लम्बी है और उसको बने १,००० वर्ष से भी अधिक समय हो गया होगा।

जल वायु—चीन का प्राय सभी भाग—केवल थोड़े से हिस्से के अतिरिक्त—उत्तरी शीत कटिबन्ध (North Frigid Zone) मे स्थित है। जाड़े की ऋतु में उत्तर की ओर उष्णता बहुत ही कम हो जाती है। और ग्रीष्मऋतु मे उनमे बहुत कम अन्तर होता है। जून मास मे कानटन के दक्षिण मे तापमान यन्त्र का पारा ८०° और शानटङ्ग के उत्तर मे ७०° और जनवरी में इन्हीं स्थानों मे क्रमश ६०° और २०° अश होता है। इस ऋतु मे दक्षिण की अपेक्षा उत्तर मे अधिक गर्मी होती है। पीहू नदी में जो उत्तर मे ही है जाडे के दिनो मे तीन मास तक बर्फ जमी रहती है। चीन मे सिवाय उत्तर-पश्चिमी भाग के सब जगह अधिक वर्षा होती है, क्योंकि यहाँ पर पैसीफिक महासागर से जो मानसून उठती है, वह यहाँ के पहाड़ो से टकराती है। इस कारण यहाँ ग्रीष्म ऋतु में वर्षा अधिक होती है। मई से जुलाई तक वर्षा क्रमश बढ़ती जाती है और फिर कम होने लगती है। अगस्त तथा सितम्बर मे भी कुछ वर्षा हो ही जाती है, परन्तु जाड़े के दिनों में नवम्बर और सितम्बर मे कुछ जल नहीं पड़ता। मानसून के बदलने पर यहाँ चक्कर दार आँधियाँ चलती हैं जिनको 'तूफान' (Storms) कहते हैं।

उपज

वद्भिज पदार्थ—चावल और चाय की खेती दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम प्रदेश मे अधिकता मे की जाती है। ऊख, रुई, और नील की भी खेती दक्षिण ही मे होती है और अफयून इस भाग मे बहुत अधिकता मे पैदा होती है। गेहूँ, जव, मकाई (ज्वार) बाजरा और मटर उत्तर मे पैदा होते हैं। बाँस बहुतायत से मिलता है और बहुत से कामो में आता है, यह चीन की कारीगरियो में से एक प्रधान है। मोम और कपूर के वृक्षो से बहुत सी अमूल्य वस्तुएँ बनाई जाती हैं।

जीव जन्तु—मछलियाँ और सुअर खाने वाली वस्तुओ मे से हैं। मछलियाँ नदियो और झीलो मे बहुतायत से पायी जाती हैं। स्वर्ण और रौप्यवर्ण की मछलियाँ पहले चीन ही से आती थीं। यहाँ पर बहुत थोड़े जङ्गली जीव हैं क्योंकि वहाँ मनुष्यो की सख्या बहुत अधिक है और प्राय सब स्थानों पर कृषि होती है। घोड़े और चौपाये बहुत नहीं हैं। जङ्गलों में बहुत से सुन्दर तीतर पाये जाते हैं। रेशम के कीड़े बहुत पाले जाते हैं और उनसे बहुत सा रेशम पैदा होता है। शहतूत के वृक्ष, जिनको रेशम के कीड़े खाते हैं, प्रत्येक स्थान पर बोये जाते हैं।

खनिज पदार्थ—चीन से बहुत खनिज पदार्थ निकलते हैं, परन्तु वे बहुत काम मे नहीं आते। ताँबा, जस्ता और पारा पश्चिमी पहाड़ों पर पाया जाता है। लोहा भी बहुतायत से मिलता है। होआँगहो और याँगटीसीक्याँग नदियों के बेसिनों में बहुत सी खानें हैं जो ७,००० वर्ग मील तक फैली हुई हैं। चीनी मिट्टी भी यहाँ की अमूल्य वस्तुओ मे से एक है।

मनुष्य

चीनी लोग मगोल वंशज हैं। ये लोग चतुर, परिश्रमी, अल्पव्ययी, बहुत बातूनी और निवारक (Exclusive) और अपनी रीतियों के बड़े प्रेमी होते हैं। ये लोग बौद्धमत के मानने वाले हैं परन्तु उच्च घराने वाले कनफ्यूशियन (Canfucians) हैं जो सरकारी धर्म्म है, जिसके राजा लोग पुरोहित हैं। ये पितृ पूजक भी बहुत हैं जो सदा से अपने बाप दादाओं की पूजा करते आये हैं। इस राज्य में तीन करोड़ मुसलमान और १२,५०,००० ईसाई हैं। ईसाई धर्म्म का प्रचार चीन के अभिगम्य भागों में बहुत फैल रहा है।

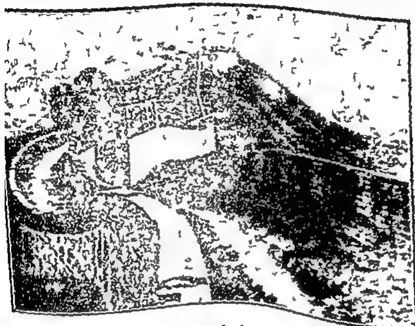
प्राचीनकाल में चीनी लोग बहुत ही सभ्य थे। उनको छापने, कागज बनाने और सामुद्रिक यन्त्र का पूर्ण ज्ञान था। इनके बहुत पीछे ये सब बातें इनसे यूरोपियन लोगों को ज्ञात हुई हैं।

चीनियों ने न तो पुराने समय का कुछ ध्यान दिया और न उस समय के मनुष्य के आविष्कारों का कुछ विचार ही किया है। आगे बढ़ने की इच्छा जाती रही और दूसरी जातियों को घृणा से देखने लगे, इससे सभ्यता-देवी ने अपना सम्बन्ध चीन से छोड़ दिया। परन्तु अब लोगों ने इन बुराइयों को छोड़ दिया और उनमें यह उत्कण्ठा उत्पन्न हुई है कि अपने देश को धन धान्य बनावें और देशी शिल्प की ओर ध्यान दें इस कारण वे अपनी राजधानी में नाना प्रकार की शिल्प-सामग्री तैयार कर रहे हैं।

शासन-प्रणाली

कोई २,००० वर्ष व्यतीत हुए कि चीनियों ने एक दीवार बनाई थी जो अभी तक मौजूद है और १,२५० मील लम्बी है। यह दीवार तातारियों के आक्रमण से बचने के लिये बनाई गई थी, परन्तु

१२७६ ई० में मुगलों ने इस देश को विजय कर लिया और १४ ई० में यह मन्चूरिया के तातारों के अधिकार में आ गया कुछ दिन पूर्व तक वहाँ के शासन-कर्त्ता थे। कुछ दिन से यह



चीन की दीवार

राज स्वाधीन हो गया था पर अभी तक राज घराना और उनके जाति वालों का बहुत कुछ आधिपत्य था, पर सन् १९११ ई० में प्रजा के भीषण उपद्रव ने अपने देश में न केवल राज्य वंश से ही पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली है वरन अन्य देशवासियों ने जो विशेष स्वत्व प्राप्त कर लिये थे उनको भी स्थगित कराने में सफलता प्राप्त कर ली है और जो प्रजा तन्त्र राज्य इस समय स्थापित हुआ है, वह अब वहां एक प्रजातन्त्र केन्द्रगत सरकार हो गई है, जिसकी राजधानी पेकिन के स्थान में नानकिंग में स्थापित की गई है अब राजा के स्थान में जनता के

प्रतिनिधियों द्वारा राज्य का प्रधान चुना जाता है और राज सभा की सहायता से राज्य करता है।

सन् १८६५ ई० में जापानियों ने चीनियों को हरा दिया था और इनसे फारमोसा और पेसकेडोटस के द्वीपों को ले लिया था। इसी प्रकार अंग्रेजों, जरमनों और फ्रान्सीसियों की भी यहां पर कुछ भूमि है जो उनको ठेके के समान मिली हुई है। सन् १८४२ ई० तक - जातियाँ केवल कैनटन ही के बन्दरगाह पर व्यापार कर सकती थीं परन्तु सन् १८६७ ई० से चार बन्दरगाहों पर इन जातियों को व्यापार करने की आज्ञा मिली हुई है और वे 'मित्रता के बन्दरगाह' (Treaty ports) कहलाते हैं। शनै शनै इन बन्दरगाहों की संख्या बढ़ती गई। और प्राय' सब प्रसिद्ध बन्दरगाहों पर उनको व्यापार करने की आज्ञा मिल गई। पर जो स्वत्व इन अन्य देश निवासियों ने प्राप्त कर लिये थे उनसे जनता में असन्तोष उत्पन्न हो गया था पर इस विप्लव के बाद अन्य जातियों ने भी नवीन राज्य से नवीन सन्धियाँ करना स्वीकार कर लिया है।

व्यवसाय और व्यापार

चीन की प्राचीन और प्रसिद्ध दस्तकारी रेशम, पीछे रोगन और चीनी मिट्टी के बरतन थे। हाथी दाँत पर नकाशी करना भी यहाँ बहुत प्रचलित था परन्तु यह सब काम धीरे धीरे कम होता चला जा रहा है। अब भाप के सहारे से किये जाने वाले दूसरे व्यवसाय क्रमश उन्नति करते जा रहे हैं। उनमें से मुख्य रुई ऊन और रेशम का कातना और बुनना है। खनिज पदार्थों के खोदने में भी उन्नति हो रही है और बहुत कुछ लोहा, सोना, कोयला और टीन प्राप्त हो रहा है। चीन के रेलवे विभाग ने हाँगकाऊ के

स्थान पर बहुत से इञ्जिनियरिङ्ग व्यवसायो की स्थापना की है जो बहुत उन्नति पर हैं।

बाहर से आने वाली वस्तुए (Import)—सूती कपड़े, अफयून, मिट्टी का तेल, धातुए, चीनी और चावल हैं। बाहर को जाने वाली वस्तुएँ (Export)—रेशम, चाय कच्ची रुई, खाल, क्रीमी और कच्चा चमड़ा है। अफयून हिन्दुस्तान से भेजी जाती है परन्तु धीरे धीरे यह रुकती जाती है। सूती कपड़े हिन्दुस्तान और इङ्गलैण्ड से आते हैं। यहाँ का सामुद्रिक व्यापार हिन्दुस्तान, इङ्गलैण्ड, संयुक्त राज्य अमेरिका से और भीतरी व्यापार रूस से अधिक होता है। चीन के बाहरी व्यापार की आमदनी ८ करोड़ स्टरलिंग के लगभग है।

व्यापार करने के रास्ते

चीन के व्यापार का मुख्य भाग जलाशयो द्वारा बहुत काल से होता आया है। यहाँ के बहुत से भागो में अच्छी अच्छी सड़कें हैं रेलें भी अब चारों ओर खोल दी गई हैं। कुछ तो उनमें से चीनी इञ्जिनियरों ने चीन की राजधानी से बनाया है और कुछ दूसरे देश के लोगो ने गवर्नमेन्ट की आज्ञा से ठेके पर बनाया है। सबसे बड़ी रेलवे लाइन ७५० मील लम्बी पेकिन से हांकाऊ तक जारी है। इस लाइन का होआगहो नदी पर दो मील लम्बा पुल है। दूसरी लाइन ६५० मील लम्बी पेकिंग से कानटन तक जारी है। सब मिला कर चीन में ३,५०० मील लम्बी रेल की सड़कें हैं और अब ४,००० मील में बहुत जल्द जारी होने वाली हैं।

प्रसिद्ध स्थान

नानकिङ्ग—(Nanking) (दक्षिणी कचहरी) यांगटिसीक्याग की नदी पर नवीन राजधानी है और कपड़े की दस्तकारी के लिये प्रसिद्ध है।

पेकिन—Pekin (उत्तरी कचहरी) उत्तर-पूर्व में पीह के किनारे चीन की राजधानी थी इसकी जन सख्या १६ लाख लगभग है। पेकिन नगर के दो भाग हैं, एक चीनी पेकिन, दू तातारी पेकिन।

टीन्टसिन—(Tientsin)—मे ७,५०,००० मनुष्य बसते, यह पीह नदी पर पेकिन का बन्दरगाह है।

हैन्काऊ—(Hankow)—समुद्र से ७००० मील यॉंगटीसी-कियॉग और हैन नदियों के सङ्गम पर है। यहाँ जहा द्वारा बहुत व्यापार होता है।

वुचग(Wuchang)—यॉंगटीसीकियाग नदी के किनारे पर अपनेप्रान्त की राजधानी है और हनयाग (Hanya इन दोनो नदियो के सङ्गम के बीच मे है।

इन नगरों के मिलने से एक वृहत् व्यापारिक स्थान जाता है जो चीन के बीच मे स्थित है और इसकी मनु सख्या २० लाख से अधिक है। चीन के रेलवे लाइन में उन्नति हो रही है इससे थोड़े ही दिनो बाद यह साम्राज्य में सबसे बडा व्यापारिक स्थान हो जायगा।

इचाङ्ग—(Ichang) समुद्र से १००० मील यागटीसीकि नदी पर स्टीमरों के आने जाने की सीमा है।

शघाई—(Shanghai)—की जन सख्या ६,५०,००० यहाँ पर यूरोपीयन लोग बहुत आबाद हैं। इस कारण दूर देशों व्यापार बहुत होता है।

कानटान—(Canton)—यह सीक्यांग नदी पर स्थित है और यहाँ पर चाय का व्यापार बहुत होता है। सन् १८४२ ई० तक दूसरे देश के लाग केवल यहीं तक आ सकते थे।

दूसरे प्रसिद्ध स्थान—अम्वाय (Anoy), फ़ूचाऊ (Foochow) और निंगपो (Ningpo) हैं।

चीन में दूसरे देशों का अधिकार

मकाऊ (Macao)—पुर्तगाल वालो का स्थान है, यह उनको १५८० ई० में मिला था।

हाँगकाँग (Hong-kong)—अगरेज़ों को १८४१ ई० में प्राप्त हुआ है।

इसके द्वारा चीन और इङ्गलैंड का व्यापार होता है। यहाँ बहुत बड़ी सामुद्रिक सेना रहती है। यहाँ की मनुष्य संख्या ४ लाख के निकट है जिसमें अधिकता चीनी लोगों ही की है। इसका प्रसिद्ध स्थान विक्टोरिया (Victoria) है। १८६१ और १९०० ई० मे अङ्गरेजो को कोलून (Kowloon) मिला यह स्थान चीन के बीच में है।

शैनटग (Shantang) के प्रायद्वीप में किऊचाऊ (Kiauchau पर जरमनों को अधिकार था परन्तु भीषण युद्ध (The Great War) के कारण धीर जापान ने उन से छीन लिया है।

मंचूरिया

मन्चूरिया कोरिया के उत्तर और आमूर नदी के दक्षिण में स्थित है। यह देश बहुत पहाड़ी है और यहाँ सर्दी इतनी पड़ती है कि

आमूर नदी कई महीनो तक बर्फ से ढकी रहती है इस प्रान्त मे बहुत बड़े बड़े जङ्गल हैं परन्तु दक्षिण भाग उपजाऊ है जई बहुत पैदा होती है। यहाँ के निवासी चीनी हैं जो बहुत दूर दूर तक बसे हुए हैं।

किरीनौला(Kirinoula)—दक्षिण मे राजधानी है।

मुकडन (Mukden)—दक्षिण में है, यह मन्चूरिया की पुरानी राजधानी थी। एक चीनी रेल की सड़क पिचेली की खाड़ी के चारो ओर होती हुई टिन्टसिन से पोर्टआर्थर तक गई है और पार्टआर्थर से मुकडन होती हुई एक शाखा साइबेरिया रेलवे हारबिन स्टेशन तक जारी है। पहले पोर्टआर्थर (Port Arthur टालीनवान (Telienwan) जो लाइटङ्ग प्रायद्वीप मे थे रूस के लिये गये थे परन्तु १६०५ मे जापानियो ने यह स्थान रूसियों से ले लिया। उस समय पोर्टआर्थर बहुत सुरक्षित था।

मंगोलिया

मगोलिया—मचूरिया के पश्चिम मे है। इसमें एक बड़ा भारी टेबुललैंड (पठार) है। जिसको खिंगन पर्वत मचूरिया से अलग करता है। इसका उत्तरी भाग आमूर और यनीसी की सहायक नदियों से सींचा जाता है। इसके मध्य भाग में गोबी का मरुस्थल है जो १,५०० मील लम्बा है। यह रेतीले और चट्टानी मैदानो से मिलकर बना है और छोटी छोटी पहाड़ियों के बीच में स्थित है। इस मरुस्थल के मध्य में एक बड़ा दलदल (Depression) है जिसको चीनी लोग हनहाई (Hanhai) कहते हैं जो किसी समय एक भीतरी समुद्र था। मगोलिया का दक्षिणी भाग होआंगहो के सहायक नदियो द्वारा सींचा जाता है।

मंगोलिया के पठार का अधिक भाग सूखा और उजाड़ खंड है। यहाँ वर्षा बहुत कम या कुछ भी नहीं होती। गर्मी की ऋतु में अधिक गर्मी पड़ती है, और सर्दी की ऋतु में साइबेरिया की ओर से ठंडी हवाएँ चलती हैं। इससे यहाँ बहुत सर्दी पड़ती है जो असह्य होती है। इन्हीं कारणों से यहाँ किसी तरह की खेती नहीं की जा सकती। यहाँ के निवासी तातार और कलमक(Kalmuck) वंश के हैं और ये जङ्गली और भ्रमण करने वाले हैं। ये नाम के लिये चीन की प्रजा हैं परन्तु इनके शासन कर्ता इनके सर्दार हैं जिनको 'खाँ' की पदवी मिली है। इस देश का धर्म, प्रतापी लामा की पूजा करना है।

उर्गा (Urga)—बेकाल झील के दक्षिण में इस देश का प्रसिद्ध स्थान और चीनी शासन कर्ता के प्रतिनिधि के रहने का निवासस्थान है।

तिब्बत

तिब्बत का पठार (जो कि दुनिया भर में सब से ऊँचा है) पामीर पर्वत के पूर्व में क्यूनलन और हिमालय पर्वतों के बीच में स्थिर है। इसमें बहुत सी झीलें हैं जिनमें एशिया महाद्वीप की बहुत सी बड़ी बड़ी नदियाँ निकलती हैं। तिस पर भी वर्षा की इतनी कमी है कि कुछ भाग को छोड़ कर सारा देश शुष्कप्राय रहता है अधिक ऊँचा होने के कारण यहाँ जाड़े मे बहुत असह्य सर्दी पड़ती है। उनका मार्मिक (धर्म सम्बन्धी) शासक 'प्रतापी लामा' है। चीन की ओर से इनका अधिकारी अमबन (Amban) और कुछ प्रतिनिधि भी यहाँ रहते हैं। यूरोपियन लोगों को तिब्बत का बहुत कम हाल मालूम है। एक अंग्रेजी मुहिम थोड़े दिन हुए कि लासा तक गया था और १९०७-०८ में एक स्वीडन का भ्रमण

वाला मनुष्य भी यहाँ पहुँच गया था जिसने इस देश की और कठिन यात्रा को समाप्त किया था। घाटियो में बहुत जव पैदा होता है परन्तु यहाँ के निवासी बिल्कुल जङ्गली अवधूत हैं। भेड बकरी और भैंसे मुख्य चौपाये हैं। यहाँ ई चौड़ी दुम वाली होती हैं जो बोझ ढोने के काम आती हाँ की बकरियों के बाल बहुत नरम होते हैं जो बाहर भेजे हैं। सोना, सोहागा और नमक यहाँ के मुख्य खनिज पदार्थ तिब्बत का व्यापार अधिक चीन से होता है परन्तु इसका र हिन्दुस्तान के पहाड़ी भागो से भी (हिमालय के दर्रों) होता है।

लासा (Lhassa)—एक चौड़ी घाटी में जो सापू पुत्र) की एक सहायक नदी से सींची जाती है, स्थित है। राजधानी और लामा का निवास स्थान है।

पूर्वी (चीनी) तुर्किस्तान

पूर्वी तुर्किस्तान—तिब्बत के उत्तर-पश्चिम और थ्यान-शान के दक्षिण में स्थित है। यह एक चौरस पठार है जो कि छोड़ हर दिशा में ऊँचे पहाड़ो से घिरा हुआ है। इन पहाड़ों च में बहुत दबा हुआ स्थान टारिम नदी का बेसिन है जो नूर (Lob Nor) मे गिरती है। लावनूर एक झील (भीतरी ी) है। कहीं कहीं पर ओएसिस भी हैं जहाँ पर फल अनाज पैदा होते हैं और नगर भी बस गये हैं। यहाँ की ज पैदावार जेड (Jade) है जो चीन को बहुतायत से जाता है। यहाँ के प्रसिद्ध स्थान काशगर (Kashgar), न (Khotan) और यारकन्द (Yarkand) हैं।

वाला मनुष्य भी वहाँ पहुँच गया था जिसने इस देश की
ी और कठिन यात्रा को समाप्त किया था। घाटियों में
वहुत जव पैदा होता है परन्तु यहाँ के निवासी विल्कुल जङ्गली
अवधूत हैं। भेड़ वकरी और भैंसे मुख्य चौपाये हैं। यहाँ
भेड़ें चौड़ी दुम वाली होती हैं जो बोझ ढोने के काम आती
यहाँ की वकरियों के वाल वहुत नरम होते हैं जो वाहर भेजे
हैं। सोना, सोहागा और नमक यहाँ के मुख्य खनिज पदार्थ
तिब्बत का व्यापार अधिक चीन से होता है परन्तु इसका
ार हिन्दुस्तान के पहाड़ी भागों से भी (हिमालय के दर्रों
) होता है।

लासा (Lhassa)—एक चौड़ी घाटी में जो सापू
(ब्रह्मपुत्र) की एक सहायक नदी से सींची जाती है, स्थित है।
राजधानी और लामा का निवास स्थान है।

पूर्वी (चीनी) तुर्किस्तान

पूर्वी तुर्किस्तान—तिब्बत के उत्तर-पश्चिम और थ्यान शान
ों के दक्षिण में स्थित है। यह एक चौरस पठार है जो कि
को छोड़कर दिशा में ऊँचे पहाड़ों से घिरा हुआ है। इन पहाड़ों
बीच में बहुत दबा हुआ स्थान टारिम नदी का वेसिन है जो
लावनूर (Lob Nor) में गिरती है। लावनूर एक झील (भीतरी
द्री) है। कहीं कहीं पर ओएसिस भी हैं जहाँ पर फल
र अनाज पैदा होते हैं और नगर भी बस गये हैं। यहाँ की
ज पैदावार जेड (Jade) है जो चीन को बहुतायत से
ा जाता है। यहाँ के प्रसिद्ध स्थान काशगर (Kashgar),
तन (Khotan) और यारकन्द (Yarkand) हैं।

यारकन्द हिन्दुस्तान के व्यापार का (जो कराकोरम पहाड़ों के दर्रों में से किया जाता है) मुख्य स्थान है।

३—जापान साम्राज्य

जापान साम्राज्य नीफ़ान (हानशियो) याजो (हाकैडो) किउचू, शिकोकू, फ़ारमोसा, (टैवान) करली और लेचू द्वीप-समूहों से बना है। इसमें सयालियन और लायटग प्रायद्वीप का दक्षिणी भाग (जिसमें पोर्ट आर्थर, टेलोवान और डारीन) भी शामिल है। लायटग का प्रायद्वीप इसको चीन से प्राप्त हुआ है। समग्र साम्राज्य का क्षेत्रफल (जिसमें कोरिया भी है) २,४०,००० वर्गमील और मनुष्य संख्या ६ करोड़ के निकट है। इसको फ़ारमोसा और अन्य छोटे छोटे द्वीप जो पेसकाडोर (Pescadores) (मछुओं के द्वीप समूह) कहलाते हैं १८९५ ई० में चीन से प्राप्त हुए हैं। जापान को 'एशियाई बृटेन' भी कह सकते हैं क्योंकि यह पूर्वी एशिया में इसी प्रकार स्थित है जिस प्रकार पश्चिमी यूरोप में बृटेन, और इसका जल वायु भी समुद्र में होने और ब्रिटिश द्वीपों के पश्चिम के गल्फ़ स्ट्रीम (Gulf stream) की तरह इसके पूरब में कुरोसीवो (Kuro Siwo) धारा के कारण प्राय इङ्गलैण्ड ही के अनुसार है।

धरातल और जलवायु

बड़े बड़े द्वीपों में प्रज्वलित ज्वालामुखी पहाड़ों की श्रेणियाँ फैली हुई हैं। नीफान में फ्यूजीयामा १५,००० फीट ऊँचा पर्वत शृङ्ग है। मैदान और घाटियाँ उपजाऊ हैं। इसका किनारा दन्दानेदार है, इसी कारण यहाँ स्वाभाविक सुन्दर बन्दरगाह हैं।

हाँ का जल वायु सामान्य है परन्तु इसका उत्तरी भाग शीत टिबन्ध मे होने के कारण दक्षिण की अपेक्षा अधिक सर्द है। कुरो सीवो (Kuro Siwo) या काली लहरें जो पेसीफिक महासागर के उत्तरी भाग से उठती हैं इसको पश्चिमी देशों की अपेक्षा अधिक गर्म रखती हैं। यहाँ वर्षा साल भर और अधिक रूप में होती रहती है।

प्राकृतिक पदार्थ (पैदावार)

जापान मे खनिज पदार्थ बहुत हैं। ताँबा, लोहा और गंधक बहुत मिलता है। सोना और चाँदी भी निकाला जाता है जो बहुत काम में आता है। कोयला बहुतायत से मिलता है, मिट्टी का तेल भी मिलता है। चावल खाने की वस्तुओं में सब से प्रधान है, परन्तु गेहूँ, जव और मटर भी बहुत पैदा होता है। चाय के वृक्षों की इतनी अधिकता है कि झाड़ियाँ भी इनसे भरी हुई हैं। तम्बाकू, और रुई भी बहुत बोई जाती है। यहाँ पर शहतूत के पेड़ बहुतायत से पाए जाते हैं और उनमें रेशम के लाखों कीड़े पाले जाते हैं और रेशम तय्यार किया जाता है। इन द्वीपों के किनारे दन्दानेदार होने के कारण यहाँ मच्छली बहुत पाई जाती हैं और लोगों का मुख्य भोजन हैं। फारमोसा में कर्पूर के बेचने का अधिकार गवर्नमेन्ट को है और यह वहाँ बहुत मिलता है। पीला वार्निश जो पीले रोगनों में मिलाया जाता है इन्हीं जापानी पेड़ों की राल से निकाला जाता है। इसी से इन पीले रोगनों से वार्निश करने को "जापानी करना" (Japanning) कहते हैं।

मनुष्य

जापानी लोग मङ्गोल वंश के हैं। वे लोग बलवान, मिलनसार और स्वावलम्बी हैं। यहाँ के राजा पहले परदे में रहते थे।

हुत दिनों तक जापानियों का पश्चिमी देशों से कुछ भी सम्बन्ध था। पहिले ये लोग निर्वारक और पक्षपाती थे। परन्तु यह सब तें अब जाती रही और गत शताब्दी के अन्तिम ५० वर्षों में न्होंने प्रत्येक पश्चिमी प्रभावों का स्वागत किया जिसने उनको तिभाशाली और धनी बना दिया। अब इस देश में सब कोई आ सकता है और शिक्षा ग्रहण कर सकता है। यहाँ पर दो विश्व-द्यालय हैं। नाना प्रकार के विद्यालय कानून, दवाइयाँ बनाना, ज्ञान, और इञ्जीनियरिङ्ग की शिक्षा देने के लिये स्थापित किये ये हैं। यहाँ के मनुष्य दो मतों के अनुयायी हैं। (१) शिन्टो-इम (Shintoism) जिसमे लोग वीरों की पूजा करते हैं। (२) द्ध। ईसाई धर्म्म का भी प्रचार हो रहा है। और अब रविवार को राम करने का दिन मानने के कारण राजकीय अवकाश तातील) उसी दिन होती है। इस देश की बड़ी घनी आबादी है और यहाँ के लोग बड़े सुयोग्य नाविक (Sailors) हैं।

दस्तकारी और व्यापार

रेशम, रुई के कपड़े बुनना, चीनी मिट्टी, काच (Slass) का मान और खिलौने बनाना, वार्निश और कागज और दियासलाई नाना यहाँ की प्रसिद्ध दस्तकारियाँ हैं। रुई और ऊनी कपड़े, चीनी, धातुएँ मिट्टी का तेल मुख्यत बाहर से आने वाली वस्तुएँ । कच्चा रेशम, चाय, चावल, कोयला और वार्निश मुख्य बाहर जाने वाली वस्तुएँ हैं। महायुद्ध के समय से यहाँ का व्यापार भारतवर्ष, चीन और वर्मा इत्यादि देशों से बहुत बढ़ गया है।

शासन प्रणाली

सन् १८८३ ई० तक मिकाडो (पुज्य) ही केवल शासन-कर्ता । जब कि यहाँ की व्यवस्था को परमित आज्ञा थी। अब सम्राट राजकीय समिति (Imperial Diet) की सहायता से नियमों

त्राटियों से मिल कर बना है। इसमें बसरा और बगदाद नामी दो प्राचीन और प्रसिद्ध नगर शामिल हैं। ये पहिले टर्की—साम्राज्य में सम्मिलित थे।

(२) पैलस्टाइन—

यह महायुद्ध के पहले टर्की के कब्जे में था। इसमें जरुसलम और डमासकस इत्यादि नगर शामिल हैं।

(३) साइप्रस द्वीप

दक्षिणी मेसोपोटेमिया

अर्थात्

मेसोपोटेमिया का भाग जो वृटिश-शासन में हैं

यह देश दजला और फुरात नदियों के दक्षिण ढावे में स्थित है। अरब वाले इसे अलजजीरा कहते हैं क्योंकि यह नदियों से घिरे रहने के कारण टापू के समान हो गया है।

चूंकि यहा पर दजला और फुरात नदियाँ बहती हैं इस कारण यह देश बिल्कुल मैदान है।

यहाँ पर पानी बहुत कम बरसता है, जिससे न कोई अधिक हानि है और न यह अधिक आवश्यक भी हैं, क्योंकि नदियाँ आर्मीनिया पहाड़ों से निकल कर अपने साथ सा पानी लाती हैं, जिससे आबपाशी हो सकती है। कारण प्राचीन काल में यहाँ बहुत सी नहरों द्वारा होती थी।

इतिहास—

मध्य एशिया के तुर्कों ने एक बार इस देश पर चढ़ाई की थी, उस समय इस देश के मनुष्य गड़रियो का पेशा करते थे। इन्होंने खेतों को बदल कर चराई के मैदान कर दिये, अतः सिंचाई का कार्य्य बंद हो गया। जिससे कहीं कहीं दलदल बन गये और कहीं रेगिस्तान।

प्रसिद्ध नगर—

(१) बगदाद—इसका अर्थ है बागदाद अर्थात् न्याय का उपवन। यहाँ के किसी बाग में नौशेरवाँ बैठ कर न्याय किया करता था अतः यह नाम पड़ गया। यह ईराक की राजधानी है।

(२) करबला—मुसलमानो का तीर्थ-स्थान है। इमाम हुसैन का मकबरा है।

(३) बसरा—यहाँ से इस देश की वस्तुएँ बाहर भेजी जाती हैं और बाहर की वस्तुएँ इस देश में आती हैं। इसलिये यह व्यापारिक बन्दर हो गया है।

मोसल—इराके अरब के ऊपरी भाग में बसा हुआ है। यह मेसोपाटेमिया मे है। काफिलों के रास्ते मिलते हैं। इसके पास ही दजला नदी की दूसरी ओर 'आसूर राज्य' के पुराने नगर नैनवह के खंडहरों से प्राचीन समय की वस्तुएँ खोदकर निकाली गई थीं। इसी शहर के निकट मिट्टी के तेल के स्रोत हैं जो अब अंग्रेजों के अधिकार में हैं।

वृटिश पैलस्टाइन

यह देश रूम सागर के पूर्वी किनारे पर है जो सीरिया का दक्षिण—पश्चिमी भाग था। यह एक देश है—लङ्का द्वीप के आधे से अधिक न होगा।

इतिहास—

प्राचीन काल में इस देश का उत्तरी भाग सीरिया (शाम) और दक्षिणी भाग फिलिस्तीन (Palestine) कहलाता था। जब यहाँ रूमियों का राज्य हुआ तो दोनो भागों को सीरिया कहने लगे। सातवीं शताब्दी मे जब अरबो ने इस पर अपना अधिकार जमाया तो इसका नाम 'शाम' रख दिया क्योंकि यहाँ के प्राचीन निवासी हज़रत नूह के बेटे शाम के वंशज है। फिलिस्तीन मे कनान एक गाँव है जिसके नाम पर यह कभी 'कनान' भी कहा जाता है।

हिन्दू काशी का और मुसलमान मक्का का जितना मान करते हैं उतना ही ईसाई और यहूदी इस देश की प्रतिष्ठा करते हैं। ईसा मसीह इसी देश मे पैदा हुए थे और ईसाई धर्म यहीं से फैला। बहुत से नबियो इसी देश में जन्म धारण किये हैं। यह देश सदा से पुरानी दुनियाँ का तिराहा रहा है।

धरातल—

इस देश का दक्षिणी भाग जो यहूदिया और सामरिया पहाड़ों के बीच मे जार्डन की घाटी के नाम से प्रसिद्ध है मृतसागर (Dead sea) के [illegible] से [illegible]
नीचा है। यहाँ के निवासी, ईस[illegible]
पहले यह देश [illegible] का [illegible]
इटालिनियों [illegible] से [illegible]
समुद्र [illegible] यहाँ
जिसमें
बाकी [illegible] है

'कारमल' नामक पहाड़ पूर्वी समुद्री किनारे पर वर्तमान। 'टेबर' कारमल के पूर्व में और 'ग्रालाइव्ज,' जरुसलेम, नगर के समीप मुख्य पहाड़ है।

'जर्डन' ही केवल यहाँ की मुख्य नदी है।

जलवायु–

यहाँ का जल वायु सूखा है और यह देश गर्मियों में गर्म रहता है।

पैदावार–

इस देश में फलों की अधिकता है, जिनमें जतून, अंजीर, अंगूर, अखरोट और छुहारे मुख्य हैं। धातुओं की उत्पत्ति कम होने से यहाँ पर कानों की न्यूनता है।

नगर–

(१) जरुसलेम–इस देश की राजधानी है। यह ईसाइयों का सब से बड़ा पवित्र स्थान है। यह नगर एक पहाड़ पर बसा हुआ है। क्रीष्ट की शवसमाधि यहाँ ही है। संसार भर के ईसाई धर्म्म के गुरु यहाँ अवश्य ही आते हैं।

जाफा–जरुसलेम का बन्दरगाह है।

डमासकस (दमिश्क)–यह दुनिया के सब से प्राचीन नगरों में एक है। पैलेस्टाइन की प्राचीन प्रसिद्धि इसी नगर से झलकती है। इसके बाजार अब भी मनुष्यों के झुंड से भरे रहते हैं। यहाँ अब भी इनके शोर गुल से कान झनझनाने लगते हैं। यहाँ के फौलादी फलों के चाकू तेज होते हैं। इस नगर के फाटकों से ऊँट माल असबाब लादे निकलते हुए अब भी देखे जाते हैं।

बेरुत–यह डमासकस का बन्दर है।

'पालबल'का पुराना नगर अब उजाड़ पड़ा हुआ है। इसके खडहरो में बाल (सूर्य) के मन्दिर को देख कर आश्चर्य होता है कि इसके बड़े बड़े शिलास्तम्भ कैसे ऊपर उठाये गये होंगे?

साइप्रस द्वीप

यह द्वीप रूमसागर मे है। सन् १८७८ से अंग्रेज़ों ने इसे अपने कब्जे में कर लिया है।

पैदावार–

शराब, गल्ला, और कपास यहाँ की मुख्य पैदावार है।

प्रसिद्ध नगर–

'साइप्रस' में दो नगर हैं।

(१) निकोसिया—राजधानी है।

(२) लारनाका—व्यापारिक नगर और बन्दरगाह है।

६—अरब

इतिहास–

मुसलमान लड़कों में से कदाचित ही कोई ऐसा हो जो अरब को न जानता हो, क्योंकि उनके पैगम्बर हज़रत मुहम्मद इसी देश के "मक्का" नामक नगर मे पैदा हुए थे। प्रतिवर्ष सहस्रों मुसलमान भारतवर्ष से मक्का हज करने जाते हैं। यह प्रायद्वीप पृथ्वी के ठीक मध्य में है। इसका "अरब" नाम पड़ने का कारण यह है कि यहाँ 'अरब' नामी सूखी घास अधिक होती है। कभी यहाँ के बादशाह का नाम 'येरब' था, इन्हीं कारणों से इसका अरब हुआ।

इसके उत्तर में शाम और इराक़े अरब, दक्षिण में अदन की खाड़ी और हिन्दमहासागर, पश्चिम में लालसागर और पूर्व में उमान की खाड़ी और अरब उपसागर हैं।

लाल-सागर में पेरिम, हिन्द-महासागर में मकूतरा और ईरान की खाड़ी में बहेरन इसके द्वीप हैं। परन्तु ये तीनों द्वीप ब्रिटिशराज्य के अधिकार में हैं।

धरातल—

यद्यपि दक्षिणी भारत के समान अरब भी एक मालभूमि है और विधि तथा अवस्था में दोनों समान हैं, परन्तु भारत हरा-भरा देश है और अरब सपाट, सुनसान और सूखा मरु स्थल है। दक्षिणी भारत में नदियों की कमी नहीं है: परन्तु अरब के दक्षिण में नदियों का नाम भी नहीं है। अरब का जल वायु अति उष्ण और शुष्क है। संसार के किसी देश का जल वायु कदाचित् ऐसा रुखासूखा न होगा।

मनुष्य तथा जन-संख्या—

यहाँ की जन संख्या ठीक ठीक विदित नहीं, परन्तु अनुमान से कहा जा सकता है कि प्रति वर्गमील ६ से अधिक लोग नहीं बसते। यहूदियों की भाँति अरब लोग भी "शाम" के वंशज हैं। एशियाई रूम की भाँति यहाँ की भी आबादी दो भागों में बटी हुई है। एक घर बना कर रहने वाले 'अरब', दूसरे जो इधर उधर फेरा करते हैं—'बद्दू' कहलाते हैं। अरब सभ्य और सुशील हैं, परन्तु बद्दू-जङ्गली असभ्य और लूटमार करने वाले होते हैं। अरब के समस्त निवासी मुसलमान हैं। मुहम्मद साहिब के पूर्व यहाँ के लोग मूर्ति पूजक थे, परन्तु हजरत ने उन्हें राहेरास्त पर चलाया।

राजकीय विभाग—

राज्य प्रबन्ध के विचार से अरब के ८ भाग किये जा सकते हैं। (१) हजाज (२) यमन (३) अदन (४) हज्रमौत (५) उमान् (६) अलहसा (७) जबलुश्शम्र (८) नज्द।

अदन वृटिश सरकार के अधिकार में है जो बम्बई के गवर्नर की निगरानी में रहता है। अदन से तात्पर्य केवल बन्दर या शहर ही नहीं है। अरब का दक्षिण किनारा सब अदन राज्य अन्तर्गत मानना चाहिये।

हज्रमौत—बद्दुओं के सरदारों के अधिकार में है जो वृटिश-गवर्नमेंट के आधीन हैं। मकल्ला इसका बन्दर है।

उमान्—अरब का दक्षिण-पूर्वी भाग है जो सुलतान मस्कत के शासन में है। मस्कत के सुल्तान अँग्रेजों के मित्र हैं मस्कत ही राजधानी है जो व्यापार की मंडी है। परन्तु जबलुश्शम्र और नज्द अरब के मध्य में स्वतन्त्र रियासतें मानी जाती हैं। असली अरब नज्द में बसते हैं। यहाँ ही के अर्बी-घोड़े संसार में प्रसिद्ध हैं। यहाँ अब एक स्वतन्त्र राज्य स्थापित होगया है जो एक सुलतान के कब्जे में है।

कोयत—अलहसा का बन्दर है।

प्रसिद्ध नगर—

ऐसे देश में जहाँ का केवल $\frac{1}{10}$ भाग कृषि के योग्य हो वहाँ कोई बड़ा नगर नहीं हो सकता, परन्तु कई कारणों से एकाध नगर प्रसिद्ध हैं। जैसे—

मक्का—हजरत मुहम्मद का जन्मस्थान है। पृथ्वी के समस्त मुसलमान इसी की ओर मुँह करके निमाज़ पढ़ते हैं। लाखों

मुसलमान देश देश से यहाँ प्रतिवर्ष हज्ज करने आते हैं। यहाँ की प्रधान-मसजिद में एक घनाकार (मुकाव) स्तम्भ है जिससे इसका नाम काबा पड़ गया है। इस स्तम्भ का हाजी लोग बोसा लेते हैं।

जद्दा—यह मक्का का बन्दर है।

मदीना—यहाँ हजरत मुहम्मद साहब का मजार है। वह अपने शत्रुओं से बचने के लिये १४ जुलाई सन् ६२२ ई० को मक्का से मदीना चले गये थे। इसी तारीख से सन् हिजरी का आरम्भ होता है (हिज्र का अर्थ वियोग है)।

यनबू—मदीना का बन्दर है।

सना—अरब के नगरों में सब से भव्य है। यह कहवा की मण्डी है।

हदीदा—और सना बन्दर हैं।

शासन प्रणाली—

बद्दू अलग अलग दल में रहते हैं जिनका सरदार "शेख" कहलाता है और वही उनका प्रधान शासक होता है। कई दल परस्पर भिड़ भी जाते हैं, परन्तु पञ्चायत से उनकी अनबन मिट भी जाती है, दण्ड (जुरमाने) में पशु लिये और दिये जाते हैं।

प्रसिद्ध वहाबी दल के नेता सुलतान इब्ने सऊद ने एक स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर लिया है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—एशियाई रूस का विस्तार और जन संख्या बतलाओ।

२—इसके कितने प्राकृतिक विभाग हैं, उनके मुख्य नगरों का हाल लिखो।

३—एशियाई-कोचल की जापान से तुलना करो।
४—एशियाई रूम का जल वायु कैसा है ?
५—शाम और अरब देश के यह नाम क्यों पड़े ?
६—बसरा और बगदाद का हाल लिखो।
७—मक्का का हाल लिखो।
८—काबा किसे कहते हैं, बद्दुओं का हाल लिखो।
९—अरब और एशियाइ टर्की के भाग कौन कौन हैं और वह किस लिये प्रसिद्ध हैं ?
१०—एशियाटिक टर्की में योरपीय महासमर के कारण कौन २ सी तबदीलियाँ हुईं। बृटिश राज्य को उससे क्या लाभ हुआ ?
११—अरब के पहाड़ और रूम की नदियों का हाल लिखो।
१२—इन दोनों देशों में व्यापारी मंडियाँ कौन कौन सी हैं ?
१३—सिद्ध करो कि अरब का राज्य अपनी भौगोलिक दशा के अनुकूल होने ही से पुरानी दुनियाँ भर में शीघ्र फैल गया।
१४—अरब के निवासी किनके वंशज हैं और किस धर्म के अनुयाई हैं ?

७–ईरान (फारिस)

इतिहास–

काल के कुचक्र का जितना अनुभव ईरान को है उतना अन्य किसी देश को नहीं होगा—परन्तु अब तो —

न गोरे सिकन्दर न है कब्र दारा,
मिटे नामियों के निशाँ कैसे कैसे।

अब ईरान पहले का आधा भी नहीं है। ईरान और तूरज दो भाई थे, दोनों ने अपने अपने नाम से ईरान और तूरान नामक दो राज्यों की नींव डाली। परन्तु आर्य्य शब्द से भी ईरान का अधिक सम्बन्ध है। वेशग बादशाह के पुत्र पारस के नाम से इसका नाम फारिस भी पड़ गया।

फारिस के उत्तर में कास्पियन सागर, पश्चिम में तुर्किस्तान, दक्षिण में फ़ारिस और उमान की खाड़ियाँ, पूर्व में बिलोचिस्तान और अफ़गानिस्तान उपस्थित हैं। गुर्जिस्तान, आर्मिनिया और कूर्दिस्तान के कुछ भाग जो पहिले इसमें शामिल थे, अब फारिस के राज्य से बहिर्गत हो गए हैं। आरारात पर्वत के पास फारिस, एशियाई रूम और एशियाई रूस की सीमायें मिलती हैं।

धरातल–

इस देश में दलदल और झीलें अधिक हैं। सफेद नदी और कारू यही दो प्रसिद्ध नदियाँ हैं। देश के पश्चमाश में कृषि कार्य्य हो सकता है।

उपज, आबपाशी और पेशा–

खरबूजे और अंगूर दस बारह प्रकार के होते हैं। सिंचाई के लिये पृथ्वी में नीचे नीचे नहरें निकाली गई हैं, जिसको 'कनात' कहते हैं।

यहाँ की खानों में फीरोजा, गंधक और नमक अधिक निकलता है। यहाँ के चूने के पहाड़ों से एक प्रकार का तेल टपकता है जिसे मोमियाई कहते हैं, यह बड़े काम की औषधि है। बूशहर के पास मिट्टी के तेल के स्रोत भी हैं।

ईरानी लोग कृषि-कार्य्य अधिक करते हैं। दोपहर के समय जब धूप की प्रखरता के कारण यह मैदान में काम नहीं कर सकते तो छाया वाले वृक्षों के नीचे बैठ कर हाफिज और फिर्दौसी की कविता गाया करते हैं।

प्रसिद्ध नगर—

तेहरान—राजधानी है। यह अल्बुर्ज पहाड़ के नीचे बसा हुआ है, यहाँ से दमावन्द की चोटी का दृश्य बड़ा मनोहर दिखाई देता है।

इस्फ़हान—पुराने समय में एक बड़ा रमणीक नगर था, यही राजधानी भी था। परकोटे की दीवार का घेरा ३२ मील में है। यहाँ के गुलाब और बर्तन प्रसिद्ध हैं।

हमदान—बहुत प्राचीन नगर है। प्रसिद्ध हकीम 'बूअली सीना' की कब्र यहीं है।

तबरेज—व्यापार के विचार से ईरान में यही प्रसिद्ध नगर है। 'शम्सतबरेज' फार्सी की अदक कविता करने वाले यहाँ ही पैदा हुए थे।

मशहद—शीयामुसलमानों का तीर्थ स्थान है। हजारों मुसलमान यहाँ प्रतिवर्ष यात्रा निमित्त आया करते हैं।

तूस—फ़िर्दोसी की जन्मभूमि है। शाहनामा ईरान के बादशाहो का पद्यात्मक इतिहास इसी की रचना है।

यज्द—यहाँ ईरान के असली निवासी अग्नि-पूजक पार्सी अब तक वर्त्तमान है। हिन्दुस्तान के पार्सियों की भाँति इनका भी आचार विचार समान है।

करमान—यहाँ दुशाले अच्छे बनते हैं।

शीराज़—गुलाब, शराब और बुलबुलो के लिये प्रसिद्ध है और फार्सी के प्रसिद्ध कवि शेखसादी जो ईरान के तुलसीदास कहे जा सकते हैं, यहीं पैदा हुए थे।

बशहर—व्यापारिक बन्दर है। सीस्तान के पास प्रसिद्ध पहलवान रुस्तम पैदा हुआ था।

मनुष्य और उनके धर्म—

यहाँ लगभग ¾ तो ईरानी हैं बाकी मे यहूदी, तुर्क, कुर्द, अर्मन और तुर्कमान आदि बसे हैं। तुर्क, खुरासान के निवासियों को पकड कर गुलाम की भाँति बेच डालते थे। तुर्क और ईरानी स्त्रियो की सन्तान तुर्कमान कहलाती है।

अरबो से जब इनकी लड़ाई हुई और उसमें ये हार गये तभी से यहाँ इसलाम धर्म का प्रभुत्व बढ़ा, नहीं तो इनकी वेश-भाषा और धर्म तथा सभ्यता सब आर्यों के समान थी। पुरानी लिखावट भी हिन्दी के समान ही है। इस्तखर के खडहरों में एक मकान अब भी "तख्त जमशेद" के नाम से प्रसिद्ध है। इसे चेहल मीनार भी कहते हैं। यहाँ पर सङ्गमरमर का काम इतना उत्तम बना है कि देखते ही बन आता है। शराब के नशे में आकर सिकन्दर ने इसे फुँकवा दिया था नहीं तो आज भी उसकी शोभा अपूर्व होती।

शासन प्रणाली—

बहुत दिनो से यहाँ के बादशाह स्वतन्त्र थे, परन्तु इधर कई वर्षों से यहाँ भी पार्लियामेंट बन गई है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—ईरान और फारिस के नाम पडने का कारण बताओ।
२—ईरान और भारतवर्ष की तुलना करो।
३—इसके प्रसिद्ध प्रसिद्ध शहरों का हाल लिखो।
४—ईरान के निवासियों के सम्बन्ध में क्या क्या बातें जानते हो।
५—यहाँ के राज्य प्रबन्ध का कुछ हाल लिखो।
६—सादी, बूअलीसीना, रुस्तम, और फिर्दोसी के जन्म स्थानों का हाल लिखो।

८—अफ़ग़ानिस्तान

इतिहास—

यह निश्चित बात है कि पुराने समय में अफ़गानिस्तान का सम्बन्ध भारतवर्ष से अधिक था, इसलिये यदि इसे आर्य्यावर्त्त का एक प्रदेश कहे तो कोई हानि नहीं। उन्नीसवीं शताब्दी में भी अफ़गानिस्तान राजा रणजीत सिंह के अधिकार में था। क़न्धार का नाम संस्कृत पुस्तको में गन्धार मिलता है। हिन्दूकुश के निकट बामियान में अब भी मन्दिरो और मूर्त्तियो के चिन्ह पाये जाते हैं, जिनमे से दो मूर्त्तियां पहाड़ो में कटी हुई थी एक १८० फीट और दूसरी १७० फीट ऊँची है। अब उनमे से एक मूर्त्ति आज तक वर्त्तमान है। पुराने सिक्के जो यहां मिलते हैं उन पर बैल और जनेऊधारी मनुष्य का चित्र भी खिचा हुआ मिलता है।

मध्य-एशिया वा ईरान से भारतवर्ष मे आने के लिये 'अफ़गानिस्तान' नाका वा चौकी है। प्राचीन समय में स्थल-मार्ग से जिन लोगो ने (सिकन्दर और चङ्गेज खां) आर्य्यावर्त्त पर आक्रमण किये थे वे सब अफ़गानिस्तान पार करके आये थे। इसलिये अफ़गानिस्तान की मैत्री भारतवर्ष के लिये अति उत्तम है। बृटिश गवर्नमेन्ट इसलिये पहिले अमीर काबुल को १८ लाख रुपये प्रतिवर्ष देती थी कि वह अपनी सीमा सुरक्षित रखने के लिए सेना प्रस्तुत रक्खे और जहाँ तक मन पड़ता है अब भी सरकार अमीर से बिगाड़ नहीं करती। हिरात, मध्य-एशिया और भारत का नाका है, यहीं होकर ईरान, तूरान, काबुल और कन्धार को रास्ते जाते हैं। कन्धार से एक मार्ग ईरान को और दूसरा गजनी होता हुआ काबुल को जाता है। एक मार्ग खैबर की घाटी में होता

है और दूसरा मलख से होता हुआ तिब्बत को जाता है। नक्शे में इन मार्गों को भली प्रकार देख लो।

आकार सीमा व क्षेत्रफल -

इस देश का आकार वर्तुलाकार है। इसके उत्तर में जैहूँ नदी और तुर्किस्तान है, दक्षिण में बिलोचिस्तान, पूर्व में भारतवर्ष और पश्चिम में फारिस है। सयुक्तप्रान्त से इसका क्षेत्रफल दूना है।

जलवायु तथा उपज—

जाड़ो में कड़ाके की सर्दी और गर्मियो मे खूब तपिश होती है। चावल और चना यहां की खास पैदावार है। मेवे यहां खूब पैदा होते हैं।

मनुष्य, उनके रहन-सहन और शिक्षा—

यहां के निवासी 'सुन्नी' मुसलमान हैं, ये आर्य्य जाति की सन्तानें हैं। जङ्गली बद्दुओं की भांति ये भी अतिथि-पूजक होते हैं। परन्तु बड़े निर्दयी भी हैं, जो भूला भटका इनके पंजे में पड गया उसकी लॅंगोटी भी छीन लेते हैं। ये बड़े स्वतन्त्र प्रिय होते हैं। अमीर काबुल की नीति को अधिक नहीं मानते, इनकी भाषा पश्तो है जिसमें संस्कृत, फार्सी और अर्बी के शब्द अधिक है, परन्तु भाषा अर्बी और फार्सी अक्षरों मे लिखी जाती है। ग्रामों और नगरो के लोग फार्सी बोलते हैं।

अफगानियों के कई भेद हैं, जैसे दुर्रानी, आफ्रीदी, वजीरी, युसुफजई। कुछ मुगल, तातारी और तुर्क भी हैं। व्यापार प्राय हिन्दुओं के हाथ मे है। इनको वहां वाले 'हिन्दकी' कहते हैं। कुछ काफिर भी हैं। परन्तु अब ये काफिर काफिर नहीं रहे—मुसलमान हो गये हैं।

अमीर काबुल स्वतन्त्र रीति पर शासन करते हैं। कुछ जातियाँ ऐसी हैं जो बिना लड़े कर भी नहीं देतीं। माल का विभाग हिन्दुओं के अधिकार में है। पिछले साल हां अमीर अमानुल्ला खाँ के सुधारों के कारण वहाँ बड़ा उपद्रव हो गया था और उसमे अमानुल्ला खाँ को तख्त छोड़ कर भाग जाना पड़ा पर अमीर नादिर खाँ ने उपद्रवियो का भली प्रकार दमन कर अपना अधिकार जमा लिया है और अब वहाँ शान्ति है

प्रसिद्ध नगर—

काबुल—काबुल नदी पर बसा है, राजधानी है।

कन्धार—व्यापारिक मंडी है।

हेरात—हरीरूद नदी के कारण अधिक उपजाऊ है, फारिस के निकट है।

जलालाबाद—पूर्व मे पेशावर और काबुल का मध्यवर्ती पड़ाव है।

ग़ज़नी—महमूद गजनवी की राजधानी थी।

बलख—पहले इसे बाखतर कहते थे। जरदश्त यहीं पैदा हुआ था।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—अफगानिस्तान की सीमा और यहा की नदी और पहाड़ का हाल लिखो।
२—क्या अफगानिस्तान भारतवर्ष का कभी सूबा था ?
३—यहाँ के निवासियों के जाति-भेद और धर्म लिखो।
४—जरदश्त कहाँ पैदा हुआ था। अफगानिस्तान के प्रसिद्ध प्रसिद्ध नगरों का कुछ हाल लिखो।

६—लङ्का

इतिहास—

रामायण के पढ़ने वालो से राम रावण तथा लङ्का का हाल छिपा नहीं है, सम्कृत में इसका नाम सिंहलद्वीप भी है। अरब

के यात्रियों ने इसका नाम 'सीलान' रख छोड़ा है, जिसको बदल कर अङ्गरेज लोग सीलोन कहते हैं। रामेश्वर और मनार के द्वीपों ने लङ्का को प्राय भारतवर्ष से संयुक्त सा कर दिया है। इन्हीं को रामायण में सेतुबन्ध पुल कहते हैं। रामचन्द्रजी के प्रधान शिल्पी नल नील ने इसे निर्माण किया था। अब इन टापुओं पर होती हुई एक रेलवे लाइन निकाल दी गई है। इस प्रकार लङ्का और भारतवर्ष रेल द्वारा मिल गए हैं। रामेश्वर में मूँगे का पहाड़ है जिसमें रामेश्वर का प्रसिद्ध मन्दिर बना है।

राम पर्वत की चोटी पर चूने के पत्थर का एक चिन्ह मनुष्य के पैर के समान पड़ा हुआ है। मुसलमान इसे हजरत आदम के पैर का निशान कहते हैं, परन्तु सिङ्घालियों का विचार है कि यह महात्मा बुध देव के चरण का चिन्ह है।

आकार व धरातलादि—

लङ्का द्वीप का आकार बन्द कमल की भाँति है।

भारतवर्ष की भाँति इसका किनारा भी सपाट चौरस मैदान और रेतीला है। कहीं कहीं से समुद्र ने उसे काट डाला है और नाल के प्रकार की झीलें बनाता हुआ आधमील तक स्थल में घुस गया है। सिवाय 'ट्रिङ्कोमोली' के और कोई सुन्दर बन्दर यहाँ नहीं है। गाल एक छोटा व दर है, परन्तु 'कोंडी' बनाया हुआ उत्तम प्रकार का बन्दरगाह है 'जाफना' भी एक छोटा बन्दर है।

इस द्वीप के मध्य में कुछ हटकर एक माल भूमि है जिसके किनारे के पनाड़ी का ढलान चारों ओर से समुद्र की ओर है। राम पर्वत (८०१० फु०) और पैडरो इस पठार की दो ऊँची चोटियाँ हैं।

माल-भूमि मे चारो ओर नदियों के कारण से यह देश पृथ्वी पर बडा उपजाऊ समझा जाता है। यहाँ की सब से बडी नदी 'महावली गङ्गा' है। छोटी नदियो में 'कल्याणी' अधिक प्रसिद्ध है।

जलवायु—

यद्यपि यह भूमध्य-रेखा के निकट है तथापि समुद्र में होने से जलवायु यहाँ का अधिक उत्तम नहीं है, वर्ष के बारह मास यहाँ वर्षा होती है, परन्तु यहाँ वर्षा की दो ऋतुएँ हैं। ऐसे देश मे दो ऋतुओं का होना आवश्यक है। परन्तु जाड़े की ऋतु नहीं आया करती है।

उपज—

सामुद्रिक किनारों पर चारो ओर नारियल के पेड अधिक होते हैं। धान की खेती खूब होती है। पहाड़ों पर चाय भी बोई जाती है। यहाँ की धरती इञ्च भर भी बजर नहीं है। प्राचीन समय में लङ्का 'स्वर्ण-पुर' सोने की पुरी के नाम से प्रसिद्ध था। याकूत, नीलम, पुखराज और बहुत से रत्न रत्नपुर नामक गाँव के खेतों और नदियो की बालू में मिलते हैं। सुर्मा जिससे पेंसिल बनती है यहाँ बहुत पैदा होता है।

मनार की खाड़ी से मोती निकाला जाता है।

मनुष्य और उनका रहन सहन—

यहाँ के प्राचीन निवासी 'वेद्दा' हैं जो बड़े असभ्य और साक्षात् राक्षस हैं। ये लोग जङ्गलों मे रहते हैं और आखेट से अपना पेट पालते हैं। इनको दक्षिण-भारत के निवासियों ने परास्त किया था और स्वयम् लङ्का में बस गये। वह 'सिंहाली' कहलाते हैं। तामिल भी कुछ बसते हैं। इनके अतिरिक्त 'मुअर' और 'बरघर' जातियाँ भी बसती हैं। मुअर अरब और सिंहाली जाति के दोगले हैं। बरघर डच और पुर्तगीज वंशज हैं। यहाँ की

विहारी है, परन्तु तामिल भाषा का भी प्रचार है। यहाँ बौध धर्म प्रधान है। मुअर मुसलमान हैं और बरघर ईसाई।

प्रसिद्धनगर—

कोलम्बो—इस द्वीप की राजधानी है। यहाँ पर जहाज कोयला पानी लेने के लिये ठहरते हैं। यह बड़ा व्यापारी बन्दर है।

अनुरुद्धपुर—यहाँ बौद्ध राजाओं के बनवाये हुए मन्दिरों के भग्नावशेष अधिक हैं। एक मन्दिर में अब तक १,६०० स्तम्भ मौजूद हैं। यह मन्दिर नौखण्ड का था जिसमें एक सहस्र कोठरियाँ थीं इसकी नीव सन् ईस्वी से २,००० वर्ष पूर्व पड़ी थी।

कांडी—पहाड़ पर बसा हुआ है। यह सिङ्घालियों की अन्तिम राजधानी था। कोलम्बो और कांडी के मध्य मे रेलवे लाइन जारी है।

शासन प्रणाली—

ईसा के ५०० वर्ष पहले यहाँ उत्तर भारत के एक राजकुमार का प्रभुत्व हुआ। सन् १५०५ ई० में पुर्तगालवालों ने उसके वंशजों को परास्त किया। सन् १६४० ई० में डचों ने पुर्तगालों को हराया, फिर सन् १७९६ ई० में अंग्रेजों ने डचों को मार भगाया। प्रजा के बहुत कहने सुनने पर सन् १८१५ ई० में सिङ्घाली शासक पृथक् किया गया। तब से अंग्रेजी राज्य है। यहाँ बृटिश राज्य की ओर से एक गवर्नर रहता है जिसको सम्राट् स्वयम् नियत करते हैं। पूरा देश नौ प्रान्तों में विभाजित है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—लङ्का के ऐतिहासिक घटनाओं का हाल लिखो।

२—रामेश्वर और सेतबन्ध का हाल लिखो।

३—यहाँ के प्रसिद्ध नगरों और निवासियों का जीवन वृतान्त लिखो।
४—लङ्का के राज्य प्रबन्ध का प्राचीन और अर्वाचीन इतिहास लिखो।

१०—पूर्वी द्वीप समूह

(१) सण्डा द्वीप समूह के बड़े बड़े द्वीपों में सुमात्रा, जावा और बोर्नियो और छोटे छोटे कई अन्य द्वीप हैं जो १,२०० मील की लम्बाई में फैले हुए हैं, लम्बाक' और 'तिमूर' इनमें अधिक प्रसिद्ध हैं।

(२) सिलीबीज के द्वीप समूह।

(३) मलक्का के द्वीप समूह।

(४) फिलीपाइन के द्वीपपुञ्ज।

इन द्वीपों की अधिकता के कारण अनेक छोटे छोटे समुद्र और उपकूल प्रकट हो गये हैं। उनके नाम और धाम पास के द्वीप के नाम ही से प्रसिद्ध हैं। प्रत्येक द्वीप में एक वा दो बन्दर अवश्य हैं। मकास्सर के मुहाने के पश्चिमी-किनारे के समुद्र उथले हैं। उनकी गहराई ६०० फीट से अधिक नहीं, परन्तु पूर्वीय किनारे के समुद्र गहन हैं। सिंगापुर से जहाज बनाका, बटेविया, बाली, लम्बोक, और तिमूर द्वीपों में होते हुए आस्ट्रेलिया जाते हैं।

धरातल—

छोटे छोटे द्वीप तो मूंगे से बने हैं और अन्य द्वीप दबे हुए पर्वतों के उभरने से बन गये हैं। बोर्नियो और सिलीबीज के अतिरिक्त अन्य द्वीपों में ज्वालामुखी पहाड़ हैं जो कहीं कहीं २½ मील तक ऊँचे हैं। प्रशान्त ज्वालामुखी पहाड़ों के गर्त प्रायः झीलें बन गई हैं। यद्यपि नदियाँ अधिक हैं परन्तु वे क्षुद्र हैं।

इन ज्वालामुखी पहाड़ों में कुछ तो प्रायः सुप्त हैं। परन्तु इनका क्रम सुमात्रा, जावा, सम्बवाना होता हुआ फ्लोरेस तक

चला गया है, यहाँ से उत्तर की ओर घूमकर मलक्का और फिली-पाइन होता हुआ जापान के ज्वालामुखी पर्वतों से जा मिला है। वेरन द्वीप का शुप्त ज्वालामुखी-पहाड़ भी इन्हीं का भाई बन्धु है। ज्वाला मुखी पहाड़ो के इस क्रम को दुनिया के बड़े नक्शे में देखो कुछ नकशो मे विशेष चिन्हों द्वारा इसको दिखाया गया है। ज्वालामुखी पहाड़ों की श्रेणियो के निकट साधारण भूकम्प हो जाना तो सामान्य घटना है, परन्तु कभी कभी इतने वेग से भूकम्प आता है कि संसार मे कहीं भी वैसा भूकम्प न आता होगा। कभी २ गांव के गांव नष्ट हो गये हैं, कठिन ज्वाला-वृष्टि के कारण समूचा द्वीप का द्वीप उड़ गया है। छोटे छोटे पहाड़ टूट कर चकनाचूर हो गए हैं और उनके स्थान पर बड़ी बड़ी झीलें बन गई हैं।

जलवायु—

एशिया के जल वायु और उद्भिज पदार्थों का हाल लिखते समय हमने इन द्वीप समूहों का तत्सम्बन्धी विवरण भी लिख दिया है। परन्तु एक विषय बड़े आश्चर्य का है, यद्यपि दो द्वीप इतने निकट हैं कि इनमे केवल १८ मील का अन्तर है, तथापि उन द्वीपो के जल वायु और उपज मे इतना अन्तर है कि जितना आस्ट्रेलिया और एशिया के जल-वायु और उपज में अन्तर हो सकता है। अर्थात् जो एशिया की ओर हैं उसमे एशिया की समानता है और जो आस्ट्रेलिया के समीप हैं उनमें आस्ट्रेलिया के पशु पक्षी बसते हैं इससे मालूम होता है कि ये द्वीप कभी अपने महाद्वीपो से अवश्य मिले थे।

उपज—

यहाँ इतनी वर्षा होती है कि यदि चतुर मनुष्य वर्ष में केवल १० दिन परिश्रम कर ले तो उसे साल भर तक भोजन की कमी

३—यहाँ के प्रसिद्ध नगरों और निवासियों का जीवन वृत्तान्त लिखो।
४—लङ्का के राज्य प्रबन्ध का प्राचीन और अर्वाचीन इतिहास लिखो।

१०—पूर्वी द्वीप समूह

(१) सडा द्वीप समूह के बड़े बड़े द्वीपों में सुमात्रा, जावा और बोर्नियो और छोटे छोटे कई अन्य द्वीप हैं जो १,२०० मील की लम्बाई में फैले हुए हैं, लम्बाक' और 'तिमूर' इनमें अधिक प्रसिद्ध हैं।

(२) सिलीबीज के द्वीप समूह।

(३) मलक्का के द्वीप समूह।

(४) फिलीपाइन के द्वीपपुंज।

इन द्वीपों की अधिकता के कारण अनेक छोटे छोटे समुद्र और उपकूल प्रकट हो गये हैं। उनके नाम और धाम पास के द्वीप के नाम ही से प्रसिद्ध हैं। प्रत्येक द्वीप में एक वा दो बन्दर अवश्य हैं। मकासर के मुहाने के पश्चिमी-किनारे के समुद्र उथले हैं। उनकी गहराई ६०० फीट से अधिक नहीं, परन्तु पूर्वीय किनारे के समुद्र गहन हैं। सिंगापुर से जहाज बनाका, बटेविया, बाली, लम्बोक, और तिमूर द्वीपों में होते हुए आस्ट्रेलिया जाते हैं।

धरातल—

छोटे छोटे द्वीप तो मूंगे से बने हैं और अन्य द्वीप दबे हुए पर्वतों के उभरने से बन गये हैं। बोर्नियो और सिलीबीज के अतिरिक्त अन्य द्वीपों में ज्वालामुखी पहाड़ हैं जो कहीं कहीं २½ मील तक ऊंचे हैं। प्रशान्त ज्वालामुखी पहाड़ों के गर्त प्राय झीलें बन गई हैं। यद्यपि नदियां अधिक हैं परन्तु वे क्षुद्र हैं।

इन ज्वालामुखी-पहाड़ों में कुछ तो प्राय लुप्त हैं। परन्तु इनका क्रम सुमात्रा, जावा, सम्बवाना होता हुआ फ्लोरस तक

द्वीपसमूह की तालिका

सख्या	द्वीप का नाम	जन सख्या	किस के अधिकार में है	राजधानी वा प्रसिद्धनगर
१	सुमात्रा	४०,२६,५६३	डच (जावा)	पडाङ्
२	जावा और मदुरा	३०,६८,००८	,,	सिवरा कटारा
३	तीमूर	३,०८,६००	कुछ डच और कुछ फ्रेंच	कुपाङ्
४	बाली और लम्बोक	५,२३,५३५	डच	धुलेलिङ्
५	बोर्नियो	१४,८७,६६६	(दक्षिणी) डच (उत्तरी) अंग्रेज	मकासर
६	लबुना	८,४११	डच	सरावक
७	सिलीबीज	८,५१,६०५	डच	पालोस
८	मलक्का	४,०७,६०६	अंग्रेज	जिलोली
९	टोंगा	२२ ३५८	,,	
१०	फिलीपाइन	७६,३५,४२६	अमेरिका	मार्तंग
११	हवाई	१,६१ ६०५	,,	
१२			,,	

न रहे। आरारोट, कर्पूर, सागूदाना और गटापार्चा के वृक्ष अधिक पैदा होते हैं। गोंद, मसाला, सन की पैदावार भी अधिक है। कुछ द्वीपों में राँग की खानें हैं। सोना और हीरा नदियों की रेत से निकाला जाता है। हाथी, चीते, शेर, गैंडे, बन्दर और कैंगरू अधिक पाये जाते हैं। कैंगरू अपने बच्चे को अपने पेट की थैली में रखता है, जिससे निकल कर वे चला फिरा करते हैं और भय के समय पर फिर उसी में झट से घुस जाते हैं। आस्ट्रेलिया मे एक प्रकार का ऐसा मोर होता है जिसे उसकी सुन्दरता के कारण लोग 'स्वर्ग की चिड़िया' कहते हैं। यह पक्षी सिलीबीज द्वीप मे भी पाया जाता है।

मनुष्य और उनके रहन-सहन—

सुमात्रा और जावा के लोग अधिक सभ्य हैं, परन्तु ज्यों ज्यों पूर्व के द्वीपो की ओर बढ़ते जाइये वहाँ के निवासियों की सभ्यता कम होती हुई मालूम होगी। कुछ जातियाँ यहाँ अब भी ऐसी हैं जो नर-बलि करती हैं। यह लोग बदन को गोदवाना बड़ा पसन्द करते हैं। इनके घर पेड़ो पर होते हैं।

राजकीय विभाग—

इन द्वीपो का अधिकांश डच और अमेरिका वालो के अधिकार में है। कुछ डच कृषको की भाँति इन द्वीपों मे बस गए हैं और वे राज्य की ओर से खेती करते हैं। डच वालों के द्वीप एक गवर्नर-जनरल के अधिकार में हैं।

बोर्नियो और उसके पास के कुछ द्वीप अङ्गरेजों के अधिकार में हैं।

डच लोगो के अधिकार में सुमात्रा का आधा भाग समस्त जावा, बोर्नियों का दक्षिणी भाग, सिलीबीज़ और मलक्का हैं।

का आद्धांश मिला हुआ है। मध्य मे मीनाम नदी बहती है, जिसके दोनों किनारों पर पहाडों की श्रेणियाँ चली गई हैं।

जलवायु—

यहाँ वही ऋतुयें होती हैं जो हिन्दोस्तान उत्तरी पश्चिमी मानसून के समय में स्याम का देश अनामीज पहाड की छाया मे आ जाता है इस कारण वर्षा यहाँ कम होती है पर स्याम की खाडी से हवायें जून से सितम्बर तक चलती है उन से यहाँ बहुत वर्षा हो जाती है

उपज—

मीनाम और उसकी सहायक नदियों की घाटियों और पहाड़ों में साल के जङ्गल, राँगे और सोने की खानें हैं, इसलिये यह देश बड़ा धनवान है। सुपारी नारियल और बाँस अधिकता से पैदा होते हैं।

मीनाम नदी के डेल्टे और उसकी तराई मे धान बहुत पैदा होता है, अत लाखों मन चावल यहाँ से विदेश को भेजा जाता है। भारतवर्ष में जिसका नाम रंगूनी चावल है प्राय वह स्याम ही से आता है। यहाँ धान घोड़ों को खिलाया जाता है और इसी से शराब खींची जाती है प्राचीन काल से यह रीति चली आती है कि ऋतु में सब से पहिले राजा आप धान बोता है तब उसकी प्रजा धान बोना आरम्भ करती है। इस उत्सव पर बड़ी भीड एकत्रित होती है।

मनुष्य, उनके धर्म और जनसंख्या—

यहाँ के लोग मङ्गोल जाति के हैं जो ताई के नाम से प्रसिद्ध हैं। इनका रङ्गरूप ब्रह्मा के निवासियों से अधिक मिलता
ये भी बौद्ध-धर्म के अनुयायी हैं, परन्तु श्वेत हाथी के भी

११—इण्डो चीन

एशिया के दक्षिण में जो तीन प्रायद्वीप हैं, उनमें भारतवर्ष का विवरण तो आगामी अध्याय मे लिखा जायगा,अरब का हाल लिखा जा चुका है यहाँ पर केवल इण्डोचीन का हाल शेष रह गया है।

राज-प्रबन्ध के विचार से इस देश के तीन विभाग हो सकते हैं—(१) अगरेजी राज्य (२) फ्रेञ्च जाति द्वारा शासित (३) स्वतन्त्र स्याम।

अँगरेज़ी राज्य का नाम ब्रह्मा है। इसकी राजधानी रगून है। इसका बयान भारतवर्ष के साथ किया जायगा, क्योंकि आज कल यह भारतवर्ष का एक प्रान्त माना जाता है।

मालय की रियासतें बृटिश-राज्य की सरक्षता में हैं।

मलाका के उपनिवेस बृटिश-राज्य मे हैं जिनकी राजधानी सिगापुर (Singapore) है।

कम्बोडिया फ्रेन्च की रक्षा में है। पनूमपेन इसकी राजधानी है।

कोचीन पर फ्रासीसियों का आधिपत्य है, सैंगून राजधानी है।

टानकिन भी फ्रांस के प्रभुत्व में है। हनोई इसकी राजधानी है।

अनाम की रियासत फ्रेंच साम्राज्य से रक्षित है जिसका मुख्य नगर ह्यू (Hue) है।

स्याम

सीमा—

यह देश स्याम की खाड़ी के उत्तर मे ब्रह्मा के सूबे टेनासिरम से मीचयांग तक फैला हुआ है। इसमें मालाया प्रायद्वीप

परन्तु स्याम और अनाम की रियासतों ने अपनी अपनी सीमा की ओर इसे बहुत कुछ नोच खसोट लिया है। अब यह फ्रांसीसियों द्वारा सरक्षित है। फ्रेन्च गवर्नमेंट की ओर से यहां एक रेज़ीडेंट रहता है। इसके मध्य में तालेसप नामक एक बड़ी झील है, जिसमें मछलियां बहुत पाई जाती हैं। इस झील की उत्तर दिशा मे—सघन जङ्गल में—एक प्राचीन नगर के भग्नावशेष हैं जिनके निरीक्षण से उसकी पुरानी महत्ता अब तक प्रकट होती है। अब भी वहां एक मन्दिर बना हुआ है जिसकी दीवारों पर देवताओं की मूर्त्तियां और संस्कृत में रामायण के श्लोक खुदे हैं। संस्कृत में कम्बोज इसी देश का नाम है और काकेशियन जाति के कुछ लोग यहां भी पाये जाते हैं। अत सिद्ध होता है कि हिन्दू सभ्यता यहां कभी बड़ी उन्नत दशा पर थी। इसकी राजधानी 'पनूपपेम' मीनाम नदी के डेल्टे के सिरे पर बसी हुई है। कम्पोट इसका बन्दर है।

कोचीन

कोचीन में मीक्यांग का डेल्टा सम्मिलित है। यह देश भी बहुत गर्म है और तराई में होने के कारण आधि व्याधि का आगार है। यहां फ्रांस के कुछ कैदी बसाये गये हैं इसकी राजधानी सेगून है।

अनाम

अनाम की राजधानी ह्यू है जिसका दुर्ग बड़ा दृढ़ बना हुआ है। यहां के निवासी मङ्गोल जाति के हैं जिनके पांव के अँगूठे बहुत बड़े होते हैं। इण्डोचीन भर में यहां के लोग सबसे अधिक मैले कुचैले रहते हैं। सारा देश बौद्ध है। अनाम की मुर्गियां और बत्तें बहुत अच्छी होती हैं और यूरोप को भेजी जाती हैं। ह्यू में फ्रांस गवर्नमेन्ट की ओर से एक रजीडेन्ट रहता है।

हैं। समीपवर्ती देशों के लोग भी यहाँ बसते हैं। प्रति वर्गमील ३६ के निकट जन सख्या है।

शासन प्रणाली-

यहाँ के राजा अपने १२ मन्त्रियों की सहायता से स्वयम् शासन करते हैं। शान और मलाया की रियासतें यद्यपि इनके अधिकार मे हैं, परन्तु वे शासन-पद्धति में स्वतन्त्र हैं। बहुत दिनों तक यहाँ का राजा पूर्ण स्वतन्त्र था, परन्तु अब नई सभ्यता के प्रभाव से प्रजा को भी कुछ स्वत्व मिले हैं। इसकी स्वतन्त्रता की इसलिये आवश्यकता भी है कि यह राज्य फ्रांस और अँग्रेज अमलदारियों के मध्य मे उपस्थित रह कर दोनो की सीमा निर्धारित करता है।

मालय और मलाका की बस्तियो में वेलजली प्रान्त अंगरेजों के अधिकार मे है। यहाँ राजपूताने की भाँति नौ छोटी छोटी रियासतें हैं जो बृटिश राज्य से रक्षित हैं। पीनांग और सिंगापुर के द्वीप अंग्रेजो के अधिकार में हैं, पहिले ये भारतवर्ष के अन्तर्गत समझे जाते थे, परन्तु अब इनका प्रबन्ध लङ्का की भाँति एक स्वतन्त्र गर्वनर को दे दिया गया है।

नगर-

बकाक मीनाम नदी के सगम से कुछ ऊपर उसके दोनों तटो पर बसा हुआ है यही स्याम की राजधानी है। इस देश की पुरानी राजधानी अयूथिया थी। यहाँ बोद्ध लोगों के बहुत पुराने मन्दिर हैं। यहाँ सडकों का काम नहरो, और गाड़ियो का काम नौकाओं से लिया जाता है।

कम्बोडिया

इतिहास-

यह छोटा सा राज्य आसाम के दक्षिण-पूर्व और कोचीन के में उपस्थित है, किसी समय में यह प्रसिद्ध राज्य था,

परन्तु स्याम और अनाम की रियासतों ने अपनी अपनी सीमा की ओर इसे बहुत कुछ नोच खसोट लिया है। अब यह फ्रांसीसियों द्वारा सुरक्षित है। फ्रेञ्च गवर्नमेंट की ओर से यहाँ एक रेजीडेंट रहता है। इसके मध्य में तालेसप नामक एक बड़ी झील है, जिसमें मछलियाँ बहुत पाई जाती हैं। इस झील की उत्तर दिशा में—सघन जङ्गल मे—एक प्राचीन नगर के भग्नावशेष हैं जिनके निरीक्षण से उसकी पुरानी महत्ता अब तक प्रकट होती है। अब भी यहाँ एक मन्दिर बना हुआ है जिसकी दीवारों पर देवताओं की मूर्त्तियाँ और संस्कृत में रामायण के श्लोक खुदे हैं। संस्कृत में कम्बोज इसी देश का नाम है और काकेशियन जाति के कुछ लोग यहाँ भी पाये जाते हैं। अतः सिद्ध होता है कि हिन्दू सभ्यता यहाँ कभी बड़ी उन्नत दशा पर थी। इसकी राजधानी 'पनूपपेम' मीनाम नदी के डेल्टे के सिरे पर बसी हुई है। कम्पोट इसका बन्दर है।

कोचीन

कोचीन मे मीक्यांग का डेल्टा सम्मिलित है। यह देश भी बहुत गर्म है और तराई मे होने के कारण आधि-व्याधि का आगार है। यहाँ फ्रांस के कुछ कैदी बसाये गये हैं इसकी राजधानी सेगून है।

अनाम

अनाम की राजधानी ह्यू है जिसका दुर्ग बड़ा दृढ़ बना हुआ है। यहाँ के निवासी मङ्गोल जाति के हैं जिनके पाँव के अँगूठे बहुत बड़े होते हैं। इण्डोचीन भर में यहाँ के लोग सबसे अधिक मैले कुचैले रहते हैं। सारा देश बौद्ध है। अनाम की मुर्गियाँ और बत्तें बहुत अच्छी होती हैं और यूरोप को भेजी जाती हैं। ह्यू मे फ्रांस गवर्नमेन्ट की ओर से एक रजीडेन्ट रहता है।

टानकिन

फ्रास की यह बस्ती (उपनिवेश) बहुत बसी हुई और उर्वरा है। इसका उपकूल दो घाटियों से सयुक्त है। यहां का जल वायु कोचीन से उत्तम है। धान के साथ ही साथ ऊहवा और अगूर की कृषि फ्रांसीसियो ने आरम्भ की है। सगमरमर और कोयले की खानें भी यहां हैं, इनमें सहस्रों कारीगर काम करते हैं। यहां से अण्डे की मज्जा चमड़ा कमाने के लिये फ्रांस को बहुत भेजी जाती है। हेनाई इसकी राजधानी है जो यूरोपियन नगरों के ढांचे पर सॉगको नदी पर बसाई गई है। इण्डोचीन के फ्रेंच राज्य का सर्वप्रधान शासक यहीं रहता है। टानकिन में हाईफोंग प्रसिद्ध बन्दर है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—पूर्वी द्वीप समूह की जन-सख्या लिखो ?

२—फिलीपाइन द्वीप और जावा के द्वीप में क्या अन्तर है ?

३—एशिया और आस्ट्रेलिया का इन द्वीपों पर क्या प्रभाव पड़ा है।

४—'स्वर्गी पक्षी' तथा कैंगरू का कुछ हाल लिखो।

५—एशिया के तीन बड़े प्रायद्वीपों के जल वायु का हाल लिखो।

६—इण्डोचीन के राजकीय विभाग लिखो।

७—एशिया में अगरेजों का अधिपत्य कहां कहां है ?

८—सिद्ध करो कि भारतवर्ष सर्व प्रकार से सुरक्षित है।

९—एशिया के स्वतन्त्र देशी राज्यों के नाम और उनकी शासन-प्रणाली बताओ।

१०—प्राचीन आर्य्य सभ्यता का एशिया भूखण्ड और उसके द्वीपों पर क्या प्रभाव पड़ा है। इस विषय के कुछ उदाहरण लिखो।

भारत वर्ष

१—साधारण दृश्य

एशिया का मान चित्र देखने पर विदित होगा कि दक्षिण की ओर अरब और इण्डोचीन प्रायद्वीप के बीच में एक और भी प्रायद्वीप है, इसी भूखण्ड का नाम भारतवर्ष, हिन्दुस्तान, इण्डिया और आर्य्यवर्त्त है। इसका आकार कुछ कुछ पतंग सा है, जिसके नीचे लङ्का का लटकन भी लटकता है। इसके उत्तर में रूसी तुर्किस्तान, चीनी तुर्किस्तान तिब्बत और चीन मुख्य हैं। पूर्व में फ्रेंच इण्डोचीन और स्याम, दक्षिण में हिन्द महासागर, उसके उपसागर, बङ्गाल की खाड़ी और अरब सागर इत्यादि हैं। पश्चिम में बिलोचिस्तान, फारिस और अफगानिस्तान की रियासतें हैं। समस्त भारतवर्ष का क्षेत्रफल १८ लाख वर्गमील और जन-सख्या ३३ करोड़ के निकट है।

तीन ओर से तो यह देश समुद्र से घिरा है और इसके उत्तर में हिमालय पर्वत की ३ मील ऊँची दीवार खड़ी है, मानो प्रकृति देवी ने पहले ही से यह समझ रक्खा था कि इसकी रक्षा परमावश्यकीय है। सभ्यता के आदि काल से आज तक न जाने इस देश पर कितने हमले हुए, पुराने निवासियों ने जङ्गलों में न मालूम कितनी वार भाग भाग कर प्राण रक्षा की, भगवान् ही जाने अधिक धन सम्पति यहाँ से लूट कर विदेशियों ने कै बार इसे उजाड़ा और भूखा बनाया, घाव पर घाव भारत को लगे, दुःख पर दुःख उठाने पड़े, पर भारतवर्ष—हमारी

मातृ भूमि, हमारा प्रिय देश—हमारी उसी प्रकार से रक्षा करता रहा जिस भांति कुपुत्र अपनी माता को लाख बार दुःख दे, कष्ट पहुँचाये, परन्तु माता अपनी पुत्र वत्सलता को नहीं छोड़ती।

आर्य्यों ने अनारियों से, यूनानियों ने आर्य्यों से, शकों ने भारत सन्तान से, सिकन्दर ने राजा पुरु से, मुसलमानो ने हिन्दुओं से और पुराने विजयों से, उन्हीं के नये उत्साही जाति भाइयों ने एक बार नहीं—सैकडों बार—धन लूटने के लिये भारतवर्ष पर आक्रमण किया। अकबर के राज्यकाल मे कुछ यूरोपियन भी यहाँ आये। जब उन्हें यहाँ की धन-सम्पदा का पता चला तो वे दल बाँध कर यहाँ व्यापार करने के लिये आने लगे। पहले पुर्चगीजों का दौरा दौर रहा, फिर फ्रेंचों का समय लौटा, साथ ही साथ वृटिश-जाति के व्यापारी भी प्रबल होते गये। डाक्टर हैमिलटन की जाति-सेवा ने वृटिश व्यापारिक कम्पनियों को कुछ भूस्वत्व भी दिलाया। धीरे धीरे भाग्य की उज्वलता के कारण वृटिश व्यापारिक ईस्ट-इण्डिया कम्पनी भारतवर्ष की शासक भी हो गई, जिससे महारानी विक्टोरिया ने १८५८ में राज्यभार अपने कर-कमलो मे ले लिया। तब से आज तक बराबर भारतवर्ष सभ्यता, शिक्षा और दक्षता में उन्नति लाभ कर रहा है।

अब हम वृटिश रक्षा के कारण बड़े अमन चैन से हैं। जहाँ हिन्दूकुश और सुलेमान पर्वत हमारी रक्षा करते हैं वहाँ इन पहाड़ो के दर्रे जो बहुत तङ्ग हैं जैसे खैबर और बोलन, इन्हीं से होकर पश्चात् आक्रमणकारी भारतवर्ष पर आये थे। अब सरकार ने इनसे मिले हुए देश और प्रान्त पर सेना द्वारा ...िन पहरा बिठा दिया है, दुर्ग निर्माण किये गये हैं, छावनियाँ

डाली गई हैं और हर प्रकार का सैनिक-प्रबन्ध कर दिया गया है। रेल भी यहाँ तक पहुँच गई है जिससे आवश्यकता के समय भारतवर्ष से सभी प्रकार की सहायता शीघ्र पहुँच जाय। अभिप्राय यह कि इन मार्गों से भारत शत्रुओं का आना अब कठिन हो गया है।

अब तीन ओर समुद्र का राज्य है। संसार भर में ऐसी कोई जाति नहीं है जो हमारी सरकार की नाविका—सेना की बल में प्रतिद्वन्द्विता कर सके। पूर्व में ब्रह्मा का देश सरकार अङ्गरेज के आधीन है ही, फिर अब डर किसका? अर्थात् इस राम-राज्य में जिस उदारहृदया सरकार ने हमारी इस प्रकार से रक्षा कर रखी है, हमारा भी धर्म है कि उसको तन मन और धन से सहायता दें। यदि हमने सच्चे हृदय से अपना कर्तव्य पालन नहीं किया तो याद रक्खो सर्वशक्तिमान् परमेश्वर हमसे प्रसन्न न रहेगा। जो हमारी रक्षा करे उसको योग पहुँचाना हमारा कर्तव्य है।

भारतवर्ष का उपकूल दोनों ओर से अर्थात् पूर्व और पश्चिम में भी लगभग ८,००० मील में विस्तृत है। पश्चिमी किनारे पर कराची और बम्बई दो प्रसिद्ध बन्दर हैं, यह किनारा एक स्थान छोड़ कर और प्रत्येक स्थान में ऊँचा है। जहाँ नीचा हुआ है वहाँ के स्थल का कुछ भाग जल में चला गया है—जिसे कच्छ की खाड़ी कहते हैं। इसके निकट ही खम्भात की खाड़ी है। इसके नीचे का किनारा पथरीला है जिसके दक्षिणी भाग को मालाबार उपद्वीप कहते हैं।

दक्षिण में उपकूल का एक टुकड़ा समुद्र में बढ़ा हुआ है, इसे कन्याकुमारी अन्तरीप कहते हैं। यहीं पाक की प्रणाली है, जिसके द्वारा भारतवर्ष से लङ्का पृथक् होता है और बङ्गाल तथा

अरब के उपसागर परस्पर मिलते हैं। पूर्वी उपकूल दक्षिण भाग को कारोमण्डल कहते हैं। इधर मद्रास और कलकत्ते के बन्दर कुछ अन्दर की ओर अवस्थित हैं। यह उपकूल प्रायः बालुकामय और खाल है। यह किनारा सफाचट सीधा चला गया है। टूटा हुआ नहीं है कि जिसमे उत्तम उत्तम बन्दर हो अथवा बनावटी बन्दर बन सकें।

नक्शे मे देखने से हमें समुद्र में छोटे बड़े बहुत से धब्बे पडे हुए दिखाई देते हैं ये द्वीपो के चिन्ह हैं कोई कोई तो दूर हैं और कोई कोई पास। जो निकट हैं उन्हें द्वीप-समूह कहते हैं। सब से बड़े द्वीप "लङ्काद्वीप" और 'मालद्वीप' अरब सागर मे हैं। ऐंडमन् और निकोबार बङ्गाल की खाड़ी में हैं। दक्षिण मे लङ्का है जिसका हाल लिखा जा चुका है।

भारतवर्ष की लम्बाई कश्मीर के उत्तरी सिरे से कन्याकुमारी तक १९१७ मील, और चौड़ाई कराची से आसाम तक १९१२ मील के लगभग है। इस प्रकार भारत का क्षेत्रफल वृटिश-द्वीप समूह से १५ गुना बड़ा और सारे वृटिश साम्राज्य का षष्टांश है।

प्राकृतिक दशा

भारतवर्ष के धरातल में कुछ ऐसी विचित्रतायें हैं, जिनसे ज्ञात होता है कि मानो प्रकृति-देवी ने स्वयम् इसे निरूपण किया है। ब्रह्म देश को छोड़ कर हिन्दुस्तान चार प्राकृतिक विभागो में विभक्त है—

(१) पहाड़ी प्रान्त—यह उत्तर में दूर तक विस्तृत है।

(२) वह बड़ा मैदान—जो हिमालय पर्वत से निकली हुई नदियों के बेसिनों से बना हुआ है और जिसमे सिन्धु, गङ्गा

और ब्रह्मपुत्र दोनों विशाल नदियाँ बहती हैं। यह मैदान उत्तरी-पहाड़ी मैदान के ठीक नीचे दक्षिण की ओर है और सारा उत्तरी भारत इसमें सम्मिलित है। इसका क्षेत्रफल ३,००,००० वर्गमील से अधिक है। इसका पश्चिमी भाग रेतीला है उसे छोड़ कर सारा भाग बड़ा उपजाऊ है और इतना समतल है कि चाहे तिल तिल भूमि में कोई घूम आवे, कोई पहाड़ी भी न दिखाई देगी। सब स्थान पर समान रूप से दर्पणोदर धरातल दिखाई देगा। उर्वरता सभ्यता और जन सख्या की अधिकता में यह भाग सारे ससार मे श्रेष्ठ है।

(३) उपरोक्त मैदान के पश्चात् ऊँचा मैदान आरम्भ होता है। इसके दो भाग हैं, प्रथम तो मध्य भारत की ऊँची भूमि जो पर्वतों के मध्यगत है। इसके दक्षिणी-पश्चिमी कोने का नाम मालवा की माल भूमि है। दूसरी पहले के नीचे—दक्षिण ओर की ऊँची माल भूमि जिसमें दक्षिण-भारत सम्मिलित है । यह त्रिभुजाकार है । इसके उत्तर में विन्ध्या और अरवली पर्वत हैं। पश्चिमी और पूर्वी भुजाएँ—पश्चिमी घाट और पूर्वी घाट के पर्वत हैं। यह मैदान १,५०० से लेकर ३,००० फीट तक ऊँचा है।

(४) उपकूल—इसका वृत्तान्त पहले दिया जा चुका है। दोनो घाटों के पर्वतों के समानान्तर मैदान चले गये हैं जो पूर्व की अपेक्षा पश्चिम की ओर तग हैं। पूर्वी मैदान को कार्नाटिक और पश्चिमी मैदान को कनकान और मलाबार कहते हैं।

पहाड़

भारतवर्ष मे बड़े ऊँचे ऊँचे पर्वत हैं, इनमें जो अधिक प्रसिद्ध हैं उनका हाल नीचे दिया जाता है—

(१) हिमालय, (हिम=वर्फ, आलय=घर) यह पर्वत उत्तर में १,६०० मील तक फैला हुआ है। इसमें बड़ी बड़ी खानें हैं और यह वनस्पति और खनिज पदार्थों का आगार है। इसके शृङ्गों पर सदैव वर्फ पड़ी रहती है। इसकी ऊँची ऊँची चोटियों के नाम ये हैं—

अ—गौरीशङ्कर (Everest) २९,००२ फीट ऊँचा है।
व—काचनजघा २८,१५० फीट
स—धवलागिरि २८,८२६ फीट
द—नन्दादेवी २५,६०० फीट
प—कैलाश २२,६०० फीट
ज—नङ्गापर्वत २६,६२९ फीट

ससार गौरीशङ्कर मे उत्तुङ्ग शिखर का अभी तक पता नहीं लगा। ये पर्वत हमारी रक्षा का काम देते हैं, इसके अतिरिक्त इनसे बड़ी बड़ी नदियाँ निकल कर हमारे देश मे जल लाती हैं।

(२) कराकुरम—भारतवर्ष के उत्तरी कोने में उपस्थित है, इसकी एक चोटी २८,२५० फीट ऊँची है।

(३) हिन्दूकुश—यह पर्वत उत्तर से दक्षिण पश्चिम को चला गया है, इसके कई शृङ्ग २०,००० फीट से भी अधिक ऊँचे हैं।

(४) उज्ज्वल पर्वत—(सफेद कोह) उत्तर पश्चिम मे है, इसी पहाड़ में "खैवर" का दर्रा है।

(५) सुलेमान पर्वत—यह भारतवर्ष और अफगानिस्तान की सीमा वनाता है। 'तख्त सुलेमान' इसकी सबसे ऊँची चोटी

है जो ११,५०० फीट से कुछ अधिक ऊँची है। इस पर्वत में "बोलन" का दर्रा है।

(६) अरवली—खम्भात की खाड़ी के निकट से उत्तर पूर्व को ओर चला गया है। आबू इसकी सब से ऊँची चोटी है जो ५,५०० फीट ऊँची है।

(७) विन्ध्याचल—यह भारतवर्ष के मध्य में, खम्भात से पूर्व की ओर ६०० मील तक चला गया है। इसके उत्तर की नदियाँ गङ्गा मे गिरती हैं। इस पर्वत की श्रेणियो ने मानों बूढे भारतवर्ष को कमर को बाँध रक्खा है। इसका कोई स्थान २,५०० फीट से अधिक ऊँचा नहीं है।

(८) सतपुरा—यह विन्ध्याचल के दक्षिण में, नर्मदा और ताप्ती के मध्य में अवस्थित है।

(९) पूर्वीघाट—पूर्वी उपकूल के समानान्तर कुछ पश्चिम-को हटकर एक श्रेणी बनाता है। ३,००० फीट से अधिक कहीं ऊँचा नहीं है।

(१०) पश्चिमीघाट—पश्चिमी उपकूल के समानान्तर एक पर्वत श्रेणी है। पूर्वीघाट की अपेक्षा समुद्र से यह अधिक निकट है, ४,००० फीट तक यह ऊँचा भी है।

(११) नीलगिरि—दक्षिण मे यह उस स्थान पर है जहाँ पूर्वीघाट और पश्चिमीघाट के पर्वत आ कर मिल जाते हैं। 'दादा बेटा" इसकी सबसे ऊँची चोटी है जो ८,७६० फीट ऊँची है।

नदी

तिब्बत में मानसरोवर, रावणह्रद और राक्षस यह तीन प्रसिद्ध झीलें हैं। भारतवर्ष की बड़ी बड़ी नदियाँ इन्हीं से निक-

लती हैं। यद्यपि इन नदियों के उद्गम स्थान में केवल दश, पाँच मील का अन्तर है, तथापि इन के सगम स्थान में १,८०० मील से भी अधिक का अन्तर पड जाता है। मानचित्र मे देखो ब्रह्मपुत्र तो बङ्गाल की खाडी में गिरती है और सिन्धु खम्भात की खाड़ी के निकट, परन्तु यह दोनो नदियाँ एकाही स्थान से निकलती हैं। इसी प्रकार घाघरा और सतलज भी वहीं से चलती हैं, परन्तु घाघरा पूर्व्व की ओर, और सतलज पश्चिम की ओर वहती है उनमें से एक गङ्गा से, दूसरी सिन्धु से मिलती है।

इसी प्रकार सोन, नर्मदा, वानगङ्गा और महानदी के उद्गम-स्थान पास ही पास हैं। परन्तु सोन उत्तर को चलकर वङ्गसागर की ओर का मार्ग लेती है, नर्मदा पश्चिम को वहती हुई अरव सागर मे पहुँचती है, वानगङ्गा दक्षिण-गामिनी है और महानदी पूर्व दिशा का अवलम्बन करती है। मानों इससे भाग्य-चक्र का प्रत्यक्ष उदाहरण मिल जाता है कि "एक ही माता पिता से चाहे कई पुत्र हो तथापि वह जिस जिस पथ का अवलम्बन करेंगे उसी के अनुसार वहेंगे" सभ्य लोगों की इसीलिये यही राय है कि मनुष्य को सुमार्ग पर चलना चाहिये।

इस उदाहरण से एक और भी फल निकलता है कि विन्ध्याचल के मध्यभाग से भूमि का ढलान चारों ओर को है। इसी प्रकार मानसरोवर के निकट भी पृथ्वी का ढलान चारो ओर है। याद रक्खो इन ढलानों के जानने से वडा काम चलता है। इसी को अङ्गरेजी में 'वाटरशेड' (Water shed), और भाषा मे 'जल विभाजक' कहते हैं।

हिमालय-पर्वत से निकल कर भारतवर्ष में वहने वाली तीन प्रकार की नदियाँ है।

(१) ब्रह्मपुत्र, यह कैलाश शिखर के समीप मानसरोवर झील से निकलती है और पृथ्वी के ढलान के अनुसार पूर्व को बहती हुई १,००० मील पहाड़ों में घूमती है, फिर पश्चिम को ओर मुँह करके सीधी बङ्गसागर मे चली जाती है।

(२) गङ्गा, यह हिमालय के गङ्गोत्तरी नामक पर्वत से निकल कर संयुक्त प्रान्त, विहार और बङ्गाल में बहती हुई बङ्गाल की खाड़ी में गिरती है। यह १,५२० मील के लगभग लम्बी है। भारतवर्ष में सब से अधिक लाभ पहुँचाने वाली यही नदी है। इसका तट प्राचीन आर्य्य सभ्यता का आगार था। हिन्दू लोग इसे परम पवित्र मानते हैं और इसे 'गङ्गा माता' कह कर सम्बोधित करते हैं। इसमें स्नान करना बडा लाभकारी है। हिन्दुओं का यह खयाल है कि सहस्रो गङ्गा स्नान और गङ्गाजलपान करके कुष्टादि जैसे प्रबल रोग शत्रु से छूट जाते हैं।

दाहिनी ओर से इसमें यमुना प्रयाग में, और सोन पटना के निकट आन कर मिल जाती हैं।

वाम भाग से आन कर मिल जाने वाली नदियाँ ये हैं —

गोमती—बनारस के पूर्व सैदपुर में गङ्गा से मिल जाती है।

घाघरा—छपरे के निकट गङ्गा से मिलती है।

गंडक—पटना के पूर्व गङ्गा मे इसका सङ्गम होता है।

गङ्गा के तटस्थ हरिद्वार, कन्नौज, कानपुर, प्रयाग, मिर्जापुर, बनारस, पटना, और हवडा के प्रसिद्ध नगर बसे हैं।

यमुना नदी—गंगा के उद्गम-स्थान के पास ही यमुनोत्तरी पर्वत से निकलती है और विन्ध्यगिरि से निकली हुई उन नदियों को जो उत्तर की ओर को बहती हैं लेती हुई प्रयाग में गंगा में

मिल जाती है। इसकी सहायक नदियाँ चम्बल, बेतवा और केन हैं। यमुना के किनारे दिल्ली, मथुरा, आगरा और प्रयाग प्रसिद्ध नगर बसे हैं।

(३) सिन्धु, ब्रह्मपुत्र के पास ही रावण-ह्रद झील से निकलती है। इसकी लम्बाई १,८०० मील है। सैकड़ों मील तो यह हिमालय-पर्वत ही मे तै करती है, फिर सीमा प्रान्त में पहुँचती है, वहाँ से काबुल नदी को लेती हुई दक्षिण का मार्ग लेती है। पञ्जाब की पाँचों नदियाँ सतलज व्यास, रावी, चिनाव और झेलम मुलतान के समीप मिट्ठनकोट पर मिलती हैं, फिर ६० मील साथ साथ बह कर इसमें मिल जाती हैं। इस प्रकार सिन्धु नामक बालुकामय प्रदेश में कुछ दूर बह कर अन्त में अरब सागर मे पहुँच जाती है।

सिन्धु के नाम ही पर पश्चिमी आक्रमण कारियो ने आर्य्यावर्त्त का नाम सिन्ध व हिन्द रक्खा और धीरे धीरे यह हिन्दिया से इण्डिया हो गया। अब भारतवर्ष का प्रसिद्ध नाम हिन्द यहाँ की भाषा हिन्दी और इस भाषा के बोलने वाले—इस देश के निवासी-हिन्दू कहलाते हैं।

दक्षिण-भारत की ये नदियाँ हैं—

अ—पश्चिमाभिमुख-गामिनी—

(१) नर्मदा—विन्ध्याचल से निकलती है, ८०० मील बह कर पश्चिमी भारत को सींचती हुई खम्भात की खाड़ी में पहुँच जाती है। इस नदी के उत्तर में विन्ध्याचल और दक्षिण में सतपुरा नामक पर्वत अवस्थित हैं जिनके बीच में यह नदी बहती है।

(२) ताप्ती—इसका उद्गम स्थान भी नर्मदा के निकट ही है। ४०० मील पश्चिम की ओर चल कर खम्भात की खाड़ी में गिर जाती है। नर्मदा और ताप्ती नदियों के मध्य में सतपुरा का पर्वत है।

(३) साबरमती और माही—ये नदियाँ अरवली और विन्ध्य पर्वत के मध्यगत भू भाग को सिंचित करती हैं, फिर पश्चिम की ओर बह कर खम्भात में मिल जाती हैं।

ब—पूर्वाभिमुख-गामिनी—

(१) महानदी—विन्ध्याचल से निकल कर दक्षिण पूर्व ५०० मील बह कर बङ्ग-सागर मे गिरती है।

(२) गोदावरी—दक्षिण की सब से बड़ी नदी है। पश्चिमी घाट के पर्वत से निकलती है और दक्षिण पूर्व ६०० मील बह कर बङ्ग सागर में पहुच जाती है। गगा की भाँति हिन्दू लोग इसे भी पवित्र मानते हैं।

(३) कृष्णा—पश्चिमी-घाट से निकलती है और अपनी सहायक तुगभद्रा और भीमा नदियों को लेती हुई पूर्व की ओर ८०० मील बह कर बङ्गाल की खाड़ी मे गिरती है।

(४) कावेरी—यह भी पश्चिमी घाट से निकलती है और नीलगिरि मे होती हुई बङ्ग-सागर मे गिरती है।

(५) कृष्णा और कावेरी के मध्य में तीन और नदियाँ हैं जो मैसूर की पहाड़ियों से निकलती हैं जिनका नाम उत्तरी पनार, पालार और दक्षिणीपनार है।

अन्य नदियों का हाल प्रान्तिक-विवरण में दिया जायगा।

झीलें

"ऊलर" झील कश्मीर के राज्य में है। इसीसे झेलम न
निकलती है। कश्मीर ही मे श्रीनगर के पास एक और झील
जिसे वहाँ के लोग "डल" कहते हैं।

गोदावरी और कृष्णा नदियो के मध्य म भी एक झील
जिसको "कोल" कहते हैं। इसका पानी खारी है, क्योंकि
समुद्र के साथ एक छोटी सी नदी के द्वारा मिली हुई है।

इसी भाँति की एक झील मद्रास नगर के निकट उपस्थित है
इसका नाम "पली कट" है।

"चिलका" झील और इसी प्रकार की एक दूसरी झी
बगाल और मद्रास की सीमा पर हैं, इनका जल भी खारी है।

राजपूताने में जयपुर से थोड़ी दूर पर "साँभर" नामक झी
है। इसका भी जल खारी है। इससे लाखों मन नमक प्रति
बनाया जाता है जो साँभर-लौण के नाम से प्रसिद्ध है।

खानें

भारतवर्ष के पर्वतो मे धातुओ की बहुत सी ऐसी खानें
जिनका खोदना अभी आरम्भ नहीं किया गया, क्योंकि यहाँ
निवासियो को इधर अधिक रुचि नहीं है। अत भारतवर्ष क
अधिक धन अभी तक भूगर्भ म सञ्चित पड़ा हुआ है। परन्
फिर भी कोयले और लोहे की खानें बड़े लाभ के साथ चल रही हैं
मैसूर में सोना भी मिलता है। नमक पञ्जाब और साभर झील
निकाला जाता है। जस्ता, अभ्रक, वग, ताँबा और शोरा भी खान
से निकाला जाता है। कुमायूँ में ताँबे की खानें हैं। नीलम

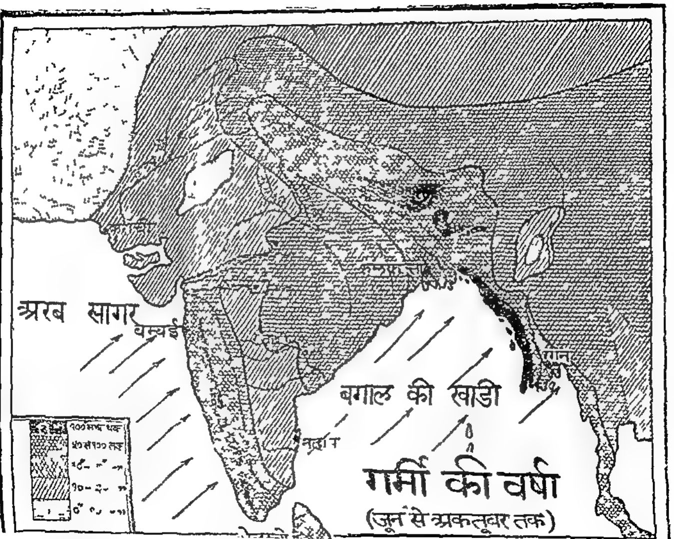
पुखराज, याकूत और चुनिया आदि भी निकलता है। गोदावरी के निकट कभी कभी हीरा भी पाया जाता है।

३—वर्षा, जल वायु और उपज

वायु और वर्षा

वर्षा का निर्भर किसी स्थान के मानसून पर है। भारतवर्ष के उत्तर में हिमालय पर्वत है और अन्य तीन दिशाएँ समुद्र से घिरी हुई हैं जो वायु के गति विधि के लिये खुली हैं। नवम्बर और दिसम्बर के महीनों में वायु का सचार सारे भारतवर्ष में अतिमन्द रहता है, परन्तु ज्योंही मकर की सक्रान्त हो जाती है और सूर्य्य उत्तरायण हो जाता है, मानसून का झोंका चलने लगता है। जनवरी और फरवरी में उत्तर से वायु उठता हुआ दक्षिण की ओर चलता हुआ मालूम होता है जो अपने निकट के समुद्र की ओर का रास्ता पकड़ता है। इसलिये सिन्धप्रदेश में कश्मीर की ओर से वायु आकर पश्चिम को निकल जाता है। दक्षिण भारत में दक्षिण पश्चिम की ओर से वायु प्रवाहित होता है। वगसागर के निकटवर्ती देशों में वायु का झुकाव उत्तर से पूर्व फिर पूर्व से दक्षिण को होती है और अन्त में वह पश्चिम का मार्ग अवलम्बन करता है।

मार्च से मई तक बड़ी वेग से पछुवा चलता है जिसका रुख पजाब में सिन्ध और राजपूताना से उत्तर की ओर होता है, परन्तु हिमालय से टकरा कर वायु बगाल की खाड़ी का मार्ग अवलम्बन करता है। इसलिये गगा नदी के दोआबे से पछुआ उत्तर और दक्षिण से—दोनों ओर से—चलता हुआ दिखाई देता है, परन्तु उसकी गति साधी पूर्व को होती है। बगसागर की ओर से जो वायु ब्रह्मपुत्र के दोआबे में जाता है उसकी गति पर्वतों से

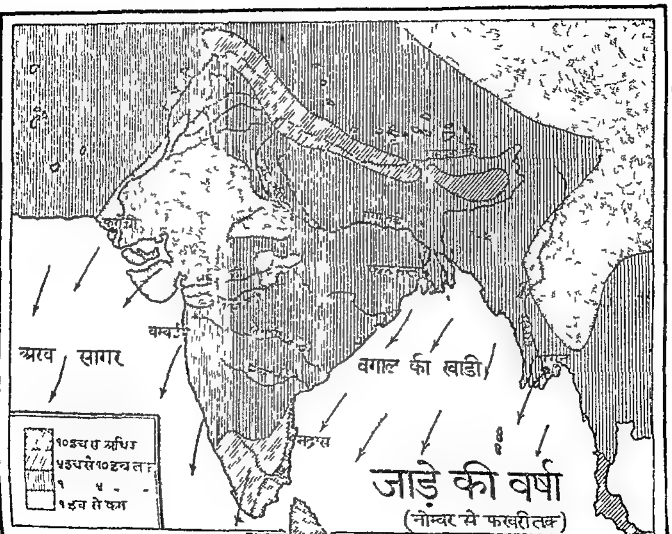

अरब सागर
बम्बई
बंगाल की खाड़ी
मद्रास
गर्मी की वर्षा
(जून से अक्तूबर तक)

टकरा कर चक्करदार हो जाती है। दक्षिण भारत में वायु सीधा पश्चिम से पूर्व को निकल जाता है।

जून और अक्टूबर के मध्य में वायु की गति-विधि के अनुसार ही भारतवर्ष में वर्षा होती है। इन दिनों में वायु का क्रम मई के अनुसार ही होता है, परन्तु अरब सागर से तो यह ठीक पूर्व की ओर होता है, यहाँ बंगसागर का वायु उत्तर को चलकर गंगा की तराई में पश्चिम की ओर घूम जाता है, जो पंजाब से आने वाले वायु से टकराया करता है। इसी वायु को मानसून कहते हैं, इसमें जल कण और जलवाष्प की बड़ी अधिकता होती है। सीधे यह वायु मैदानों को पार कर जब पहाड़ों से टकराता है तो उसी ओर लौट आता है और अपने संचित जल को फेंक देता है क्योंकि पहाड़ों की शीतलता के कारण वह ठंढा पड़ जाता है।

पश्चिमीघाट के पहाड़ कुछ अधिक ऊंचे हैं अतः पश्चिमीघाट के पश्चिम वाले मैदान में ,खूब वर्षा होती है क्योंकि अरब सागर का मानसून उससे टकरा कर आगे नहीं निकल सकता। भारतवर्ष के किनारे पर—कन्याकुमारी अन्तरीप से बम्बई तक—लग भग १०० मील की चौड़ाई में ८०० इञ्च तक वार्षिक वर्षा होती है, परन्तु ज्यों ज्यों उत्तर की ओर जावें इसका परिमाण घटता जाता है। तात्पर्य यह है कि उत्तर की अपेक्षा दक्षिण में अधिक वर्षा होती है।

सिंध, राजपूताना और पञ्जाब में वर्षा क्रमगत न्यून होती है। ब्रह्मा के दक्षिणी सिरे, आसाम और ब्रह्मपुत्र की तराई में अधिक पानी बरसता है। समस्त बंगाल और घाघरा नदी के बाँये किनारे पर हिमालय की तराई तक वृष्टि अधिक होती है। संयुक्त प्रान्त में अच्छी वर्षा होती है, क्योंकि यहाँ बंगसागर


कराची
बम्बई
अरब सागर
बंगाल की खाड़ी
मद्रास
१ इञ्च से कम
जाड़े की वर्षा
(नोम्बर से फरवरी तक)

मानसून बिना रोकटोक चला आता है ; परन्तु गङ्गा की तराई से लेकर मध्यदेश उड़ीसादि मे साधारण वर्षा होती है।

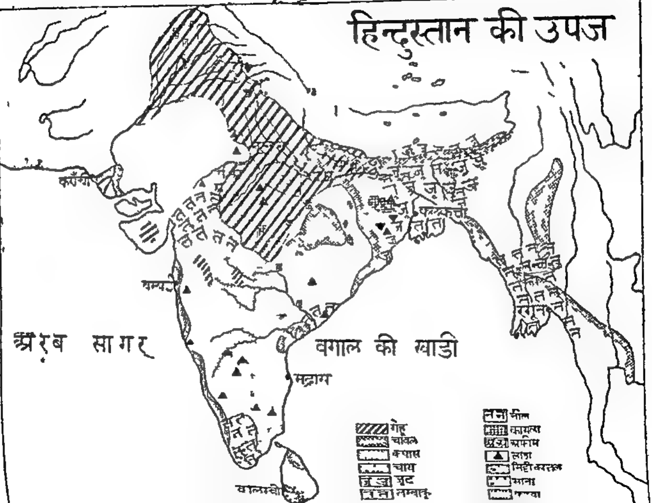
चेरापूंजी, नागा, खसिया आदि पहाडियों पर ससार भर में सब स्थानो से अधिक जल बरसता है। सिन्ध, मारवाड़ और पञ्जाब का पश्चिमी भाग प्राय कोरा जाता है। पश्चिमीघाट के पूर्व मलाबार तक यह भाग साधारण रीति पर वर्षा मे लाभ उठाता है।

जाड़े के दिनों मे मानसून हवाएँ उत्तर पूर्व की ओर से चलती हैं। ये हवाएँ मद्रास तट पर तथा लका मे पानी बरसाती हैं। दकन के पठार के कुछ भागों मे भी इन्हीं द्वारा वर्षा हो जाती है इन्हीं दिनो पञ्जाब मे भी कुछ थोडी वर्षा होती है, किन्तु यह मानसून से नहीं होती। यह वर्षा फारस और अफगानिस्तान की ओर से आने वाली हवाओ मे होती है—

भारतवर्ष की जलवायु गर्म होना चाहिये था, परन्तु ऐसा नहीं है क्योकि तीन ओर से समुद्र होने के कारण गर्मी का प्रभाव अधिक नहीं पड़ता। मद्रास बम्बई और उडीसा समशीतोष्ण देश हैं। हिमालय के पहाड़ी देश जसे कश्मीर, गढ़वाल, नैपालादि खूब सर्द हैं। मध्यभारत और राजपूताना जो समुद्र से दूर हैं शुष्क हैं, परन्तु जाड़े मे शीतल और गर्मियों मे अति गर्म रहते हैं।

उपज

जहाँ पानी खूब बरसता है वहाँ कृषि कार्य्य भी अधिक होता है। उत्तरी भारत में—आसाम से लेकर लाहौर तक—हिमालय और विन्ध्यपर्वत के मध्य में धान, गेहूँ, चना, मटर, मूँग, जव, बाजरा, तेलहन, रुई, उर्द, अरहर और तिल आदि नाज अ


हिन्दुस्तान की उपज
अरब सागर
बंगाल की खाड़ी
कराँची
बम्बई
मद्रास
कलकत्ता
रंगून
गेहूं
चावल
कपास
चाय
जूट
तम्बाकू
नील
अफ़ीम
लोहा
मिट्टी का तेल
सोना

पैदा होते हैं, परन्तु गङ्गा नदी के बेसिन में ऊख की खेती खूब होती है। इसी प्रकार पूर्वीघाट और पश्चिमी घाट के निकट वाले मैदानों में भी यही खेती की जाती है।

पश्चिमीघाट, बगाल, नैपाल की तराई, छोटा नागपुर और कराची के निकट धान अधिक पैदा होते हैं।

पटना, बनारस और मालवे के प्रान्तों मे अफ़्यून और लोअर ब्रह्मा, बिहार, सिलहट, मछलीपट्टम और मैसूर में तम्बाकू की खेती अधिक की जाती है। बनारस मे पश्चिम सारा सयुक्त प्रान्त और सारा पजाब गेहूँ की कृषि के लिये प्रसिद्ध है। आसाम और कुमायूँ मे चाय भी उपजती है। बगाल मे कपास और जूट भी बोई जाती है।

इन बातों से प्रत्यत्त होता है कि भारतवर्ष कृषि प्रधान देश है। जन समुदाय का ७५ प्रति शत कृषि द्वारा जीविका निर्वाह करता है, परन्तु इसने अभी कोई विशेष उन्नति नहीं की है। आज तक वही पुराने ढग से खेती की जाती है। वर्त्तमान काल के नये आविष्कारो का कुछ जरा भी उपयोग नहीं किया जाता, हालाँ कि सारी पाश्चात्य जातियो ने नई नई कलों से कृषि कार्य्य में बड़ी उन्नति कर ली है। सरकार इस ओर कुछ ध्यान दे रही है, जिससे आशा है कि लोग अधिक लाभ उठाने का प्रयत्न करेंगे। पूसा, कानपुर और बगाल के कृषि कालिज अच्छा काम कर रहे हैं।

उपज दो प्रकार की होती है। एक खाद्य सामग्री दूसरी व्यवसाय वाणिज्य सम्बन्धी। खाद्य वस्तुओं में नाज, तरकारी, तेलहन, फल, मून आदि हैं। व्यवसाय वाणिज्य मे गुड़, तेल, घी, नील, लकड़ी, सन, रुई और मसाले आदि हैं। भारतवर्ष के

जङ्गलो मे देवदार, शीशम, चीड़, साखू, चन्दन, बाँझ, सागोन और बाँस के वृक्ष अधिक पाये जाते हैं। इनकी लकड़ियाँ बड़े काम की होती हैं। बट, पीपल, बबूल हर जगह पाये जाते हैं। बङ्गाल और आसाम मे एक वृक्ष के दूध से रबड़ जमाया जाता है।

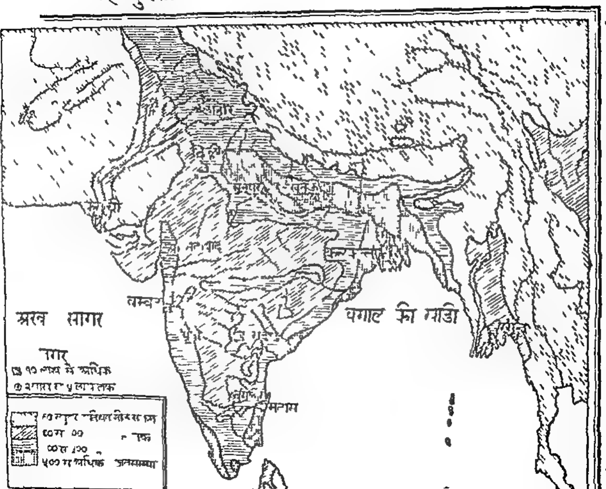
४—जन-संख्या, निवासी, धर्म और भाषा

समस्त भारत-साम्राज्य मे—जिसमें ब्रह्मा, अदन, और अड-मनादि सम्मिलित नहीं है—३१,८९,४१,४८१ मनुष्य बसते हैं। इसके अतिरिक्त भारत और अफगानिस्तान की सीमा पर ४, ६०,००० नैपाल मे ५६,३९,०९५ भूटान मे ३,५०,००० और अन्य यूरोपीय अमलदारियो मे ८,८४,६५० मनुष्य वास करते हैं। जन सख्या वाले नकशे को उपज और जलवायु के नकशों से तुलना करो तो तुमको प्रतीत होगा कि जिन भागो में जलवायु अच्छा और भूमि उपजाऊ है वहीं मनुष्य भी अधिक रहते हैं। पहाडी और पठारी प्रदेशों मे भूमि के उपजाऊ न होने के कारण बहुत कम नगर हैं तथा इन भागो के गाँव बहुत दूर दूर या छिदरे आबाद हैं। और जन-सख्या केवल उन्हीं भागों मे अधिक है जहाँ भूमि उपजाऊ है और जलवायु अच्छा है। ऐसे भाग अधिकतर नदियो की घाटियो तथा पहाड़ों के ढालो पर हैं। यथा सिन्ध गगा और समुद्र तट के मैदानों मे जहाँ वर्षा खूब होती है और भूमि भी उपजाऊ है अधिकाश आबादी मिलेगी।

जिनमें—

हिन्दू धर्म के मानने वाले	२१६७३५०००
जैन धर्म—	११७८०००

हिन्दुस्तान की जनसंख्या का मानचित्र



सिक्ख धर्म—	३२३१०००
बौद्ध धर्म—	१५७१०००
मुसलमान	६,८१३५,०००
ईसाई	४७५४,२००
पार्सी	१,०२०००
यहूदी	२२,०००
और विधर्मी	१८७००

हिन्दू धर्म के अनुयाइयो मे बौद्ध, सिख, जैनी और आर्य्य मतावलम्बी भी हैं।

बौद्ध लोग महात्मा गौतमबुद्ध के पथानुगामी हैं। आज से एक सहस्र वर्ष पूर्व भू-मण्डल भर में बौद्ध धर्म की प्रबलता थी। चीन और जापान के निवासी अभी तक बौद्ध हैं। लोगों का कथन है कि ईसाई-धर्म की जड़ भी बौद्ध ही धर्म पर अवलम्बित है।

सिख लोग गुरु नानक के उपदेश पर चलते हैं। सिखों के १० गुरु हुए हैं जिनमें गुरु गोविन्द सिंह सबसे अन्तिम गुरु हैं। सिख धर्म का मुख्य उद्देश धर्म की रक्षा करना था। जब अन्य धर्मानुयायी हिन्दुओं को बलात्कार धर्मच्युत करने लगे तो यह उनके सामने खड्ग और कृपाण लेकर डट गए और जिहाद के प्रवाह को अपने प्रबल प्रताप से छिन्न भिन्न कर दिया। यदि गुरु गोविन्दसिंह के दोनो पुत्र और हकीकतराय धर्म के हेतु बलि न चढ़े होते तो आज हिन्दू धर्म का मुख इतना उज्ज्वल न होता।

आर्य्य-धर्मानुयायी कोई पृथक् संस्था नहीं है, जैसे ईसाइयों में प्रोटेस्टेन्ट वैसे ही हिन्दुओ मे आर्य्य। इनका विश्वास है कि सारे ससार के धर्मों का आधार वेद पर है। सारी सभ्यता आर्य्यावर्त देश ही से निकली है।

मुसलमान धर्म के नेता हजरत मुहम्मद हैं। सन् ६७० ईसवी से सन् १७६२ ई० तक जितने आक्रमण भारतवर्ष पर मुसलमानों के हुए उन में कुछ न कुछ मुसलमान यहाँ आकर बसते गए।

मुसलमानो की संख्या यद्यपि ७ करोड के निकट है, परन्तु इनमें अरब और फारिस के वंशज ४ प्रतिशत भी नहीं हैं, इनमें अधिकाश हिन्दुओं की सन्तान हैं जिन्होंने मुसलमानो के समय में हिन्दू-धर्म को छोड़ कर दीन इस्लाम स्वीकार किया था। मुसलमानो के दो फिर्के प्रधान हैं, शिया और सुन्नी। यूरोपियनों के साथ साथ ईसाई धर्म आया।

पार्सी फारिस की वह पुरानी जाति है जिसने मुसलमानों के आक्रमण से तङ्ग आकर अपनी मातृभूमि को धर्मरक्षा के हेतु तज दिया और भारतवर्ष मे आकर पनाह ली। यह जाति अग्नि-पूजक है जन्द और ओस्था नामक धर्म ग्रन्थों क अनुयायी हैं। इनका धर्म प्राचीन आर्य्यधर्म से बहुत मिलता जुलता है। भारतवर्ष के कुछ प्राचीन निवासी जो असभ्य हैं, भूत प्रेत के पूजक हैं।

भारतवर्ष में बहुत सी जातियाँ बसती हैं। बात यह है कि यह देश बड़ा उपयुक्त है, अत समय समय पर अन्य देश के लोग यहाँ आते रहे और पुरानी जातियों को मार भगा कर स्वयम् उनके स्थान पर बसते गए। इसलिये यहाँ बहुत सी जातियाँ बस गई।

प्राचीन जाति जो न मालूम कब से यहाँ रहती थी अब प्राय जङ्गलो और पहाड़ों में कालक्षेप करती है। सथाल बंगाल मे, घक्कड पञ्जाब में, कोल, भील राजस्थान मे, गोंड मध्य भारत में इन प्राचीन जातियों के वंशज हैं जो अब तक भारतवर्ष में निवास करते हैं।

हिन्दू यहाँ अधिकता मे बसे हैं और यहीं के प्रधान निवासी हैं। सारी जनसख्या मे ७० प्रतिशत इनका पड़ता है। यद्यपि इनमे कई शाखाएँ है तथापि इनका रक्त एक ही है। ये सब आर्य्य हैं।

ब्रह्मा के निवासी चीन की जातियों से हैं। ये मगोल हैं।

अङ्गरेज हमारे शासक हैं, इनकी सख्या ७० हजार के निकट है। इनके अतिरिक्त हिन्दू वा मुसलमान अथवा अन्य धर्मावलम्बी बहुतेरे ईसाई हो गए हैं।

अत हिन्दू, मुसलमान और ईसाई तो आर्य्य-जाति और काकेशियन हैं।

ब्रह्मी, आसामी और कुछ पहाडी लोग मगोल हैं। प्राचीन जातियाँ कम हैं, जो हैं वे अनार्य।

भारतवर्ष मे ७० भाषाएँ बोली जाती हैं जिनमें प्राकृत भाषा प्रसिद्ध और प्रधान है। इससे उतर कर द्रविड भाषा है, और सब से कम बोलने वाले 'बरमीज' भाषा के हैं।

प्राकृत-भाषा की सात प्रधान शाखाएं हैं। जिनमें हिन्दी का प्राबल्य है। द्रविड और आर्य्य भाषाओ का सम्बन्ध संस्कृत से है। भारतवर्ष मे प्राय सभी स्थानो में हिन्दी बोली और समझी जाती है। यदि हिन्दुस्थान मे कोई सर्वव्यापी भाषा हो सकती है तो वह हिन्दी है।

—

भारतवर्ष की भाषाओ की सूची

सख्या	भाषा का नाम	कहाँ बोली जाती है	बोलने वालों की सख्या	किस लिपि में लिखी जाती है
१	हिन्दी	बिहार, सयुक्तप्रान्त, पञ्जाब का पूर्वी भाग, मध्य प्रदेश और राजपूताना	१०,५४,६८,६१७	सस्कृत-वर्ण माला
२	बगला	बगाल	४,३७,१३,८०५	,,
३	महाराष्ट्री	महाराष्ट्र देश	१,६०,१५,०३५	,,
४	गुजराती	गुजरात	१,२०६५,३०३	,,
५	पजाबी	पञ्जाब	१,६२,००,६१०	,,
६	उडिया	उडीसा	६१,६४ ५१५	,,
७	अन्य जैसे नेपाली आसामी सिन्धी आदि	नेपाल, भूटान काश्मीर कुमायू आदि	५,३४,१३,०६०	,,
	प्राकृतिक भाषा का योग		२६,२०,६५,५८५	बाए से दाहिने ओर की लिपि
८	तेलगू	मद्रास के दक्षिण में	२,३४,१५,७०६	
६	तामील	,, उत्तर में	१,१०,१४०,३५	
१०	मक्री और पूर्वी आसाम	अन्ना व अडमन द्वीपों में	१,३६,१५,२१७	
११	गड बड		कुछ लाख	

हिन्दू यहाँ अधिकता मे बसे हैं और यहीं के प्रधान निवासी हैं। सारी जनसंख्या में ७० प्रतिशत इनका पड़ता है। यद्यपि इनमे कई शाखाएँ हैं तथापि इनका रक्त एक ही है। ये सब आर्य्य हैं।

ब्रह्मा के निवासी चीन की जातियों से हैं। ये मगोल हैं।

अङ्ग्रेज हमारे शासक हैं, इनकी सख्या ७० हजार के निकट है। इनके अतिरिक्त हिन्दू वा मुसलमान अथवा अन्य धर्मावलम्बी बहुतेरे ईसाई हो गए हैं।

अत हिन्दू, मुसलमान और ईसाई तो आर्य्य-जाति और काकेशियन हैं।

ब्रह्मी, आसामी और कुछ पहाड़ी लोग मगोल हैं। प्राचीन जातियाँ कम हैं, जो हैं वे अनार्य।

भारतवर्ष मे ५० भाषाएँ बोली जाती हैं जिनमें प्राकृत भाषा प्रसिद्ध और प्रधान है। इसमे उतर कर द्रविड भाषा है, और सब से कम बोलने वाले 'बरमीज' भाषा के हैं।

प्राकृत भाषा की सात प्रधान शाखाए हैं। जिनमें हिन्दी का प्राबल्य है। द्रविड और आर्य्य भाषाओं का सम्बन्ध सस्कृत से है। भारतवर्ष मे प्राय सभी स्थानों में हिन्दी बोली और समझी जाती है। यदि हिन्दुस्थान मे कोई सर्वव्यापी भाषा हो सकती है तो वह हिन्दी है।

भारतवर्ष की भाषाओं की सूची

संख्या	भाषा का नाम	कहाँ बोली जाती है	बोलने वालों की संख्या	किस लिपि में लिखी जाती है
१	हिन्दी	बिहार, संयुक्तप्रान्त, पञ्जाब का पूर्वी भाग, मध्य प्रदेश और राजपूताना	१०,५४,६८,६१७	संस्कृत-वर्ण माला
२	बंगला	बंगाल	४,३७,१२,८०५	,,
३	महाराष्ट्री	महाराष्ट्र देश	१,६०,१५,०३५	,,
४	गुजराती	गुजरात	१,२०६५,३०३	,,
५	पंजाबी	पञ्जाब	१,६२,००,६१०	,,
६	उड़िया	उड़ीसा	६१,६४ ५१५	,,
७	अन्य जैसे नैपाली आसामी सिन्धी आदि	नैपाल, भूटान काश्मीर कुमायूं आदि	५,३४,१३,०६०	,,
	प्राकृतिक भाषा का योग		२६,२०,६५,५८५	बाएं से दाहिन ओर की लिपि
८	तैलगू	मद्रास के दक्षिण में	२,३४,१५,७०६	
९	तामील	,, उत्तर में	१,१०,१४०,३५	
१०	ब्रह्मी और पूर्वी आसाम	ब्रह्मा व अंडमन द्वीपों में	१,३६,१५,२१७	
११	गड बड		कुछ लाख	

द्रविड़ भाषा की चार शाखाएं हैं—तामिल, तेलगू, कनारी और मलायालम। हिन्दी-भाषा मे भी कई अन्तर्भेद हैं, उनमें से बिहारी, अवधी, व्रज, राजस्थानी और नागपुरी आदि मुख्य हैं। महाराष्ट्र और हिन्दी भाषा की लिपि एक ही देवनागरी लिपि है। बङ्गला गुजराती और पञ्जाबी लिपियाँ भी देवनागरी के विकृत रूप हैं। द्रविड़ भाषाओं का व्याकरण भी संस्कृत की परिपाटी पर है और इन भाषाओं के पारिभाषिक शब्द शुद्ध संस्कृत के हैं। इस प्रकार सारे भारतवर्ष की भाषाओं का उत्पत्ति-स्थान संस्कृत है।

मुसलमान-सभ्यता के साथ ही साथ उनकी भाषा और लिपि का भी प्रभाव भारतवर्ष की भाषाओं पर पड़ता गया। उनमें बहुत से शब्द अर्बी और फार्सी के घुस गए हैं। शाहजहाँ के समय में इसी कारण एक नई भाषा की उत्पत्ति हुई जिसका नाम उर्दू पड़ा। योजना हिन्दी के परन्तु पारिभाषिक-शब्द संस्कृत मे न लेकर अर्बी और फार्सी से लिये जाते हैं। फार्सी और संस्कृत भाषाएँ एक ही जड़ से निकली हैं अत इनमें बहुत सादृश्य हैं। पढ़े लिखे मुसलमान अपनी भाषा उर्दू बताते हैं, यद्यपि उनके धर्मग्रन्थ अर्बी और फार्सी मे ही हैं।

वास्तव में उर्दू कोई ऐसी स्वतन्त्र भाषा नहीं है जो भारतवर्ष के किसी स्थान में बोली जाती हो, परन्तु यह हिन्दी-भाषा की खड़ी बोली का ऐसा रूपान्तर है जिसमे अर्बी और फार्सी के शब्द अधिक हैं। दिल्ली, लखनऊ और मेरठ के कुछ प्रतिष्ठित मुसलमान-घराने ऐसे हैं जो शुद्ध-उर्दू बोलते हैं, नहीं तो सारे हिन्दुस्तान के मुसलमान जिस स्थान पर हैं उसी स्थान की भाषा का प्रयोग करते हैं। अत हम यह कह सकते हैं कि हिन्दुस्तान की प्रधान भाषा हिन्दी है और लिपि देवनागरी। देश हितैषियो

को—चाहे वे हिन्दू हों अथवा मुसलमान—राष्ट्र भाषा बनाने के लिये हिन्दी के अतिरिक्त अन्य किसी भी भाषा पर दृष्टि न डालना चाहिये, क्योंकि और किसी स्थान पर उन्हें सफलता न होगी। मेरे इस कथन का यह तात्पर्य नहीं कि अन्य भाषायें पढ़ी ही न जायें अथवा उनकी उन्नति ही न की जाय। अन्य भाषाओं को अवश्य पढ़ना चाहिये और उनमें जो रत्न पड़े हैं उनका संग्रह श्लाघनीय है।

भारतवर्ष की जनसंख्या में २,९६,४३,८४५ लोग तो शहरों में रहते हैं और शेष देहात में। इस देश में कुल २१४८ नगर और ७,२८,६०५ ग्राम हैं। कुल लोकसंख्या में से १ करोड ४८ लाख ब्राह्मण हैं, परन्तु कितने खेद का विषय है कि हम अपने ५,३२,००,००० भाइयों को अस्पृश्य कहते हैं।

सारे संसार में जितनी जनसंख्या है उसका पाँचवाँ भाग केवल भारतवर्ष में बसता है।

५–शासनप्रणाली, शिक्षा और सभ्यता

सन् १८५७ के गदर के बाद पार्लियामेंट की सम्मति से इङ्गलैंड की महारानी विक्टोरिया ने कम्पनी से राज्य ले लिया और सन् १८५८ ई० के १ नवम्बर को घोषणा पत्र द्वारा भारतवासियों को अभय के साथ ही अपनी अन्य प्रजा के समान अधिकार देने की प्रतिज्ञा की। ईस्ट इण्डिया कम्पनी को अन्तिम अधिकार पत्र देते समय ही सन् १८५४ ई० में कह दिया गया था कि पार्लियामेंट जब चाहेगी तब कम्पनी से भारत का राज्य ले लेगी इसलिये "कोर्ट आफडाइरेक्टर्स" (Court of Directors) और 'बोर्ड आफ कंट्रोल" (Bo्ard of Control) उठा दिये गये और इनके स्थान पर भारत सचिव (Secretary of State for India)

नहीं हैं। मनुष्य का सिर ही जिस प्रकार उसका शरीर नहीं है, उसी प्रकार बड़े लाट भी भारत-सरकार नहीं हैं। भारत सरकार का अर्थ है 'गवर्नर जेनरल इन कौंसिल" (Governor-General-in Council)। गवर्नर-जेनरल की तीन कौंसिलें हैं, एक शासनकारिणीसभा' (Executive) दूसरी व्यवस्थापिकासभा (Legislative) तथा धनिक सभा, (Council of state) परन्तु भारत सरकार में केवल 'शासनकारिणीसभा' का समावेश है, व्यवस्थापिका का नहीं।

गवर्नर जेनरल को 'वाइसराय' भी कहते हैं, अर्थात् जब वह पार्लियामेंट की आज्ञाओं का पालन करता या करवाता है अथवा भारतवर्ष पर शासन करता है तो तब वह 'गवर्नर जेनरल' है, परन्तु जिस समय वह भारत-सम्राट का प्रतिनिधि होकर कोई महत्व का कार्य्य सम्पादन करता है तो 'वाइसराय' कहलाता है। जैसे देशी रजवाड़ो में जाना, सभा या दर्बार करना, सम्राट के नाम पर घोषणा-पत्रादि निकालना, ये सब वाइसराय के कार्य्य हैं।

'शासन कारिणी' सभा के ७ मेम्बर है। इस सभा का कार्य्य ९ विभागों में बटा हुआ है। प्रत्येक विभाग एक एक सेक्रटरी के अधीन है। समस्त भारत के सैनिक बल के प्रधान सेनापति (Commander in chief) हैं। रेलो का डिपार्टमेंट एक प्रेसीडेंट के अधीन है। रुपये पैसे की जाँच के प्रधान अफसर को कन्ट्रोलरजेनरल कहते हैं। बाहिरी राज्य से सम्बन्ध रखने वाली बातों की देख रेख गवर्नर जेनरल स्वय करते हैं।

शासन कारिणी सभा के नवो विभागों के नाम और कार्य्य यह हैं—

(१) स्वदेश (Home) (२) विदेशी राज्य (Foreign) (३) अर्थ (Finance) (४) व्यवस्था (Legislative) (५) राजस्व और कृषि (Revenue and Agriculture) (६) आमपाशी व सरकारी इमारतें (Public Works) (७) वाणिज्य और शिल्प (Commerce and Industry) (८) सेना (Army) और (९) शिक्षा (Education) ।

यद्यपि भारत का शासन चक्र स्वतन्त्र रूप में अङ्गरेजों द्वारा चलता है, परन्तु सन् १९०९ ई० और सन् १९१९ ई० की सुधार स्कीम ने इसमें कुछ भारत सन्तानों को भी भाग मिल गया है। अब इन सातों मेम्बरों में आज तीन हिन्दुस्तानी भी हैं। इसी प्रकार तभी से भारत वासियों की कांसिल में भी दो हिन्दुस्तानी मेम्बर रहा करते हैं, पर अब यह सख्या ३ हो गई है। व्यवस्थापिका अर्थात् भारतवर्ष के लिये कानून बनाने वाली जो दो सभायें हैं उनमें व्यवस्थापिका सभा मे १४५ सदस्यों में से १०४ प्रजा द्वारा निर्वाचित होते हैं और धनिक सभा (Council of State) म ५६ सदस्य हैं जिनमें ३३ प्रजा द्वारा निर्वाचित होते हैं। इसी प्रकार प्रत्येक गवर्नर के यहाँ दो सभाए हैं । व्यवस्थापिका सभा के प्रत्येक प्रान्त मे प्रान्त सम्बन्धी कानून बनाने के अधिकार प्राप्त हैं। इससे मानो बृटिश गवर्नमेंट ने भारतवासियों को अपने ऊपर शासन करने के लिए, शासन-भवन निर्माणार्थ केवल एक पत्थर रखने की आज्ञा दे दी है। यह बड़े शुभ लक्षण हैं।

अगले पृष्ठ पर हम एक तालिका दिये देते हैं जिससे प्रत्येक विषय का ज्ञान हो जायगा।

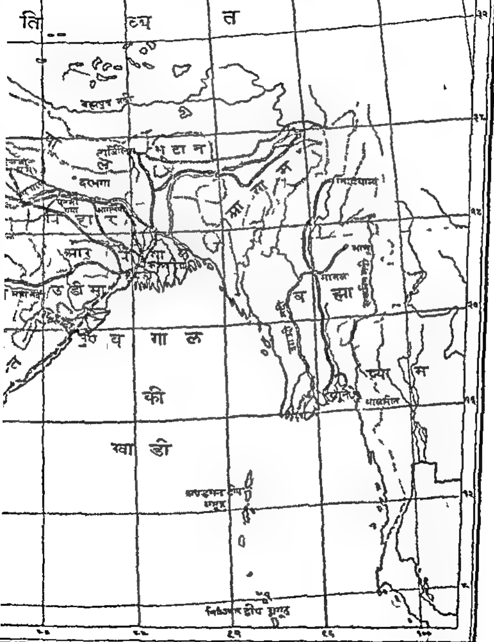
(अ) अङ्गरेजी भारत

संख्या	प्रदेश	ज़िला	क्षेत्रफल वर्ग मील में	सन् १९२१ की जन-संख्या	प्रधान शासक	सभाएँ	अन्य विषय
१	बङ्गाल	२८	७८,४१२	४,६६,९३,१७७	गवर्नर	दोनों सभाएँ हैं	
२	बम्बई	३२	१,२३,०६४	१,९३,३८ ५८६	"	"	
३	मद्रास	२४	१,४१,७२६	४,२३,२२,२७०	"	"	भवन भी मिला है
४	बिहार और उड़ीसा	२१	८३,२०५	३,३९,९८,७७८	"		
५	संयुक्त-प्रान्त	४८	१,०७,१६४	४,५५,९०,९४६	"	"	आगरा और अवध के प्रान्त
६	पञ्जाब	२९	९७,२०९	२,०६,७८,३९३	"		
७	ब्रह्मा	४१	२,३६ ७३८	१,३२,०५,५६४	"	"	
८	मध्यप्रदेश और बरार	२२	१,००,३४५	१,३९,०८,५१४	"	"	
९	आसाम	१२	५३,९५९	७५,९८,८६१		"	
१०	सीमा प्रदेश	५	१६,४६६	२२,४७,६९६	चीफ़कमिश्नर	"	
११	ब्रिटिश बलूचिस्तान	६	४५,८०४	४,२१,६७९	राजपूताने के एजंट	×	
१२	अजमेर मेरवाड़	२	२,७११	४,९५,८९९		×	
१३	कुर्ग	१	१५८२	१,६४,४५९	मैसूर के एजंट	+	
१४	एडमान और नीकोबार	१	३,१४३	२६,८३३	चीफ़कमिश्नर		
१५	दिल्ली*	१	५५७	४,८६,७४१	"		अक्टूबर सन् १९१२में पंजाब से पृथक किया गया
योग		२७१					

*दिल्ली प्रान्त का क्षेत्रफल और जन संख्या पंजाब और संयुक्तप्रान्त से पृथक् किया गया है, अतः योग करते समय इसे छोड़ देना चाहिए

(अ) अङ्गरेजी भारत

संख्या	प्रदेश	ज़िला	क्षेत्रफल वर्ग मील में	सन् १९२१ की जन-संख्या	प्रधान शासक	सभाएँ	अन्य विषय
१	बङ्गाल	२८	७८,४१२	४,६६,५३,१७७	गवर्नर	दोनों सभाएँ हैं	
२	बम्बई	३२	१,२३,०६४	१,९३,२८,५८६	„		
३	मद्रास	२४	१,४१,७२६	४,२३,२२,२७०	„	„	अदन भी मिला है
४	बिहार और उड़ीसा	२१	८३,२०५	३,३९,९८,७७८	„	„	
५	संयुक्त-प्रान्त	४८	१,०७,१६४	४,५५,९०,९४६	„	„	आगरा और अवध के प्रान्त
६	पञ्जाब	२९	९७,२०९	२,०६,७८,३९३	„		
७	ब्रह्मा	४१	२,३६ ७३८	१,३२,०५,५६४	„	„	
८	मध्यप्रदेश और बरार	२२	१,००,३४५	१,३९,०८,५१४	„	„	
९	आसाम	१२	५३,९५९	७५,९८,८६१		„	
१०	सीमा प्रदेश	५	१६,४६६	२२,४७,६९६	चीफ़कमिश्नर	„	
११	ब्रिटिश बलूचिस्तान	६	४५,८०४	४,२१,६७९		×	
		२	२,७११	४,९५,८९९	राजपूताने के एजंट	×	


भारतवर्ष-रेलें और मुख्य नगर
भूटान
दरभंगा
बिहार
उड़ीसा
आसाम
बंगाल
की
खाड़ी
ब्रह्मा
स्याम
अण्डमन द्वीप समूह
निकोबार द्वीप समूह

ध्यान दिया है और आनन्द का विषय है कि प्रयाग म्युनिसिपल बोर्ड ने लड़कियों की अनिवार्य शिक्षा करना तय किया है।

सन् १९११ ई० में दिल्ली के दरबार के अवसर पर श्रीमान् सम्राट जार्ज पंचम ने शिक्षा-प्रचार के लिये ५० लाख रुपये अधिक प्रतिवर्ष व्यय करने की आज्ञा विज्ञापित की थी। इस से कई सहस्र नए स्कूलों की नींव पड़ी है। इसके अतिरिक्त सरकार भी इस विभाग में और अधिक व्यय करना चाहती है। आज कल लगभग २४६,००० स्कूल और कालिज हैं जिन में एक करोड़ ११ लाख के निकट विद्यार्थी विद्याध्ययन कर रहे हैं।

तालिका से प्रत्यक्ष विदित होता है कि प्रान्तिक—गवर्नमेंट के अधिकार में कितना कार्य है। प्रत्येक प्रान्त में कई कमिश्नरियाँ हैं और प्रति कमिश्नरी में कई जिले हैं। कमिश्नरी के प्रधान-शासक को कमिश्नर और जिले के हाकिम को किसी प्रान्त में कलेक्टर और किसी में डिप्टी-कमिश्नर कहते हैं। इनके आधीन कई हाकिम होते हैं।

जब से भारतवर्ष बृटिश के अधिकार में आया है तब से यहाँ के निवासियों को बड़े लाभ हुए हैं। आपस की मारकाट और लूट खसोट मिट गई, ठगों और धोखा देने की व्याधि जाती रही। बली अब निर्बलों पर अत्याचार और बलात्कार नहीं कर सकते। शिक्षा का द्वार सब के लिये समान रूप से खुला है, चमार और भंगी भी पढ़कर उत्तम उत्तम पदों पर सुशोभित हो सकता है। नहरों के द्वारा कृषि में विशेष उन्नति हुई है। रेलें, पुल, सड़कें, तार, डाकघर, अस्पताल और स्कूल सब के लाभ के लिये खुल गये हैं। अध्यवसाय, शिल्प और वाणिज्य का क्षेत्र विस्तीर्ण हो गया है। व्यापार नित्य प्रति बढ़ता ही जा रहा है।

प्रबन्ध के लिये पुलीस और शत्रुओ से रक्षा के लिये सेना सदैव प्रस्तुत रहती है। लोगो के स्वत्व और न्यायान्याय विलग करने के लिये अदालतें स्थापित हैं। यदि नीचे की अदालतो का फैसला न्याय सगत नहीं है, तो उसके ऊपर के न्यायालय मे प्रार्थना पत्र देकर न्याय कराया जा सकता है। जिले के हाकिमो के फैसलो की अपील जजो मे, और जज के फैसले की अपील हाईकोर्ट या चीफ कोर्ट मे की जाती है। यदि यहां से भी जी न माने तो इङ्गलेंड के प्रिवीकौंसिल मे भी अपील हो सकती है। प्रिवीकौंसिल के फैसले को सम्राट भी प्रसन्नचित्त हो स्वीकार करते हैं।

नई सभ्यता और अंग्रेजी शिक्षा का प्रभाव भारतवासियो पर बहुत पड़ा है, जिससे अधिकांश मे लाभ हुआ है।

बुरी रस्में जैसे स्त्रियो का सती होना, सब को समान दृष्टि से न देखना, निरर्थक की छूआछूत, समुद्र-यात्रा निषेध अस्पृश्य जातियो से घृणा और अन्य हानिकारक बालविवाह और बहु विवाहादि की प्रथा धीरे धीरे कम होती जा रही है। लोगों में स्वाधीन विचार और जाति सेवा की लालसा नित्य प्रति बलवती हो रही है। सकीर्ण विचारो के कूप से अब लोग निकल निकल कर गहन समुद्र और महासागर मे तैरने की कल्पना कर रहे हैं।

परन्तु जहां अन्य सभ्यता के अनुकरण से लाभ है वहां अन्ध विश्वास अथवा निष्प्रयोजन नकल से हानियां भी हैं। यह हम स्वीकार करते हैं कि पश्चिमी सभ्यता की नदी बह रही है, सभ्यता के इन्द्रदेव वारिवर्षण भी कर रहे हैं, परन्तु इस

नदी और जल-स्रोत के जलपान से वही वृक्ष हरा भरा हो सकता है जिसकी जड़ें पुष्ट हैं, जो नई सभ्यता के कटान से दूर है—नहीं तो जिस भाँति नदी तट के वृक्ष की आयु का ठिकाना नहीं और उसके अस्तित्व का भरोसा नहीं—उसी प्रकार नई सभ्यता के प्रवाह में पूर्वापर विना विचारे जो लोग बहे जा रहे हैं उनका भी ठिकाना न होगा। हम स्वीकार करते हैं कि वारि-वर्षण से लता वृक्ष धौत हो जाते हैं और उनमें नई कोंपलें निकल आती हैं, परन्तु सुन लो, वर्षा में शिला वृष्टि और वज्र-पात भी हुआ करते हैं। कभी जल-पात से हानि है और कभी जड़मूल से उच्छेद का भय। हमारे इस लिखने का अर्थ यह नहीं है कि आपको पाश्चात्य-सभ्यता से भयभीत करा दें। हमारा अभिप्राय केवल कोरी नकल से बचाने का है। प्रत्येक विषय में हमको युरोपियनों की नकल नहीं करना चाहिये। कोई सिविलियन ५००—१,००० रुपये से कम वेतन नहीं पाता। बड़े लाट का वार्षिक वेतन २,५०,८०० रुपये है। गवर्नर १,२०,०२० रुपये सालाना पाते हैं, लेफटीनेन्ट गवर्नर* को ८६६६ रुपये १० आने और ८ पाई मासिक मिलते हैं। इण्डिया गवर्नमेन्ट के मेम्बरों को मासिक ६,६६६ रुपये १० आने और ८ पाई और सेक्रेटरियों को ४३३३ रुपये ५ आना और ४ पाई मासिक। हाईकोर्ट के जजों को ४,००० रुपये मासिक या अधिक। अंग्रेजों का देश शीत प्रधान है। उनके लिये जिन वस्त्रों की और जिस काट छाँट की आवश्यकता है वे हमारे लिये सुखप्रद सदैव नहीं हो सकते। हमको चाहिये कि जान बूझ कर सोच समझ कर नकल करें। नकल बुरी नहीं परन्तु वह हसी किस काम की-जिसमे घर जले। अब हमारे देशी भाई भी उच्च पदों पर [illegible] रहे हैं, यह बड़े हर्ष का विषय है।

६—रेल, तार नहर और हवाईजहाज़

सन् १८५४ ई० में ईस्ट इण्डिया-कम्पनी ने पहले पहल भारत-वर्ष में रेलवे लाइन का श्रीगणेशायनम किया। इसकी प्रधान लाइन हावड़े (कलकत्ता) से कालका तक जारी है। और बिहार की कोयले की खानो के पास से गुजर कर उत्तर भारत के मुख्य नगरो को मिलाती है। बम्बई से ग्रेट इण्डियन पेनिनशुला की एक शाखा जबलपुर में ईस्टइन्डियन रेलवे से मिल गई है इस शाखा द्वारा बम्बई से जबलपुर, छिउकी(इलाहाबाद के निकट एक स्टेशन) मुगलसराय, गया, आसनसोल होते हुए कलकत्ता शीघ्र पहुँच सकते हैं। और दूसरी राजपूताना अजमेर व आगरा से होती हुई दिल्ली तक पहुँच गई है। दिल्ली में नार्थवेस्टर्न-रेलवे से मिल जाती है। अम्बाले से इसकी शाखा लाहौर और पेशावर का क्रम मिला देती है। पेशावर से नार्थवेस्टन की एक शाखा होती हुई करांची तक चली गई है। और दूसरी शाखा रोहरी होती हुई क्वेटा और चमन से मिला देती है यह शाखा फौज के बड़े काम की है।

बम्बई से एक रेलवे लाइन बिजारी होती हुई मद्रास को चली गई है। मद्रास से ईस्टकोस्ट रेलवे की एक शाखा समुद्र के किनारे किनारे होती हुई कलकत्ते तक पहुँच जाती है। इसी लाइन पर बिजगापट्टम, कटक, आदि बसे हैं। मद्रास से दूसरी शाखा कन्या-कुमारी अन्तरीप तक चली गई है जहाँ से सेतुबन्ध पर एक रेलवे लाइन लङ्का द्वारा मिल जाती है। कलकत्ते से एक रेलवे लाइन रायपुर होती हुई ग्रेट-इण्डियन पेनिनशुला की शाखा से मिल जाती है जो नागपुर होकर बम्बई को आती है। छोटी

लाइन की एक शाखा कटनी से इन्दौर और मध्य भारत की रियासतों में होती हुई मथुरा तक चली जाती है। कानपुर से कटिहार तक बंगालनार्थ वेस्टर्न रेलवे का दौर दौरा है। जब से ईस्ट इण्डियन रेलवे सरकार के हाथ मे आगई है। पेशावर और मद्रास का रेल द्वारा यात्रा करना अत्यन्त सरल हो गया है। हवड़ा से एक शाखा आसनसोल, गया, मुगलसराय, फैजाबाद, लखनऊ, सहारनपुर, अम्बाला, अमृतसर, लाहौर होती हुई पेशावर जाती है और दूसरी शाखा इलाहाबाद से जबलपुर, इटार्सी, बेजवाडा होती हुई मद्रास जाती है। देहली से मद्रास आने के लिये भी अब सुभीता हो गया है और इटार्सी और बेजवाडा होते हुए अत्यन्त शीघ्र पहुँच सकते हैं।

एक नई रेलवे-लाइन बहुत रुपया खर्च करके खैबर की घाटी में बनाई जा रही है।

यह तो प्रधान रेलवे लाइनें है। इनके द्वारा समस्त भारतवर्ष मे आने जाने का मार्ग अति सुगम हो गया है। तीन दिन के भीतर भीतर जो चाहे जहाँ से मँगा लो। कलकत्ते से केले ४८ घंटे में पेशावर पहुँच सकते हैं। बम्बई की डाक डेढ़ दिन मे प्रयाग और २½ दिन मे कलकत्ते पहुँच जाती है। कश्मीर का एक धर्म परायण हिन्दू ५ दिन में रामेश्वर का दर्शन कर सकता है। कटक का एक ओड़िया ३ दिन मे अटक पर अटक सकता है। तात्पर्य यह कि व्यापार मे आने जाने और चिट्ठी पत्री भेजने में रेलवे द्वारा जो सुविधा आज कल है वह भारतवर्ष मे कभी न थी। आजकल लगभग ४१,००० मील लम्बी रेलवेलाइनें

देखिये कि समुद्र के तल में होकर किस भाँति तार के जाल फैले हैं।

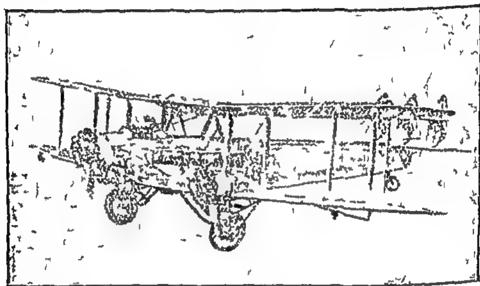
(१) लङ्का से आस्ट्रेलिया तक ३,३४१ मील
(२) बम्बई से अदन तक १,६५० मील
(३) कराची से अदन तक २,४७० मील
(४) कलकत्ता से लङ्का तक १,२३१ मील
(५) कलकत्ते से रंगून तक ६८० मील
(६) रंगून से सिंगापुर तक १,०७० मील
(७) लङ्का से केपटाउन तक ४,३८० मील

इस प्रकार बम्बई से अदन, रूम सागर और जिब्राल्टर होता हुआ लंडन तक ७,२८० मील और लङ्का से केपटाउन होता हुआ सिंगापुर के द्वारा हांगकांग जापान से मिल जाता है। फिर जापान से विक्टोरिया, फ्रान्सिसको और पनामा आदि, अर्थात् लंडन से समस्त संसार मिला हुआ है।

स्थल पर रेलवे लाइन के अतिरिक्त भी सहस्रों मील तार खंभों पर लटकता है। तार समाचार का क्या कहना, एक सिकंड में १,८०,००० मील की खबर लेता है। बम्बई से बैठकर घंटे भर में लंडन को खबर भेज दीजिये। कलकत्ते और पेशावर में केवल मिनटों की दूरी रह गई है। यदि रेलों ने पृथ्वी के मार्ग को संकीर्ण कर दिया है तो यह कहा जा सकता है कि तार ने प्रत्येक स्थान पर अपना गुप्तचर बिठा दिया है।

यही क्यों, आज कल बम्बई, कराची, लाहौर, पेशावर, प्रयाग, मद्रास, कलकत्ते और रंगून में बेतार के खम्भे गड़े हैं। इनके द्वारा तार लगाने का भी झंझट नहीं, हजारों मील के समाचार गुपचुप अपने आप चले आते हैं।

हवाई जहाज द्वारा लन्दन से कराची सात दिन में यात्री और डाक आते जाते हैं और शीघ्र ही भारतवर्ष के मुख्य नगरों में रोज हवाई जहाज उड़ते हुए देख पड़ेंगे।



नदियों का जल नहरों द्वारा देश के कोने कोने मे पहुँचाया जाता है। सीमा प्रान्त में सवाह नामक नदी की, पञ्जाब में भेलम, रावी, सतलज और व्यास की बड़ी नहरें २,६०० मील से अधिक लम्बी हैं और ८०० वर्गमील के क्षेत्र को सींचती हैं। सयुक्त प्रान्त में गङ्गा और यमुना की नहरो ने जङ्गल में मङ्गल कर रक्खा है। गङ्गा की बड़ी नहर १,००० मील लम्बी है और उसकी छोटी शाखाएँ मिलकर ३००० मील से भी अधिक लम्बी होती हैं। आज कल घाघरा नदी मे शारदा नाम की बहुत बड़ी नहर निकाली गई है जिससे कई हज़ार वर्ग मील में सिचाई हो सकेगी उडीसा के उपकूल में बहुत सी नहरें हैं। विहार में सोन-नद से नहरें निकाली गई हैं। मद्रास में तालाब अधिक हैं कुछ समुद्री नहरें

भी हैं। बम्बई में कृष्णा और उसकी सहायक नदियों से कुछ नहरें निकाली गई हैं। सिन्ध में सिन्ध नदी से नहरें निकाली गई हैं। इनके द्वारा सिन्ध में नदी के पानी के फेंकने के लिए बहुत बड़े खर्च से सरकार एक बन्ध बनवा रही है जिसके बन जाने से सूरा सिंध और कुछ रियासतों में सिंचाई का अच्छा प्रबन्ध हो जायेगा। सारे संसार में यहाँ से अधिक नहरें और कहीं नहीं जारी हुई हैं। इन पर लगभग १ अरब १५ करोड़ रुपया से अधिक सरकार ने व्यय किया है।

७—मद्रास

इतिहास—

मद्रास प्रेसीडेंसी, भारतवर्ष के बृटिश प्रदेशों में सबसे पुराना है। सेंट जार्ज दुर्ग जिस भूमि पर बना है वह सन् १६३६ ई० में एक छोटे से सरदार ने अंग्रेजी व्यापारियों के हाथ इसलिये बेचा था कि उसे इनसे लेन देन करने में सबसे अधिक लाभ की आशा थी। सन् १६५३ ई० में यह छोटी सी जमींदारी प्रेसीडेंसी बनाई गई। परन्तु एक शताब्दी के पश्चात् फ्रांसीसियों ने इसे अंग्रेजों से छीन लिया। परन्तु बड़े पराक्रम से अंग्रेजों ने उनसे वापस ले लिया और सन् १७५७ ई० में मछलीपट्टम भी उनसे छीन लिया। हैदरअली का राजदान जब मैसूर के राज्य से च्युत हुआ तो ५ जिले अंग्रेजों की ओर मिले। सन् १८३८ ई० में कर्नाल भी मिलाया। इस प्रकार फ्रांसीसियों के युद्ध, सम्राट दिल्ली की कृपा और हैदरअली के पराजय से मद्रास का प्रदेश इस रूप में परिणत हुआ। इस की जनसंख्या ४,२७,६४ १५१ है।

विस्तार व क्षेत्रफल—

इसका विस्तार दक्षिण भारत में एक किनारे से दूसरे किनारे तक फैला हुआ है और कुमारी अन्तरीप से कुछ दूर पर ऊपर जाकर पूर्व की ओर उड़ीसा तक चला गया है। इसका क्षेत्रफल १,४१,१८६ वर्गमील है, जो जिले समुद्र तट पर गोदावरी और उड़ीसा के मध्य में हैं उनको उत्तरी सरकार कहते हैं।

धरातल—

पूर्वी और पश्चिमी घाट नीलगिरि पर मिल जाते हैं, जिसके दक्षिण ऊँची माल भूमि २५ मील तक पालघाट गैप कहलाती है। खाल के मैदान दोनों ओर समुद्र तक चले गये हैं। इसके दक्षिण में नीलगिरि के बराबर ऊँची पहाड़ियाँ कन्याकुमारी तक फैली हुई हैं। यहाँ के पहाड़ी मैदान ८० मील तक चौड़े हैं। कहीं कहीं इन मैदानो में बन्द बाँधकर वर्षा का जल एकत्रित किया जाता है जिससे साल भर तक खेतो को पानी दिया जाता है। पश्चिमी घाट घने जङ्गलों से भरा हुआ है। पूर्वीघाट में कहीं कहीं जगल पाये जाते हैं।

पूर्वी और पश्चिमी घाट के पहाड़ दोनों ओर दीवारें सी बनाते हैं। पश्चिमी घाट के गली-कोंडा और गली-पोतम नामक शिखर ५०,०० फीट ऊँचे हैं। नीलगिरि ६,००० फीट ऊँचा है। इसकी सब से ऊँची चोटी 'दादा-बेटा' ८,६४० फीट ऊँची है। अनामलय दक्षिण में है। इसकी सब से ऊँची चोटी ८,८४० फीट ऊँची है जिसे दक्षिण भारत में प्रधान शिखर माना करते हैं। इनके अतिरिक्त, क्लेरिनमलय, शिवरायमलय, तथामलय, पचायमलय की पहाड़ियाँ भी हैं।

नदियाँ—

मद्रास प्रान्त की सब नदियाँ गोदावरी, कृष्णा और कावेरी की सहायक हैं। ये सब पश्चिमी घाट के पर्वतों से निकलती और पूर्वी घाट को स्थान स्थान पर काटती हुई पूर्व की ओर समुद्र में गिरती हैं जिसका विवरण पहले हो चुका है। इनके अतिरिक्त पनार मैसूर के पूर्व नन्दीद्रुग नामक पहाड़ी से निकल कर १२० मील उत्तर को फिर २६० मील दक्षिण की ओर बहती हुई बङ्ग-सागर में गिरती है।

पालार, पनियार और विलार भी प्रसिद्ध नदियाँ हैं।

कावेरी के दक्षिण में 'विगे' सब से बड़ी नदी है और यह 'पाक' के खाल में गिरती है।

जलवायु—

भारतवर्ष के अन्य प्रान्तों की अपेक्षा मद्रास का जल-वायु कुछ उष्ण है। परन्तु यहाँ गर्मियों में न अधिक गर्मी होती है और न जाड़ों में अधिक सरदी, क्योंकि समुद्र पास है। पूर्वी किनारे की अपेक्षा पश्चिमी किनारे पर वर्षा अधिक होती है। दक्षिण के ऊँचे मैदानों में दोनों मौसमी वायु जलवर्षा करती हैं, परन्तु जल अधिक नहीं गिरता। नीलगिरि और उटकमंड का जल वायु बड़ा उत्तम है। लोग यहाँ स्वास्थ्य लाभ करने जाया करते हैं।

उपज—

नदियों के डेल्टों में धान की उपज अधिकता से होती है। ज्वार, बाजरा और मड़ुआ अधिक बोए जाते हैं, जव, गेहूँ यहाँ कुछ भी नहीं होता। तिल और नील की भी पैदावार अच्छी है।

ऊँची भूमि मे रूई की खेती की जाती है। पलनी, शिवराई और नीलगिरि पर चाय और क़हवा बोया जाता है। नीलगिरि पर सिनकोने की कृषि खूब होती है। गोदावरी, कोयम्बटूर और मदुरा में तम्बाकू पैदा होती है। यहाँ सुपारी, नारियल और इमली के वृक्ष बहुत हैं। मालाबार और ट्रावनकोर मे कालीमिर्च और इलायची अधिक होती है। जङ्गलो मे सागौन, शीशम, बाँस, आवनूस और चन्दन के वृक्ष अधिक पाये जाते हैं। रबर भी अब ट्रावनकोर में बहुतायत से लगाये जाते हैं।

विनाऊ की खान से सोना और सेलम से लोहा निकलता है। मदूरा, कुडापा, कर्नौल और नीलोर में हीरा, चाँदी, सीसा और ताँबे की और कनानूर के निकट कोयले की खानें है।

दस्तकारी और व्यवसाय—

मछलीपट्टम, विजगापट्टम, कनानुर और आर्नी मे कपडे अच्छे बुने जाते हैं। तंजपुर मे चाँदी और ताँबे पर नक्काशी का काम किया जाता है। इस प्रान्त मे चमड़ा कमाने का काम भी अच्छा और बहुतायत से होता है। विजगापट्टम मे सींग और हाथीदाँत की वस्तुएँ अच्छी बनती हैं। नारियल के फलों के रेशो से रस्सी और अनान्य वस्तुएँ बनाई जाती हैं। समुद्र तट पर बहुत से लोग मछलियाँ पकड कर अपना पेट पालते है।

मनुष्य उनके धर्म और भाषा—

यहाँ के निवासियों मे हिन्दू अधिक है जो शैव मत के अनुयायी हैं। अन्य प्रान्तों की अपेक्षा यहाँ देशी ईसाई भी अधिक हैं।

प्राचीन जातियों के वंशज पहाड़ियों में रहते हैं। इस प्रान्त में द्रविड़भाषा बोली जाती है जिसकी पांच शाखायें हो सकती हैं। (१) तामिल—नीलोर के दक्षिण और कर्नाटक में (२) तेलगू—उत्तर में, (३) कनारी—मैसूर के उत्तरी जिलों में, (४) मलायालम—दक्षिण पश्चिमी सीमा पर और (५) टोली—दक्षिणी भाग में बोली जाती है।

राजकीय विभाग—

इस प्रान्त में २२ जिले हैं, जिनके कलेक्टरों को कमिश्नरी के स्वत्व भी मिले हुए हैं। ये जिले अन्य प्रान्त की कमिश्नरियों से भी बड़े हैं।

ज़िलों के नाम यह हैं—

गंजाम, विज़गापट्टम, गोदावरी, कृष्णा, नीलौर, कड़ापा, अनन्तपुर, बिलारी, कर्नौल, मद्रास, चंगलपट, उत्तरी अर्काट, दक्षिणी अर्काट तंजौर, त्रिचनापल्ली, मदुरा, टनावली, कोयमबटूर, नीलगिरि, सेलम, दक्षिणी कनाड़ा और मलाबार।

प्रसिद्ध नगर—

गंजाम जिले की कचहरियाँ ब्रह्मपुर में हैं। इसी जिले के अन्तर्गत कलिंगपट्टन प्राचीन कलिंगदेश की राजधानी था।

विजगापट्टम का वास्तविक नाम विशाखपट्टम है।

विजयानगरम (विद्यानगरम्) फौजी स्थान है।

त्रिमलीपट्टम (बद्धमनापट्टम) समुद्र के किनारे है और नित्यप्रति अधिक उन्नतशाली हो रहा है।

राजामुन्द्री—गोदावरी नदी पर एक नगर है।

और मद्रास का प्रदेश, पश्चिम में अरबसागर और बिलोचिस्तान हैं।

धरातल—

यह प्रान्त एक लम्बी पट्टी की भांति समुद्र उपकूल के किनारे किनारे १,००० मील से भी अधिक लम्बा चला गया है, परन्तु किसी स्थान पर यह ३०० मील से अधिक चौड़ा नहीं है। इसका किनारा मैसूर से लेकर बिलोचिस्तान तक फैला हुआ है। इसमें बम्बई और कराची दो प्रसिद्ध बन्दर स्थान हैं। खम्भात और कच्छ दो खाड़ियाँ हैं, इनके बीच में काठियावाड़ का प्रायद्वीप है जो समुद्र में अधिक दूर तक बढ़ा हुआ मालूम होता है। समुद्र उपकूल और पश्चिमी घाट के बीच में किनकान का मैदान है। इस प्रदेश के उत्तरी भाग को सिन्ध और कच्छ खाड़ी के निकट वाले भूभाग को गुजरात कहते हैं।

पश्चिमी घाट के पहाड़ ताप्ती नदी से लेकर उपकूल के समानान्तर दक्षिण तक चले गये हैं। सतपुरा और विन्ध्यपर्वत का भी कुछ भाग इसमें आगया है। खेरतार की श्रेणियाँ बम्बई को बिलोचिस्तान से पृथक् करती हैं।

नदियाँ—

इस प्रान्त में सिन्धुनद पञ्जाब से आकर प्रविष्ट होता है और समुद्र में गिरते गिरते इसकी कई शाखाएँ हो जाती हैं। मध्यभाग को साबरमती, माही, नर्म्मदा, ताप्ती और दक्षिणी भाग को गोदावरी और कृष्णा सींचती हैं। पश्चिमी घाट की ओर

कोई प्रसिद्ध नदी नहीं है, क्योंकि यह पर्वत समुद्र के अति निकट है।

जलवायु—

बम्बई प्रेसीडेंसी मे विभिन्न प्रकार का जल वायु है। सिन्ध में वर्षा कम होती है, इसलिए यहां गर्मी और सर्दी दोनों कड़ाके की पड़ती हैं। दक्षिणी भाग मे वर्षा कम होने और समुद्र की समीपता के कारण वहां का जल वायु रुक्ष है, परन्तु गर्मी अधिक पड़ती है। पश्चिमी घाट के निकट वर्षा अधिक होती है इस लिये वहां का जल वायु साधारण है।

उपज—

सिन्ध अधिकांश में बालुकामयी और ऊसर है, यहां कुछ जव और गेहूँ पैदा हो जाता है, परन्तु यहां भी जाड़े के दिनों में जो कुछ कृषि होती है वह सब सिन्धुनद की नहर का उपकार है। बम्बई के मध्य मे रुई, जुवार और बाजरा अधिकता से होता है। जहां वर्षा अधिक होती है वहां चावल भी बोया जाता है। पश्चिमी घाट पर नारियल के वृक्ष अधिक हैं।

व्यापार, धर्म, जनसंख्या और भाषा—

कराची और बम्बई के बन्दरों द्वारा अन्य देशों के साथ व्यापार अधिक होता है। रुई, नाज, चमड़ा, तेलहन, गेहूँ और सूती कपड़ा तो बाहर जाता है और बुना हुआ विदेशी कपड़ा, लोहे की कलें, मदिरा, धातु की वस्तुयें विलायत और अन्यान्य पश्चिमी देशों से यहां अधिक आती हैं। यहां के निवासियों में अधिकांश हिन्दू हैं। प्राय ५ हिन्दू पीछे एक मुसलमान की संख्या है। ९ हजार के निकट पार्सी भी हैं, जिनमें से पचास हजार तो खास बम्बई नगर ही मे रहते हैं, ये लोग बड़े बुद्धिमान और उद्योग शील हैं। यही

लोग व्यापारी और महाजन हैं। सिन्ध की जन-संख्या कम है। पहाड़ो में भील और अन्य जङ्गली जातियाँ पाई जाती हैं। यहाँ की भाषा बड़ी खिचड़ी है। सिन्ध मे सिन्धी, गुजरात में गुजराती और शेष भाग में महाराष्ट्र भाषा बोली जाती है।

राजकीय विभाग–

इस प्रेसीडेंसी मे ४ कमिश्नरियाँ और २४ जिले हैं।

सिन्ध में—कराची, शिकारपुर, अपरसिन्ध का फ्रांटियर, और थर-परकर।

उत्तरी भाग मे—अहमदाबाद, खेड़ा, पञ्चमुहाल, भरौंच सूरत और थाना।

मध्यभाग में–नासिक, पूर्वी खानदेश, पश्चिमी खानदेश, अहमदनगर,पूना, शोलापुर और सतारा।

दक्षिणीभाग में—बेलगाँव, धारावार, बीजापुर, कनारा, रत्नगिरी और कुलाबा।

इनके अतिरिक्त बम्बई नगर भी एक जिले के समान माना जाता है। अदन और लालसागर का पेरिम नामक स्थान भी किसी जिले से कम नहीं है।

प्रसिद्ध नगर—

बम्बई—पश्चिमी किनारे पर खम्भात की खाड़ी के नीचे बसा है और अपने नाम के प्रान्त की राजधानी है। व्यापार में यह कलकत्ते मे दूसरे नम्बर पर है। यह नगर एक द्वीप में बसा हुआ हैं। यहाँ का बन्दर स्थान बड़ा सुन्दर है। सारे भारतवर्ष मे जितनी रुई काती जाती है उसका ½ भाग बम्बई नगर ही में कतता है। यहाँ कपड़ा बुनने के बड़े कारखाने हैं, जिनमें कलों से काम लिया

जाता है। नगर की इमारतें बडी ऊँची और रमणीक हैं। विक्टोरिया रेलवे स्टेशन, सरकारी कचहरियाँ, सिनेटहाल, हाईकोर्ट और राजबाई की मीनार देखने योग्य हैं। बन्दर पर जहाजो की छवि निरखने योग्य है। इस प्रान्त के प्रधान शासक गवर्नर महोदय भी यहाँ ही रहते हैं। यहाँ एक विश्वविद्यालय भी है। विलायत की डाक पहिले बम्बई ही मे आती है और भारत भर की चिट्ठियाँ जो विलायत जाने वाली होती हैं यहीं से रवाना होती हैं। विलायत के आने जाने वाले लोग भी यहाँ से होकर आते जाते हैं। इन्हीं कारणो से अङ्गरेज बम्बई को 'प्रवेश द्वार' कहते हैं। यह नगर सन् १६६१ ई० मे इङ्गलैंड के बादशाह चार्ल्स को दहेज मे मिला था, क्योंकि उनका विवाह पुर्तगाल की राजकुमारी से हुआ था और पुर्तगालवालो ही का पहिले इस पर अधिकार था।

कराची—सिन्धु नदी के सगम स्थान के निकट है। यह सिन्ध देश में सबसे बड़ा नगर है। कराची का बन्दर भारतवर्ष में पाँचवें नम्बर पर माना जाता है। यहाँ गेहूँ का व्यापार बहुत होता है। यह नगर सिन्धुनद और उसकी सहायक नदियों की उर्वरा भूभाग से मिला हुआ है। क्योंकि पञ्जाब और बिलोचिस्तान से रेलवेलाइन यहाँ तक आई है इस लिये पञ्जाब और बिलोचिस्तान की उपज यहाँ सरलता से आ जाती है, क्रोयडान (लन्दन) से प्रत्येक शुक्रवार को हवाई जहाज डाक या यात्रियों को लेकर आता जाता है।

अहमदाबाद—साबरमती नदी के तट पर बसा है और गुजरात का सब से बड़ा नगर है। मुसलमानो के समय मे यहाँ बड़ी रौनक थी। जन श्रुति है कि "अहमदाबाद की दौलत और रौनक तीन धागो पर लटकती है" अर्थात् रुई रेशम और सोने

लोग व्यापारी और महाजन हैं। सिन्ध की जन-संख्या कम है। पहाड़ों में भील और अन्य जङ्गली जातियाँ पाई जाती हैं। यहाँ की भाषा बड़ी खिचड़ी है। सिन्ध मे सिन्धी, गुजरात में गुजराती और शेष भाग मे महाराष्ट्र भाषा बोली जाती है।

राजकीय विभाग—

इस प्रेसीडेंसी में ४ कमिश्नरियाँ और २४ जिले हैं।

सिन्ध में—कराची, शिकारपुर, अपरसिन्ध का फ्रांटियर, और थर-परकर।

उत्तरी भाग मे—अहमदाबाद, खेड़ा, पञ्चमुहाल, भरौंच सूरत और थाना।

मध्यभाग में—नासिक, पूर्वी खानदेश, पश्चिमी खानदेश, अहमदनगर, पूना, शोलापुर और सतारा।

दक्षिणीभाग में—बेलगाँव, धारावार, बीजापुर, कनारा, रत्नगिरी और कुलावा।

इनके अतिरिक्त बम्बई नगर भी एक जिले के समान माना जाता है। अदन और लालसागर का पेरिम नामक स्थान भी किसी जिले से कम नहीं है।

प्रसिद्ध नगर—

बम्बई—पश्चिमी किनारे पर खम्भात की खाड़ी के नीचे बसा है और अपने नाम के प्रान्त की राजधानी है। व्यापार में यह कलकत्ते से दूसरे नम्बर पर है। यह नगर एक द्वीप मे बसा हुआ है। यहाँ का बन्दर स्थान बड़ा सुन्दर है। सारे भारतवर्ष में जितनी रुई काती जाती है उसका ½ भाग बम्बई नगर ही में कतता है। यहाँ कपड़ा बुनने के बड़े कारखाने हैं, जिनमें कलों से काम लिया

६—वृटिश-विलोचिस्तान

विस्तार व सीमा—

विलोचिस्तान प्रान्त का कुछ देश तो ऐसा है जो 'ग्वालिकलात' के अधीन है और शेप वृटिशराज्यान्तर्गत है। इसी वृटिश आधिपत्यवाले विलोचिस्तान को वृटिश विलोचिस्तान कहते हैं। यद्यपि यह प्रान्त भारतवर्ष के देश में सम्मलित नहीं, तथापि ब्रह्मदेश के भाँति राजकीय विषयों में उसका सम्बन्ध हिन्दुस्तान ही से है।

इस प्रान्त के उत्तर में अफगानिस्तान और पश्चिमोत्तरसीमा प्रान्त पूर्व में पञ्जाब और सिन्ध दक्षिण में विलोचिस्तान और पश्चिम में भी अफगानिस्तान ही है।

धरातल—

इसका बहुत सा भाग पहाड़ी है। सुलेमान पर्वत द्वारा यह पञ्जाब से अलग होता है। यहाँ कोई बड़ी नदी नहीं है। हाँ 'ज़ूब' नामक एक छोटी सी नदी अवश्य है जोकि गोमल में मिल जाती है। यह प्रान्त अति शुष्क है। जाड़े के दिनों में यहाँ कुछ वर्षा भी हो जाती है, परन्तु गर्मियों में विलकुल कम। शरद काल में यहाँ वर्फ पड़ती है और मैदान में उष्णता अधिक होती है।

उपज—

वर्षा की न्यूनता के कारण कृषि कार्य्य यहाँ बहुत ही कम होता है। यहाँ फल और मेवे अधिक होते हैं। जिनमें खजूर अंगूर, बदाम, सेव और सरदा मुख्य है।

के तार पर। सोने का काम यहाँ अधिक होता था। आजकल यहाँ कागज और चमड़े के कारखाने भी हैं।

सूरत—यह ताप्ती नदी के संगम पर बसा है। अंग्रेज जब भारतवर्ष में पहले पहल आये तो यहीं व्यापार की कोठियाँ खोलीं। अब इसकी चहल पहल पहले जैसी नहीं रही। सूरत में कांग्रेस की सूरत भी बिगड़ गई यह किम्वदन्ती भी सन् १६०८ ई० से प्रसिद्ध है।

पूना—बम्बई के दक्षिण-पूर्व में है। महाराष्ट्र पेशवाओं की यह राजधानी था। आज कल भी यहीं के महाराष्ट्र नीतिज्ञ प्रसिद्ध हैं। फौजी छावनी भी यहीं है। ग्रीष्म ऋतु में गवर्नर महोदय का स्थान पूना ही होता है।

भरौंच—नर्मदा के निकट प्राचीन नगर है। यहाँ रुई का व्यापार अधिक होता है।

नासिक—गोदावरी के तट पर हिन्दुओं का तीर्थ स्थान है। इसके आस पास बौद्धों के मन्दिर बहुत हैं।

अहमदनगर —एक ऐतिहासिक नगर है।

सतारा—कभी महाराष्ट्र शासकों की राजधानी था।

महाबलेश्वर—यहाँ का जल-वायु प्रसिद्ध है। यहाँ चेरापूँजी से कुछ कम वृष्टि होती है।

मियानी—हैदराबाद के निकट ऐतिहासिक युद्धक्षेत्र है।

शिकारपुर—दर्रा बोलन के मार्ग पर है।

जेकोबाबाद—सारे भारतवर्ष में सब से गरम स्थान है।

के प्रान्त से पृथक् करके उनमें खैबर, कुर्रम, मालकन्द, लोची, कर्नाल और शीरानी नामक स्थान—जो वृटिश राज्य के अधिकार में पहले ही से थे मिला दिये गये और इसका नाम पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त रक्खा गया।

धरातल अथवा स्थिति—

सुलेमान, हिन्दुकुश और सफेद कोह नामक पर्वत इस प्रान्त को अफगानिस्तान से पृथक् करते हैं। इसमें सिन्धु नामक नदी बहती है जिसमें पश्चिम से आकर काबुल नदी भी मिल जाती है। सिन्धु नदी के बेसिन को छोड़ कर सारे प्रान्त की भूमि पहाड़ी है। सीमा पर होने और पहाड़ी घाटियों को छोड़ कर उत्तर पश्चिम से आने का और कोई मार्ग न होने के कारण इस ओर से होनेवाले आक्रमणों से बचाने के लिये यह देश वृटिश राज्य के लिये बड़ा लाभकारी है।

धर्म व भाषा—

यहां के निवासी अधिकांश में मुसलमान हैं जो पश्तू बोलते हैं। पञ्जाबी और उर्दू भी कुछ समझी जाती है। ये लोग बड़े बहादुर सिपाही हैं और अंगरेजी सेना के अच्छे सिपाही माने जाते हैं। यहां भी पञ्जाब की कुछ फस्लें बोई जा सकती हैं, परन्तु अंगूर, बिहीदाने की पैदावार अच्छी होती है।

राजकीय-विभाग—

यहां दो कमिश्नरियां और ५ जिलें हैं। सूबे का प्रधान शासक चीफ कमिश्नर कहलाता है। इसकी राजधानी पेशावर है।

जन-सख्या—

यहाँ को जन सख्या चार लाख के निकट है जा पश्चिमोत्तर सीमान्त का सातवाँ भाग है।

धर्म्म व राज्य प्रबन्ध—

यहाँ के निवासियों मे अधिकाश मुसलमान हैं। बलोच और बरोही ये दो जाति प्रसिद्ध हैं। इस प्रान्त का प्रधान शासक चीफ कमिश्नर है, वही खाँ—किलात के अधिकृत इलाके को भी देख भाल करता है।

पेसिन, क्वेटा और सीबी यही तीन जिले पृथक् पृथक् इस प्रान्त मे हैं।

प्रसिद्ध नगर—

क्वेटा—इस प्रान्त की राजधानी है। चीफ कमिश्नर यहीं रहते हैं। इस शहर के चारो ओर पहाड़ हैं और उनके मध्य में यह बसा हुआ है। यह स्थान प्रधान सैनिक अड्डा है। बोलन नामक दर्रे से यह २८ मील की दूरी पर है। सिन्ध देश से यह रेलवे-लाइन द्वारा मिला हुआ है। यह लाइन चमन तक, जो कन्धार के पास सीमा पर बसा है, गई है। क्वेटा के मेवे पञ्जाब मे आकर अधिक बिकते हैं।

१०—पश्चिमोत्तर सीमाप्रान्त

इतिहास—

नवम्बर सन् १९०१ ई० में जिला हजारा का कुछ भाग और समस्त पेशावर, कोहाट, बन्नू, डेराइस्माइल खाँ के जिले पञ्जाब

के प्रान्त से पृथक् करके उनमें खैबर, कुर्रम, मालकन्द, लोची, कर्नाल और शीरानी नामक स्थान—जो बृटिश राज्य के अधिकार में पहले ही से थे मिला दिये गये और इसका नाम पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त रक्खा गया।

धरातल अथवा स्थिति—

सुलेमान, हिंदुकुश और सफेद कोह नामक पर्वत इस प्रान्त को अफगानिस्तान से पृथक् करते हैं। इसमें सिन्धु नामक नदी बहती है जिसमें पश्चिम से आकर काबुल नदी भी मिल जाती है। सिन्धु नदी के बेसिन को छोड़ कर सारे प्रान्त की भूमि पहाड़ी है। सीमा पर होने और पहाड़ी घाटियों को छोड़ कर उत्तर पश्चिम से आने का और कोई मार्ग न होने के कारण इस ओर से होनेवाले आक्रमणों से बचाने के लिये यह देश बृटिश राज्य के लिये बड़ा लाभकारी है।

धर्म व भाषा—

यहाँ के निवासी अधिकांश में मुसलमान हैं जो पश्तू बोलते हैं। पञ्जाबी और उर्दू भी कुछ समझी जाती है। ये लोग बड़े बहादुर सिपाही हैं और अंगरेजी सेना के अच्छे सिपाही माने जाते हैं। यहाँ भी पञ्जाब की कुछ फसलें बोई जा सकती हैं, परन्तु अंगूर, बिहीदाने की पैदावार अच्छी होती है।

राजकीय-विभाग—

यहाँ दो कमिश्नरियाँ और ५ जिले हैं। सूबे का प्रधान शासक चीफ कमिश्नर कहलाता है। इसकी राजधानी पेशावर है।

कमिश्नरी	जिले
१—पेशावर	पेशावर, हज़ारा और कोहाट।
२—डेराजात	बन्नू और डेराइस्मायल खाँ।
३—देशी रियासतें	देरा, सवात, चितराल और खैबर।

राज्य प्रबन्ध—

इस प्रान्त का प्रबन्ध अधिक कड़ा है। प्रत्येक जाति के चुने हुए मनुष्यों की एक सभा होती है, जिसको 'जिरगा' कहते हैं और यही जिरगा अपनी जाति के समस्त मनुष्यों की नेकचलनी का उत्तरदाता होता है। यदि कोई मनुष्य सीमाप्रान्त में नियम विरुद्ध कार्य्य करे तो उसका उत्तरदायित्व वह 'जिरगा' का है।

प्रसिद्ध नगर—

पेशावर—इस प्रान्त के उत्तर-पश्चिम कोने में बसा हुआ है। यह शहर सीमास्थ नगरों में सब से बड़ा है। यहाँ की लुङ्गियाँ और सोने का काम बहुत प्रसिद्ध है। खैबर की घाटी यहाँ से निकट है इसलिये यहाँ सेना का जमाव भी खूब रहता है। यहाँ सब ओर से आकर रेलें मिली हैं इसलिए यहाँ सेना का जमाव सुगमता से हो सकता है। पेशावर प्रसिद्ध व्यापारिक और भय है। चीफ कमिश्नर इस प्रान्त के यहाँ रहते है।

कोहाट, बन्नू, डेराइसमाइल खाँ और एबटाबाद प्रसिद्ध नगर हैं। यहाँ भी रक्षा के निमित्त फ़ौजें रहती हैं।

चितराल—उत्तर की ओर एक छोटा सा नगर है, परन्तु मा पर रणक्षेत्र होने के कारण अति प्रसिद्ध है।

देरा—चितराल के मार्ग में एक फौजी स्थान है।

११—पंजाब

नाम करण, सीमा वा क्षेत्रफल

इसका नाम 'पञ्जाब' इसलिये पड़ा है कि यहाँ सतलज, ास, रावी, चिनाब और झेलम नामक पाँच नदियाँ बहती हैं र इन्हीं के द्वारा इस प्रान्त की भूमि सिञ्चित होती है।

यह प्रान्त भारतवर्ष के उत्तर पश्चिम कोने में स्थित है। के उत्तर में काश्मीर और पश्चिमोत्तर सीमाप्रान्त हैं। पूर्व में युक्त प्रान्त, दक्षिण में राजपूताना, सिन्ध, पश्चिमोत्तर सीमा न्त और बिलोचिस्तान हैं।

इस प्रान्त का क्षेत्रफल काश्मीर सहित २,१३,७०० वर्ग ल है। असली सूबे का ¾ भाग उस मैदान से बना है जिसमें मक की पहाड़ियाँ हैं।

सिन्धु-नद इस प्रान्त की पश्चिमी सीमा बनाता है। सतलज, ास, रावी, चिनाब और झेलम मुलतान के निकट मिट्ठनकोट मक स्थान पर सिन्धु से मिल जाती है। पञ्जाब की नदियाँ एक ले हुए पंजे की भाँति दिखाई देती हैं।

लवायु—

पञ्जाब का प्रान्त समुद्र से दूर है। अतएव जाड़े में खूब कड़ाके ी शीत पड़ती है और ग्रीष्म-काल में बहुत गर्म हो उठता है। हाड़ी देशों में गर्मी कम पड़ती है और ऊँचे पहाड़ों पर तो सदैव

ठंढ पड़ा करती है। हिमालय पर्वत के निकट वृष्टि अधिक होती है, परन्तु ज्यों ज्यों पश्चिम को चलते जावें वर्षा कम होती जावेगी।

उपज—

यह प्रान्त बड़ा उपजाऊ है। नदियों ने सदा हरा भरा बना रक्खा है। इसके बेसिनों में नहरों द्वारा सिंचाई होती है। इस की विशेष पैदावार गेहूँ और रुई है। यहाँ जुवार, जव, बाजरा, धान और ऊख अधिक उपजते हैं और दूसरे देशों मे भेजे जाते हैं। किसी किसी पहाड़ी जिले में चाय की खेती होती है। खानों से नमक और कोयला निकाला जाता है। ऊनी, रेशमी और सूती कपड़े यहाँ बहुत बुने जाते हैं।

जनसंख्या, मनुष्य भाषा—

जन संख्या लगभग दो करोड़ के है। यहाँ के निवासी स्वस्थ और बड़े हट्टे कट्टे होते हैं। जन-संख्या का अधिकांश कृषक है। ये बड़े बली होते हैं अतः सरकारी सेना में रहना ही अधिक पसन्द करते हैं, इसलिये यह कहा जा सकता है कि पञ्जाब भारतवर्ष की भुजा है अथवा आर्य्य-जाति के क्षत्रियों का निवासस्थान है। यहाँ हिन्दुओं की अपेक्षा मुसलमान अधिक रहते हैं। पूर्वी-भाग की भाषा हिन्दी है और शेष में पञ्जाबी बोली जाती है।

राजकीय-विभाग—

इस प्रान्त में ५ कमिश्नरियाँ और २८ जिले हैं—

(१) अम्बाले में— रोहतक, गुड़गाँव, हिसार, करनाल, अम्बाला और शिमला।

(२) जालन्धर में—कांगड़ा, होशियारपुर, जालन्धर, लुधियाना और फिरोजपुर ।

(३) लाहौर में—लाहौर, अमृतसर, गुरुदासपुर, सियालकोट और गुजरानवाला ।

(४) रावलपिण्डी में—रावलपिण्डी, झेलम, गुजरात, शाहपुर, म्यानवाली और अटक ।

(५) मुलतान में—मुलतान, झङ्ग, मुजफ्फरगढ़, डेरा गाजी खाँ, मान्टगोमरी और लायलपुर ।

पञ्जाब मे ३४ देशी राज्य हैं जिनमे भावलपुर की मुसलमानी रियासत सारे पञ्जाब मे क्षेत्रफल के विचार से प्रधान है। इसके अतिरिक्त पटियाला, नाभा, जींद, फरीदकोट और कपूरथला सिक्खो की रियासतें हैं। पहाड़ी रियासतों मे चम्बा और मंडी प्रसिद्ध हैं।

प्रसिद्ध नगर—

लाहौर—रावी नदी पर बसा है। यह पञ्जाब की राजधानी है। इस प्रान्त के श्रीमान् गवर्नर महोदय यहीं रहते हैं। यहाँ एक विश्वविद्यालय है। लाहौर बड़ा पुराना और भव्य नगर है। बृटिश राज्य में बनी हुई सरकारी इमारतों में, हाईकोर्ट गवर्नमेंट कालिज, चीफ्स-कालिज, मांटगुमरी हाल, सिनेट हाल और अद्‌भुतालय दर्शनीय हैं। दुर्ग, बादशाही मसजिद, जहांगीर का मकबरा, सुनहरी मसजिद, वजीर खाँ की मसजिद और महाराज रणजीत सिंह की बारादरी मुसलमानो और सिक्खों के जाज्वल्यमान काल के स्मृति स्वरूप हैं। यहाँ बागों की बड़ी

बहार है। सम्राट शाहजहाँ का बनवाया हुआ 'शालामार बाग' बड़ा रमणीक तथा सुन्दर है। लाहौर से ५ मील की दूरी पर एक फ़ौजी छावनी है। आर्य्य-समाज की ओर से दयानन्द वैदिक कालिज खुला है जिसमें पञ्जाब विश्वविद्यालय के समस्त विद्यालयों से अधिक विद्यार्थी विद्याध्ययन करते हैं। उर्दू के समाचार पत्र जितने यहाँ से निकलते हैं उतने अन्य किसी स्थान से नहीं प्रकाशित होते।

अमृतसर—प्रसिद्ध व्यापारिक नगर है। यह लाहौर से पूर्व की ओर है। यहाँ के दुशाले, कालीन और दरियाँ सारे संसार में प्रसिद्ध हैं। सिक्खों का यह परम पूजनीय तीर्थ-स्थान है। इसका प्रसिद्ध सुवर्ण मन्दिर दरबार साहिब नगर के मध्य में एक सरोवर के मध्य में बना है। इसी सरोवर को अमृतसर कहते हैं। उसी के नाम पर नगर की भी ख्याति है।

अम्बाला—प्रसिद्ध सैनिक छावनी है।

लुधियाना—भी सैनिक छावनी है और देशी कपड़े के लिये प्रसिद्ध है। यहाँ मोजें और अंडी आज कल बहुत बनते हैं।

रावलपिण्डी—यहाँ भारतवर्ष में सब से बड़ी फौज की छावनी है। यहाँ एक बड़ा भारी शस्त्रागार है। इसी नगर से होकर कश्मीर को मार्ग जाता है।

मुलतान—एक बड़ा प्राचीन नगर है। क़ालीन और मिट्टी के बर्तन यहाँ अच्छे बनते हैं। इस ज़िले के आसपास के खजूर और आम बहुत स्वादिष्ट होते हैं। यहाँ की मीनाकारी भी प्रसिद्ध है।

जालन्धर, सियालकोट और झेलम भी प्रसिद्ध नगर हैं। यहाँ छावनियाँ भी हैं। सियालकोट में क्रिकेट फुटबाल आदि खेलों का देशी सामान बहुत अच्छा बनता है।

काँगड़े—के नगर-कोट मे ज्वाला देवी का मन्दिर है। यहाँ एक ज्योति शिखा सदैव प्रज्वलित रहती है जिसे धार्मिक हिन्दू तो देवी की ज्वाला कहते हैं और विज्ञानवेत्ता उसे ज्वालामुखी शिखर की लपट बताते हैं। सन् १६०५ ई० के प्रसिद्ध और नाशकारी भूकम्प के प्रकोप से सारा नगर नष्ट हो गया और साथ ही साथ प्रसिद्ध देवी का मन्दिर भग्न हो गया; परन्तु अब वह मन्दिर फिर से तैयार हो गया है।

शिमला—अम्बाले के उत्तर में एक ठंढा पहाड़ी स्थान है जो सारे भारतवर्ष मे उत्तम जल-वायु के लिये प्रसिद्ध है। भारत वर्ष के श्रीमान् वाइसराय महोदय ग्रीष्म ऋतु मे ६ महीने तक यहीं रहते हैं। पंजाब के छोटे लाट भी गर्मी की ऋतु यहीं व्यतीत करते हैं।

मरी, डलहौजी और धर्मशाला भी अच्छे स्वास्थ्य-वर्द्धक स्थान हैं।

देशी-राज्य—

पंजाब से सम्बन्धित बहुत से देशी राज्य हैं, उनकी जन-संख्या ४२ लाख के निकट है। पटियाला, झींद, नाभा, कपूरथला और फरीदकोट सिक्खों के राज्य हैं, ये बड़ी उर्वरा भूमि में हैं। भावलपुर मुसलमानी राज्य है। इसका बड़ा भारी भाग बंजर है। चम्बा प्राकृतिक-दृश्यों के लिये प्रसिद्ध है। मंडी और नाहन भी प्रसिद्ध पहाड़ी रियासतें हैं।

१२–दिल्ली प्रान्त

दिल्ली—प्राचीन नगर है, यमुना नदी के तट पर बसा है। आज कल भी जनसंख्या, व्यापार और धन के विचार से सारे भारतवर्ष में प्रसिद्ध है। यह नगर प्राचीन काल में इन्द्रप्रस्थ के नाम से सुप्रसिद्ध था। महाराजा युधिष्ठिर यहीं राज्य करते थे। हिन्दुओं के अन्तिम राजा पृथ्वीराज की राजधानी यहीं थी। राय पिथौरा का दुर्ग और लोहे की लाट अति प्राचीन सौध हैं। वर्तमान नगर शाहजहाँ बादशाह का बसाया हुआ है।

जामे-मसजिद और किले में शाहजहाँ का महल, दीवाने आम और दीवाने खास दर्शनीय हैं। कुतुबमीनार, जिसे लोग कुतुब साहब की लाट भी कहते हैं वास्तव में किसी हिन्दू राजा का बनवाया हुआ सौध है, यह दिल्ली से ११ मील दक्षिण की ओर है और संसार के ऊँचे ऊँचे मीनारों में उसकी भी गणना है। चाँदनी-चौक इस नगर का प्रसिद्ध बाज़ार है। दिल्ली में सोने चाँदी का काम अति उत्तमता से होता है। चमड़े का काम भी अच्छा होता है। आजकल यहाँ रुई, आटे, कपड़े और बिस्कुटों की कलें अधिक जारी की गई हैं।

महाराज जार्ज पंचम ने १२ दिसम्बर सन् १९११ ई० को अपने राजतिलक के उत्सव पर यहाँ एक प्रसिद्ध दरबार किया था, जिसमें महारानी सहित वह स्वयम् यहाँ पधारे थे। इस राज उत्सव का वर्णन करना हमारी शक्ति के बाहर है। महाराज ने प्रजा के हित के लिये बहु आज्ञाएँ और घोषणाएँ निकाली हैं जिनका प्रभाव भारतीय प्रजा के हृदय पर सदैव बना रहेगा। शिक्षा में ५० लाख रुपये प्रति वर्ष अधिक व्यय करने की

स्वीकृति हुई। कलकत्ते से राजधानी दिल्ली में बदली गई। १३ करोड़ रुपये के व्यय से सरकारी कचहरियाँ और दफ्तर दिल्ली में बनाये गए। पहली अक्टूबर सन् १९१२ ई० से यह प्रबन्ध कार्य्य-रूप में परिणत हुआ है।

दिल्ली महाभारत काल से कई शक्तिशाली राज्यों की राजधानी रही है यह गौरव का विषय है कि दिल्ली ने फिर अपना पूर्व महत्व प्राप्त कर लिया है।

दिल्ली का प्रान्त जो कि पंजाब और संयुक्तप्रान्त से पृथक् किया गया है ५७३ वर्ग मील के क्षेत्रफल में है और इसकी जन-संख्या लगभग ४ लाख है। इसका प्रबन्ध एक चीफ कमिश्नर के अधिकार में दिया गया है। यहाँ पर एक विश्वविद्यालय, नरेन्द्र-मण्डल और एक बड़ा अस्पताल हाल ही में स्थापित हुए हैं।

१३—संयुक्त-प्रान्त आगरा व अवध

इतिहास—

सन् १८०३ ई० के मरहठा-युद्ध में अंग्रेजों ने सिंधिया को असई और लासवारी के युद्ध-क्षेत्र में हरा दिया जिससे बृटिश सरकार को आगरा और दुआबे की भूमि मिल गई। आगरा प्रान्त पहले बङ्गाल प्रान्त का ही भाग समझा जाता था। अवध अवश्य एक स्वतन्त्र राज्य था। सन् १८११ ई० में नागपुर के राजा से सागर और नर्मदा के देश प्राप्त हुए फिर सन् १८१६ ई० में गोरखा युद्ध के पश्चात् देहरादून, गढ़वाल और कमाऊँ का इलाका कम्पनी के हाथ आया। सन् १८३४ ई० में इस समस्त प्रदेश के लिये कार्य्यकारिणी समिति सहित एक गवर्नर की स्वीकृत हुई थी, परन्तु इसके भाग्य में लेफ्टिनेंट गवर्नर ही लिखा था, वही मिला।

१२-दिल्ली प्रान्त

दिल्ली—प्राचीन नगर है, यमुना नदी के तट पर बसा है। आज कल भी जनसंख्या, व्यापार और धन के विचार से सारे भारतवर्ष में प्रसिद्ध है। यह नगर प्राचीन काल में इन्द्रप्रस्थ के नाम से सुप्रसिद्ध था। महाराजा युधिष्ठिर यहीं राज्य करते थे। हिन्दुओं के अन्तिम राजा पृथ्वीराज की राजधानी यहीं थी। राय पिथौरा का दुर्ग और लोहे की लाट अति प्राचीन सौध हैं। वर्तमान नगर शाहजहाँ बादशाह का बसाया हुआ है।

जामे-मसजिद और किले में शाहजहाँ का महल, दीवाने-आम और दीवाने खास दर्शनीय हैं। कुतुबमीनार, जिसे लोग कुतुब साहब की लाट भी कहते हैं वास्तव में किसी हिन्दू राजा का बनवाया हुआ सौध है, यह दिल्ली से ११ मील दक्षिण की ओर है और संसार के ऊँचे ऊँचे मीनारों में उसकी भी गणना है। चाँदनी चौक इस नगर का प्रसिद्ध बाज़ार है। दिल्ली में सोने चाँदी का काम अति उत्तमता से होता है। चमड़े का काम भी अच्छा होता है। आजकल यहाँ रुई, आटे, कपड़े और बिस्कुटों की कलें अधिक जारी की गई हैं।

महाराज जार्ज पंचम ने १२ दिसम्बर सन् १९११ ई० को अपने राजतिलक के उत्सव पर यहाँ एक प्रसिद्ध दरबार किया था, जिसमें महारानी सहित वह स्वयम् यहाँ पधारे थे। इस राज उत्सव का वर्णन करना हमारी शक्ति के बाहर है। महाराज ने प्रजा के हित के लिये वह आज्ञाएँ और घोषणाएँ निकाली हैं जिनका प्रभाव भारतीय प्रजा के हृदय पर सदैव बना रहेगा। शिक्षा में ५० लाख रुपये प्रति वर्ष अधिक व्यय करने की

८२,१२६ वर्ग मील तो आगरा प्रान्त, २४,१५८ वर्ग मील मे अवध और ६२,०६२ वर्ग मील में देशी राज्यों का विस्तार है।

प्राकृतिक विभाग—

संयुक्त प्रान्त के चार प्रकृति भाग किये जा सकते हैं (१) हिमालय की पर्वतीय उच्च भूमि (२) उत्तरी तलहटी, (३) गङ्गा का बड़ा मैदान (४) मध्य भारत की पहाड़ियो का कुछ भाग।

हिमालय और विन्ध्याचल के अतिरिक्त गङ्गा और यमुना के प्रारम्भिक भागों के मध्य मे शिवालक पहाड़ी स्थित है जो जिला देहरादून को सहारनपुर से पृथक् करती है। सहारनपुर से देहरा जाने वाली सड़क 'मोहन' के दर्रे से होकर जाती है।

मुख्य हिमालय की यह चोटियाँ इस प्रान्त मे है—

नन्दा देवी	२५,६६१ फीट
बद्रीनाथ	२५,४३२ "
त्रिशूल	२३,४८० "
केदारनाथ	२२,८३२ "
पचूल्ही	२२,६७३ "
नन्दाकोट	२२,५३८ "

विन्ध्याचल का निकला हुआ भाग मिर्जापुर, इलाहाबाद, बांदा, जालौन, हमीरपुर और झांसी के जिले में फैला हुआ है। सतपुड़ा की कैमूर नामक पहाड़ी मिर्जापुर के दक्षिण में फैली हुई है।

नदियाँ व झीलें—

गङ्गा, यमुना, सरयू आदि बड़ी बड़ी नदियों का हाल भारतवर्ष के बयान में कर दिया गया है। परन्तु प्रान्तिक और स्थानिक दशा के विचार से इनका कुछ और विवरण देना आवश्यक है।

लार्ड डलहौजी ने सन् १८५६ ई० में अवध को भी अंग्रेजी राज्य में मिला कर इसे एक चीफ कमिश्नर के आधीन कर दिया और सन् १८७७ ई० मे पूर्वोक्त पश्चिमोत्तर प्रान्त में मिला दिया। इस प्रकार चीफ कमिश्नर का स्थान जाता रहा और दोनों प्रान्त एक ही लेफ्टिनेंट-गवर्नर के शासन में आ गये। पहली जनवरी सन् १९२१ ई० में रिफार्मस्कीम द्वारा यहाँ भी 'गवर्नर इन कौंसिल' की स्थापना हुई है। पहले यह प्रदेश अंग्रेजी-राज्य की पश्चिमी सीमा पर था अत इसका नाम 'पश्चिमोत्तर प्रान्त था'।

सन् १९०१ ई० में पञ्जाब के उत्तर-पश्चिम में सीमा प्रान्त बना देने पर उक्त 'पश्चिमोत्तर प्रदेश' का नाम, 'संयुक्तप्रान्त आगरा और अवध' में परिवर्तित किया गया।

सीमा—

यह प्रान्त उत्तरी भारत के मध्य में स्थित है। इसके उत्तर मे तिब्बत और नैपाल, पूर्व और पूर्व दक्षिण में विहार का प्रान्त, दक्षिण मे मध्यभारत और मध्यप्रदेश हैं और पश्चिम मे ग्वालियर, धवलपुर और भरतपुर के देशी राज्य तथा दिल्ली और पञ्जाब के सरकारी प्रान्त हैं।

पश्चिम में कुछ दूर तक यमुना नदी, पूर्व मे थोड़ी दूर तक गङ्गा नदी और उत्तर मे गडक नदी भी चन्द मील तक प्राकृतिक सीमा बनाती हैं। अन्य सीमा कृत्रिम हैं।

क्षेत्रफलादि—

इस प्रान्त की अधिक से अधिक लम्बाई पूर्व से पश्चिम तक ग ५०० मील के और चौड़ाई उत्तर से दक्षिण तक लगभग ३०० मील के है। इसका क्षेत्रफल १,१२,३४६ वर्ग मील है जिसमे

वलिया की, वलिरा और चन्दा बस्ती की, रामगढ़ गोरखपुर की, सुदेलताल गोंडा की और मगरवारह झाँसी की प्रसिद्ध झीलें हैं।

इस प्रान्त में जङ्गल अधिक हैं। उत्तर के पहाड़ी इलाके में जङ्गल अधिक हैं। गोंडा, बस्ती और गोरखपुर के जिलों में भी कुवानो नदी के किनारे किनारे अच्छा वन है। विन्ध्यगिरि में भी जङ्गल हैं इन जङ्गलों में सागू, महुवा और जमुवा के वृक्ष अधिक हैं।

जलवायु–

यह प्रान्त समुद्र से अति दूर है इस लिए यहाँ गर्मी की अधिकता है, परन्तु हिमालय के निकट होने से सर्दी भी अधिक पड़ती है। पहाड़ों में पानी अधिक बरसता है, परन्तु मैदान में साधारण वृष्टि भी नहीं होती। यहाँ का जल वायु साधारणतः उत्तम है। तराई अर्थात्, गोरखपुर, बस्ती, गोंडा और बहराईच ज़िलों के उत्तरी भाग मलेरिया के घर कहे जाते हैं। यहाँ चार मौसम होते हैं अर्थात् जाड़ा, बहार, गरमी और बरसात। यहाँ जून से सितम्बर तक मौसमी हवायें चलती हैं जिनसे खूब वर्षा होती है। मानचित्र में देख कर एक तालिका बनाओ कि वर्षा किस भाग में कितनी होती है।

उपज और दस्तकारी–

इस प्रान्त की भूमि बड़ी उपजाऊ है, यह केवल भारतवर्ष में ही नहीं, किन्तु सारे संसार में उर्वता में श्रेष्ठता प्राप्त है। यहाँ खाने की वस्तुएँ बड़ी अधिकता से पैदा होती हैं। धान, गेहूँ, जब, चना, ऊख, तेलहन और रुई की बड़ी पैदावार है। पहिले नील और पोस्ता भी बहुत पैदा होता था, परन्तु वैज्ञानिक रङ्गों के चल जाने से नील की खेती और चीन से अफीम का व्यापार बन्द हो

गङ्गा—टेहरी राज्य के अन्तर्गत गङ्गोत्तरी पहाड़ से भागीरथि के नाम से निकलती है। थोड़ी दूर बहने के पश्चात् दाहिनी ओर से इसमें जान्हवी और बाईं ओर से अलखनन्दा की धारायें मिल जाती हैं। इन्हीं तीनो धाराओं के मिलने से गङ्गा की उत्पत्ति है। हरद्वार के पास यह पहाड़ों से बाहर होती है। हरद्वार से बलिया तक गङ्गा संयुक्तप्रान्त में बहती है फिर बिहार में प्रवेश करती है।

दाहिने किनारे पर कालीनदी, यमुना और टौंस और बायें किनारे पर रामगङ्गा, गोमती और घाघरा इसकी सहायक हैं।

यमुना—टेहरी राज्य में यमुनोत्तरी पहाड़ के पास से निकल कर हिमालय के बाहरी भाग को पार करती हुई दून* में आती है। फिर पञ्जाब संयुक्तप्रान्तीय दून की सीमा बनाती हुई आगे बढ़ती है और प्रयाग में आन कर गङ्गा से मिल जाती है। वृन्दाबन, मथुरा, बटेश्वर, इटावा, कालपी, हमीरपुर और प्रयाग इस पर के प्रसिद्ध नगर हैं।

घाघरा—कौड़ियाला के नाम से हिमालय के ऊपरी भाग से निकलती है। चौकाघाट के निकट सरयू इसमें आन कर मिल जाती है। फिर बहरामघाट से इसका नाम घाघरा पड़ जाता है। हिन्दू लोग इसे अब भी सरयू कहते हैं। इसमें बाईं ओर से कुवानों और राप्ती नामक नदियाँ मिल जाती हैं। बहराइच बहराम घाट, फैजाबाद और अयोध्या इसके किनारे के प्रसिद्ध स्थान हैं।

कुमायूँ कमिश्नरी में कई पहाड़ी झीलें हैं, उनमे नैनीताल प्रसिद्ध है। मैदान मे कोई बड़ी झील तो नहीं है, परन्तु सुरहाताल

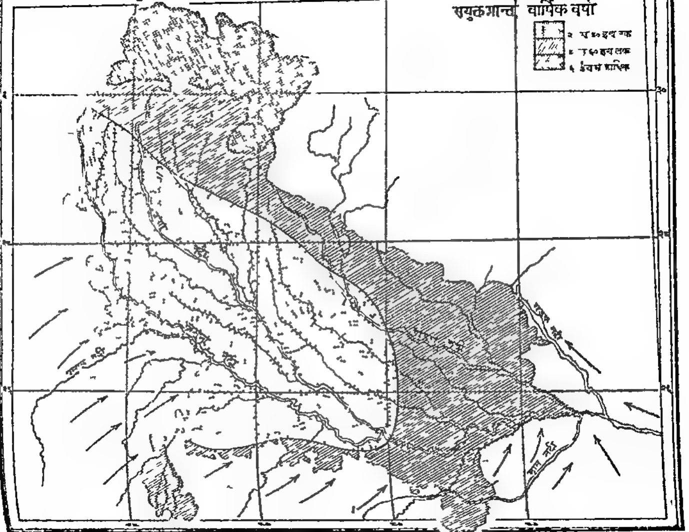
* दून—हिमालय और शिवालक के बीच की चौरस भूमि को कहते हैं।

जाने के कारण यह दोनों व्यवसाय नष्ट हो गये हैं। मानचित्र में देख कर संयुक्तप्रान्त की उपज की एक तालिका बनाओ। देहरादून की चाय प्रसिद्ध है। आम, अमरूद, खरबूजा, आलू और शकरकन्द यहां के अति उत्तम होते हैं। पत्थर मिर्जापुर में पहाड़िया से निकाला जाता है और रुई ओटने का काम बहुत से नगरों में होता है।

झांसी और मिर्जापुर के ऊनी कालीन, आगरा, बरेली और शाहजहांपुर की दरियां, बनारस व फैजाबाद के फर्श और पीतल के बरतन और कानपुर के चमड़े का काम प्रसिद्ध है। चुनार, अमरोहा और निजामाबाद में मिट्टी के बर्तन अच्छे बनते हैं। टांडा, जलालपुर और मऊ में देशी कपड़े हाथ से उत्तम बुने जाते हैं। कानपुर में कपड़े की बहुत सी मिलें हैं। गढ़वाल में लोहा और सीसा पाया जाता है। रेशम के कपड़े और किनखाब का काम बनारस में होता है। चिकन का काम लखनऊ में अच्छा बनता है। कागज बनाने की मिल लखनऊ में है, अलीगढ़ के ताले मशहूर हैं, कपड़े की छपाई का काम फर्रुखाबाद में और कांच का काम नैनी (इलाहाबाद) और बहजोई में अच्छा होता है। बरेली में लकड़ी का काम बनता है और रोजा में अंग्रेजी शराब बनाई जाती है। विद्याध्ययन का केन्द्र होने के कारण इलाहाबाद में पुस्तकें और समाचार पत्रों के छपाई के बहुत अधिक प्रेस हैं। और काम भी अच्छा होता है।

जन-संख्या और धर्म—

इस प्रान्त की सन् १६२१ ई० की मनुष्यगणनानुसार जन संख्या ४,५५,१०,९४६ है। प्रतिशत ११ नगरों में और शेष


संयुक्तप्रान्त वार्षिक वर्षा

गाँओं में निवास करते हैं। प्रति वर्ग मील ४१२ मनुष्य को आबादी का परता पड़ता है। कुमायू की जन-संख्या न्यून है। जिला बनारस सब से घना बसा हुआ है और गढ़वाल सब से कम।

कुल आबादी में लगभग ८५ प्रतिशत हिन्दू, १४ प्रतिशत मुसलमान, शेष १ प्रतिशत मे ईसाई, आर्य्य, जैनी, सिख, पार्सी, बौध, यहूदी आदि हैं।

हिन्दुओं मे क्रमश चमार, ब्राह्मण, अहीर, राजपूत, कुरमी, बनियाँ, पासी, लोध और कहार अधिक हैं। प्रान्त के निवासियों का ७४ प्रतिशत कृषि पर जीवन निर्वाह करता है।

शिक्षा–

संयुक्त प्रान्त में हिन्दी बोली जाती है, परन्तु स्थानिक परिवर्तन स्वाभाविक है। अत पहाड़ी जिलों में पहाड़ी, आगरा के आस पास व्रजभाषा और गोरखपुर तथा बनारस कीमिश्नरी मे कुछ बिहारी की चाशनी भी है। लखनऊ, मेरठ और बरेली शहर के मुसलमान अपनी भाषा उर्दू बताते हैं। प्रान्त भर में केवल ३.२ प्रतिशत पढ़े लिखे लोग हैं। देहरादून में पढ़े लिखों का परता अधिक है और खीरी मे सब से कम।

अङ्गरेजी शिक्षा के बड़े कालिज इलाहाबाद, बनारस, लखनऊ, आगरा, अलीगढ़, मेरठ, कानपुर, बरेली, और गोरखपुर में है। इन्टरमीजियट के नए कालिज अलमोड़ा, फैजाबाद, प्रयाग, लखनऊ, गोरखपुर, मुरादाबाद, देहरादून, इटावा, झांसी और बनारस में खुल गये हैं। जिले के सदर पर अङ्गरेजी के हाई स्कूल हैं। प्रति तहसील में देशी भाषा के मिडिल स्कूल खुले हैं। कानून की शिक्षा विश्वविद्यालयों के अतिरिक्त कानपुर और मेरठ मे भी दी जाती है। रुड़की में इञ्जिनियरिङ्ग, देहरादून में जङ्गल,

संयुक्तप्रान्त (खेत की उपज)

(९) फैज़ाबाद—प्रतापगढ़, सुलतानपुर, फैजाबाद, बाराबङ्की, बहरायच और गोंडा।

(१०) लखनऊ—रायबरेली, उन्नाव, लखनऊ, हरदोई, सीतापुर और खेरी।

इस प्रान्त मे टेहरी, रामनगर और बनारस के देशी राज्य हैं।

प्रसिद्ध नगर—

इलाहाबाद (प्रयाग)—गङ्गा और यमुना के सङ्गम पर बसा है। हिन्दुओं का यह परम पवित्र तीर्थ स्थान है। माघ और मकर सक्रान्ति के मेले प्रसिद्ध हैं। सङ्गम ही पर सम्राट अकबर का बनवाया हुआ एक दुर्ग भी है। दुर्ग के भीतर अशोक की लाट और अक्षयवट देखने योग्य हैं। म्योरकालिज, मेयोहाल, विश्वविद्यालय भवन, कम्पनी बाग, (अल्फ्रेडपार्क) गङ्गा और यमुना के पुल, लाला विश्वेश्वर दास की कोठी और झूसी में तिवारी के मन्दिर दर्शनीय हैं। यह नगर सयुक्त-प्रान्त की राजधानी है। यहाँ का अमरूद प्रसिद्ध है। कर्नलगञ्ज मुहल्ले मे भारद्वाज ऋषि का आश्रम है और यहाँ का अक्षय-नवमी का भरत मिलाप प्रसिद्ध है। यहाँ एक यूनीवर्सिटी और हाईकोर्ट हैं। प्रान्त के प्राय प्रधान नेता यहाँ रहते हैं।

बनारस (काशी)—गङ्गा के बाएँ किनारे पर बसा हुआ है। यह अति प्राचीन नगर है। हिन्दू लोग इसे अति पावन मानते हैं। समस्त भारत के हिन्दू यहाँ गङ्गा स्नानार्थ और यात्रा निमित्त आते हैं। सस्कृत विद्याध्ययन का यह केन्द्र स्थल माना गया है। यहाँ हिन्दू विश्वविद्यालय स्थापित हुआ है। नागरी प्रचारिणी सभा का यह 'हेडक्वार्टर' है। यहाँ मन्दिरों की सख्या बहुत है। विश्वनाथ महादेव का मन्दिर अति भव्य और पुज्य है। सैंट्रल हिन्दू कालिज की शिक्षा बड़ी अच्छी है। रेशमी कपड़े और पीतल के बर्तन यहाँ

कानपुर मे कृषि, आगरा और लखनऊ में डाक्टरी, और प्रयाग और लखनऊ व आगरा मे, ट्रेनिंग कालिज हैं। हिन्दू विश्व-विद्यालय बनारस में, मुहम्मडन यूनीवर्सिटी अलीगढ़ मे, और लखनऊ, आगरा और प्रयाग में राजकीय विश्व विद्यालय हैं।

राजकीय विभाग

इस प्रान्त मे १० कमिश्नरी और ४८ जिले हैं। इनमें लखनऊ और फैजाबाद की कमिश्नरी अवध के नाम से प्रसिद्ध हैं।

कमिश्नरी	जिले

(१) कमायूँ—गढ़वाल, अलमोडा और नैनीताल।

(२) रुहेलखन्ड—बिजनौर, मुरादाबाद, बदायूँ, बरेली, पीलीभीत और शाहजहाँपुर।

(३) मेरठ—देहरादून, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, मेरठ और बुलन्दशहर।

(४) आगरा—मथुरा, अलीगढ़, एटा, मैनपुरी और आगरा।

(५) झाँसी—झाँसी, जालौन, हमीरपुर और बाँदा।

(६) इलाहाबाद—फरुखाबाद, कानपुर, इटावा, फतहपुर, और इलाहाबाद।

(७) बनारस—मिर्जापुर, बनारस, जौनपुर, गाज़ीपुर और बलिया।

(८) गोरखपुर—आज़मगढ़, गोरखपुर और बस्ती।

मेरठ—अशोक के समय से प्रसिद्ध है। सन् १८५७ ई० का बलवा यहीं से आरम्भ हुआ था। यहाँ फौज की बड़ी छावनी है। मार्च में यहाँ नौचन्दी का मेला होता है।

मथुरा—श्रीकृष्ण महाराज का यहाँ जन्म हुआ था। यह प्रसिद्ध हिन्दुओं का तीर्थ-स्थान है। वृन्दावन मथुरा से ६ मील की दूरी पर उत्तम नगर है। यहाँ के मन्दिर अति प्रसिद्ध हैं। संयुक्त-प्रान्तीय आर्य्य समाज की ओर से यहाँ एक गुरुकुल खुला है।

अलीगढ़—यहाँ मुसलमानों का प्रसिद्ध मुहम्मडन कालिज है जो स्वनाम धन्य सर सैयद अहमद की जाति प्रेम का देदीप्यमान उदाहरण है। यहाँ एक मुहम्मडन यूनिवर्सिटी भी स्थापित हो गई है। यहाँ लोहे और पीतल के ताले अच्छे बनते हैं। इसी जिले में हाथरस एक तिजारती कस्बा है जहाँ के चाकू अच्छे बनते हैं और सूत और कपड़े की मिलें हैं।

सहारनपुर—यहाँ का कम्पनी बाग प्रसिद्ध है। यहाँ के आम अच्छे होते हैं। यहाँ लकड़ी पर खुदाई का काम बहुत अच्छा बनता है।

हरद्वार—हिन्दुओं का प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। यहाँ लोग मरे मनुष्यों का फूल गङ्गा जी को सौंपते हैं। पञ्जाब के आर्य्य समाज का गुरुकुल, काँगड़ी में स्थापित है। गुरुकुल अपने नमूने का भारतवर्ष में उत्तम और आदरणीय विद्यालय है। यहाँ का ऋषिकुल भी उसी भाँति का विद्यालय है, जिसमें एक आयुर्वेदिक कालेज भी है।

रुड़की—यहाँ एक इञ्जिनियरिङ्ग कालिज है। भारतवर्ष में इस विद्या का इससे उत्तम कोई कालिज नहीं है।

अच्छे बनते हैं। बनारस से थोड़ी ही दूर पर 'रामनगर' महा
काशी का निवास स्थान है। नगर के निकट ही 'सारनाथ'
काल की प्रदर्शिनी है।

मिर्ज़ापुर—कभी बड़ा व्यापारिक नगर था। यहाँ के का
सारे भूमण्डल मे प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखे जाते हैं। यहाँ पी
लाख और लोहे का काम भी होता है। मिर्ज़ापुर से ३ मील की
पर विन्ध्यवासिनी देवी का मन्दिर भी बड़े गौरव का है।
का दुर्ग भी बहुत पुराना और ऐतिहासिक है।

कानपुर—बड़ा व्यापारिक नगर है। चमड़े और कपड़े
के अनेक कारखाने हैं। यहाँ एक छावनी भी है। सन् १८५७
के सिपाही-विद्रोह में यही केन्द्र था। उत्तरी भारत में कल
को छोड़ कर यह अन्य सब नगरो से अधिक व्यापारिक स्थान
बम्बई और अहमदाबाद के पश्चात् कानपुर सारे भारतव
कपड़े के कारखानो के लिये प्रसिद्ध है। यहाँ पर गवर्न
टेक्नीकल स्कूल और कृषि कालिज भी हैं।

कन्नौज—फ़र्रुखाबाद जिले के अन्तर्गत अति प्राचीन स
है। यहाँ का इत्र प्रसिद्ध है। हिन्दू-गौरव शत्रु जयचन्द की
राजधानी थी।

आगरा—अकबर ने इसे मुगलों की राजधानी बनाया।
शाहजहाँ ने अपनी बीबी की यादगार में जो शव-समाधि-म
ताजबीबी के रौज़े के नाम से बनवाया था, वह यहीं है।
संसार में इससे सुन्दर अन्य कोई इमारत नहीं है। सिकन्द
अकबर का मकबरा है। पत्थर का काम यहाँ अच्छा होता
यहाँ कालीन और दरियाँ अच्छी बनती हैं। यहाँ दो बी०
कालिज, एक मेडिकल स्कूल और विश्वविद्यालय है

आज कल भी अवध का चीफ कोर्ट यहीं है। यहाँ के खरबूजे, पौंड़े और कलमी आम प्रसिद्ध हैं। यहाँ पर एक बड़ा विश्व-विद्यालय हाल ही खुला है, जिसमें कि एक मेडिकल कालेज भी है।

अयोध्या—फैज़ाबाद के निकट बसा है। भारतवर्ष में सब से प्राचीन नगरी यही है। श्रीरामचन्द्रजी ने यहीं अवतार लिया था, अत चैत्र की रामनवमी के यहाँ बड़ी भीड़ होती है। बहुत दूर दूर तक पुराने खण्डहर पाये जाते हैं। यहाँ के मन्दिर बड़े प्रसिद्ध हैं, जिनमें हनुमान गढ़ी, जन्मस्थान, कनक-भवन और सीता रसोइया दर्शनीय हैं। श्रीरामचन्द्र जी ने स्वयम् कहा है—

अवधपुरी मम पुरी सुहावन।
उत्तर दिशि सरयू बह पावन॥
जो मज्जै से विनहिं प्रयासा।
मम समीप नर पावैं बासा॥

नैनीताल—एक पहाड़ी स्थान है। यहाँ का जल वायु स्वास्थ्य वर्द्धक है। इस प्रान्त के उच्च अधिकारी गर्मियों में यहीं रहते हैं।

देशी राज्य

टेहरी का राज्य—

टेहरी राज्य गढ़वाल के जिले में है। इसका क्षेत्रफल ४,५०० वर्गमील और जन संख्या ३,१८,४८२ है, जिनमें ९९ प्रतिशत हिन्दू वसते हैं। यहाँ हिन्दुओं की मुख्य जातियाँ राजपूत, ब्राह्मण और डोम हैं। यहाँ के निवासियों की भाषा हिन्दी है। कमायू के कमिश्नर इस राज्य के पोलीटिकल एजेन्ट हैं। इसके राजा हिन्दू हैं। कस्बा टेहरी इस राज्य की [illegible]

मुरादाबाद—यहाँ पीतल के बर्तन पर कलई खूब उमदा की जाती है। इस प्रान्त का पुलिस ट्रेनिङ्ग स्कूल यहाँ ही है।

बरेली—रुहेलखण्ड कमिश्नरी का सदर मुकाम है। यहाँ की दरियाँ, कालीनें प्रसिद्ध हैं और लकडी का काम अच्छा बनता है। यहाँ भी एक बडी छावनी है।

गोरखपुर—यहाँ गोरखनाथ का प्रसिद्ध मन्दिर है। इस ज़िले की जन-सख्या सारे प्रान्त के जिलों से अधिक है। जितनी आमदनी भूमि कर से सरकार को इस जिले से होती है, उतनी और किसी जिले से नहीं। यहाँ के तम्बाकू, नासपाती, और अनन्नास प्रसिद्ध हैं।

बस्ती—इस जिले के बाँसी तहसील का चावल प्रसिद्ध है। बस्ती के उत्तर रोमनदेवी नामक स्थान मे गौतमबुध का जन्म हुआ था। मगहर मे कबीरदास की समाधि है। यहाँ का खद्दर अच्छा होता है। बाँसी के उत्तर नैपाल राज्यान्तर्गत बुध भगवान का जन्म स्थान है।

गोंडा और बहरायच की सीमा पर सहेट महेट नामक स्थान पुरानी श्रावस्ती नगरी का भग्नावशेष है। श्रीवास्तव कायस्थों का यही आदि स्थान है।

लखनऊ—गोमती के किनारे एक रमणीक नगर है। इस प्रान्त में जन सख्या के विचार से यह सब से प्रधान नगर है। बड़ा इमाम बाड़ा, छतरमजिल, शीशमहल,अमीनाबाद पार्क, कैसरबाग, अजायबघर और काउन्सिल चेम्बर के भवन दर्शनीय हैं। यहाँ कागज बनाने का एक कारखाना है। चिकन और चाँदी का काम यहाँ उत्तम होता है। अवध के नव्वाबों की यहाँ राजधानी थी।

इन तीन बड़ी रियासतों के अतिरिक्त झाँसी कमिश्नरी में चरखारी आदि कई एक छोटे छोटे राज्य हैं।

१४—मध्य प्रदेश और बराबर

इतिहास—

यह प्रान्त भारतवर्ष के बीच में है, अत इसका नाम मध्य प्रदेश पड़ा। इसका प्राचीन नाम गोंडवाना है, क्योंकि इसके अधीश्वर कभी भारतवर्ष के प्राचीन निवासी गोंड थे। अबभी इस प्रान्त में गोंड भील अधिक बसते हैं। सागर और नर्मदा सन् १८१८ ई० में और नागपुर सन् १८६१ ई० में एकत्रित करके सन् १८६१ ई० में यहाँ एक चीफ कमिश्नरी स्थापित की गई। निजाम हैदराबाद से बरार का सूबा मिला था, और वह सन् १९०३ ई० में पक्का हो गया अतएव वह भी मध्यप्रदेश में मिलाया गया। अब यह एक गवर्नर के आधीन है।

सीमा व धरातलादि—

इसके पूर्व में उड़ीसा और मद्रास, दक्षिण में हैदराबाद का राज्य, पश्चिम में बम्बई और मध्यभारत के राज्य और उत्तर में रीवाँ, पन्ना, आदि बुन्देलखण्ड की रियासतें हैं।

इस प्रान्त का ९९,८७६ वर्गमील सरकारी राज्य के आधीन है, और ३१,१७४ वर्गमील देशी रियासतों से घिरा है, जिनमे १,५६,७६,६६० मनुष्य अंगरेजी राज्य और तत्सम्बन्धी देशी राज्यों में रहते हैं। इसकी अधिक से अधिक लम्बाई ५७६ मील और चौड़ाई ४३० मील है।

यह प्रान्त जङ्गली और पहाड़ी है। इसके उत्तर और पश्चिम में सतपुरा पर्वत फैला हुआ है, और दक्षिण भाग में पूर्वी घाट

जन-सख्या केवल ६,६४२ है। सारा राज्य पहाड़ी है, जो २,००० से २३,००० फीट तक ऊँचा है। गङ्गा और यमुना इसी राज्य से निकलती हैं। यहीं केदारनाथ, वद्रीनाथ के तीर्थ हैं। इस राज्य के अधिकार में एक छोटी सी और भी रियासत है, जिसका नाम 'सकलाना' है। सकलाना से टेहरी को २००) वार्षिक भेंट मिलती है। पढ़े-लिखों की सख्या यहाँ अच्छी है।

रामपुर का राज्य—

रुहेलखण्ड की कमिश्नरी मे है। इसका क्षेत्रफल ८९२ वर्गमील और आबादी ४,५३,६०७ है, जिसमे ५३ प्रतिशत हिन्दू और ४६ प्रतिशत मुसलमान हैं। प्रान्त भर में यहाँ मुसलमानों की सख्या का औसत अधिक है। शिक्षित पुरुष यहाँ कम हैं। नव्वाब साहिब रामपुर शीया धर्मावलम्बी मुसलमान हैं। रामपुर राज्य का मुख्य नगर है। यहाँ की जामे मसजिद खुसरो बाग और दुर्ग प्रसिद्ध हैं।

राज्य बनारस—

सन् १९११ ई० से महाराजा बनारस को 'रूलिङ्ग चीफ' (Ruling chief) के अधिकार प्राप्त हुये हैं। बनारस के ठीक सामने कस्बा रामनगर महाराजा काशी की राजधानी है। इस राज्य का क्षेत्रफल ८७५ वर्गमील और जन-सख्या ३,६२,७३५ है। इसमे ८९ प्रतिशत हिन्दू और ११ प्रतिशत मुसलमान बसते हैं। बिहारी हिन्दी यहाँ की भाषा है। पढ़े लिखों की सख्या यहाँ सन्तोष जनक है। गङ्गापुर, कोंढ़ और चकिया ये तीन जिले हैं। राजधानी रामनगर में महाराज चेतसिंह का बनवाया हुआ बड़ा दुर्ग, एक सुन्दर ताल और एक मन्दिर दर्शनीय है। यहाँ चाकुयें और बाँस तथा बेंत के मोढे और कुर्सियाँ अच्छी बनती हैं।

(२) नर्मदा में—नृसिंहपुर, होशङ्गावाद, छिन्दवाड़ा, वेतूल और नीमाड़।

(३) छत्तीसगढ़ मे—रायपुर, बिलासपुर और द्रुग।

(४) नागपुर मे—नागपुर, भंडारा, चाँदा, वर्द्धा और वाला-घाट।

(५) वरार में—अमरावती, अकोला, बलदाना और वोत-माल।

देशी रियासतों मे—वस्तर, खैरागढ़ और कवर्द्धा प्रसिद्ध हैं।

प्रसिद्ध नगर—

नागपुर—इस प्रान्त की राजधानी और एक प्रसिद्ध व्यापारिक नगर है। यहां के कारखानों के देशी कपड़े बहुत मजबूत होते हैं। यह नगर अपनी नारङ्गियों के लिये प्रसिद्ध है। इस प्रान्त के प्रधान शासक गवर्नर यहीं रहते हैं। यहां एक विश्वविद्यालय है।

कामटी—नागपुर के निकट एक फौजी छावनी है।

जबलपुर—इस प्रान्त में दूसरे नम्बर का नगर है। यहां के जेल मे दोसूती और दरियां अच्छी बनती हैं। प्रयाग होकर कल-कत्ते से बम्बई के रेल के मार्ग में पड़ता है। यहां पर रेलवे का कारखाना भी है। यहां से ३० मील की दूरी पर स्लेट का पत्थर निकलता है, जबलपुर के नजदीक भेड़ाघाट मे सङ्गमर्मर की भी चट्टानें हैं।

सागर—यह भी एक फौजी छावनी है। यह इस प्रान्त का सागर है।

रायपुर—यहां अन्न की प्रधान मंडी है। यह रेलवे द्वारा विजिगापट्टम बन्दरगाह से मिलाया गया है।

की कुछ पहाड़ियाँ हैं। नर्मदा औरताप्ती इसके उत्तरी भाग को सिञ्चित करती है।

जलवायु और उपज—

यहाँ न अति शीत है और न अधिक गर्मी, परन्तु मैदानों में कभी कभी गर्मी अधिक पड़ती है। वर्षा के दिनों मे यहाँ का जल वायु अति रोचक हो जाता है।

यहाँ नदियो की अधिकता है, और वर्षा भी खासी हो जाती है, इसलिये नहरों की अधिक आवश्यकता नहीं। देश पहाड़ी होने के कारण इसके केवल ½ अंश मे कृषि होती है, शेष भूमि में जङ्गल है। गेहूँ, बाजरा, चना और तेलहन पैदा होते हैं, जङ्गलो से लाख इकट्ठी की जाती है। टसर का रेशम भी यहाँ खूब निकला जाता है। साखु की लकड़ी जङ्गलो से अधिक आती है। यहाँ रुई को पैदावार काली भूमि बहुत है। खानों से लोहा और कोयला बहुत निकाला जाता है इसलिये इस प्रान्त में कपड़ा बुनने के कारखाने अधिक हैं।

मनुष्य और भाषा—

इस प्रान्त मे हिन्दुओं की सख्या अधिक है। हिन्दी, महाराष्ट्री और उड़िया यहाँ की प्रधान भाषायें हैं। इस प्रान्त का अधिकाश भाग उजाड़ पडा है। गोंड और भील पहाड़ों में रहते हैं।

राजकीय विभाग—

इस प्रान्त में ५ कमिश्नरियाँ और २२ जिले हैं—

कमिश्नरियाँ जिले

(१) जबलपुर में—सागर, दमोह, जबलपुर, सिवनी और मंडला।

धरातल तथा जलवायु—

यहाँ की भूमि पूर्व को ओर ढालू है। इस प्रान्त में केवल छोटा नागपुर को पहाड़ियाँ हैं जिनमे 'पारसनाथ' प्रसिद्ध है, जो जैनियों का नीर्थस्थान है।

बिहार में गङ्गा, घाघरा, सोन, गडक और कोसी, और उड़ीसा में ब्रह्मणी, वेतरणी, स्वर्णरेखा नदियाँ हैं। इन नदियों के पाट कम चौड़े हैं, इसलिये उड़ीसा में कभी कभी बाढ़ भी खूब आती है। समुद्र से मिला हुआ 'चिलका' नामक एक झील है। यह दुनिया में सबसे ज्यादा छिछला झील है।

इस प्रान्त का जल-वायु सामान्य है। उड़ीसा समुद्र के निकट है, अत यहाँ जाड़े गर्मी की अधिकता नहीं है।

राजकीय-विभाग—

इस प्रान्त मे ५ कमिश्नरियाँ और २१ जिले हैं—

कमिश्नरियाँ	जिले

(१) तिरहुत मे—दरभङ्गा,मुजफ्फरपुर,चम्पारन और सारन।

(२) पटना में—पटना, गया और शाहाबाद।

(३) भागलपुर में—भागलपुर, मुंगेर, पुर्णिया और सन्थाल परगना।

(४) छोटा नागपूर मे—सिंहभूमि, मानभूमि, हजारीबाग, पालामऊ और रांची।

(५) उड़ीसा में—कटक, अङ्गोल, पुरी, बालासोर और सम्भलपुर।

नोट—चम्पारन का दूसरा नाम मोतीहारी, सारन का छपरा, और शाहाबाद का आरा है।

चान्दा—में लोहे की खाने हैं। यह नगर 'गोंडों' की राजधानी थी।

पञ्चमेढ़रस—पहाड़ी स्थान है। इस प्रान्त के गवर्नर महोदय गर्मियों मे यहीं निवास करते हैं।

एलचपुर—उत्तर मे बरार का सब से बड़ा शहर है।

अमरावती—यहां रुई की एक बड़ी मडी है।

अकोला—मध्य बरार मे एक व्यापारिक स्थान है। इसके पास ही अरगांव है, जहां सन् १८०३ ई० में अंग्रेजो ने महाराष्ट्रों को हराया था।

देशी-राज्य

यों तो इस प्रान्त में १५ छोटी छोटी रियासतें हैं, जिनमें जङ्गल अधिक, हैं, परन्तु 'वस्तर' का राज्य सब से बडा है। बहुत रियासतें राजपूतों के आधीन हैं, और चारपाँच गोंडों के शासन मे भी हैं, जिनमें असभ्य और जङ्गली जातियां बसती हैं।

१५—बिहार और उड़ीसा

यह प्रान्त सन् १६१२ ई० में दिल्ली दरबार के अवसर पर बनाया गया, नहीं तो इसके पूर्व यह पश्चिमी बङ्गाल में सम्मिलित था। इस प्रान्त में बिहार, उड़ीसा, छोटा नागपुर और देशी राज्य मिले हुए हैं। जिनका प्रबन्ध एक गवर्नर करता है।

सीमा—

इसके उत्तर में नेपाल, पूर्व में बङ्गाल, दक्षिण में बङ्गसागर व मद्रास और पश्चिम में मध्यप्रदेश और सयुक्त प्रान्त स्थित हैं। इसका क्षेत्रफल १,११,८२६ वर्गमील, जन सख्या ३,७६,६१,८५८ है, जिनमे २८,६४८ वर्गमील पर तो देशी रियासतें फैली हैं, जिनकी जन सख्या ३६ लाख के लगभग है, और शेष अंग्रेजी राज्य में है।

मुगेर—यहां बन्दूक, पिस्तौल और चमडे की चीजें अच्छी बनती हैं। यहां सिगरेट बनाने का बहुत बडा कारखाना है।

भागलपुर—व्यापारिक नगर है। यहां का कपड़ा प्रसिद्ध है।

जमालपुर में—रेलवे का प्रसिद्ध कारखाना है।

जमशेदपुर—यहां लोहे की ढलाई का बहुत बड़ा कारखाना है। यह कारखाना दुनिया की एक बडे कारखानों मे है। इसी के थोडी दूर पर टाटानगर बसा हुआ है।

(२) उड़ीसा

यह देश बङ्ग सागर के निकट है। इसका किनारा बड़ा नीचा है और कहीं कहीं दलदल भी है। नदियों में महानदी विशेष महत्व की है। किनारे पर कुछ नहरें भी हैं। इस देश मे जङ्गल अधिक हैं, जिनमें जङ्गली पशु बहुत रहते हैं। यहां चावल अधिक पैदा होता है। भाषा यहां की उडिया है।

प्रसिद्ध नगर—

कटक—महानदी के किनारे पर बसा हुआ है। सोने, चांदी बेल बूटे का काम यहां उत्तम होता है।

पुरी—समुद्र तट पर बसा हुआ है। यहां जगन्नाथ जी का अति प्राचीन मन्दिर है। हिन्दू लोग दूर दूर से दर्शनों के लिये यहां आते हैं।

बालासोर—नदी के किनारे एक छोटा सा [illegible] है। अंग्रेजों ने सबसे पहिले इसी बस्ती को बसाया है।

देशी-राज्य

इन प्रान्तों में सब २४ रियासतें हैं जिनमें—

मयूरभज, ढेनीकलान, बोद, और नयागढ प्रसिद्ध हैं।

(१) विहार

नदियाँ और उपजादि—

गङ्गा नदी इस देश के मध्य में होकर बहती है, और उसकी सहायक नदियाँ घाघरा, गडक, कोसी उत्तर से और सोन दक्षिण से आन कर उसमें मिलती हैं। इसलिये यहाँ की भूमि बड़ी उर्वार है। चावल, तम्बाकू, गन्ना, जूट और रुई की भी उपज है पहले यहाँ अफीम और नील बहुतायत से होती थी, पर अब बहुत कम हो गई है। बिहार की भाषा हिन्दी है, और यहाँ हिन्दू भी अधिक बसे हैं।

प्रसिद्ध नगर—

पटना—इस प्रान्त की राजधानी है। इसी के पास गङ्गा से उसकी सब सहायक नदियाँ आन कर मिल जाती हैं। पटना का पुराना नाम 'पाटलिपुत्र' है। बौध राजाओं के समय में सारे ससार में प्रसिद्ध था। यहाँ का विश्वविद्यालय और हाईकोर्ट बाँकीपुर मे है। दानापुर में फौजी छावनी है। यहाँ गल्ले का व्यापार अधिक होता है।

गया—हिन्दुओं का प्रसिद्ध तीर्थस्थान है। बौद्धकालीन प्राचीन स्तूपों और विहारो के भग्नावशेष इस नगर के आस पास बहुत हैं। बोधगया का पुराना मन्दिर बहुत प्रसिद्ध है।

१९१२ ई० में गवर्नमेंट को प्रबन्ध सम्बन्धी सुविधा से यह प्रान्त बिहार और उड़ीसा से पृथक् कर दिया गया, और वह जिले जो सन् १९०५ ई० में इससे अलग कर के आसाम में मिला दिये गये थे, फिर इसीमें आ गये। यद्यपि विस्तार और जन संख्या के विचार से भारतवर्ष में सबसे प्रधान नहीं है, परन्तु शिक्षा, व्यापार और उपज में अबभी यह प्रान्त भारतवर्ष की शिरोमणि है।

इस प्रान्त का किनारा कई स्थानों में नीचा है, परन्तु कहीं कहीं रेत के ऊँचे टीले भी आजाते हैं। बङ्गाल की खाड़ी का ऊपरी किनारा दलदली है, और इसमें बड़े लम्बे चौड़े जङ्गल हैं, इसे "सुन्दरवन" कहते हैं। इन जङ्गल में वन्य-पशु अधिक रहते हैं।

इस प्रान्त के उत्तर में हिमालय पर्वत ऊपर ही ऊपर चला गया है, जिसकी एक चोटी काचनजंघा संसार में ऊँचाई के विचार से तीसरे नम्बर पर है। बङ्गाल मे नदियों की बड़ी अधिकता है। ग्वालंदो के पास गंगा ब्रह्मपुत्र से मिल जाती हैं। इसी स्थान से इनका सम्मिलित धार इतनी चौड़ी हो जाती है कि बड़े बड़े जहाज सुगमता से आ जा सकते हैं। हुगली गङ्गा की एक शाखा है, और बङ्गाल की खाड़ी में गिरती है। बड़ी बड़ी नदियाँ पहाड़ों से मिट्टी बहा लाती हैं। जब नदियाँ समुद्र में गिरने लगती हैं, तो उनकी कई धारायें हो जाती हैं, और दो शाखाओं के बीच में यह मिट्टी त्रिभुजाकार जम जाती है। इस त्रिभुजाकार जमी हुई मिट्टी भूगोल में 'डेल्टा' के नाम से प्रसिद्ध होती है।

जलवायु—

बङ्गाल का जल वायु गरम तो है, परन्तु साथ ही नमहै, अत जलवायु स्वास्थ्य के लिये उत्तम नहीं। बंगाल में वर्षा और

(३) छोटा नागपुर

इस प्रान्त का अधिक भाग ऊँचा और पहाड़ी है। मध्य में पारसनाथ की चोटी है। यहाँ के निवासी अनपढ़ और असभ्य हैं।

प्रसिद्ध नगर—

पारसनाथ—यहाँ जैनियों का प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान है।

राँची—बिहार व उड़ीसा के गवर्नर गर्मियों मे यहीं रहते हैं।

हज़ारीबाग—प्रसिद्ध नगर है।

(४) देशी-राज्य

उड़ीसा में करद रियासतें १७ है। इनमें मयूरभञ्ज सबसे बड़ी है। इसकी भूमि पहाड़ी और जङ्गली है। यहाँ हाथी और जङ्गली पशु अधिक पाये जाते हैं। निवासी प्राय अनपढ़ हैं, जो प्राचीन जाति के वशज हैं।

१६—बङ्गाल

सीमा—

बङ्गाल का प्रान्त बिहार—उड़ीसा के ठीक पूर्व में है। इसके उत्तर मे नैपाल, सिकम और भूटान है। पूर्व में आसाम, पूर्व दक्षिण मे ब्रह्मा और ठीक दक्षिण में बङ्ग सागर है। यह प्रान्त गङ्गा और ब्रह्मपुत्र के बेसिन से बना है, और भारतवर्ष में सब से अधिक उपजाऊ है।

धरातलादि—

यह प्रान्त त्रिकोणाकार है। इसका क्षेत्रफल ८२,२७७ वर्गमील है, और सन् १९२१ ई० में जन-संख्या ४,७५,९२,४६२ थी। सन्

ने मुसलमानों को पराजित करके बङ्गाल पर अपना अधिकार जमाया था। इस युद्ध के अन्त होने पर भारत में अङ्गरेजों का राज्य स्थापित हुआ।

रानीगंज—कलकत्ते के पास है। विशेष कर कोयला यहाँ अधिक निकाला जाता है।

ढाका—ब्रह्मपुत्र की एक शाखा पर बसा हुआ है। यहाँ का बारीक मलमल सारे संसार में प्रसिद्ध था, परन्तु विलायती कपड़ों की प्रतिद्वन्द्विता के कारण अब यह व्यवसाय नष्ट हो गया है। ढाका पहिले का अब आधा भी नहीं रहा, परन्तु जूट का कार्य्य अब यहाँ उन्नति पर है। सन् १९०५ ई० में जब पूर्व-बंगाल का प्रान्त स्थापित हुआ था, उस समय यह उसकी राजधानी थी। यहाँ पर एक विश्वविद्यालय भी है।

चटगाँव—भारत के प्रसिद्ध बन्दरगाहों में से है। आसाम की की चाय, पूर्वी बंगाल के चावल और जूट इसी बन्दर से दूसरे देशों में भेजे जाते हैं। यहाँ जहाज बनाने का एक कारखाना भी है।

ग्वालंदो—ब्रह्मपुत्र के तट पर एक प्रसिद्ध व्यापारिक स्थान है।

दार्जिलिंग—पहाड़ी-स्थान है। यहाँ चाय बहुत पैदा होती है। बङ्गाल के गवर्नर महोदय गर्मियों में यहीं वास करते हैं।

देशी राज्य—

यद्यपि इस देश में कई छोटी छोटी रियासतें हैं, परन्तु उनमें शिकम और कूँई की रियासत है। शिकम, नेपाल और भूटान के मध्य में पहाड़ी स्थान है। इसमें चावल, चाय और नारङ्गी

और हाईकोर्ट दर्शनीय हैं। कलकत्ता-विश्वविद्यालय आजकल बड़ी उन्नति पर है। कलकत्ता सन् १९१२ ई० तक भारत की राजधानी थी, परन्तु अब राजधानी दिल्ली है, तथापि बङ्गाल की राजधानी अब भी यही है, और भारत का सर्वप्रधान नगर भी यही माना जाता है।

हुगली नदी (जो कि कलकत्ते के पास गङ्गा जी का नाम है) में जहाजों और नावों का दृश्य दर्शनीय है। कल द्वारा यहाँ शुद्ध जल पहुँचाया जाता है। जिन महल्लों में देशी मनुष्य रहते हैं, वहाँ की जन-सख्या बड़ी घनी होने के कारण वायु कुछ शुद्ध नहीं है। हुगली नदी के उस पार—कलकत्ते के सामने—हवड़ा बसा है। इसे कलकत्ते का एक भाग समझना चाहिये। यहाँ रेलवे स्टेशन है। कलकत्ते और हवड़े के बीच—हुगली नदी पर—एक अति सुन्दर पुल बना है जो कि लोहे के नावों पर तैरता हुआ है।

बारकपुर—फौजी छावनी है। इच्छापुर मे एक तोप की गाड़ियों का एक बड़ा कारखाना है। इस्पात यहीं बनता है।

मुर्शिदाबाद—मुसलमानों के समय में बङ्गाल की राजधानी था। आज कल यह नगर अधिक उन्नति पर नहीं है। हाथी दाँत का काम, रेशम और कशीदा की कारीगरी अबभी यहाँ उत्तमता से होती है।

कासिम-बाज़ार में—अङ्गरेजों ने सब से पहिले व्यापार प्रारम्भ किया था।

नदिया—सस्कृत-विद्या के लिये प्राचीन काल से प्रसिद्ध है। पहिले यह हिन्दुओं के शासन काल में बगाल की राजधानी भी थी।

पलासी—यद्यपि एक छोटा सा गाँव है, परन्तु इतिहास में अति प्रसिद्ध है। सन् १७५७ ई० में अङ्गरेजों के बहादुर लार्ड क्लाइव

ने मुलसमानों को पराजित करके बङ्गाल पर अपना अधिकार जमाया था। इस युद्ध के अन्त होने पर भारत में अङ्गरेजों का राज्य स्थापित हुआ।

रानीगज—कलकत्ते के पास है। विशेष कर कोयला यहाँ अधिक निकाला जाता है।

ढाका—ब्रह्मपुत्र की एक शाखा पर बसा हुआ है। यहाँ का बारीक मलमल सारे ससार में प्रसिद्ध था, परन्तु विलायती कपड़ों की प्रतिद्वन्दिता के कारण अब यह व्यवसाय नष्ट हो गया है। ढाका पहिले का अब आधा भी नहीं रहा, परन्तु जूट का कार्य्य अब यहाँ उन्नति पर है। सन् १९०५ ई० में जब पूर्व-बगाल का प्रान्त स्थापित हुआ था, उस समय यह उसकी राजधानी थी। यहाँ पर एक विश्वविद्यालय भी है।

चटगाँव—भारत के प्रसिद्ध बन्दरगाहों में से है। आसाम की चाय, पूर्वी बगाल के चावल और जूट इसी बन्दर से दूसरे देशों मे भेजे जाते हैं। यहाँ जहाज बनाने का एक कारखाना भी है।

ग्वालदो—ब्रह्मपुत्र के तट पर एक प्रसिद्ध व्यापारिक स्थान है।

दार्जिलिग—पहाड़ी-स्थान है। यहाँ चाय बहुत पैदा होती है। बङ्गाल के गवर्नर महोदय गर्मियों में यहीं वास करते हैं।

देशी राज्य—

यद्यपि इस देश में कई छोटी छोटी रियासतें हैं, परन्तु उनमें शिकम और कूँडे की रियासत है। शिकम, नेपाल और भूटान के मध्य में पहाड़ी स्थान है। इसमें चावल, चाय और नारङ्गी

अधिक पैदा होते हैं। कूचविहार एक उत्तम राज्य है। त्रिपुरा का सम्बन्ध भी इसी प्रान्त से है।

१७—आसाम

इतिहास—

सन् १९१२ ई० में पूर्वी बङ्गाल और आसाम के प्रान्त में से पूर्वी बङ्गाल के जिले तो निकाल कर फिर बङ्गाल मे मिला दिये गये, और आसाम फिर पहिले जैसा स्वतन्त्र प्रान्त बना दिया गया। यह प्रान्त एक गवर्नर के आधीन है। इसके उत्तर में हिमालय पर्वत फैला हुआ है। आसाम-खास में गारू, खसिया, नागा और जयन्तिया की पहाडियाँ प्रसिद्ध हैं। ब्रह्मपुत्र इस प्रान्त की प्रसिद्ध और मुख्य नदी है। मेगना भी एक प्रसिद्ध नदी है। इस प्रकार इस प्रान्त के तीन प्राकृतिक भाग हो सकते हैं। (१) ब्रह्मपुत्र का बेसिन, (२) सिलहट का मैदान और (३) पहाड़ी देश।

जलवायु और उपज—

आसाम मे नदियों की अधिकता है, इसलिये यहां का जलवायु नम है। वर्षा भी अधिक होती है। साल भर में लगभग ८ महीने वृष्टि होती है। कड़ी गर्मी का यहाँ पता भी नहीं है।

यहाँ उन वस्तुओं की उपज अधिक होती है, जिनके लिये पानी और नमी की आवश्यकता है। चाय, चावल और लकड़ी अधिकता से पैदा होते हैं। जङ्गलो मे साखू और रवड़ के पेड अधिक हैं।

मनुष्य, उनकी भाषा और व्यवसाय—

यहाँ की भाषा आसामी और बङ्गला है। पहाड़ी जातियों की भाषा भी भिन्न है। यहाँ कालाज्वर का अधिक प्रकोप रहता है।

आसामी आलसी होते हैं। कदाचित् इसलिये संयुक्तप्रान्त के कुली चाय के बगीचों में भर्ती किये जाते हैं। यहाँ के लोगों का निवास अधिकांश गाँव ही में है। जिन्हें यहाँ नगर कहा जाता है वह हमारे प्रान्त के गाँवों से कुछ ही बड़े हैं। चाय की खेती इस प्रान्त का मुख्य व्यवसाय है। रेशम के बुनने का काम यहाँ की सब स्त्रियाँ करती हैं। प्रत्येक घर में एक कर्घा अवश्य रहता है। कुछ लोग लकड़ी से नावें बनाने में लगे रहते हैं।

राज्य-प्रबन्ध—

आसाम की घाटी मे आसाम के ७ जिले हैं—गारों की पहाड़ियाँ, ग्वालपाड़ा, कामरूप, दरॉग, नौगाँव, शिवसागर और लखीमपुर। छै जिले सुर्मा की घाटी और पहाड़ी स्थलों में हैं—सिलहट, कछार, खसिया, जैनतिया, नागा और लुशाई की पहाड़ियाँ।

प्रसिद्ध नगर—

सिलहट—आसाम की राजधानी है। नारङ्गी यहाँ की प्रसिद्ध है। यहाँ चूने का पत्थर भी निकलता है।

शिलॉग—खसिया की पहाड़ियों मे एक ऊँचा स्थान है। इस प्रान्त के गवर्नर गर्मियों मे यहीं निवास करते हैं।

चेरापूंजी—सारे संसार के स्थानों से यहाँ अधिक जलवृष्टि होती है।

गोहाटी, डिब्रूगढ और तेजपुर भी प्रसिद्ध नगर हैं।

आसाम के दक्षिण-पूर्व कोने पर मनीपुर का एक देशी राज्य है, जो इस प्रान्त से सम्बन्धित है।

१८—ब्रह्मा

अब थोड़ी देर के लिये हमें भारतवर्ष से बाहर ब्रह्मा जाना चाहिये, क्योंकि वह भी इसीके अन्तर्गत माना गया है। यद्यपि वह प्राकृतिकरूप से भारत से पृथक है, तथापि राजकीय नीति के अनुसार वह इसी का अङ्ग है। वास्तव में ब्रह्मा भारत गवर्नमेंट का विजय किया हुआ एक प्रान्त है, जो एक गवर्नर के आधीन है।

सीमा—

पश्चिम मे तो यह भारतवर्ष द्वारा स्थल से मिला हुआ है; परन्तु इसके और भारत के मध्य में बङ्गाल की खाड़ी भी उपस्थित है। उत्तर में तिब्बत और चीन के राज्य हैं। पूर्व में फ्रांसीसी इण्डोचीन और श्याम का राज्य और दक्षिण में बङ्गसागर है। इसका क्षेत्रफल २,६३,००० वर्गमील है। क्षेत्रफल के विचार से तो यह सब से प्रधान प्रान्त है।

धरातल—

इसका उपकूल कई स्थानों पर टूटा हुआ है और उस पर कई छोटे छोटे द्वीप हैं। मर्तबान की खाड़ी इसका प्रसिद्ध विभाजक है। पश्चिम की ओर एक पहाड़ी मैदान समुद्र मे बढ़ आया है, जिसका नाम 'निग्रेस अन्तरीप' है।

पर्वत और नदियाँ—

ब्रह्मा और भारत के मध्य में पर्वतों की दीवार खिंची हुई है। इन्हीं कारणों से भारत और ब्रह्मा में परस्पर का मेल मिलाप कम था। इसमें अराकानयोमा, तेनासरमयोमा, पीगूयोमा और टेन-नॉटिङ्ग की पहाड़ियाँ हैं।

ईरावदी—ब्रह्मा की प्रसिद्ध नदी है। इसके उद्गम स्थान का अभीतक पता नहीं चला है।

सालविन—दूसरे नम्बर की नदी है।

सिटाँग, कलदान उतरन और टवाई नदियाँ भी यहाँ बहती हैं।

यद्यपि यहाँ का जलवायु कुछ उष्ण है, परन्तु बङ्गाल से मिलता जुलता है। ईरावदी और उसकी सब से बड़ी सहायक नदी चिंदविन नदियों से ब्रह्मदेश को उतना ही लाभ पहुँचता है जितना कि संयुक्तप्रान्त और बङ्गाल को गङ्गा से। सालविन यद्यपि लम्बाई मे ईरावदी से बड़ी है, परन्तु उसके समान लाभ दायक नहीं।

जलवायु, उपज तथा व्यवसाय—

मानसून के पथ मे होने के कारण ब्रह्मा में जल-वृष्टि अधिक होती है, परन्तु पहाड़ों के बीच में होने से पूरब मे वर्षा कम होती है। यहाँ का जलवायु गरम है, परन्तु समुद्र तट पर वर्षा अधिक होने मे नम और नातिशीतोष्ण है। इस लिये धान, बाजरा, गेहूँ, तम्बाकू और रुई की पैदावार अधिक होती है। दक्षिण पश्चिम में जहाँ कृषि नहीं होती, सागौन की लकड़ी होती है। रबड़ के पेड़ जङ्गलों में बहुत होते हैं। कहीं कहीं सोने और नीलम की

खानें भी पाई जाती हैं। मिट्टी का तेल बहुत निकलता है और कारखानो में साफ करके पेट्रोल व मोमबत्ती वगैरह बनाई जाती है। रुई और रेशम के कपड़े बुने जाते हैं। इस देश का अधिकाश भाग अभी ऐसा ही खाली पड़ा है। यहाँ कृषि अच्छी हो सकती है।

मनुष्य और उनके धर्मादि—

देश वडा विस्तृत है, और जन-सख्या प्राय १,३२,१२,२१७ के लगभग है। यहां के निवासी आर्य्य-वश के नहीं हैं, किन्तु ये ब्रह्मी कहलाते हैं, और इनका धर्म बौद्ध है। ६ लाख के निकट यहां भारतीय सन्तान भी वसते हैं।

ब्रह्मा के जिलों और कमिश्नरियों का विवरण—

कमिश्नरी	जिले

(१) अराकान—अकयाव, उत्तरी अराकान, कनकपुर (क्यानकप्येर) और सण्डवाई।

(२) पीगू—शहर रगून, हाथावाड़ी, थारावाड़ी, पीगू और प्रोम।

(३) ईरावदी—वासिन, म्यौंगमया, माउबीना, हेन्दाजा और प्यापून।

(४) टनासरिम—रोगो, सालविन, थरटून, अम्हर्स्ट, टेवाई और मगोई।

(५) मिम्बू—थमेठमोई, पक्कक्रू, मिम्बू और मागवी।

(६) मॉडले—मॉडले, भामू, मेटीकेना, काथा और रुवीखान।

(७) मागेंग—शोपवू, मागेंग, लोअर चिंदविन और अपर चिंदविन।

(८) मेक्टला—उत्तरी शान, दक्षिणी शान, चीना पहाडी पक्कू, चीना पहाड़ी और करेने राज्य।

मनुष्य—

ब्रह्म देश—कृषि प्रधान है। इसमें बड़े और प्रसिद्ध नगर कम हैं। कला-कौशल का प्रचार कम होता जाता है। यही कारण है कि लोग नगरों में बसने की इच्छा नहीं करते। लकड़ी और बांस का बारीक काम यहां के निवासी अच्छा करते हैं जो बाहर के देहातो मे भी भेजा जाता है।

प्रसिद्ध नगर—

रगून—ब्रह्म देश की राजधानी है, और ईरावदी के तट पर बना हुआ है। भारतवर्ष में यह तीसरे नम्बर का बन्दरगाह है। धान से चावल निकालने के कई कारखाने हैं। बौद्धो का एक प्रसिद्ध और सुन्दर मन्दिर है, जिसको पेगोडा कहते हैं। इस नगर मे आधे से भी कम ब्रह्मा निवासी हैं। अधिकांश में भारत-वासी ही बसते हैं जो व्यापार करते हैं। यहां मिट्टी के तेल साफ करने के भी कई कारखाने हैं। सागौन की लकड़ी जगल में इकट्ठी की जाती है। यहां पर एक विश्वविद्यालय भी है।

प्रोम—ईरावदी के बांए तट पर एक रमणीक नगर है।

बिसेन—यहां से अन्य देशों को चावल भेजा जाता है।

मूलमिन—सालविन के सगम के निकट बसा हुआ है। यहां लकडी का व्यापार अधिक होता है।

अक्रयाव—अराकान के उपकूल पर चटगांव के दक्षिण चावलों की बडी मण्डी है।

मॉडले—रगून से ४०० मील उत्तर ईरावदी पर बसा हुआ है। कुछ दिनों तक यह ब्रह्मा की राजधानी थी। असली नगर में

आजकल छावनी है, जिसके चारों ओर एक पुष्ट दीवार बनी हुई है। देशी लोगों की आबादी इसके बाहर है। यहाँ के लकड़ी के चोटी वाले मकान अति मनोहर दीख पड़ते हैं।

आवा—पहले राजधानी था, परन्तु अब उजड़ गया है।

भामू—चीन की सीमा के निकट है, और बहुधा वहीं से अधिक व्यापार होता है।

देशी राज्य

ऐसे तो समस्त भारतवर्ष भर में लगभग ७०० देशी राज्य हैं जिनका क्षेत्रफल ६,७५,२६७ वर्गमील और जन संख्या ७,००,००,००० से अधिक है। इनमें दो प्रकार के राज्य हैं। प्रथम वह जो सीधे गवर्नर जनरल से सम्बन्ध रखते हैं। द्वितीय वह जो प्रान्तीय शासकों की निगरानी में हैं। प्रान्तीय सरकारों की निगरानी वाली रियासतों का विवरण प्रान्तिक विवरण में दे दिया गया है। परन्तु जिनका सम्बन्ध सीधे इम्पीरीयल-गवर्नमेंट से है उनकी तालिका अगले पृष्ठ में दी जाती है—

संख्या	राज्य का नाम	क्षेत्रफल वर्ग मील में	सन् १९११ ई० की जनसंख्या	राजधानी	शासककी उपाधि	... का शासक
१	कश्मीर	८४,२५८	३३,२०,५१८	श्रीनगर	महाराजा	राजपूत
२	राजपूताना	१,२८,९८७	९८ ४४,३८४	इसमें कई राज्य हैं, उनका विवरण पृथक दिया जायगा		"
३	मध्यभारत एजेंसी व ग्वालियर	७७ ८८८	९६,९७ ०२३ ३१ ८६,०७५	"	महाराजा	
४	बड़ौदा	८,१२७	२१,२६,५२२	बड़ौदा	"	महाराष्ट्र
५	हैदराबाद	८२,६९८	१,३४,७१,७७०	हैदराबाद	निजाम	सुन्नी मुसलमान
६	मैसूर	२९,४७५	५९,७८,८९२	मैसूर	महाराजा	क्षत्रिय
७	सिक्कम	२,८१८	८१,७२१	टमलांग	महाराजा	तिब्बतियन
	योग	४,१४,२४८	४,२८,९६,९०५			

१६—कश्मीर

स्थिति व धरातल—

कश्मीर भारतवर्ष का शिखर पञ्जाब-प्रान्त के ठीक उत्तर में स्थित है। इस राज्य में या तो पहाड़ हैं, अथवा झेलम और सिन्ध के बेसिन। इसके उत्तर-पूर्व मे कराकुरम, उत्तर मे हिन्दूकुश और मध्य मे हिमालय पहाड़ हैं। सिन्धुनद राज्य के मध्य मे होता हुआ बहता है। दक्षिणी भाग में झेलम भी बहती है। चिनाब का कुछ भाग भी कश्मीर मे पड़ता है।

कश्मीर का देश अति रमणीक और प्राकृतिक सौन्दर्य का जाज्वल्यमान उदाहरण है। मृत्युलोक में यदि कहीं वैकुण्ठ है, तो वह कश्मीर है।

पंडित श्रीधर पाठक ' कश्मीर—सुखमा ' मे लिखते हैं।

" यहीं स्वर्ग सुरलोक, यहीं सुर कानन सुन्दर।
यहीं अमर का लोक, यहीं कहुँ बसत पुरन्दर॥"

देश पहाड़ी होने के कारण शीत अधिक पड़ती है।

उपज और शिल्प—

कृषि-कार्य्य की पैदावार बहुत कम है, परन्तु झेलम की तराई में धान उपजता है। अँगूर, सेब, नासपाती, अखरोट और अन्य मेवे अधिक होते हैं। केसर तो कश्मीर के अतिरिक्त ससार में अन्य कहीं होता ही नहीं। यहाँ कुछ लोग लकड़ी के तख्ते जोड़ कर उस पर मिट्टी फैला देते हैं, और उसे नदी या झील में डाल देते हैं। वही उनका खेत है, उसी पर कुछ बो देते हैं जो अपने आप उगता और बढ़ता रहता है। इसी लिये प्रसिद्ध है कि— " कश्मीर में खेत चोरी जाते हैं।" यहाँ के निवासियों का ३ भाग

में तो मुसलमान हैं और ¼ अंश मे हिन्दू कश्मीरी लोग अपने हाथो की कारीगरी के लिये अति प्रसिद्ध हैं। इनके हाथो के बुने हुए गलीचे और दुशाले सारे ससार में प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखे जाते हैं। सोने चाँदी का काम भी उत्तम बनाया जाता है।

प्रसिद्ध नगर—

श्रीनगर—राजधानी है। यह झेलम की तराई में—नदी के दोनों तटों पर बसा हुआ है। नदियों पर लकडी के कई पुल हैं, और उनके किनारे नगर की शोभा अति विचित्र है। 'डल' नामक झील पर उत्तम उत्तम वाटिकाएँ लगी हुई हैं। इस झील के उत्तर में प्रसिद्ध "शालामार बाग" है। नगर के अधिक लोग नावों ही में वास करते हैं। यह नगर काश्मीरी कारीगरी का केन्द्र है। यहाँ रेशम का एक बड़ा भारी कारखाना हाल ही में जारी हुआ है। गर्मियो में महाराज-काश्मीर यहीं रहते हैं।

इस्लामाबाद—कारीगरों की बस्ती का कस्बा है।

जम्बू—राज्य के दक्षिण में एक ऊँचे स्थान पर बसा हुआ है। यहाँ के मन्दिर और महाराजा के राज-प्रासाद दर्शनीय है। जम्बू के नीचे 'तवी' नामक एक नदी बहती है। जाडों में महाराजा साहेब यहाँ ही रहा करते हैं।

गिलगत—उत्तरी सीमा के निकट है। गवर्नर-जनरल की ओर से एक एजेंट यहाँ रहता है।

लियह—उत्तर-पूर्व में उत्तरी तुर्किस्तान के व्यापारी मार्ग पर है।

२०—राजस्थान वा राजपूताना

भारतवर्ष के शूर वीर क्षत्रिय जाति के कर्मकाण्ड का यह प्रधान क्षेत्र है। इसीसे इसका नाम राजस्थान, राजपूताना आदि पड़ा है।

अजमेर के जिले को छोड़कर जो अङ्गरेजी राज्याधीन है, इसका शेष भाग देशी राज्यों में विभक्त है। यह देश पञ्जाब के दक्षिण और बम्बई तथा मध्य भारत के उत्तर मे स्थित है। इसके पश्चिम सिन्ध, पूर्व में संयुक्त प्रान्त और मध्य भारत है। इसका क्षेत्रफल १,२८,६८७ वर्गमील और जन सख्या ६८,४४,३८४ है।

धरातल—

इसके मध्य में अरावली पर्वत दक्षिण-पश्चिम से पूर्व उत्तर को चला गया है। यह पर्वत इसको दो स्वाभाविक भागों में विभाजित करता है। इस देश के उत्तर-पश्चिमी भाग मे एक विस्तीर्ण बालुकामयी मरुभूमि है जो कृषि कार्य्य के लिए उपयुक्त नहीं। भारत का प्रसिद्ध मरु भूमि, जिसका नाम 'थार' है, बड़ी भयानक है। इस भाग में केवल 'लोनी' नामक एक नदी है जो कच्छ की खाड़ी में गिरती है। राजपूताना में जयपुर के निकट 'साँभर' नामक एक झील है, जिससे बहुत सा नमक प्रति वर्ष तैयार किया जाता है।

अजमेर और मेरवाड़ा

राजपूताने के मध्य मे अजमेर और मेरवाड़ा नामक दो प्रान्त अङ्गरेजों के अधिकार मे हैं। इनका क्षेत्रफल २,७११ वर्ग मील है और जन सख्या सन् १६२१ ई० मे ४,६५,२७१ थी। राजपूताने की रियासतो का अफसर अजमेर और मेरवाड़े का भी शासक है और चीफ कमिश्नर कहलाता है। अजमेर का जिला मेरवाड़े से बड़ा है। इसमें एक खुली हुई बालुकामयी भूमि है। यहाँ के लोग प्राय भेड़ बकरी पाल कर अपना जीवन निवाहते हैं। राजपूताने पर निगरानी करने वाले पोलिटिकल एजेन्ट का मुख्य कार्य्यालय यहीं

है। यह नगर पहाड़ियों पर बसा है। 'पुष्कर' नामक हिन्दुओं का तीर्थ यहाँ ही है। अजमेर नगर में एक राज कुमार कालिज और राजपूताने और मध्य देश की रियासतों के शिक्षा के लिए एक नवीन 'बोर्ड' यहाँ पर स्थापित हुई है, जो एफ० ए० तक की शिक्षा का प्रबन्ध करती है। यहाँ की ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की कब्र प्रसिद्ध है।

पानी तो यहाँ बहुत ही कम मिलता है, क्योंकि यहाँ पहाड़ नहीं हैं। यहाँ ऊँट अधिकता से पाले जाते हैं। हिन्दुओं की आबादी यहाँ अधिक है, जिनमें राजपूत विशेष कर और उनकी भाषा हिन्दी है।

राजपूताने की समस्त रियासतें हिन्दुओं के अधिकार में हैं, परन्तु केवल टोंक का शासक मुसलमान है। ये सब राज्य बृटिश-गवर्नमेंट को कर देते हैं। गवर्नर जनरल की ओर से इन रियासतों पर एक एजेंट नियत है जो अजमेर में रहता है।

भरतपुर और धवलपुर के शासक जाट और टोंक के पठान हैं, परन्तु अन्य १२ रियासतें राजपूतों की हैं। इनके अतिरिक्त प्रतापगढ़, आवा, शाहपुरा और किशनगढ़ की छोटी रियासतें भी हैं।

जयपुर—

जयपुर का राज्य राजपूताने में सब से अधिक आबाद है। यद्यपि क्षेत्रफल में यह सब से अधिक नहीं तथापि ख्याति और सभ्यता के कारण अति विख्यात है। इस राज्य में ताँबे और संगमरमर की खानें हैं। जयपुर बड़ा ही सुन्दर नगर बसाया हुआ है। इसकी सड़कें बड़ी चौड़ी और बाजार बड़े स्वच्छ हैं। भवन और अन्य गृह बड़े सुन्दर और विशाल बने हैं। सवाई

जयसिंह यहाँ के प्रसिद्ध शासक थे, जिनकी बनवाई हुई यहाँ एक वेधशाला है। यहाँ के अद्भुतालय और कारखाने प्रसिद्ध हैं।

उदयपुर–

उदयपुर या मेवाड़ का पुराना नाम चित्तौर है। भारतवर्ष में राजपूतों की सब से बढ़ कर मान मर्य्यादा रखने वाला राज्य यही है। यहाँ के अधिपति बापा रावल की सन्तति हैं। राना सांगा, राना प्रताप, राना राजसिंह आदि भारत के गौरव स्वरूप वीरों ने चित्तौर की ही पवित्र भूमि पर जन्म-ग्रहण किया था। यह राज्य पहाड़ी है। उदयपुर नगर आजकल राजधानी है, और बड़ा रमणीक है। इस नगर के पश्चिम में एक बनावटी झील है जिसमें सगमरमर की बनी हुई एक अति शोभायमान कोठी है। इस नगर से थोड़ी ही दूर पर चित्तौर का प्रसिद्ध ऐतिहासिक दुर्ग है। उदयपुर से २४ मील की दूरी पर गन्धक और लोहे की खानें हैं।

जोधपुर–

जोधपुर राठौर-क्षत्रियों की राजधानी है। इसके शासक कनौजवाले महाराज जयचन्द्र के वंशज हैं। इस राज्य में सगमरमर की खानें अधिक हैं, और यहाँ की भूमि ऊसर और बंजर है। सिन्ध की मरु भूमि का अधिकांश इसी राज्य के अन्तर्गत आ गया है। यद्यपि इसका क्षेत्रफल अधिक है, परन्तु आबाद और उपजाऊ कम है। इसीलिये इस राज्य का नाम 'मारवाड़' है। जोधपुर इसकी राजधानी है जो मध्य में बसी है।

बीकानेर और जैसलमीर–

बीकानेर और जैसलमीर के राज्य जोधपुर की भाँति मरु भूमि के अन्तर्गत हैं। उत्तर में बीकानेर और दक्षिण में जैसल-

मीर है। यद्यपि उनका विस्तार अधिक है,-परन्तु वञर और बालुकामयी होने के कारण बसे कम हैं।-जैसलमीर मे वर्षा कम होती है, और कुएँ भी गहरे हैं, इसलिये कृषि कम होती है। बीकानेर नामक नगर अपने राज्य की राजधानी है। इस राज्य में भुटनियर का दुर्ग बहुत पुराना और मजबूत बना हुआ है। जैसलमीर की राजधानी जैसलमीर नामक नगर है।

भरतपुर–

यह राज्य जयपुर के उत्तर-पूर्व जाटों के अधिकार में है। इसका प्रसिद्ध दुर्ग सन् १८२६ ई० में अङ्गरेजों के अधिकार में आया था। 'डीग' में लाल-पत्थर की खानें हैं।

धौलपुर–

यह चम्बल नदी के तट पर बसा हुआ है। इसके स्वामी भी जाट हैं। धौलपुर एक पुराना नगर है। इस राज्य मे लाल पत्थर का एक पहाड़ कई मील के घेरे में है।

सिरोही–

यह एक छोटा सा इलाका है। इसके अन्तर्गत आबू नामक पर्वत जैनियो का प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। इस पर ऋषभ देव जी का मन्दिर १८ करोड़ रुपये की लागत मे बना है, जो कि ताज महल के टक्कर की इमारत है। राजपूताने के एजेंट गर्मियों मे यहाँ रहते हैं।

अन्य छोटी-छोटी रियासतों में कोई विशेष बात उल्लेखनीय नहीं है।

२१–मध्यभारत-एजेंसी राज्य

मध्य भारत में भी देशी राज्यों का एक समूह स्थित है। इसमें १४३ राज्य हैं, जिन पर गवर्नर-जनरल की ओर से एक एजेंट

नियत है। इन राज्यों का क्षेत्रफल ७७,८८८ वर्गमील और सन् १६२१ की जन-सख्या ६१,२०,३३६ है। सयुक्त-प्रदेश के झाँसी डिवीजन से इन राज्यों के दो भाग हो जाते हैं। इन में विन्ध्याचल और सतपुरा का कुछ भाग आ जाता है। मध्य में मालवे की ऊँची भूमि है। पूर्वी भाग में कैमूर की पहाडियाँ हैं। चम्बल, सोन और नर्मदा नामक नदियाँ इस प्रान्त के अन्तर्गत बहती हैं। यहाँ वर्षा अधिक होती है। जल वायु राजपूताने से उत्तम है। कृषि अच्छी होती है। रुई और ऊख की पैदावार अधिक है। यहाँ का अफयून बड़ा प्रसिद्ध है। कहीं कहीं लोहे और कोयले की खानें भी हैं।

यहाँ हिन्दुओं की सख्या अधिक है। भाषा हिन्दी है। भारत के प्राचीन निवासी गोड और भील इसके पहाड़ी प्रान्तों में निवास करते हैं।

कुल रियासतो के लिये नौ एजेंसियाँ स्थापित हैं। इनके नाम यह हैं—(१) इन्दौर (२) भील वा भूपावार (३) डिप्टी भील (४) पश्चिमी मलावा (५) भूपाल (६) ग्वालियर (७) गोर्नो (८) बुन्देलखण्ड (६) बघेलखण्ड।

इनमे ग्वालियर, इन्दौर, भूपाल और रीवाँ के राज्य बड़े हैं।

छोटे राज्यों में रतलाम, धार, जावड़ा, पन्ना और ओरछा प्रसिद्ध हैं।

मध्य भारत की रियासतों में ग्वालियर प्रधान है। यहाँ के शासक महाराष्ट्र वंशज हैं, जिन्हें सिन्धिया कहते हैं। इनकी राजधानी ग्वालियर है, जो मध्य-भारत में एक प्रधान नगर है। ग्वालियर का पहाड़ी दुर्ग अति प्रसिद्ध है, यह १½ मील लम्बा और प्राचीन बना हुआ है। यहाँ एक ऐसा महल है, जो प्राचीन

शिल्पकारी का प्रधान उदाहरण कहा जा सकता है। ग्वालियर में जैनियों के बहुत से मंदिर हैं। इसके उत्तर-पश्चिम में भारत के प्रसिद्ध सम्राट् महाराज विक्रमादित्य की राजधानी प्राचीन उज्जैन नामक नगरी वर्तमान है। यह हिन्दुओं का पवित्र तीर्थ स्थान है, और प्राचीन काल में ज्योतिष विद्या का केन्द्र था। उज्जैन के उत्तर नीमच में अङ्गरेजों की छावनी है।

इन्दौर—

यहाँ के महाराज 'होल्कर' कहलाते हैं। इस राज्य में चम्बल और नर्मदा नामक नदियों से बड़ा लाभ पहुँचता है। इसी कारण यहाँ की भूमि बड़ी उर्वरा है। रुई और अफयून यहाँ अधिक पैदा होते हैं। इस राज्य की राजधानी 'इन्दौर' उज्जैन के उत्तर में बसी है। यह नगर बड़ा धनवान और सम्पत्तिशाली है। गवर्नर जेनरल के एजेंट यहीं रहते हैं। इसके निकट 'महू' एक प्रसिद्ध छावनी है।

भूपाल—

इस राज्य की राजधानी इसी नाम का नगर है। भूपाल ताल के सम्बन्ध में प्रसिद्ध है, "ताल तो भूपाल ताल और सब तलैयाँ"। शहर के चारों ओर शहरपनाह की दीवार बनी हुई है। इसी के पास सिहोर की छावनी है।

रीवाँ—

यह राज्य भी मध्य भारत में बहुत प्रसिद्ध है। यहाँ के महाराजा परम वैष्णव हैं। महाराजा रघुराज सिंह हिन्दी के प्रसिद्ध कवि हो गए हैं। इस राज्य की राजधानी रीवाँ नामक एक नगर है, परन्तु सतना भी मशहूर है। अमरिया के निकट कोयले की एक बड़ी खान है। आरम्भ में ब्रिटिश गवर्मेंट और रीवाँ राज्य के

मध्य ऐसा समझौता हुआ था कि जिससे रीवाँ राज्य को कुछ वार्षिक धन मिलता था।

पन्ना राज्य में हीरे और पन्ने की खानें हैं। टिहरी के राजा बुन्देल-राजपूतों के सर्दार माने जाते हैं।

२२—बरौदा

महाराजा गायकवाड़ का राज्य गुजरात और काठियावाड़ के विभिन्न भागों में फैला हुआ है। इसका क्षेत्रफल ८,१२७ वर्ग मील है और सन् १९२१ ई० में २१,२६,५२२ जन संख्या थी। भारतवर्ष भर में इस राज्य की दशा सर्व-प्रधान है। किसी किसी विषयों में—जैसे अनिवार्य शिक्षा, पुस्तकालय (Libraries) निःशुल्क विद्यादान, बाल विवाह और बहु विवाह-निषेध, शासन में प्रजा का स्वत्व, स्वराज्य और अन्य सभ्य देशों की रीति रवाज में—यह अङ्गरेजी राज्य से भी बढ़ा हुआ है। वर्तमान शासक समस्त भारतवर्ष मे बड़े आदर और प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखे जाते हैं। लोग उनको अपना अग्रणी समझते हैं। जिन राज्यों ने महा राज बरौदा का अनुकरण किया है, उनका दर्जा भी अब अच्छा गिना जाता है। इस राज्य में ४ किस्मतें और ३१ जिले हैं। कमिश्नरियों के नाम—(१) कादी वा उत्तरी भाग (२) बरौदा वा मध्यभाग (३) नौसारी वा दक्षिणी भाग (४) उमरेली वा पश्चिमी भाग। केवल उमरेली काठियावाड़ मे है, और शेष सब गुजरात में।

धरातल, जलवायु और उपज—

राज पीपला के अतिरिक्त कोई पहाड या पहाड़ी इस राज्य में नहीं है। साबरमती, माही, नर्मदा, ताप्ती और पूर्णा नामक

नदियाँ इस राज्य में होकर बहती हैं। यहाँ का जल-वायु भी विभिन्न दशा का है। (चावल, ज्वार) रुई, तम्बाकू, अफीम, ऊख और तेलहन की फसलें खूब होती हैं। यहाँ के लोगों का भोज्य पदार्थ बाजरा, गेहूँ और चावल है। उत्तरी भाग के धवले बैल और कठियावाड़ के घोड़े भारत भर में प्रसिद्ध हैं। इस राज्य की भाषा गुजराती है और प्रजा हिन्दू। महाराज को हिन्दी, महाराष्ट्र और संस्कृत से बड़ा प्रेम है।

प्रसिद्ध नगर—

बरौदा—बम्बई भर में प्रान्त तीसरे और गुजरात देश में दूसरे नम्बर का नगर समझा जाता है। बड़ौदा नगर गायकवाड़ राज्य की राजधानी है जो स्वामैत्री नदी पर बसा हुआ है। यहाँ मल्हारराव और खंडेराव के बनवाए हुए नसीर बाग और मकनपुरा के महल, सोने चाँदी की तोपें और पशुशाला दर्शनीय हैं।

नौसारी—पारसियों के पुजारियों का प्रसिद्ध स्थान है। यहाँ के हवनकुण्ड में सदैव अग्नि प्रज्वलित रहती है। पारसियों के पुजारी जब यहाँ से प्रतिष्ठा-पत्र पा जाते हैं, तब योग्य समझे जाते हैं।

बडनगर और विष्णुनगर दो ऐसे शहर हैं, जिनके नाम पर नागर ब्राह्मणों की दो श्रेणियाँ हुई हैं।

द्वारका—ओखा मण्डल जिले में हिन्दुओं का प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है।

डसिया—प्रसिद्ध छावनी है।

२३—हैदराबाद

भारतवर्ष के समस्त देशी रियासतों में हैदराबाद का स्थान ऊँचा है। यद्यपि क्षेत्रफल के विचार से कश्मीर बड़ा है, परन्तु वह पहाड़ी है और हैदराबाद उर्वरा भूमि। यहाँ का क्षेत्रफल ८२,६६८ वर्गमील है, जो बिहार और उड़ीसा प्रान्त के बराबर है, और सन् १९२१ मे उसकी आबादी १,२४,७१,७७० थी, जो मध्य प्रान्त और बरार से कुछ ही कम है। इस राज्य का सम्बन्ध सीधे गवर्नर जनरल से है। यहाँ का शासक निजाम कहलाता है, क्योंकि मुगल राज्य के पिछले दिनो मे दक्षिण के सूबेदार निजामुलमुल्क स्वतन्त्र हो गए थे। आज तक उन्हीं के वंशधरो मे हैदराबाद का राज्य है। शिक्षा प्रचार के लिए राज्य मे एक विश्वविद्यालय स्थापित किया गया है जिसमे उर्दू द्वारा उच्च शिक्षा देने का प्रबन्ध है।

धरातल व जलवायु—

यह राज्य दक्षिण के ऊँचे मैदान पर, जो समुद्र धरातल से १,२५० फीट ऊँचा है, अवस्थित है। इसमें कहीं कहीं पहाड़ियाँ भी हैं। एजन्टा की पहाड़ी दूर तक फैली हुई है। गोदावरी, कृष्णा, तुङ्गभद्रा और भीमा नामक नदियाँ इस राज्य में होकर बहती हैं। जल वायु शुष्क और उत्तप्त है, परन्तु भूमि ऊँची है, इसलिये उष्णता मध्यम पड़ जाती है। वर्षा समान भाग से होती है, ३० इञ्च का औसत है।

धर्म्म व भाषा—

यद्यपि यह मुसलमानी राज्य है, परन्तु यहाँ पर ९० प्रतिशत हिन्दू रहते हैं। यहाँ तीन भाषाएँ बोली जाती हैं, पश्चिम मे महाराष्ट्र, दक्षिण में कनारी और दक्षिण पूर्व में तेलगू। यद्यपि यहाँ के

शासक बड़े उदार हैं, परन्तु यहाँ की प्रजा शिक्षा में बहुत पिछड़ी हुई है।

उपज—

ज्वार, बाजरे के अतिरिक्त यहाँ महुआ अधिक पैदा होता है। तेलहन, नील और ऊख भी पैदा होते हैं। हैदराबाद के खरबूजे, अनन्नास और दौलताबाद के अंगूर दूर दूर तक प्रसिद्ध हैं।

अंग्रेजी प्रदेश की भाँति इस राज्य में ५ कमिश्नरियाँ और १० जिले हैं।

प्रसिद्ध नगर—

हैदराबाद—निजाम राज्य की राजधानी है। यह नगर सन् १५८९ ई० में मूसा नदी के तट पर 'भाग नगर' के नाम से बसाया गया था। इसकी जन संख्या ४ लाख से अधिक है। निजाम के भवन, रेजीडेंसी और बहुत सी मसजिदें देखने योग्य हैं। यहाँ ओस्मानिया विश्वविद्यालय है।

गोलकुण्डा—हैदराबाद से ७ मील पश्चिम प्राचीन गोलकुण्डा राज्य की राजधानी था। यहाँ के किले में निजाम का कोष रहता है।

सिकन्दराबाद—यहाँ 'हुसैनसागर' कई मील के घेरे में बनाया गया है।

बिलारम—यहाँ निजाम की फौज रहती है।

दौलताबाद के लिये दिल्ली उजाड़ने की कहावत ऐतिहासिक घटना है।

एलोरा और अजंटा—यहाँ की गुफाएँ संसार-प्रसिद्ध हैं। सन् १८०३ ई० में असाई के मैदान में जनरल वेलजली ने सिन्धिया और भोसला की सेनाओं को परास्त किया था।

नान्देन—यहां सिक्खों के एक गुरु मारे गये थे।

इस राज्य मे—वारंगल, बीदर, गुलबर्गा और औरङ्गाबा की पुरानी राजधानी के खंडहर अब तक वर्तमान हैं।

२४—मैसूर

दक्षिण-भारत में दूसरा प्रधान देशी राज्य जिसका सम्बन्ध गवर्नर जनरल से है—मैसूर है। इसके लगभग चारों ओर मद्रास का प्रदेश फैला हुआ है, परन्तु उत्तर की ओर इसका बम्बई से भी लगाव है। यहां का क्षेत्रफल २९,४७५ वर्गमील और सन् १९२१ में जन संख्या ५९,७८,८९२ थी—अर्थात् हैदराबाद से यह विस्तार में ½ परन्तु जन सख्या में ½ और शिक्षा और कला-कौशल मे तो उससे कई गुना बढ़ कर है। बड़ौदा के पश्चात् यही राज्य वर्तमानस्थिति मे अग्रणी है। इसके शासक भी बड़े उदार और विद्या प्रेमी हैं। सन् १७९९ ई० में टीपू के कुटुम्ब के नाश होने पर अङ्गरेजों ने मैसूर का राज्य फिर पुराने हिन्दू-घराने को सौंप दिया। इस राज्य मे तीन कमिश्नरियां और ८ जिले हैं।

सीमा, धरातल और उपज—

पूर्वी-घाट, पश्चिमी-घाट और नीलगिरि के सीमा के मध्य में इस राज्य की स्थिति है। इसके उत्तर में तुङ्गभद्रा और दक्षिण में पालार, दक्षिणी पनार और कावेरी से सिञ्चित होता है। इस राज्य की भूमि ऊँची है, अत वहां का जलवायु समानरूप से साधारण है; परन्तु पश्चिम मे अधिक जल गिरता है। मडु वा, तम्बाकू, धान, ऊख, रुई, कहवा और इलायची यहां अधिक पैदा होते हैं। चन्दन भी यहां ही से भारतवर्ष के सभी भागो में भेजा जाता है भारतवर्ष में सब से बड़ा रेशम का कारखाना यहां पर

स्थित है। राज्य में सोने की खानें भी हैं। 'सेजीकार' नामक तालाब ४० मील की परिधि में है। यहाँ की प्रजा हिन्दू है और उनकी भाषा कनारी।

प्रसिद्ध नगर—

बङ्गलौर—सब से बड़ा नगर है। यहाँ का जल-वायु स्वास्थ्य-कर है। यहाँ एक छावनी है। रेज़ीडेंट साहब का हेड क्वार्टर यहीं है। यहाँ बहुत से रमणीय बाग हैं। सूती और ऊनी कपड़ा बहुत बुना जाता है।

मैसूर—राज्य की राजधानी और महाराजा का निवास-स्थान है।

श्रीरङ्गपट्टम—कभी मैसूर की राजधानी था।

कोलार—यहाँ सोने की खान है। यहाँ कावेरी नदी के जल-प्रपातों से विद्युत्-शक्ति एकत्रित किये जाने का एक कारखाना भी है।

२५—कुर्ग

मैसूर के पास ही १६०० वर्गमील का एक इलाका वृटिश-राज्याधिकार में है। मैसूर का रेज़ीडेन्ट इसका चीफ कमिश्नर है। यद्यपि यहाँ वर्षा अधिक होती है, तथापि भूमि पथरीली होने के कारण खेती अच्छी नहीं हो सकती। इस इलाके में 'मरकरा' नामक नगर प्रधान है। पहले यह इलाका एक देशी राजा के अधिकार में था, जो प्रजा पर अधिक अत्याचार करता था, अत सन् १८३४ ई० में वृटिश सरकार ने इस राज्य को अपने आधीन कर लिया।

स्वतन्त्र-राज्य

२६—नैपाल

सीमादि—

नैपाल के उत्तर में तिब्बत, पूर्व मे सिकम और दार्जिलिङ्ग का जिला, दक्षिण मे बङ्गाल, बिहार और सयुक्त देश और पश्चिम में अलमोड़ा है। इसकी लम्बाई पूर्व से पश्चिम तक ५०० मील, चौड़ाई उत्तर से दक्षिण तक ६० से १४० मील तक है। क्षेत्रफल ५४,००० वर्गमील और सन् १९२१ ई० मे जन-सख्या ६५ लाख के निकट थी।

धरातल व जलवायु—

नैपाल का दक्षिणी देश तो तराई है, यहाँ धान की पैदावार अधिकता से होती है, और उत्तरी-भाग पहाड़ी है। नैपाल के पश्चिमी-भाग का जल सारदा नदी मे वह जाता है। घाघरा, गडक और कोसी नदियाँ नैपाल मे पहाड़ो को काट कर प्रविष्ट हुई हैं। राप्ती नदी के कारण इसके और भी दो भाग हो जाते हैं, एक का नाम राप्ती का बेसिन और दूसरा काठमांडू नाम से प्रसिद्ध है।

यहाँ का जल-वायु ठढा है, परन्तु तराई में सयुक्त-प्रान्त की तराई के समान है।

नैपाल की तराई और उसके पहाड़ों से तूतिया, बड़ी इलायची, मोम, मधु, चमडा, सींग, हाथीदात, सुहागा और कस्तूरी बाहर जाने वाले पदार्थ हैं। तराई मे हाथी और उत्तरी पहाड़ों

से व्यापार के लिये टट्टू दूसरे देशों को भेजे जाते हैं। पहाड़ों में लोहे, तांबे, सीसे, गन्धक और सखिया की बहुत सी खानें हैं।

मनुष्य, उनके धर्म्म व राज्य-प्रबन्ध—

उत्तरी पहाड़ों के निवासी भोटिया या तातारी और भारतीय वंशज हैं। गोरखा उन भागे हुए ब्राह्मणों और राजपूतों की सन्तान हैं जो मुसलमानों के उत्पात के समय नेपाल में भाग कर बस गये थे। यहाँ का शासन इन्हीं के हाथों में है। मध्य-नेपाल की प्रजा नेवार, तातारी वंश से सम्बन्ध रखते हैं। भोटिया और नेवार बौद्ध-धर्म को मानते हैं, परन्तु अब यह सनातन-धर्म को अधिक पसन्द करने लगे हैं। गोरखा, पर्वतियों और नेवारों से भिन्न भाषा बोलते हैं; परन्तु नेपाल में हिन्दी समझी जाती है।

इस राज्य के राजा तो नाम मात्र के हैं, प्रधान शासक मन्त्री ही को समझना चाहिये। ब्रिटिश गवर्नमेंट का रेजीडेंट तो रहता है, परन्तु यह राजकीय प्रबन्ध में काट-छाँट नहीं कर सकता और न रेजीडेंट के स्टाफ के अतिरिक्त कोई अन्य अङ्गरेज नेपाल राज्य में जा ही सकता है। यही कारण है कि यहाँ का हाल बहुत कम विदित है। भारत सरकार दस लाख रुपया प्रति वर्ष नेपाल सरकार को उनकी महायुद्ध में सहायता के बदले में देती है।

प्रसिद्ध नगर—

काठमाण्डो—राजधानी है, और यहीं अंग्रेजों का रेजीडेंट रहता है। यहाँ से होकर तिब्बत को एक पहाड़ी मार्ग जाता है। ललितापट्टन पुराने नेवार राजाओं की राजधानी था। सन् १७६८ ई० में इसे नेपालियों ने अपने अधिकार में कर लिया।

ललितापट्टन और भट गाँव—काठमाण्डों की तराई में बसे हैं।

२७—भूटान

धरातल—

एक और स्वतन्त्र राज्य पूर्वीय हिमालय मे सिकम के पूर्व अवस्थित है, जिसका नाम भूटान है। समस्त देश पहाड़ी है। क्षेत्र फल १६,८६२ वर्गमील है। हिमालय की प्रसिद्ध चोटी 'चोमा लारी' इसी राज्य के अन्तर्गत है। इसमें दो पहाड़ी श्रेणियाँ हिमालय के समानान्तर चली गई हैं, जिनमें से एक तो ८,००० फीट और दूसरी इससे कुछ कम ऊँची है। इनके अधोभाग मे कुछ बड़े बड़े गाँव अवश्य बसे हैं। दूसरी श्रेणी के पूर्व में चौरस मैदान है। इसके दक्षिण में एक अति उर्वरा भूमि है, जिनको सन् १८६६ ई० से बृटिश गवर्नमेंट ने कुछ वार्षिक कर देकर ले लिया है।

यहाँ एक ही दिन के मार्ग में साइबेरिया की (भाँति की) सर्दी और अफ्रीका के (समान) गर्मी का अनुभव हो जाता है।

उपजादि—

चावल, गेहूँ और बाजरा यहाँ अधिक पैदा होते हैं। जङ्गलों में वन्य-पशुओं की अधिकता है। भेड़ और टांघन पालतू पशु हैं। भूटान का व्यापारिक सम्बन्ध बङ्गाल आसाम से है। घोड़े, कस्तूरी और नारङ्गी के बदले में ऊनी और सूती कपड़े, मसाला चाय और सोना मिलता है। लगान में यहाँ के निवासी नाज देते हैं।

नुष्य और प्रसिद्ध नगर—

भोटिये यहां के निवासी हैं। इनका धर्म बौद्ध है। रङ्ग इनका धिला होता है। इसकी जन संख्या १ लाख के लगभग है। इन ी भाषा तिब्बती और हिन्दी के मिश्रण से बनी है।

पनाखा—यहां की राजधानी है।

तोगसू—आसाम और लासा के मार्ग पर स्थिति है।

२६—पुर्चगीज़ राज्य

ाम	स्थिति	क्षेत्रफल वर्गमील में	जन संख्या	व्यवस्था
गोवा	बम्बई के दक्षिण में	१,३०१	५,३२,०८२	गोवा में पुर्तगाल की ओर से एक गवर्नर जेनरल रहता है। प्राय पाँच साल में उसकी बदली होती है। गोवा का नया शहर 'पचम' कहलाता है।
डामन	गुजरात के किनारे	२२	१८,३०७	
द्यू	काठियावाड के किनारे पर एक टापू है	२०	१५,१०८	
	योग	१,३४३	५,६५,४६७	

X

२०—फ्रांस के अधिकार में

नाम	स्थिति	क्षेत्रफल	जन संख्या	व्यवस्था
यनाम	गोदावरी के डेल्टा के किनारे पर			यह उपनिवेश २० मेम्बरों की सर्व्व-साधारण सभाओं में विभक्त है, और एक साधारण निर्वाचित समिति भी स्थापित है। प्रबन्ध के लिये एक गवर्नर और उनके सहायतार्थ एक मन्त्री, और एक न्यायाध्यक्ष हैं। ये सब पांडेचेरी में रहते हैं। यहां की प्रजा के एक ऐसा अधिकार प्राप्त है जो उदार बृटिश सरकार की भारतीय प्रजा को अभी मिलना बाकी है, अर्थात् फ्रांसीसी प्रजा अपनी ओर से दो प्रतिनिधि फ्रांस की पार्लीयामेंट में भेजती है।
माही	मालाबार के किनारे	२०३ वर्गमील	२८०,०००	
कारीकाल	कारोमडल के किनारे पर			
पांडेचेरी	”			
चन्द्रनगर	कलकत्ते के पास			

योरप का महाद्वीप

पृथ्वी के नकशे में स्थल का सबसे बड़ा टुकड़ा 'यूरेशिया' Eurasia कहलाता है। इसके पूर्वी भाग का महाद्वीप 'एशिया' और पश्चिमी भाग को प्रायद्वीप योरप कहते हैं। यद्यपि आस्ट्रेलिया के सिवाय अन्य सब महाद्वीपों से क्षेत्रफल में वह लघु है, तथापि आज कल विद्या, धन, शौर्य, प्रताप, व्यापार, कला कौशल, सभ्यता, कूटनीतिज्ञता, रणप्रियता और यावत् मानुषी और अमानुषी शक्तियों में सारे संसार में दीर्घ है। भूमण्डल में कोई देश ऐसा नहीं जहाँ योरप के किसी न किसी राज्य का अधिकार न हो। रेल, तार, जहाज मोटर और हवाई जहाज भाँति भाँति की कलें सब से प्रथम इसी महाद्वीप में बनाई गई हैं।

योरप की इस उन्नति का कारण उसकी भूगोलिक दशा और बनावट है, अर्थात् यह महाद्वीप पृथ्वी के समस्त स्थल भाग के मध्य में पड़ता है, केवल आस्ट्रिया, हंगारी, जेको स्लोवेकिया और स्विटजरलैंड ही ऐसे राज्य हैं, जो समुद्र से अधिक दूर हैं, नहीं तो अन्य समस्त छोटे बड़े यूरोपीय राज्य समुद्र से सम्बन्धित हैं।

योरप का मानचित्र देखने से पता चलता है कि स्थलभाग में भी दूर दूर तक समुद्र घुस गया है। यूरेशिया की पर्वत माला और मालभूमि के वर्णन करते समय हमने बताया था कि यूरोप और एशिया के मध्य में पूर्व से पश्चिम तक एक पर्वत श्रेणी कुछ चक्राकार चली गई है। इसी का नाम भिन्न भिन्न देशों में विविध प्रकार से प्रसिद्ध है।

उसी प्रकार फैला है, जैसे एशिया मे। बड़े बड़े पहाड़ों के नाम आगे दिये गये हैं।

आल्प्स—योरप मे सब से ऊँचा पहाड़ है। यह इटली, आस्ट्रिया और स्वीटजरलैंड तक फैला हुआ है। इसकी सबसे ऊँची चोटी 'मौंट ब्लैंक' है जो बारह हजार फीट ऊँची है। इस चोटी से ऊँचाई में बढ़ कर योरप मे कोई अन्य चोटी नहीं है। आल्प्स की एक श्रेणी इटली को चली गई है।

बालकन्स—यह पर्वत काला सागर और एड्रियाटिक सागर के बीच की भूमि मे फैला है। इसकी एक श्रेणी पिंडस तो यूनान में है और दूसरी कारपेथियन आस्ट्रिया मे फैली हुई है।

आल्प्स और बालकन्स के पहाड़ डिनारिक रोहिटक से मिलते हैं।

पीरीनीज—फ्रांस और स्पेन की सीमा पर है।

नेवादा—स्पेन के दक्षिण मे है।

स्कैंडीनेविया की पहाड़ियाँ—नार्वे और स्वीडन के बीच मे हैं।

(ब) ज्वालामुखी पर्वत

विसूवियस—इटली मे।

एटना—सिसली मे।

स्ट्राम्बोली—दक्षिणी सिसली में।

हेकला—आइसलैंड में।

३—नदियाँ

योरप की जल विभाजक रेखा जिब्राल्टर से लेकर यूराल पहाड़ तक चली गई है। प्राय यहाँ की नदियाँ इसी कारण पहिले

दो तरफ बहती हैं—पहिली उत्तर-पश्चिम की ओर, और दूसरी दक्षिण पूर्व की ओर।

१—निम्न नदियाँ उत्तर पश्चिम को चलती हैं.—

ग्वाडलक्वरी—स्पेन के दक्षिण ओर होती हुई ऐटलाटिक महासागर में गिरती है।

टेगस—स्पेन और पुर्तगाल में होती हुई ऐटलाटिक महासागर से मिलती है।

गारोनी और लुआयर—फ्रांस से होती हुई बिस्के की खाड़ी में गिरती हैं।

राइन—जर्मनी और हालेन्ड में बहती हुई उत्तरीसागर में गिरती है।

एल्बो—जर्मनी में होती हुई उत्तरी सागर मे गिरती है।

विश्चुला—रूस और प्रशा को सींचती हुई बाल्टिक सागर मे पहुँच जाती है।

२—निम्न नदियाँ दक्षिण पूर्व को चलती हैं—

वाल्गा—रूस मे बह कर कास्पियन सागर में गिरती है।

डन और नीपर—रूस में बहती हुई बालकन सागर मे गिरती हैं।

डेन्यूब—जर्मनी, आस्ट्रिया, हंगारी, युगोस्लेविया और रूमेनिया और बलगेरिया की सरहद पर होती हुई काले-सागर में गिरती है।

पो—इटली के उत्तर होती हुई एड्रियाटिक सागर में गिरती है।

रोंयन—फ्रांस में बह कर रूम-सागर में गिरती है।

नोट—योरप में वाल्गा सब से बड़ी नदी है फिर डेन्यूब का नम्बर है। मध्य योरप में राइन प्रसिद्ध है।

४—जल-वायु और वर्षा

योरप का जल-वायु एशिया की अपेक्षा शीतल है, परन्तु एक ओर की सीमा के देश से दूसरी ओर की सीमा के प्रान्त के जल-वायु में बड़ा अन्तर है, क्योंकि (१) ऐटलाण्टिक महासागर में गल्फस्ट्रीम चलते हैं (२) ऊँचे ऊँचे पहाड़ हैं (३) उत्तरी ध्रुव की समीपता से अन्तर पड़ गया है।

योरप में साल भर के भीतर कई बार वर्षा होती है। यहाँ वर्षा की कोई विशेष ऋतु नहीं है। नार्वे और ब्रिटानिया में अच्छी वर्षा हो जाती है। रूम-सागर के निकट भी जल बरसता है।

५—जाति-भेद

आयरलैंड, वेल्स, स्काटलैंड और इङ्गलैंड के रहनेवाले केल्ट नस्ल के हैं। जर्मनी, हालैंड, बेलजियम, डेन्मार्क, नार्वे और स्वीडन के रहनेवाले ट्यूटौनिक, रूस, पोलैंड, रूमानिया पूर्वी आस्ट्रिया, और बोहेमिया के अधिक वाशिन्दे, दक्षिणी आस्ट्रिया, हंगारी युगोस्लेविया और बलगेरिया के स्लेवोनिक , यूनान, इटली, स्पेन, पुर्तगाल और फ्रांस के रोमेनिक जाति के हैं। योरप के निवासी ईसाई धर्म्मावलम्बी हैं, परन्तु टर्की के रहने वाले तुर्क मुसलमान हैं। कुछ यहूदी भी हैं। साराश यह कि यूरोपियन काकेशियन वंशज हैं।

६—राज-प्रबन्ध के अनुसार देश का विभाग

गत महायुद्ध के पश्चात् योरप में ३० से भी अधिक छोटे बड़े राज्य बन गये हैं, इनमें ग्रेटब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, रूस और इटली



४० ३० २० १० ०

उ त्त री म हा स

आइसलैंड

हैमर-

अटलान्टिक
महा सागर

५०

आयरलैंड

डेनमार्क

हालैंड

हैमबर्ग

बर्लिन

ज र्म नी

पेरिस

नांत

बिस्केकी खाडी

फ्रां स

स्विट्ज़रलैंड

आस्ट्रिया

४०

मार्सेल्ज

लिजबन

स्पे न

सार्डीनिया

रोम

जिब्राल्टर

भू म ध्य

ाजनीतक

३० ४० ५० ६० ७० ८०

ग र

उत्तरी अन्त०

आर्कंजल

फिनलैण्ड

हेलसिंगफोर्स

रू स

एस्थोनिया

निजनाईनोवगोरड

मास्को

लेटविया

सराटोव

खारकोव

लै ड

लेम्बर्ग

ओडेसा

अस्त्राखान

कैस्पियन सागर

अरल सागर

रूमानिया

बुखारेस्ट

बलगेरिया

काला सागर

कुस्तुनतुनिया

६०

५०

४०

ब्रिटिश द्वीप के दो भाग हैं—

(१) इङ्गलैंड व वेल्स, * (२) स्काटलैंड।

इगलैंड, वेल्स और स्काटलैंड—तीनो मिलकर 'ग्रेट ब्रिटेन' कहलाते हैं और यहाँ के निवासी ब्रिटिश कहलाते हैं।

दूर दूर के अधिकृत-देश इन द्वीपो की डालियो के समान फैले हुए हैं। ससार मे कोई महाद्वीप ऐसा नहीं है, जिसमे ब्रिटिश राज्य का आधिपत्य न हो, यहाँ तक कि ब्रिटिश-राज्य के क्षेत्रफल से उसके अधीन देशों का क्षेत्रफल सौगुना है।

योरप में ऊपर के द्वीपों के सिवाय जिब्राल्टर, माल्टा, साईप्रस के द्वीप भी हमारे सम्राट ही के आधीन हैं।

उत्तरी अमेरिका मे कनाडा और बहुत से द्वीप इस राज्य के आधीन हैं। कनाडा लगभग इतना बड़ा है जितना योरप। कनाडा में हमारे भारत के ४००० मनुष्य बसे हैं, पर कुली के समान। दक्षिण-अमेरिका में भी एक देश का थोड़ा सा भाग इसी राज्य का है। हिन्दुस्तान के पश्चिमी द्वीप-समूह के कई एक द्वीप और हैं। आस्ट्रेलिया और उसके पास के न्युजीलैंड आदि द्वीप इसी राज्य के आधीन हैं। इन द्वीपो का क्षेत्रफल भी लगभग योरप के बराबर है।

इस राज्य में अफ्रीका के भी बहुत से देश हैं, उनमे से बहुतो मे—जैसे ट्रान्सवाल में, हिन्दू और मुसलमान भी भारत से जाकर बस गये हैं। एशिया में हिन्दुस्तान, मेसोपोटेमिया, पेलेस्टाइन और कई एक द्वीप और बन्दरगाह इस राज्य के हैं। सम्पूर्ण बृटिश-राज्य योरप के तिगुने से भी कुछ अधिक है। ससार के इतिहास मे इसके समान बलवान और सपूर्ण पृथ्वी पर विस्तृत राज्य अन्य नहीं पाया जाता। यह बात सत्य है कि बृटिश-राज्य

* वेल्स इङ्गलैंड का एक प्रदेश समझा जाता है।

मे सूर्य नहीं छिपता, और मनुष्यों को जिन वस्तुओं की आवश्य कता है, सब इस राज्य में पायी जाती हैं।

बृटिश राज्य के प्रत्येक अधीन देश का निवासी अपने आप का सम्राट की प्रजा समझता है और उसको सम्राट की सेवा मे अपनी अपील भेजने का अधिकार प्राप्त है। जब कभी बृटिश राज्य का किसी दूसरे राज्य से युद्ध प्रारम्भ होता है, तो उसके अधीन देशो के रहनेवाले सब भांति से उसकी मदद करते हैं। इस प्रकार जब कभी किसी देश के रहनेवालो को कोई दुःख होता है, तो दूसरे देश उसकी सहायता करते हैं, जैसे अकाल के समय मे हिन्दुस्तान के लिये इङ्गलैंड, कनाडा आदि से चन्दा आता है।

बृटिश राज्य के अधीन देश दो तरह के हैं —

(१) ऐसे देश जहां, अँङ्गरेज अपना घर छोड़ कर आप जा कर बस गये हैं—जैसे अफ्रीका में केपकोलोनी, कनाडा, आस्ट्रेलिया और न्युजीलैंड आदि।

(२) वह देश जिनमे अङ्गरेज केवल राज्य प्रबन्ध के लिए ही आते जाते हैं और सदा के लिए घर बना कर नहीं रहते। ऐसे देशो के हिन्दुस्तान, लङ्का, मेसोपोटेमिया, पेलेस्टाइन इजिप्ट (मिश्र) इत्यादि उदाहरण हैं।

पहिली तरह के देश अपना राज्य-प्रबन्ध अपने आप करते हैं। उनकी देख भाल के लिये प्रत्येक देश मे एक एक गवर्नर रहता है, जिसे सम्राट आप नियत करके भेजते हैं। इस प्रकार की बस्तियों में प्रजा की ओर से पार्लियामेंन्ट (प्रबन्ध कारिणी सभा) रहती है, परन्तु इसके बनाये हुये नियमो को सम्राट स्वीकार किया करते हैं। दूसरे भांति के देशों का राज्य-प्रबन्ध स्वयं सम्राट की ओर से होता है।

६--वृटिश राज्य के उन्नतिशाली होने के कारण

(१) जलवायु—

द्वीप समूह का सम्पूर्ण भाग समशीतोष्ण कटिबन्ध में स्थित है। जाड़े मे न तो बड़ी सर्दी पड़ती है, और न गर्मियों में भारत के समान गर्मी ही। इस लिए यहां के निवासी दोनों ऋतुओं मे काम करने में तैयार रहते हैं, और ऐसे विलक्षण कार्य्य सम्पादन कर दिखाये हैं, जैसा कि शायद ही किसी दूसरे देश में हुआ हो। अतएव यह कहना अत्युक्ति नहीं कि इस देश के मनुष्य उद्योगी, परिश्रमी, साहसी और उन्नतिशाली हैं। यदि हम यहां के टैमपरेचर को दूसरे देशों से जो कि उसी अक्षांश में स्थित हैं, मिलायें तो बहुत अन्तर मिलता है। लैब्राडर मे समुद्र के किनारे साल के अधिक मास तक बर्फ से ढके रहते हैं, जिससे मनुष्य का वहां खाना पीना दूभर हो जाता है, परन्तु वृटेन को देखिये वहां अनाज वा फलों की कितनी भरमार है। वहां बन्दरगाहों मे बर्फ छू तक भी नहीं गई। पुनः पूर्वी रूस मे जाड़े और गर्मी के टैमपरेचर में ६०° का अन्तर है। नदियों में बर्फ जम जाती है और बाहर का सारा कार्य्य बन्द करना पड़ता है। इन सब बातों को देखने से हमारे मन में प्रश्न उठता है कि "वृटेन में ऐसी विभिन्नता क्योंकर हुई"? इसका उत्तर यह है—यहां गर्म जल की एक समुद्र की लहर इसके किनारों को छूती है जिसे 'गल्फ स्ट्रीम' (Gulf Stream) कहते हैं।

(२) धरातल—

नक्शे को देखने से पता चलता है, कि ग्रेटब्रुटेन के मैदान अधिकांश में पूर्व की ओर हैं, फिर पृथ्वी पश्चिम की तरफ क्रमश

कोयला और लोहे की खानें

लोहा
कोयला

अटलान्टिक
महा सागर

उ त्त री
सा ग र

आयरिश सागर

ऊँची होने लगती है। इस कारण इङ्गलैण्ड की नदियाँ जो कि उत्तर सागर (North Sea) मे गिरती है, मन्द हैं, और उनमें जहाज आ जा सकते हैं। ग्रेटब्रिटेन की धरातल अधिक से अधिक ५०० फीट ऊँची है। इसके किनारे कटे हैं, जिससे यहाँ कई बड़े बड़े बन्दरगाह हो गये हैं। ब्रिटिश टापुओ का कोई भी भाग समुद्र तट से बहुत दूर नहीं है, इसलिये यहाँ के मनुष्य सामुद्रिक यात्रा करने मे बडा मन लगाने लगे हैं और उन्होने बड़े बड़े जहाज बना डाले हैं।

(३) उपज—

भूमि यहाँ की बड़ी उर्वरा है, जिसमे हर तरह की खेती की जा सकती है। ऊँची पहाड़ियों पर जानवरो के खाने के लिए चरागाह है। इन सब के होते हुए भी एक बात बड़े महत्व की है सो यह है—यहाँ कोयले और लोहे की खानें अधिक है, परन्तु आश्चर्य तो यह है कि ये दोनों पासही पाये जाते है। टीन तांबा, सीसा, पत्थर, जस्ता और नमक की भी यहाँ अधिकता है।

(४) स्थिति—

बृटिश द्वीप पृथ्वी के स्थल के बीच में और समुद्रों के चौराहे पर स्थित है, जिससे यहाँ सारे संसार के देशों से माल, सरलता से आ जा सकते हैं। योरप के सारे देशों को तथा अन्य महाद्वीपों को जो माल जाता है, वह यहाँ से अवश्य गुजरता है।

उपरोक चार मुख्य बातो के होने से बृटिश साम्राज्य ने बड़ी उन्नति की है, और योरप के अलावा अन्य महाद्वीपो में भी उसने अपने राज्य कायम कर लिये हैं, और जब कभी किसी शत्रु का सामना करना पडता है, यहाँ से सब प्रकार की सहायता मिलती है।

(अ) इङ्गलैंड और वेल्स

सीमा—

इङ्गलैण्ड और वेल्स के उत्तर मे स्काटलैण्ड, पूर्व मे उत्तर सागर, दक्षिण मे इङ्गलिश चैनल और पश्चिम में ऐटलांटिक महासागर, सेंट जार्ज की चैनल और "आइरिश सी" है।

विस्तार—

इङ्गलैण्ड और वेल्स मिलकर ५,८३,००० वर्गमील भूमि घेरते हैं, जिनमें इङ्गलैण्ड ५०,८०० वर्गमील, और वेल्स ७,४०० है।

धरातल—

इङ्गलैण्ड के अधिकांश की भूमि सम है, परन्तु फिर भी पश्चिम में मध्यम ऊँचाई वाली पर्वत श्रेणियाँ हैं।

ढलान साधारणत पश्चिम से पूर्व को है। हम्बर और टेम्ज नदियों के बीच की भूमि नीची है। थोड़े से भागो मे दलदल भी है।

यहाँ तीन पहाड़ी देश हैं।

पेनाइन चेन—

'शीवियटहिल' से फैलती है जो कि इङ्गलैण्ड और स्काटलैंड के बीच मे दोनो की सीमा है। इसकी सब से ऊँची चोटी २,६०० फीट से कुछ कम ऊँची है।

पेनाइन चेन के पश्चिम मे 'यार्क का मैदान' और दक्षिण मे 'मध्य मैदान' है, जो कि इङ्गलैण्ड के मध्य में विस्तृत है।

'*कम्ब्रियन श्रेणी—यह शक्ल मे गोल है,* और 'पेनाइन चेन' के पश्चिम में वर्तमान है। इङ्गलैण्ड का सब से ऊँचा पहाड़ 'स्काफेल' इसी की एक शाखा है।

'कैम्ब्रियन' पहाड़—यह वेल्स के अधिकाश मे फैला हुआ है।

'डेवोनियन' श्रेणी—कार्नवाल से प्रारम्भ होकर पूर्व को जाती है।

नदियाँ—

'टाइन,' 'वीयर' और 'टीज' उत्तर मे मुख्य नदियाँ हैं, जो उत्तर सागर मे गिरती हैं, वूज और ट्रेन्ट दोनों मिल कर हम्बर कहलाती हैं। 'टेम्ज' इङ्गलैण्ड की सबसे बड़ी नदी है, और उत्तर सागर में पतित होती है। वृस्टल चैनल मे 'ऐवन' नदी गिरती है। सेवर्न, धी मर्सी और एडेन पश्चिम की प्रसिद्ध नदियाँ हैं। यहाँ की नदियो मे जहाज के आने जाने की सुगमता है और इनकी समुद्र मे गिरने के समय बहुत चौड़ाई होती है, इससे बड़े बडे जहाज अन्दर ठहर सकते हैं। 'विन्डर मीयर' सबसे बड़ी झील यहाँ की है।

जलवायु—

इङ्गलैण्ड का जलवायु नम तो है, किन्तु जाड़े में न अधिक सर्दी पडती है और न गर्मी मे यहाँ बहुत गर्म ही रहता है। यहाँ का जल वायु छ बातों पर निर्भर है। (१) बृटिश द्वीप समशीतोष्ण कटिबन्ध मे ५० और ६० के अक्षाश के दर्मियान स्थित है। (२) चारों ओर महासागर से घिरे हैं। (३) गल्फ स्ट्रीम चलती है। (४) 'वेस्टरली' और 'साउथ वेस्टरली' हवाओ का झोका चलता है। (५) पूर्व की अपेक्षा पश्चिम मे भूमि ऊँची है। (६) राज्य योरप महाद्वीप के समीप है।

उपज और व्यापार—

यहाँ की पृथ्वी साधारणत उपजाऊ है। जौ, गेहूँ और जई अधिक पैदा होते हैं। आलू और शलजम की भरमार है। फलों में

बेर, अनार और सेब मुख्य हैं। यहां घोड़े, बैल, भेड़ और कुत्ते अधिक पाये जाते हैं। इङ्गलैंड अपनी खानों के लिये संसार भर में प्रसिद्ध है। इसके पास के समुद्रों में मछलियों की भरमार है।

व्यापार के विचार से संसार में इङ्गलैण्ड का नम्बर सबसे उच्च है। उसमें लोह के हथियार और कले, ऊन, रेशम और रुई के कपड़े और शीशे की वस्तुएं बहुत भली बनती हैं, और संसार भर में बिकती हैं।

व्यापार ही के कारण इस देश का धन और सामुद्रिक बल सब राज्यों से बढ़ कर है। जितने जहाज और राज्यों में हैं, उनसे दूने बृटिश-राज्य में हैं। इसी कारण इस राज्य के जहाज दूसरे राज्यों में बरते जाते हैं।

पेशा—

(१) कृषि—इस पेशे में अब पहिले से कम मनुष्य शामिल हैं। इसका कारण यह है कि यहां बाहर से अनाज अधिक आता है जिससे बहुतों ने कृषि करना ही छोड़ दिया और इनके बदले मनुष्यों ने पशुओं और भेड़ों के पालने और उनके बालों को काट कर बेचने और घी, दूध और मक्खन निकालने का पेशा अख़तियार कर लिया। यदि पूर्वी किनारे में हम्बर नदी से एक रेखा दक्षिण को 'पोर्टलैण्ड बिल' तक खींचा जाय तो वह इङ्गलैण्ड को दो भागों में विभाजित कर देगी। उनमें पूर्वी भाग तो कृषि का हो जावेगा। अन्नों में यहां गेहूं, जौ और जई होते हैं। समस्त देश भर में चारागाह ही चारागाह है। फलों में सेब, बेर और नाशपाती हैं।

(२) मछलियों का शिकार—उत्तरी समशीतोष्ण कटिबन्ध के कम गहिरे सागर में नाना प्रकार की मछलियों के घर हैं। अतः

इङ्गलैण्ड के मनुष्य मछलियों के शिकार करने के लिये बड़े प्रसिद्ध हैं। यहां का कोई ऐसा समुद्री किनारा नहीं जहां इस पेशेवालो के ग्राम न हो। ससार भर मे उत्तर सागर की 'हेरिंग' मछलियाँ विख्यात हैं। ऐसी मछलियो के शिकार के लिये 'ग्रिम्बसी' और 'यारमाउथ' केन्द्र हैं। अन्य नदियों में 'सामन' और 'ट्राउट' नाम की मछलियाँ पाई जाती हैं।

(३) खानों का खोदना—यहाँ के मनुष्य कोयले और लोहे के खोदने में अधिक लगे रहते हैं, क्योंकि इङ्गलैण्ड की यही दो धातुए मुख्य हैं, जो आस पास के बहुत खानो मे पायी जाती हैं।

इङ्गलैण्ड की मुख्य कोयले की खानें ये हैं—

(१) नार्थम्बरलैण्ड और डरहम।
(२) दक्षिणी वेल्स।
(३) कम्बरलैण्ड।
(४) दक्षिणी लङ्काशायर।
(५) दक्षिण-पश्चिमी यार्कशायर।
(६) स्टैफर्डशायर।

लोहा इन खानों के पास ही पाया जाता है। तांबा और टीन की खानें इङ्गलैण्ड के दक्षिण पश्चिम मे—अधिकतर दक्षिणी वेल्स की कोयले की खानों के समीप हैं। सीसा कम्बरलैण्ड में, नमक चेशायर में, स्लेट का पत्थर वेल्स में और मकान बनाने के लिये उत्तम पत्थर विविध स्थानों में पाये जाते हैं।

दस्तकारी—

इङ्गलैण्ड मे मुख्य तीन प्रकार ... कार होती
(१) सूती कपड़ो (२) के ...) ऊनी
रेशमी कपड़ों की, जूट, ...
चमड़ा और कागज की ...

(१) सूती कपड़ों की दस्तकारी—

सूती कपड़ो की दस्तकारी 'लंकाशायर' के कोयले की खानों में होती है। इसके कारण (१) कोयलो की भरमार। (२) जल वायु का शीत होना, जो कि सूत कातने के लिये उपयोगी है। और (३) 'लिवरपूल' नामक बन्दरगाह का यहां से समीप होना है।

'लंकाशायर' में मैन्चेस्टर, सालफर्ड, ओल्डम, बोल्टन, राकडेल, ब्लैकबर्न और प्रेस्टन, और 'चेशायर मे स्टाकपोर्ट इस दस्तकारी के प्रसिद्ध नगर हैं।

मैनचेस्टर और सालफर्ड—(दोनों मिल कर) ससार भर में दस्तकारी के लिये सब से बड़े नगर हैं। १२ मील के व्यासार्द्ध में प्राय २० लाख की आबादी है। लिवरपूल से मैनचेस्टर तक एक नहर है। जिसमे मालों से लदे हुए बडे बड़े जहाज आ और जा सकते हैं।

लिवरपूल (मय बरकेनहेड)—यह मर्सी नदी पर बसा हुआ है। इङ्गलैण्ड मे सूती कपडों का सब से बड़ा केन्द्र और दूसरे नम्बर का बन्दरगाह है।

(२) लोहे की दस्तकारी—

लोहे की खानें तीन स्थानों के आस पास की भूमि में पायी गई हैं।

प्रथम—मिडेलबरा मे डरहम की कोयले की खान के पास।

द्वितीय—मर्थिर टाइटफिल मे दक्षिणी वेल्स की कोयले की खानों के आस पास। और

तृतीय—लंकाशायर की कोयले की खान के पास।

लोहे और फौलाद के काम—बैरी और वालसाल में होता है।

चाकू और कैंचियां आदि— शेफील्ड नगर में बनती हैं।

अस्त्र व शस्त्र (तलवार, बन्दूक)—बर्मिंघम और उसके आस पास नगरो मे इनका काम होता है।

जहाज—निउकासिल, सन्डरलैण्ड, हल, लन्दन और लिवरपूल में बनाये जाते हैं।

(३) ऊनी कपड़ों की दस्तकारी –

यार्कशायर की कोयले की खानो के स्थान इस किस्म की दस्तकारी के मुख्य केन्द्र हैं। लिवरपूल और हल के द्वारा आस्ट्रेलिया और दक्षिणी अफ्रीका से कच्चा ऊन आता है।

लीड्स, ब्रेडफर्ड और हेलीफक्स इस तरह की दस्तकारी के कारण प्रसिद्ध हो गये हैं।

अन्य दस्तकारियाँ–

'लालटीन' कपड़ा—डन्डी नगर मे तयार होता है।

मिट्टी के बरतन—स्टैफर्डशायर मे बनते हैं।

रेशमी कपड़े—डर्बी, कवेन्ट्री और ब्रेडफर्ड मे बनते हैं।

शीशा—सेन्ट हेलन्स में।

चमड़ा—लीड्स और नार्दम्पटन में।

व्यापार–

इङ्गलैण्ड का व्यापार सारे ससार से बढ़ कर है। बाहर से इङ्गलैण्ड में आनेवाली वस्तुएँ दो भागों में विभाजित हो सकती हैं।

(१) दस्तकारी के लिये कच्चा माल।

(२) खाने के पदार्थ (अन्नादि)

(१) दस्तकारी के लिये कच्चा माल—

पदार्थ	देश (जहाँ से इङ्गलैण्ड में आते हैं)
रुई	सयुक्त राज्य अमेरीका, भारतवर्ष और मिश्र देश
ऊन	आस्ट्रेलिया, दक्षिणी अफ्रीका, न्यूजीलैण्ड और भारतवर्ष
रेशम	चीन और फ्रान्स
सन	रूस और भारतवर्ष
जूट	भारतवर्ष
लकड़ी	कैनाडा, उत्तरी योरप और बर्मा

(२) खाने के पदार्थ—

पदार्थ	देश (जहाँ से इङ्गलैण्ड में आते हैं)
अन्न	उत्तरी अमेरीका, रूस, भारतवर्ष, अर्जनटाइना और आस्ट्रेलिया
मांस	अर्जनटाइना, उत्तरी अमेरीका, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड
चाय	भारतवर्ष
कहवा	ब्रेजील
मक्खन, शराब आदि	योरप के भिन्न देशों से

इङ्गलैण्ड से बाहर जानेवाली वस्तुओं में—ऊनी व अन्य प्रकार के सूती कपड़े और जूट की बनी चीजें, लोहा, फौलाद, कोयला, मशीनें, तांबा, मिट्टी के बर्तन और जहाज हैं।

राज्य प्रबन्ध—

हमारे सम्राट राज्य का सारा कार्य्य मन्त्रियों की मन्त्रणा से करते हैं, जिसके लिए दो सभायें (पार्लियामेंट) नियत हैं। पहिली का नाम 'साधारण-सभा' (House of Commons) और दूसरी का 'धनिक सभा' (House of Lords) है। 'साधारण-सभा' के लिये प्रजा की ओर से प्रतिनिधि (सदस्य) चुने जाते हैं; और 'धनिक सभा' में अमीर रईस और बड़े बड़े जमींदार शामिल रहते हैं। साधारण सभा का यह काम है कि वह प्रजा पर टैक्स लगावे, आय को देख कर व्यय करे और देश में शान्ति रखने और उसकी रक्षा के लिए कानून बनाये। परन्तु कानून राजा की मंजूरी बिना जारी नहीं हो सकते। हिन्दुस्तान के राज्य-प्रबन्ध की बातें भी पार्लियामेन्ट में पेश होती हैं।

प्रसिद्ध नगर—

(अ) बन्दरगाह

लन्दन—टेम्ज नदी पर इङ्गलैण्ड की राजधानी है। इसमें ७२,५२,९६२ मनुष्य बसते हैं। धन, दौलत और व्यापार में संसार भर में सर्व प्रथम है। यहाँ के टावर, रायल एक्सचेंज, इङ्गलैण्ड का बैंक, सेंट पाल कथीड्रल, पार्लियामेंट के महल और वेस्टमिनेस्टर ऐबी (गिरजा) प्रसिद्ध मकानात हैं। टेम्ज नदी का पुल दर्शनीय है। इस पुल के ऊपर से नदी बहती है और नीचे से मनुष्यों के जाने का रास्ता है। संसार के अद्भुत दृश्यों में से एक

यह भी हो सकता है। पृथ्वी के अन्दर रेल के आने जाने का मार्ग भी देखने योग्य है।

लिवरपूल—(इसका जिक्र पहिले हो चुका है) इङ्गलैण्ड में दूसरे नम्बर का व्यापारिक बन्दरगाह है। यहाँ से मैनचेस्टर तक एक नहर है, जिसमें बड़े बड़े जहाज आ जा सकते हैं। लङ्काशायर और यार्कशायर की दस्तकारियों के कारण यह इतना हो गया है। यहाँ से सूती कपड़े अन्य देशो को भेजे जाते हैं, अन्य देशों से कच्चा माल और खाने के पदार्थ आते हैं।

कार्डिफ—वेल्स की वस्तुयें यहाँ से बाहर भेजी जाती हैं।

निउपोर्ट और स्वानसी—ब्रिस्टल चैनल के ऊपर प्रसिद्ध बन्दरगाह हैं।

निउकासिल—यहाँ से कोयला अन्य देशो मे भेजा जाता है। लोहे, मशीनो और जहाजी कारखानो के बड़े व्यापार होते हैं। यह नगर ' टाइन ' नदी पर बसा है। शीशे के बर्तन और कल आदि की दस्तकारी के लिये प्रसिद्ध है।

सौथम्पटन—अब बड़ी उन्नति कर रहा है। दक्षिण मे बन्दरगाह है।

ब्रिन्डजी—डाक के जहाजों की रवानगी का मुख्य स्थान है।

निउपोर्ट—बन्दर है।

डोवर—फ्रास और बेल्जियम के बन्दरगाहो से व्यापार करता है।

पोर्टस्मथ, प्लीमथ, ऊलीच, चैथम और डेवनपोर्ट समुद्री सेना के मुख्य स्थान हैं। स्वानसी और कार्डिफ वेल्स के प्रसिद्ध बन्दरगाह हैं।

इङ्गलैण्ड से बाहर जानेवाली वस्तुओं मे—ऊनी व अन्य प्रकार के सूती कपड़े और जूट की बनी चीजें, लोहा, फौलाद कोयला, मशीनें, ताँबा, मिट्टी के वर्तन और जहाज हैं।

राज्य प्रबन्ध—

हमारे सम्राट राज्य का सारा कार्य्य मन्त्रियो की मन्त्रणा से करते हैं, जिसके लिए दो सभायें (पार्लियामेंट) नियत हैं। पहिली का नाम 'साधारण-सभा' (House of Commons) और दूसरी का 'धनिक सभा' (House of Lords) है। 'साधारण-सभा' के लिये प्रजा की ओर से प्रतिनिधि (सदस्य) चुने जाते हैं, और 'धनिक सभा' में अमीर रईस और बडे बड़े जमींदार शामिल रहते हैं। साधारण सभा का यह काम है कि वह प्रजा पर टैक्स लगावे, आय को देख कर व्यय करे और देश में शान्ति रखने और उसकी रक्षा के लिए कानून बनाये परन्तु क़ानून राजा की मजूरी बिना जारी नहीं हो सकते। हिन्दुस्तान के राज्य-प्रबन्ध की बातें भी पार्लियामेन्ट मे पेश होती हैं।

प्रसिद्ध नगर—

(अ) बन्दरगाह

लन्दन—टेम्ज नदी पर इङ्गलैण्ड की राजधानी है। इसमें ७२,५२,९६२ मनुष्य बसते हैं। धन, दौलत और व्यापार में संसार भर मे सर्व प्रथम है। यहाँ के टावर, रायल एक्सचेंज, इङ्गलैण्ड का बैंक, सेंट-पाल कथीड्रल, पार्लियामेंट के महल और वेस्टमिनिस्टर ऐबी (गिरजा) प्रसिद्ध मकानात हैं। टेम्ज नदी का पुल दर्शनीय है। इस पुल के ऊपर से नदी बहती है और नीचे से मनुष्यों के जाने का रास्ता है। ससार के अद्भुत दृश्यो में से एक

यह भी हो सकता है। पृथ्वी के अन्दर रेल के आने जाने का मार्ग भी देखने योग्य है।

लिवरपूल—(इसका जिक्र पहिले हो चुका है) इङ्गलैण्ड में दूसरे नम्बर का व्यापारिक बन्दरगाह है। यहाँ से मैनचेस्टर तक एक नहर है, जिसमें बड़े बड़े जहाज आ जा सकते हैं। लङ्काशायर और यार्कशायर की दस्तकारियों के कारण यह इतना बड़ा हो गया है। यहाँ से सूती कपड़े अन्य देशों को भेजे जाते हैं, और अन्य देशों से कच्चा माल और खाने के पदार्थ आते हैं।

कार्डिफ़—वेल्स की वस्तुयें यहाँ से बाहर भेजी जाती हैं।

निउपोर्ट और स्वानसी—ब्रिस्टल चैनल के ऊपर प्रसिद्ध बन्दरगाह हैं।

निउकासिल—यहाँ से कोयला अन्य देशो में भेजा जाता है। लोहे, मशीनों और जहाजी कारखानों के बड़े व्यापार होते हैं। यह नगर 'टाइन' नदी पर बसा है। शीशे के बर्तन और कल आदि की दस्तकारी के लिये प्रसिद्ध है।

सोथम्पटन—अब बड़ी उन्नति कर रहा है। दक्षिण में बन्दरगाह है।

ब्रिन्डजी—डाक के जहाजों की रवानगी का मुख्य स्थान है।

निउपोर्ट—बन्दर है।

डोवर—फ्रान्स और बेल्जियम के बन्दरगाहों से व्यापार करता है।

पोर्टस्मथ, प्लीमथ, ऊलीच, चेथम और डेवनपोर्ट समुद्री सेना के मुख्य स्थान हैं। स्वानसी और कार्डिफ वेल्स के प्रसिद्ध बन्दरगाह हैं।

(ब) अन्य नगर

विन्डसर—टेम्स नदी के किनारे पर बसा है। यहाँ का क़िला बहुत अच्छा है। यह एक शिकारी मुकाम है। सम्राट विलियम विजयी के समय से इङ्गलिस्तान के राजाओं का रहने का स्थान हो रहा है।

ग्रीनविच—लडन से छ मील की दूरी पर बसा है। यहाँ एक वेधशाला या हवा घर (observatory) है—जहाँ के नक्षत्रों के देखने के कल प्रसिद्ध हैं। इसी जगह की मध्यरेखा से भूगोल वाले देशांश की गिनती करते हैं।

एटन और हैरो—यहाँ के पब्लिक स्कूल बड़े प्रसिद्ध हैं।

आक्सफर्ड, कैम्ब्रिज, डरहम, लदन, लिवरपूल, लीड्स, शेफील्ड, मैनचेस्टर, और बरमिंघम—प्रत्येक नगर में एक एक विश्वविद्यालय है।

(स) बृटिश-साम्राज्य की तालिका

समस्त ससार में बृटिश-राज्य का सूर्योदय है। इस साम्राज्य के अधीन सब महाद्वीपों में राज्य हैं, जिनकी तालिका नीचे दी जाती है—

बृटिश राज्य के अधीन कुल राज्यों का क्षेत्रफल १,११,६६,५०० वर्गमील है, और जन-सख्या लगभग ३४,१०,००,००० मनुष्यों की है।

संख्या	महाद्वीप या द्वीप	अधीन-देश	क्षेत्र फल (वर्ग मील)	जन संख्या	विशेष
१	ब्रिटिश द्वीपसमूह	इङ्गलैंड,वेल्स,स्काट लैंड,और अन्य द्वीप।	८८,५००	४,५०,००,०००	आयरलैंड अब स्वतन्त्र होगया है
२	योरप	माल्टा, जिब्राल्टर और गोजो।	१२१	२,१७,०००	
३	एशिया	भारतवर्ष,वर्मा,लंका, साइप्रस,स्ट्रेटसेटल मेंट,हांगकांग,एडन और वृटिश बोर्निओ।	१,६५,०००	३२,००००,०००	भारतवर्ष और वर्मा का क्षेत्र-फल १,८००,०००, वर्ग मील और जन-संख्या ३१६,०००,००० है।
४	अफ्रीका	दक्षिणी अफ्रीका के राज्य जिसमें, उत्तमाशा अन्तरीप के राज्य,नेटाल,ऑरेंज का स्वतन्त्र राज्य और ट्रान्सवाल है।रहोडेशिया, बेचुवानालैंड गैम्बिया, सीटालियन, गोल्ड कोस्ट, मारीशस सेंट हेलना, पूर्वी अफ्रीका का भारी राज्य, और नाइलवेसिन।	२७,००,०००	४,२०,००,०००	जर्मन के कुल राज्य वृटिश साम्राज्य में शामिल हो गये हैं। जर्मन साम्राज्य का पैसे रूम फ्रेंच को भी मिल गया है।

संख्या	महाद्वीप या द्वीप	अधीन देश	क्षेत्रफल (वर्ग मील)	जन संख्या	विशेष
५	अमेरिका	कैनाडा, निउफाउन्डलैण्ड, वृटिश हाँडूराज, वृटिश गाइना, वृटिश वेस्ट इन्डीज, फाकलैण्ड द्वीप समूह और बर्मूडाज	४०,००,०००	६०,००,०००	
६	ओसेनिया	आस्ट्रेलिया, टसमानिया, निउजीलैण्ड, वृटिश निउगिनी और फीजी द्वीप।	३१,७४,०००	६०,००,०००	

नोट—गत महायुद्ध से मेसोपोटेमिया, पेलेस्टाइन और इजिप्ट (मिश्र) देशों पर वृटिश का बहुत बातों में अधिकार है।

(ब) स्काटलैंड

सीमा व विस्तार—

स्काटलैण्ड उत्तर और पश्चिम में एटलान्टिक महासागर से घिरा है, और इसके पूर्व में उत्तर सागर है। इङ्गलैण्ड और आइरिश इसकी दक्षिणी सीमा बनाते हैं।

स्काटलैण्ड का क्षेत्रफल ३०,००० वर्ग मील के लगभग है, अथवा यों कहिये कि यह इङ्गलैण्ड और वेल्स का आधा है।

धरातल—

स्काटलैण्ड के तीन प्राकृतिक विभाग हो सकते हैं।

(१) उत्तरी ऊँचे देश (२) मध्य का उपजाऊ मैदान और (३) दक्षिणी ऊँचे देश। इस देश मे दक्षिण पश्चिम से उत्तर पूर्व को पहाड़ो की तीन श्रेणियाँ जाती हैं। प्रथम—उत्तरी श्रेणी, दूसरी—मध्य की ग्रैम्पियन श्रेणी, और अन्त मे दक्षिण की ओर लोथर्स और शीवियट की पहाड़ियाँ हैं। इसके किनारे इङ्गलैण्ड से अधिक कटे हुये हैं।

नदियाँ व झीलें—

ट्वीड—दक्षिण पूर्व में इङ्गलैण्ड और स्काटलैण्ड की सीमा बनाती है।

फर्थ और टे—अपने अपने नाम के उपसागरों में गिरती हैं।

स्पे—' मोरे ' उपसागर के समीप यह महासागर से मिलती है।

क्लाइड—उत्तर पश्चिम को बहती हुई अपने नाम के उपसागर मे पतित होती है।

स्काटलैण्ड मे बहुत सी झीलें हैं जो रमणीक दृश्य के लिये प्रसिद्ध हैं। जिनमें ' लोमण्ड ' और ' केट्राइन ' मुख्य हैं।

जलवायु और उपज—

इङ्गलैण्ड की अपेक्षा यहाँ की जलवायु ठंढी है।

फोर्थ और क्लाइड नदियों के पास कोयला और लोहा बहुत अधिक पाया जाता है। ' लेड हिल्स ' के पास सीसा भी मिलता है।

यहाँ की थोड़ी सी भूमि उपजाऊ है। नहीं तो ऐसे इसके अधिक भाग चरागाह हैं, जहाँ भेड़ें और बकरियाँ चरती रहती हैं। स्काटलैण्ड के जमींदार अपने कार्यों के लिये प्रशंसनीय हैं। बैल और भेड़ों के बाल काट कर अन्य देशों में भेजे जाते हैं। मछलियों का शिकार भी अधिक होता है। लोहे, ऊनी और सूती कपड़ों के बुनने की दस्तकारियाँ भी यहाँ होती हैं। एक आध स्थानों में जहाज बनाने के कारखाने हैं।

प्रसिद्ध नगर—

एडिनबरा—सैकड़ों बरसों से यह स्काटलैण्ड की राजधानी है।

लीथ—एडिनबरा का बन्दरगाह है, जिससे रेलवे द्वारा यह मिला है।

ग्लासगो—क्लाइड नदी पर स्काटलैण्ड का सब से बड़ा नगर है। यह अपने व्यापार और दस्तकारी के लिये प्रसिद्ध है। यहाँ जहाज बनाने के कई कारखाने भी हैं। लोहे और कोयले की खानों का केन्द्र है।

पेसली—ग्लासगो से सात मील की दूर पर है। यहाँ के सूत बड़े पुष्ट होते हैं, जिनसे विशेष कर दुशाले बुने जाते हैं।

स्टार्लिंग—यहाँ का महल अत्यन्त रमणीक है। यह नगर पहिले राजाओं का निवास स्थान था।

पर्थ—'टे' नदी पर पहिले कभी स्काटलैण्ड की राजधानी था।

डंडी—स्काटलैण्ड में तीसरे नम्बर का नगर है। यहाँ जूट और क्वालटीन कपड़ा तैयार होता है।

अबर्डीन—पूर्वी किनारे पर बड़ा व्यापारिक नगर है। यहाँ एक विश्वविद्यालय भी है।

इनवरनेस—ऊँचे देशों में सब से बड़ा नगर है।

काग्रसबर्ग— यहाँ चाँदी की खानें हैं।

हेमरफ़िस्टर—में लकड़ी की बनी इमारत है। यह योरप का अत्यन्त उत्तम शहर है।

अपसाला—प्राचीन नगर है, यहाँ एक यूनीवर्सिटी है।

कार्लसकोना—जहाजी फौज का मुख्य स्थान है।

गोटिनबर्ग—यहाँ से लकड़ी और लोहा दूसरे देशों को भेजा जाता है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—सिद्ध करो कि ग्रेटब्रिटेन के समुद्री किनारों के कटे होने से इसके व्यापार में अधिक उन्नति हुई है।

२—ग्रेटब्रिटेन की मुख्य खानों से पाने वाले चीजों के नाम लिखो और यह भी बताओ कि ये कहाँ कहाँ पाये जाते हैं?

३—इङ्गलैण्ड में किन किन चीजों की दस्तकारी होती है और कहाँ?

४—इङ्गलैण्ड और वेल्स की इतनी उन्नति कैसे हो सकी?

५—इङ्गलैंड के जलवायु पर पहाड़ों की स्थिति और गल्फस्ट्रीम का कितना प्रभाव है पड़ता?

६—ग्रेटब्रिटेन में किन किन देशों से खाने की वस्तुयें आती हैं और यहाँ से कैसा माल बाहर भेजा जाता है?

७—लकड़ी, कच्ची रुई, ऊन और रेशम इङ्गलैंड में कहाँ से आते हैं?

८—इङ्गलैंड में इतने प्रसिद्ध नगर कैसे हो गये?

९—निम्न कहाँ हैं, और क्योंकर प्रसिद्ध हैं?

घाथ, बिन्सर, सेन्टऐन्ड्रूज, कबेन्ट्रीपेग्ली, गिम्सबी, अवर्डीन, लिवरपूल, विन्डर डियर, निउकासिल, हल, डोवर, और कार्डिफ।

१०—ग्रेटवृटेन का राज्यशासन किस प्रकार से किया जाता है ?

११—इङ्गलैंड में खेती कम होती है, इसका क्या कारण है ?

१२—मछलियों के शिकार के बन्दर ग्रेट वृटेन में अधिक हैं, सो क्यों ?

१३—वृटिश साम्राज्य के अधीन देशों की तालिका लिखो ?

१४—लन्दन, हल, ग्लासगो और लिवरपूल की स्थिति के कारण बताओ।

१५—स्काटलैण्ड के धरातल का हाल लिखो ?

१६—मैनचेस्टर और लीड्स सूती और ऊनी कपड़ों की दस्तकारी के केन्द्र क्यों हो गये हैं ?

१७—ग्रेट वृटेन का जापान से मुकाबिला करो ?

९—आयरलैण्ड

इतिहास—

यह द्वीप पहिले अंगरेजों के आधीन था लेकिन सन् १९२० ई० से यह स्वतन्त्र हो गया है। अब इसके दो हिस्से हो गये हैं "उत्तरी आयरलैण्ड" और "आयरलैण्ड का स्वतन्त्र राज्य"। उत्तरी आयरलैण्ड" मे एक अलग पार्लामेंट है लेकिन उसके प्रबन्ध में अङ्गरेजो का भी हाथ है। आयरलैण्ड के स्वतत्र राज्य में एक स्वतन्त्र पार्लामेंट है। आयरलैण्ड के स्वतन्त्र राज्य से यह न समझना चाहिये कि यह अन्य देशों की तरह बिलकुल आजाद है। वृटिश राज्य के अन्तर्गत होते हुये भी इसे पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त है।

सीमा—

आयरलैण्ड के पूर्व मे उत्तरी चैनल, आइरिश समुद्र और सेंट जार्ज की चैनल है। यह उत्तर, पश्चिम और दक्षिण मे ऐटलांटिक महासागर से घिरा है।

विस्तार–

इसका क्षेत्रफल ३२,५०० मील के लगभग है। स्काटलैण्ड से थोड़ा ही बड़ा है। आयरलैण्ड यारप के बड़े द्वीपों में विस्तार के विचार से तीसरा और ग्रेट बृटेन का ½ है।

धरातल–

आयरलैण्ड के चारो किनारों पर तो पर्वत श्रेणियाँ हैं। परन्तु मध्य में जाकर विस्तृत मैदान है।

शैनन, व्यायन और लीफो ये तीन यहाँ की नदियाँ हैं, जिनमें शैनन थोड़ी बहुत उपयोगी है। अन्य से कोई विशेष लाभ नहीं। यहाँ झीलें बहुत हैं, जिनमें किलानी' और 'ने' प्रसिद्ध हैं।

जलवायु और उपज–

यहाँ की जल वायु नम है।

आयरलैण्ड म भेड़ बकरी चरते हैं। आलू जई और जब की यहाँ खास पैदावार है। परन्तु कृषि की दशा शोचनीय है, तथैव अब कुछ इसमें उन्नति होने लगी है।

दस्तकारी तथा व्यापार—

उत्तर पूर्व म 'लिनेन' की दस्तकारी होती है। पशु मक्खन और 'लिनेन' बाहर जानेवाली वस्तुओ में मुख्य हैं। यहाँ का व्यापार बहुधा ग्रेटबृटेन से तदन्तर अमेरिका से होता है। कोयले की खान न होने से यहाँ की दस्तकारी म बड़ा धक्का पहुँचा है। आयरलैण्ड के अन्दर नदियों और नहरों द्वारा व्यापार होता है और बहुत सी रेलवे भी खुल गई हैं।

नोट—'लिलन' का नाम डालटीन है।

प्रसिद्ध नगर

डबलिन—स्वतन्त्र आयरलैण्ड का राजधानी और सबसे बड़ा नगर तथा बन्दरगाह है। यहाँ एक विश्वविद्यालय भी है। यहाँ से कई तरह की शराब बाहर भेजी जाती है। यहाँ के मकान अच्छे अच्छे बने हैं।

बेलफास्ट—यह नगर आयरलैण्ड मे तिजारत और दस्तकारी के विचार से प्रथम है। यहां सन का कपडा अच्छा बनता है। उत्तरी आयरलैण्ड का पार्लियामेंट के यहीं बैठक होता है।

लन्दनडरी—खाने पीने को चीजें यहाँ से बाहर भेजी जाती हैं।

किलकिली—मे संगमूसा की खान है।

आर्मा—पवित्र नगर है।

पैम्ब्रज—इस बन्दर में फीते की दस्तकारी होती है।

किंगसटाउन—डाक के धुएँ के जहाजो की रवानगी का मुख्य स्थान है।

कार्क—प्रसिद्ध बन्दर है। आयरलैण्ड का तीसरा नगर है।

१०—डेन्मार्क

साधारण विवरण—

डेन्मार्क के राज्य में जटलैण्ड प्रायद्वीप और बाल्टिक सागर के कई द्वीप, जिनमें जीलैण्ड, फ्यूनेन, लीलैण्ड, लालैण्ड और बोर्नहम प्रसिद्ध हैं, शामिल हैं। पेटलान्टिक महासागर में आइसलैंड और फैरो द्वीपसमूह भी इसी राज्य के अधीन हैं।

ग्रीनलैण्ड द्वीप के मुट्ठीभर निवासी भी डेन्मार्क के राजाको अपना राजा समझते हैं।

जटलैण्ड और उसके आस पास के दूसरे डैनिश द्वीप योरप के 'बड़े मैदान' के कुछ भाग हैं। जटलैण्ड के पश्चिमी किनारे पर बालू जमे हैं, और यहाँ की पृथ्वी ऊसर है, परन्तु इसके विपरीत पूर्वी किनारा बड़ा उपजाऊ है। यहाँ के निवासी 'डेन्स' उद्योगी, परिश्रमी और कार्य्यपरायण हैं।

सीमा—

जटलैण्ड के पश्चिम में उत्तरी सागर है, उत्तर मे 'स्कैगर रैक और पूर्व मे कैटेगैट (Kattegat) हैं। जीलैण्ड और स्वीडीन को 'साउन्ड' नामक जलडमरू-मध्य अलग करता है।

विस्तार—

इस राज्य का क्षेत्रफल १५,३०० वर्गमीलों के लगभग है जिसमे फैरो द्वीप समूह शामिल है। फैरो द्वीप समूह का क्षेत्रफल ५१४ वर्गमील है। डेन्मार्क का क्षेत्रफल भावलपुर रियासत के बराबर है।

जलवायु और वर्षा—

यहाँ का जलवायु इङ्गलिस्तान से अधिक ठढा और शीत है, तिस पर भी मध्यम और सुहावन है। जाड़े के दिनों मे ठढक अधिक पड़ती है, परन्तु ग्रीष्म ऋतु में गर्मी काफी होती है, जिससे गेहूँ पैदा होता है। वर्षा आवश्यकतानुसार होती है।

यहाँ की पृथ्वी बहुधा उर्वरा है, और अधिकाश मे कृषि अच्छी होती है।

उपज—

जई, जव, राई और गेहूँ अनाज की पैदावार हैं। आलू और चुकन्दर भी खूब बोये जाते हैं। मक्खन अधिक निकाला जाता है और बहुत सा विदेश भेजा जाता है। साधारण भांति के जानवर पाले जाते हैं। आस पास के समुद्रो मे मछलियों का शिकार होता है। यहाँ खानो की बड़ी कमी है, इसलिये डेन्मार्क मे बाहर से कोयला और लोहा बहुत आता है और दस्तकारी का काम बहुत कम है।

शिल्प और व्यापार—

कृषि और मक्खन इत्यादि यहाँ के मनुष्यों का मुख्य पेशा है। कोपेनहेगन मे थोडे बहुत ऊनी कपड़े बुने जाते हैं। समुद्री व्यापार के सुन्दर माल प्रकृति ने इसी देश मे पैदा किये हैं।

विदेशी वस्तुओ में बुने हुए कपड़े, चीनी, लकड़ी, कोयला, लोहा और कहवा है। बाहर जाने वाली चीज़ें—मक्खन, अंडे, पशु, जव, गेहूँ और घोडे हैं।

प्रसिद्ध नगर—

कोपेनहेगन—जीलैण्ड के पूर्व में राजधानी है। यह नगर व्यापार के लिये अच्छे स्थान पर बसा है। यहाँ एक विश्वविद्यालय और कई उत्तम भवन हैं। जहाज़ का कारखाना भी यहाँ है और बाल्टिक सागर जाने के मार्ग मे होने के कारण प्रधानता रखता है।

आरहस—जटलैण्ड का सब से बड़ा नगर है। पशु और अनाज के व्यापार के लिये प्रायद्वीप भर में प्रसिद्ध है।

विदेशी अधिकार—

फैरो द्वीपसमूह—यह द्वीप समूह आइसलैंड और शेटलैंड के मध्य मे स्थित है। यहाँ के मनुष्य बड़े परिश्रमी हैं और मछलियों का शिकार करते, और भेड़, बकरी पालते, और उनके बाल व खाल काट कर अपने तन को ढकते हैं।

आइसलैण्ड—यह द्वीप विस्तार में डेन्मार्क का दुगना है। यहाँ बहुत ठढक पड़ती है। इसका भीतरी हिस्सा पहाड़ी है, जिससे यहाँ के निवासी विशेषकर किनारे पर रहते हैं। मछली का शिकार करना निवासियों का मुख्य पेशा है।

११—नार्वे

सीमा—

नार्वे के पश्चिम मे ऐटलान्टिक और उत्तरी महासागर, उत्तर मे उत्तरी महासागर, पूर्व में स्वीडन और दक्षिण में बालटिक सागर हैं।

विस्तार—

नार्वे का क्षेत्रफल १,२४,००० वर्गमील के लगभग है, जो कि बम्बई हाते के क्षेत्रफल के बराबर है। नार्वे स्कैन्डीनेविया प्रायद्वीप का पश्चिमी भाग है।

धरातल—

नार्वे योरप के पहाड़ी देशों में से एक है। इसका पश्चिमी भाग प्लेटो है जिसे पहाड़ों की कई श्रेणियाँ हो गई हैं, और कहीं कहीं चट्टानें भी हैं। दक्षिणी किनारे की जमीन नीची है। यहाँ के समुद्री किनारे कटे हैं। समुद्र में इसके समीप बहुत से द्वीप और द्वीप-समूह हैं। नार्वे और स्वीडन के बीच में 'स्कैनडीनेविया' नामक पहाड़ है।

उपज—

जई, जव, राई और गेहूँ अनाज की पैदावार हैं। आलू और चुकन्दर भी खूब बोये जाते हैं। मक्खन अधिक निकाला जाता है और बहुत सा विदेश भेजा जाता है। साधारण भांति के जानवर पाले जाते हैं। आस पास के समुद्रों में मछलियों का शिकार होता है। यहां खानों की बड़ी कमी है, इसलिये डेन्मार्क में बाहर से कोयला और लोहा बहुत आता है और दस्तकारी का काम बहुत कम है।

शिल्प और व्यापार—

कृषि और मक्खन इत्यादि यहां के मनुष्यों का मुख्य पेशा है। कोपेनहैगन में थोड़े बहुत ऊनी कपड़े बुने जाते हैं। समुद्री व्यापार के सुन्दर माल प्रकृति ने इसी देश में पैदा किये हैं।

विदेशी वस्तुओं में बुने हुए कपड़े, चीनी, लकड़ी, कोयला, लोहा और कहवा है। बाहर जाने वाली चीजें—मक्खन, अंडे, पशु, जव, गेहूँ और घोड़े हैं।

प्रसिद्ध नगर—

कोपेनहेगन—जीलैण्ड के पूर्व में राजधानी है। यह नगर व्यापार के लिये अच्छे स्थान पर बसा है। यहाँ एक विश्वविद्यालय और कई उत्तम भवन हैं। जहाज का कारखाना भी यहाँ है और बाल्टिक सागर जाने के मार्ग में होने के कारण प्रधानता रखता है।

आरहस—जटलैण्ड का सब से बड़ा नगर है। पशु और अनाज के व्यापार के लिये प्रायद्वीप भर में प्रसिद्ध है।

विदेशी अधिकार—

फैरो द्वीपसमूह—यह द्वीप समूह आइसलैंड और शेटलैंड के मध्य में स्थित है। यहाँ के मनुष्य बड़े परिश्रमी हैं और मछलियों का शिकार करते, और भेड़, बकरी पालते, और उनके बाल व खाल काट कर अपने तन को ढकते हैं।

आइसलैण्ड—यह द्वीप विस्तार में डेन्मार्क का दुगना है। यहाँ बहुत ठंढक पड़ती है। इसका भीतरी हिस्सा पहाड़ी है, जिससे यहाँ के निवासी विशेषकर किनारे पर रहते हैं। मछली का शिकार करना निवासियों का मुख्य पेशा है।

११—नार्वे

सीमा—

नार्वे के पश्चिम में ऐटलान्टिक और उत्तरी महासागर, उत्तर में उत्तरी महासागर, पूर्व में स्वीडन और दक्षिण में बालटिक सागर हैं।

विस्तार—

नार्वे का क्षेत्रफल १,२५,००० वर्गमील के लगभग है, जो कि बम्बई हाते के क्षेत्रफल के बराबर है। नार्वे स्केन्डीनेविया प्रायद्वीप का पश्चिमी भाग है।

धरातल—

नार्वे योरप के पहाड़ी देशों में से एक है। इसका पश्चिमी भाग प्लेटो है जिसे पहाड़ों की कई श्रेणियाँ हो गई हैं, और कहीं कहीं चट्टानें भी हैं। दक्षिणी किनारे का जमीन नीची है। यहाँ के समुद्री किनारे कटे हैं। समुद्र में इसके समीप बहुत से द्वीप और द्वीप-समूह हैं। नार्वे और स्वीडन के बीच में 'स्कैनडीनेविया' नामक पहाड़ है।

उपज—

जई, जव, राई और गेहूँ अनाज की पैदावार हैं। आलू और चुकन्दर भी खूब बोये जाते हैं। मक्खन अधिक निकाला जाता है और बहुत सा विदेश भेजा जाता है। साधारण भाँति के जानवर पाले जाते हैं। आस पास के समुद्रों में मछलियों का शिकार होता है। यहाँ खानों की बड़ी कमी है, इसलिये डेन्मार्क में बाहर से कोयला और लोहा बहुत आता है और दस्तकारी का काम बहुत कम है।

शिल्प और व्यापार—

कृषि और मक्खन इत्यादि यहाँ के मनुष्यों का मुख्य पेशा है। कोपेनहेगन में थोड़े बहुत ऊनी कपड़े बुने जाते हैं। समुद्री व्यापार के सुन्दर माल प्रकृति ने इसी देश में पैदा किये हैं।

विदेशी वस्तुओं में बुने हुए कपड़े, चीनी, लकड़ी, कोयला, लोहा और कहवा है। बाहर जाने वाली चीजें—मक्खन, अंडे, पशु, जव, गेहूँ और घोड़े हैं।

प्रसिद्ध नगर—

कोपेनहेगन—जीलैंड के पूर्व में राजधानी है। यह नगर व्यापार के लिये अच्छे स्थान पर बसा है। यहाँ एक विश्वविद्यालय और कई उत्तम भवन हैं। जहाज का कारखाना भी यहाँ है और बाल्टिक सागर जाने के मार्ग में होने के कारण प्रधानता रखता है।

आरहस—जटलैंड का सब से बड़ा नगर है। पशु और अनाज के व्यापार के लिये प्रायद्वीप भर में प्रसिद्ध है।

सिद्ध नगर–

क्रिसचियाना—नार्वे की राजधानी और उम्दा बन्दरगाह है। इसका नाम अब 'ओसलो' है। यहाँ एक विश्वविद्यालय और कई सुन्दर भवन हैं।

बर्गेन—नार्वे में मछलियों के शिकार का मुख्य केन्द्र है। यहाँ से सूखी मछलियाँ और मछलियों के तेल इत्यादि अन्य नगरों में भेजे जाते हैं।

हैमेरफेस्ट—यहाँ लकड़ी की बनाई हुई एक इमारत है। यह योरप का अत्यन्त उत्तम नगर है। विदेशी लोग यहाँ 'अर्द्धरात्रि—सूर्य' (Midnight sun) को देखने के लिये आते हैं।

१२—स्वीडन

सीमा–

स्वीडन, नार्वे का १½ है और स्कैन्डीनेविया प्रायद्वीप का पूर्वी भाग है। इसके उत्तर में नार्वे, पूर्व में फिन्लैण्ड, बोथनिया की खाड़ी और बाल्टिक समुद्र, दक्षिण में बाल्टिक सागर, स्कैगररैक और डेन्मार्क, और पश्चिम में स्कैन्डीनेविया का पश्चिमी भाग 'नार्वे' स्थित हैं।

धरातल–

स्वीडन का ढाल बाल्टिक सागर की ओर है। इसके किनारे नीचे हैं और यहाँ पर छोटे छोटे द्वीप समूहों और द्वीपों की वृहत् संख्या है। इस प्रायद्वीप की धरातल दक्षिण पश्चिम और पश्चिम की ओर अधिक ऊँची हो गई है, फिर क्रमश उत्तर की ओर नीची होती जाती है और अन्त में दक्षिण और पूर्व को ढालू होती है।

नदियाँ और झीलें

यहाँ की नदियाँ हैं तो छोटी पर उनकी संख्या अधिक है। यह देश नदियों के समान झीलों से भी भरा है, वे भी अधिकांश में छोटी छोटी हैं।

जलवायु और वर्षा-

गर्मी की ऋतु कम दिनों तक रहती है और जाड़े मे बड़े कड़ाके की सर्दी पड़ती है। देश का उत्तरी ध्रुव वृत्ति (Arctic Circle) में वर्तमान है। गर्मियों में बहुत उत्तरी भाग मे करीब २½ महीने तक रोशनी ही रोशनी रहती है, परन्तु जाड़े में दो दो महीने सूर्य के दर्शन नहीं होते। नार्वे मे वर्षा अधिक होती है।

उपज—

यहाँ पर कोयले की खानो के अभाव के कारण पानी से बिजली तैयार की जाती है और कारखाने चलाये जाते हैं। दक्षिण में कहीं कहीं खेती होती है, परन्तु अधिकाश में देश की पैदावार कम है। जव, जई और राई यहाँ की मुख्य उपज है। खेती के लिये पशुओं का पालन अधिक आवश्यक है। इसके ¾ भाग में जङ्गल है।

यहाँ के समुद्रों मे मछलियों का शिकार खूब होता है। उत्तर में 'रेन डियर' (Rein deer) नामक एक तरह का बारहसिंघा पाया जाता है, जिसकी खाल से वहाँ वाले अपने तन को ढाकते हैं। यही यहाँ का मुख्य पशु है।

व्यापार-

लकड़ी, सूखी मछली, कागज, कागज़ बनाने का मसाला और दियासलाई बाहर जाने वाले पदार्थों में मुख्य है। विदेश से यहाँ कपड़े, खाने पीने की वस्तुएँ और कोयले आते हैं।

प्रसिद्ध नगर-

क्रिसचियाना—नार्वे की राजधानी और उम्दा बन्दरगाह है। इसका नाम अब 'ओसलो' है। यहां एक विश्वविद्यालय और कई सुन्दर भवन हैं।

बर्गेन—नार्वे में मछलियों के शिकार का मुख्य केन्द्र है। यहां से सूखी मछलियां और मछलियों के तेल इत्यादि अन्य नगरों में भेजे जाते हैं।

हैमेरफेस्ट—यहां लकड़ी की बनाई हुई एक इमारत है। यह योरप का अत्यन्त उत्तम नगर है। विदेशी लोग यहां 'अर्द्धरात्रि—सूर्य' (Midnight sun) को देखने के लिये आते हैं।

१२—स्वीडन

सीमा—

स्वीडन, नार्वे का १½ है और स्कैन्डीनेविया प्रायद्वीप का पूर्वी भाग है। इसके उत्तर में नार्वे, पूर्व में फिन्लैण्ड, बोथनिया की खाड़ी और बाल्टिक समुद्र, दक्षिण में बाल्टिक सागर, स्कैगररेक और डेन्मार्क, और पश्चिम में स्कैन्डीनेविया का पश्चिमी भाग 'नार्वे' स्थित हैं।

धरातल—

स्वीडन का ढाल बाल्टिक सागर की ओर है। इसके किनारे नीचे हैं और यहां पर छोटे छोटे द्वीप समूहों और द्वीपो की बृहत् सख्या है। इस प्रायद्वीप को धरातल दक्षिण पश्चिम और पश्चिम की ओर अधिक ऊँची हो गई है, फिर क्रमश उत्तर की ओर नीची होती जाती है और अन्त में दक्षिण और पूर्व को ढालू होती है।

नदियाँ और झीलें—

यहाँ नदियाँ बहुत हैं, परन्तु उनमें झरने बहुत अधिक हैं।

गोथा—यहाँ की सब से बड़ी नदी है और 'कैटेगैट' में आकर गिरती है।

टोर्निया—'बोथानिया' की खाड़ी में गिरती है और स्वीडन के उत्तरी भाग को फिन्लैंड से अलग करती है।

झीलों में 'वेनर' और 'वेटर' उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त और बहुत सी छोटी छोटी झीलें हैं, पर वे उतनी प्रसिद्ध नहीं। वेनर विस्तार में योरप में तीसरी है, और वेटर दक्षिण में है।

जलवायु और वर्षा—

नार्वे और स्वीडन के जलवायु में कुछ अन्तर मिलता है। इसका कारण यह है कि 'गल्फ स्ट्रीम' नार्वे में चलती है, जिससे नार्वे के किनारों में बर्फ जमने नहीं पाती, और न यहाँ इसीलिये अधिक ठंढक पड़ती है। पानी यहाँ नार्वे से कम बरसता है।

उपज—

स्वीडन अपनी लोहे और तांबे की खानों के लिये संसार में प्रसिद्ध है। यहाँ सनोबर के वृक्ष अधिक हैं। स्वीडन के मध्य और दक्षिण में थोड़ी बहुत खेती हो ही जाती है। दक्षिण में केवल गेहूँ उगता है और जव और जई की मुख्य पैदावार है। यहाँ पशु, इतने पैदा हो सकते हैं जितना कि यहाँ के लिये काफी रहे, और थोड़ा बाहर भी भेजा जा सके।

शिल्प—

जंगल यहाँ अधिक हैं, जिसकी वजह से लकड़ी चीरने के कारखाने उत्पन्न हो गये हैं। जङ्गलों की लकड़ियाँ इतनी कोमल और मुलायम हैं कि उनकी दियासलाइयाँ बड़ी सरलता से बन

सकती हैं, और इसके लिये बहुत से कारखाने भी खोले गये हैं। वृक्षों की कोमल खालों से कागज बनाया जाता है। इस प्रकार की मुलायम खाल को अँगरेजी में 'उडपल्प' (Wood Pulp) कहते हैं। यहाँ पानी से कारखाने को चलाने के लिए बिजली पैदा की जाती है।

व्यापार—

लकड़ी, पशु, लोहा और दियासलाइयाँ बाहर जानेवाली वस्तुओं में मुख्य हैं। स्वदेश में आनेवाले पदार्थों में हर प्रकार के कपड़े, खाने पीने की चीज़ें और कोयले हैं।

प्रसिद्ध नगर—

स्टाकहोल्म—स्कैन्डीनेविया में सब से बड़ा नगर और स्वीडन की राजधानी है। यह अपनी स्थिति से बड़ा प्रसिद्ध बन्दरगाह हो गया है। यहाँ दियासलाइयों के बनाने का एक बड़ा कारखाना है।

गोटनबर्ग—स्वीडन का खास बन्दरगाह है। यहाँ की दस्तकारियाँ अच्छी होती हैं और लकड़ी विदेश को भेजी जाती है।

अपसाल—प्राचीन नगर है। यहाँ एक विश्वविद्यालय है।

मालमो—जर्मनी से व्यापार करता है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—डेन्मार्क के मनुष्यों का मुख्य पेशा क्या है? इस देश में विदेशी माल कौन कौन से आते हैं?

२—डन्मार्क के विदेशी राज्यों के बारे में क्या जानते हो? उनकी स्थिति और उपज बताओ। वहाँ के मनुष्य का जीवन निर्वाह कैसे होता है?

३—स्टाकहोल्म, ग्रासलो, कापेनहेगन, वेनर, गाटेनवर्ग, ग्राइ लैण्ड, हैमरफ़ेस्ट, गोथा, और 'उडपल्प' क्या हैं, कहाँ हैं और क मशहूर हैं ?

४—स्कैण्डीनेविया की दस्तकारी का थोड़ा हाल लिखो।

५—सिद्ध करो कि स्कैन्डीनेविया 'में जो आज वृक्ष है वही कल कागज जायगा'।

१३—रूस

सीमा—

योरप का आधे से अधिक पूर्वी भाग रूस से घिरा हुआ है इसके उत्तर में उत्तरी महासागर, पूर्व में यूराल पहाड़ और न और कास्पियन सागर, दक्षिण में काकेशस पहाड़, कालासाग और रूमानिया और पश्चिम में पोलैण्ड, बाल्टिक सागर औ फिनलैण्ड हैं।

विस्तार—

इसका क्षेत्रफल २०,००,००० वर्गमील से कुछ कम है, अर्थ यह एशिया के साइबेरिया से ⅓ कम है।

धरातल—

आम तौर से रूस का कुल भाग एक बड़ा मैदान है। 'वालड हिल' के पास ज़मीन कुछ अवश्य ऊँची है, जहाँ से ढाल आ टिक महासागर और बाल्टिक, काला और कासपियन के समु को जाता है। दो पर्वत मुख्य हैं—दक्षिण-पूर्व में काकेशस और पू में यूराल।

नीचे मैदान—

(१) टण्ड्रा—आर्कटिक महासागर के समीप रूस का उत्त

(२) 'काली भूमि' वाला देश—यह रूस का दक्षिणी अर्द्ध भाग है। पृथ्वी उर्वरा और गहरी होने के लिए प्रसिद्ध है। (३) दक्षिण-पूर्व के स्टेप्स—इस भाग की अधिक भूमि समुद्र के धरातल से नीची है। यहाँ नमक की छोटी छोटी झीलें हैं। इस भाग में कुछ नहीं उपजता।

नदियाँ—

१—आर्कटिक महासागर में गिरनेवाली—पेटचौरा और उत्तरी डूवाना।

२—बाल्टिक सागर में गिरनेवाली—नेवा, पश्चिमी डूवाना निमेन और विस्चुला।

३—काले सागर मे गिरनेवाली—प्रथ, नीस्टर और नीपर।

४—कास्पियन सागर मे गिरनेवाली—वलगा और यूराल। वलगा २,२०० मील लम्बी है, और योरप की सबसे बड़ी नदी है।

जलवायु और वर्षा

साधारणत दक्षिणी भाग गर्म और उत्तरी ठंढे हैं। इसकी वजह यह है कि यहाँ कोई बहुत ऊँचा पहाड़ नहीं है, जिससे कि उत्तर की ठंढी और दक्षिण की गर्म हवायें रुक सकें। जल अधिक नहीं गिरता। जो कुछ गिरता भी है सो भी गर्मियों में परन्तु जाड़े में बर्फ गिरती है।

उपज और भूमि।

उपज के विचार से यहाँ की भूमि में बड़ी विभिन्नता है। इस प्रकार रूस के चार भाग हो सकते हैं। (१) टण्ड्रा (Tundra) के देश—इस भाग में बर्फ गिरती है और साल के ६ महीने तक यहाँ के समुद्रों में बर्फ जमी रहती है, और इस लिये केवल लकड़ी और रोएँ को छोड़ कर और कुछ भी पैदा नहीं हो सकता। (२)

जगल—यह टयड्रा के दक्षिण का भाग है। रूस के ⅓ भाग में जङ्गल ही जङ्गल है। जहाँ जङ्गल कट गए हैं वहाँ जई, राई, जूट इत्यादि पैदा होता है। (३) काली मिट्टीवाले देश—इसके नाम ही से पता चल सकता है कि यहाँ की मिट्टी काली है। काली मिट्टी कृषि के लिये बड़ी उपयोगी है। इस भाग में 'प्रथ' से लेकर 'वलगा' तक रूस की सारी नदियाँ बहती हैं, जिससे कि यहाँ की भूमि बड़ी उपजाऊ हो गई है। यहाँ गेहूँ और जव बहुत ही पैदा होते हैं और आस पास की भूमि में जई और राई की भी उपज है।

इस भाग के दक्षिण की भूमि रेगिस्तान है। यहाँ कुछ भी पैदा नहीं होता और बाज स्थानों पर दलदल भी है। दक्षिण और पश्चिम में गर्मी काफी होती है। इस लिए यहाँ सन चुकन्दर और तम्बाकू उपजते हैं। रूस में नाना प्रकार की खानें हैं, जिनमें कोयला, लोहा, सोना, चाँदी, जस्ता और ताँबा मुख्य हैं। नमक मिट्टी का तेल और पारा भी उल्लेखनीय हैं। यूराल और काकेशस पहाड़ में खानें अधिक हैं। पेट्रोलियम भी काकेशस पहाड़ के समीप बहुत निकाला जाता है।

शिल्प—

ऊनी, सूती कपड़ों, लोहे, चमड़े, सन के कपड़ों और रेशम की दस्तकारी होती है।

व्यापार—

बाहर जानेवाली वस्तुएँ—अनाज, आटा, सन, लकड़ी मछली, मक्खन, अंडे, तेलहन, पेट्रोलियम, रोएँ और ऊन।

स्वदेश में आनेवाले पदार्थों में धातुएँ, कच्ची रुई, चाय मशीनें, कच्चा ऊन, शराब, रंग और कोयले मुख्य हैं। मुख्य नदियाँ

आपस में नहरों द्वारा संयुक्त हैं, इसी कारण ऐस्ट्राखान से आर्केंगल या बाल्टिक सागर तक माल जल द्वारा पहुँचाया जा सकता है।

प्रसिद्ध नगर और बन्दरगाह--

लेनिनग्रेड—रूस की प्राचीन राजधानी नेवा नदी पर बसा है। यह रमणीक नगर है जिसे 'पीटर महान' ने पीटर्सबर्ग के नाम से बसाया था और उन्हीं के नाम पर इस नगर का नाम करण हुआ था। यहाँ से स्वदेश और विदेश का व्यापार अधिक होता है। दस्तकारी भी यहाँ होती है।

मास्को—आज कल सोवियट (Soviet) रूस की राजधानी है। यह रूस की रेलवे लाइनों का केन्द्र-स्थल है। इस नगर की स्थिति देश के मध्य में है जिससे रूस भर का व्यापार यहाँ से हो सकता है।

आर्केंगल—श्वेत समुद्र का बन्दरगाह है। इसके निकट कोयले की खानें हैं।

तूला—इसके आसपास और लोहे कोयले की खानें और बड़े कारखाने हैं।

निजनी नोवगोरड—यहाँ का मेला योरप में सब से बड़ा होता है।

ऐस्ट्राखान—स्टरजिन मछली के शिकार का कास्पियन सागर पर एक प्रसिद्ध स्थान है।

संसार के अन्य प्रजातन्त्र राज्यों से रूसी प्रजातन्त्र या सोवियट रूस (Soviet Russia) बिलकुल भिन्न है। इस देश में सारी भूमि, जङ्गल तथा खनिज पदार्थ, जानवर, कारखाने और

रेलवे लाइन सरकार का धन मान ली गई हैं। प्रजा के चुने हुए सदस्यों की कौन्सिल (जिसको सोवियट कहते हैं) एक प्रेसीडेन्ट चुन लेती है जो मन्त्रियों द्वारा शासन करता है। इसी प्रकार का शासन व्हाइट रूस (White Russia) उक्रेन और ट्रान्स काकेशिया में भी है जो कि रूसी-सोवियट प्रजातन्त्र-संघ के भाग हैं।

उक्रेन—

ओडेसा—कालेसागर पर बसा हुआ है। यहाँ से रूस के उपजाऊ स्टेप्स का गेहूँ बाहर देशों में भेजा जाता है।

कीव—उक्रेन प्रजातन्त्र की राजधानी और मुख्य नगर है। यहाँ नीपर नदी के किनारे आटा पीसने, सिगरेट और शक्कर बनाने के कई कारखाने हैं।

वाइट रूस—

मिंस्क—वाइट रूस प्रजातन्त्र की राजधानी व, मुख्य नगर है।

ट्रान्स काकेशिया।

बाकू—मिट्टी के तेल के कुएँ हैं और यहाँ से नल द्वारा तेल बातू और पोती को भेजा जाता है, जो कि कालेसागर पर बन्दरगाह हैं। यह ट्रान्स काकेशिया प्रजातन्त्र की राजधानी है।

१४—बाल्टिक तटस्थ रियासतें

बाल्टिक सागर के पूर्वी तट पर रूस के पश्चिम में फिनलैंड, पोलैण्ड, एस्टोनिया, लैटविया और लिथूएनिया की रियासतें हैं।

ये रियासतें यूरोप के गत महायुद्ध से पहले रूस के साम्राज्य में शामिल थीं, परन्तु अब स्वतन्त्र होगई हैं।

फिनलैंड—झीलों से भरा पड़ा है। यहाँ जाड़े में खूब जाड़ा पड़ता है। झीलें और नदियाँ बर्फ से जम जाती हैं। गर्मी की ऋतु में यहाँ ऐसा ताप रहता है जैसा कि गगा की तरेटी में जाड़े की ऋतु में। यहाँ कई लोहे की खाने हैं जिनसे कई कारखाने चलते हैं। यहाँ के मनुष्य 'फिन्स' (Fins) कहलाते हैं, जिनका निर्वाह 'रेन डियर' से होता है। उसी का मास खाते और खाल पहिनते हैं। इस पशु के अतिरिक्त यहाँ और कोई जानवर नहीं पाया जाता। यह गाडी में जोता जाता है जिस पर यहाँ के निवासी सवार होते और बर्फ पर चलते हैं। हेलसिङ्गफोर्स—यहाँ की जन सख्या दो लाख से कुछ कम है, यहाँ का मुख्य नगर और बन्दरगाह है। यहाँ दियासलाई बनाने और लकड़ी चीरने के कई कारखाने हैं, जो बिजली द्वारा चलाये जाते हैं। यह बन्दरगाह दिसम्बर से अप्रैल तक बर्फ पड़ने के कारण बन्द रहता है।

एस्टोनिया—में फिन जाति के लोग रहते हैं। यहाँ का मुख्य नगर रेवल है, जहाँ होकर मध्य रूस का बहुत कुछ माल बाहर भेजा जाता है।

लैटविया—के लोग हगारी की मैगयार जाति से मिलते जुलते हैं। यहाँका मुख्य नगर रीगा बाल्टिक सागर का मुख्य बन्दरगाह है। यहाँ से ही सोवियट रूस की अधिकाश पैदावार बाहर

भेजी जाती है। यहाँ लकड़ी से काग़ज़ का गूदा, दियासलाई और मेज कुर्सियाँ इत्यादि बनाये जाते हैं। यहाँ कई कारखाने हैं जिनमें सन, रुई और ऊन के कपड़े बनाये जाते हैं और अलसी का तेल निकाला जाता है।।

लिथूएनिया—की रियासत मे बहुत कम दस्तकारी होती है। कोहना यहाँ का मुख्य नगर है।

डानज़िग—का स्वतन्त्र नगर बाल्टिक तट पर पोलैण्ड के उत्तर में बसा हुआ है। यह एक स्वतन्त्र बन्दरगाह बना दिया गया है, जिसके द्वारा सब देशो का माल बिना रोक टोक के आ सकता है। इस बन्दर पर पोलैण्ड राज्य का अधिकार अधिक है।

बाल्टिक तट की इन सभी रियासतों में आलू बहुत पैदा होता है। सन और अलसी की भी खेती होती है। अनाजों में केवल राई और जई पैदा होती है। इन रियासतों के घास के मैदानों में गायें, सुअर, मुर्गियाँ और हस पाले जाते हैं।

१५—पोलैण्ड

इतिहास—

सन् १८१४ ई० में पोलैण्ड रूस के राज्यान्तर्गत एक स्वतन्त्र राज्य था, परन्तु सन् १८३१ के बलवे के कारण इसकी स्वतन्त्रता में बाधा पड़ी, जिससे रूस के जार ने इसे अपने राज्य में सम्मिलित कर लिया। परन्तु महायुद्ध के समाप्त होने पर १९१९ में

पोलैण्ड के मनुष्यों को पहिले जैसी स्वतन्त्रता फिर हासिल हुई। यहाँ के निवासी 'पोल्स' हैं, जो आस्ट्रिया, जर्मनी, और रूस में बसे रहते थे। जितने राज्य अथवा रियासत में (रूस, आस्ट्रिया और जर्मनी के कुछ भागों में) यह जाति रहती थी, उतना ही देश इनको दे दिया गया है, जिसमें वे अपना राज्य फिर कायम रक्खे। रूस को अन्य दो राज्यों की अपेक्षा अधिक भूमि देना पड़ा है।

सीमा

उत्तर में जर्मनी, पूर्व में रूस, दक्षिण मे रूमानिया और पश्चिम में जर्मनी और जो की-स्लोवेकिया के राज्य हैं।

उपज और व्यापारादि

पोलैण्ड की भूमि बड़ी उपजाऊ है, जिसमें मकाई, गेहूँ और जव उगते हैं। यहाँ के लोग बड़े उद्योगी और परिश्रमी हैं, जिससे वे खानों में काम करते हैं। लोहा और कोयला यहाँ की मुख्य धातुएँ हैं। गलिशिया के सूबे में (जो पहिले आस्ट्रिया के कब्जे मे था) नमक की खदान है, और मिट्टी के तेल के कुएँ हैं। यहाँ से मशीने, गेहूँ, जव और पेट्रोलियम बाहर जाते हैं।

जलवायु—

यहाँ की जलवायु रूस के समान है। गल्फ स्ट्रीम का प्रभाव इसकी जलवायु पर खूब पड़ता है।

प्रसिद्ध नगर—

डैनजिग—पोलैंड का मुख्य बन्दरगाह है। यहाँ से माल विदेश को भेजा जाता है। चूंकि इस देश मे जर्मननिवासी

अधिक हैं इस कारण यह बन्दरगाह में प्रत्येक देशवालों को पूरी स्वतन्त्रता है।

वारसा—विस्चुला नदी पर पोलैंड की राजधानी है। इतिहास में भी वारसा प्रसिद्ध है। ऊनी और रेशमी कपड़ों की दस्तकारी होती है।

लोज, क्रैको और पोसेन—प्रसिद्ध नगर हैं।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—लेनीनग्रेड, मास्को, ओडेसा, वारसा और डैनजिग कहाँ हैं ? उनकी प्रसिद्धता का कारण बताओ।

२—रूस की नदियों का बयान लिखो और यह भी बताओ कि उनका इस देश की उन्नति पर क्या प्रभाव पड़ा है ?

३—यदि हम रूस में पश्चिम से पूर्व की ओर यात्रा करें तो हमें वहाँ के मनुष्यों उनके रहन सहन और उन देशों की उपज और व्यापार में क्या अन्तर मिलेगा ?

४—रूस में कौन कौन धातुएँ पाई जाती हैं और कहाँ ?

५—टण्ड्रा और काली मिट्टी वाले देशों का संक्षेप से हाल लिखो ?

६—पोलैण्ड का इतिहास लिखो।

७—रूस और पोलैण्ड के प्रसिद्ध बन्दरगाह बताओ और यह लिखो कि उनकी स्थिति में अन्तर होने से इनके व्यापार में कितना अन्तर हो गया ?

८—पेट्रोग्रेड का ऐसा क्यों नाम पड़ा ? इसकी स्थिति से रूस के राजा को राजशासन में क्या कठिनता पड़ती है ? इसको अब क्या कहते हैं ?

९—महायुद्ध के पश्चात् रूस के कितने हिस्से हो गये।

१०—मास्को राजधानी क्यों बनाई गई ?
११—स्टेप्स में गेहूँ पैदा होता है, सो क्यों ? गेहूँ के लिये कैसी भूमि और जलवायु की आवश्यकता है ?
११—पोलैण्ड,की जलवायु और पैदावार का हाल लिखो।

१६—रूमानिया

सीमा—

रूमानिया के उत्तर मे रूस और पोलैंड, पश्चिम मे हगरी, दक्षिण में बलगेरिया और पूर्व मे काला सागर है।

साधारण विवरण—

रूमानिया बालकन प्रायद्वीप का एक राज्य है, परन्तु डैन्यूब नदी के पूर्व मे होने से वास्तव में बालकन प्रायद्वीप से इसका कुछ सम्बन्ध न होना चाहिये था। यह राज्य वालाशिया और मोलडेविया और डाब्रुजा नामक तीन प्राचीन रियासतो और योरपीय महायुद्ध की सन्धि से पूर्वी हगरी के कुछ राज्यो के मिल जाने से बना है। इस राज्य का क्षेत्रफल नैपाल के बराबर है।

धरातल—

डैन्यूब और आल्पस के बीच में वालाशिया का विस्तृत मैदान है जो कि डैन्यूब नदी के पास दलदल हो गया है। मोलडेविया का कुल भाग एक ऊँचा प्लेटो है। घास से भरा हुआ स्टेप्स का ऊँचा देश डाब्रुजा में है। इसी के कारण डैन्यूब नदी दूसरी ओर मुड़ जाती है।

जलवायु और वर्षा—

इस देश की ग्रीष्म ऋतु में असह्य गर्मी पड़ती है और जाड़े में इतनी कड़ाके की सर्दी होती है कि डेन्यूब नदी के मुहाने पर वर्फ जम जाती है। पानी यहाँ अवश्य अधिक बरसता है।

उपज—

अधिकांश मनुष्यों का जीवन निर्वाह कृषि से होता है। मोल डैविया के उपजाऊ पठार में गेहूँ, मकाई और चुकन्दर पैदा होते हैं। कार्पेथियन पहाड़ की श्रेणियों में पेट्रोलियम, ताँबा और नमक पाये जाते हैं। धातुओं के निकालने में अब बड़ी उन्नति हो रही है। कोयला खोदा जाता है।

प्रसिद्ध नगर—

बुखारेस्ट—यहाँ से बहुत व्यापार होता है और इस नगर में एक विश्वविद्यालय है। चारों ओर से रेलवे लाइनें आकर यहाँ मिलती हैं, जिसकी वजह से यहाँ की वस्तुयें बाहर भेजी जा सकती हैं और बाहर से इस देश मे आ सकती हैं।

गलैज और ब्रेला—प्रसिद्ध नगर हैं।

१७—बलगेरिया

इतिहास—

सन् १८७८ ई० की बर्लिन-कांग्रेस में बलगेरिया को स्वराज मिला परन्तु टर्की के सुलतान के आधिपत्य मे रक्खा गया। १८८५ ई० में पूर्वी रूमीलिया इसमें शामिल हुआ, फिर इसकी सैन्य-शक्ति में उन्नति हुई और १९०८ मे बलगेरिया की स्वतन्त्रता घिघोषित की गई।

सीमा

इसके उत्तर में डैन्यूब, दक्षिण में ईजियन सागर, पूर्व में काला सागर और पश्चिम में युगोस्लेविया हैं।

विस्तार—

इसका क्षेत्रफल मय पूर्वी रूमीलिया के ४३,००० वर्ग-मील है।

जलवायु और उपज—

बलगेरिया में गर्मियों में अधिक गर्मी और जाड़ों में अधिक सर्दी पड़ती है। वर्षा सब ऋतुओं में अधिक होती है। जून के महीने में सब मासों से अधिक पानी बरसता है। भूमि उपजाऊ है, परन्तु कृषि की दशा शोचनीय है। भेड़ें पाली जाती हैं और उनके ऊन विदेश भेजा जाता है।

मनुष्य और जनसंख्या—

यहाँ के लोग बलगर्स हैं, जिनकी संख्या ३७,५०,००० है। अर्थात् ११० मनुष्य प्रति वर्गमील का परता बैठता है।

प्रसिद्ध नगर—

सोफिया—राजधानी है और कुस्तुनतुनिया की रेलवे लाइन पर स्थित है।

वारना—काले सागर पर प्रसिद्ध बन्दरगाह सोफिया से रेलवे द्वारा मिला है।

फिलिपपोलिस—सोफिया के बाद बलगेरिया में यही प्रसिद्ध नगर है।

१८—योरोपीय रूम (टर्की)

साधारण विवरण और सीमा—

योरोपीय रूम बालकन प्रायद्वीप का दक्षिणी पूर्वी कोना है। यह उत्तर में बलगेरिया, पूर्व में काला सागर, दक्षिण में मारमोरा के सागर और पश्चिम में यूनान और ईजियन सागर से घिरा है। इसका क्षेत्रफल इङ्गलैण्ड और वेल्स का दूना है। इस राज्य का आधे से अधिक भाग यूनानियों को महायुद्ध की सन्धि से मिल गया है। अलबानिया अब एक स्वतंत्र राज्य हो गया है। योरप में कुस्तुन्तुनिया के समीपवर्ती भाग केवल तुर्की के अधिकार में रह गया है। यह देश एक सूबा बना दिया गया है और तुर्की प्रजातन्त्र की राजधानी अब अंगोरा जो एशिया माइनर में एक नगर है बनाया गया है।

धरातल—

देश की अधिकांश भूमि नीची है और कम ऊंची पर्वत की श्रेणियां यहाँ हैं। बालकन और पिंडस पर्वत इसके मध्य और दक्षिण में हैं।

जलवायु और उपजादि—

जलवायु गर्म और अच्छी है। गेहूँ, मकाइ, तबाकू और कुछ फल यहाँ उत्पन्न होते हैं।

रेशम की दस्तकारी होती है।

प्रसिद्ध नगर—

कुस्तुन्तुनिया—प्राचीन राजधानी, बहुत सुन्दर शहर और बन्दर है। बासफोरस पर इसकी स्थिति होने से इसे व्यापार में बड़ा लाभ पहुँचा है। यहाँ की बहुत सी सड़कें तंग और गन्दी

रहती हैं। संसार के उत्तमोत्तम बन्दरगाहों में एक यह भी है। १४५३ ई० के पूर्व जब कि तुर्कों ने इस पर अपना अधिकार नहीं जमाया था, उस समय यह समृद्धिशाली रोमन राज्य की दक्षिणी राजधानी था।

एड्रियानोपल—किसी समय में राजधानी था।

राडेस्टो—दक्षिण में बन्दर है।

गेलीपोली—पश्चिम में प्रसिद्ध बन्दरगाह है और मारमोरा सागर में जाने के मार्ग पर एक प्रसिद्ध फौजी छावनी है।

१६—यूनान

साधारण विवरण, विस्तार और सीमा—

यूनान पुराने हकीमों और योद्धाओं का घर था। योरोपीय रूम के दक्षिण पश्चिम में है। यूनान के मुख्य भाग ये हैं—मोरिया, मेसेडोनिया और थेसाली के प्रायद्वीप और वे द्वीप समूह जो यूनान से सम्बन्ध रखते हैं, इसमें सम्मिलित हैं। ये सब मिला कर ४१,६०० वर्गमील होते हैं। इसके उत्तर में यूगोस्लोविया (सर्विया और माण्टनिग्रो) और बलगेरिया, पूर्व में ईजियन सागर, दक्षिण में रूम सागर, और पश्चिम में आईआनियन सागर और अलबानिया है। सन् १८१६ ई० से यह देश स्वाधीन हो गया है। यहाँ के मनुष्यों ने अब बहुत बढ़ती कर ली है, यहाँ तक कि योरोपीय महायुद्ध के पश्चात् रूमका बहुत भाग इसके अधीन हो गया है।

धरातल—

यूनान का अधिक भाग पहाड़ी है। यह पहाड़ सुन्दर और उपज से परिपूर्ण घाटियों से अलग हो गया है। यहाँ के समुद्री किनारे खाड़ियों से कट गये हैं और यहाँ पर कई द्वीप एक दूसरे

से अलग हैं। यूनान के समान कोई और छोटा देश नहीं जिसके समुद्री किनारे इतने लंबे हों। इसी कारण यहाँ के मनुष्य समुद्री मल्लाह और समुद्री यात्रा के प्रेमी हैं और व्यापार भी इनका इसी कारण अधिक बढ़ा चढ़ा है।

जलवायु—

यहाँ की जलवायु गर्म, सुहावनी और स्वास्थ्य-वर्धक है।

उपजादि—

मकाई, शराब, तेल और रेशम की यहाँ खास पैदावार है। भेड़ और बकरी, जो कि यहाँ बहुत पाये जाते हैं, गर्मियों में पहाड़ों पर और जाड़ों मे मैदानों मे पाये जाते हैं। एट्टिका के एक पहाड़ में मधु और मोम निकाले जाते हैं। यूनान में जंगल की भी अधिकता है।

शिल्प की दशा अच्छी नहीं, तो भी यूनान का व्यापार बढ़ता जा रहा है।

जैतून का तेल, किसमिस, अंगूर और तम्बाकू बाहर भेजा जाता है और अनाज और सूती कपड़े बाहर से आते हैं।

प्रसिद्ध नगर—

एथिन्स—राजधानी है। यहाँ एक विश्वविद्यालय है। इस नगर की प्राचीन गौरवता, प्रसिद्धता और कला-कौशल के चिन्ह अब भी पाये जाते हैं। २५ शताब्दी व्यतीत हुए जब कि यह नगर कविता और नाटकों के प्रेमी, चित्रकारों और साहित्याचारी मनुष्यों का निवास स्थान था। यह कहा जा सकता है कि जितने बुद्धिमान मनुष्य यहाँ हुए हैं उतने और किसी दूसरे नगर में नहीं।

कारिन्थ—किसी समय में अधिक आबाद और सुन्दर नगर था।

सालोनिका—प्रसिद्ध बन्दर है।
अर्गास—यूनान का एक प्राचीन नगर है।
स्पार्टा—यहाँ के मनुष्य जगत प्रसिद्ध वीर थे।
कारफो—आयोनियन द्वीप की राजधानी है।

२०—अल्बानिया

अल्बानिया एक छोटा स्वतन्त्र राज्य यूनान के पश्चिम में है। यहाँ का जलवायु गर्मियों में गर्म और जाड़ों मे सर्द है। कम ऊँची पहाड़ियाँ दोनों राज्यों में हैं। जव और मक्काई की पैदावार है। कहीं कहीं धातुयें भी पाई जाती हैं। यहाँ के मनुष्य बड़े वीर और स्वतन्त्रता के प्रेमी हैं, इसी कारण से टर्की और यूनानियो के घोर परिश्रम और युद्ध से भी ये न डरे और अपने कर्तव्य पर डटे रहे।

एड्रियाटिक समुद्र तट पर **स्कूटारी** सबसे बड़ा नगर है और **तिराना** इसकी राजधानी है।

२१—यूगोस्लेविया

साधारण विवरण—

आस्ट्रिया का दक्षिणी भाग सर्विया और मान्टनेग्रो के संयुक्त होने से यूगोस्लेविया का नवीन देश बना है। इसके उत्तर में आस्ट्रिया और हंगारी, दक्षिण में ऐड्रियाटिक सागर और यूनान, पूर्व में पोलैंड और बलगेरिया और पश्चिम में ऐड्रियाटिक सागर और इटली हैं।

उपज—

यूगोस्लेविया के मैदान उपजाऊ हैं, क्योंकि इस भाग में 'सेव' नदी की सहायक नदियाँ बहती हैं। इसके अधिकांश हिस्से में

जङ्गल हैं, इसलिए यहाँ लकड़ियों की अधिकता है। मकाई, गेहूँ, और बेर की खास पैदावार है। बेर सुखा कर विदेश को भेजा जाता है। उत्तर-पश्चिम की पहाड़ी भूमि में धातुयें अधिक हैं—जिनमें कोयला, लोहा, पारा और नमक विशेष हैं।

प्रसिद्ध नगर—

जैगरेब—जिसे ऐग्रम भी कहते हैं, सेव नदी पर अवस्थित है। यहाँ एक विश्वविद्यालय भी है। यहाँ होकर इटली को रेल गई है।

सेराजिवो—इसी नगर में क्रान्ति के कारण गत महायुद्ध आरम्भ हुआ था।

फियुम—बन्दरगाह है।

बेलग्रेड—यहाँ की राजधानी डैन्यूब और सेव नदियों के सगम पर बसा है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—सालोनिका की खाडी से लेकर स्पार्टा की खाडी तक समुद्री किनारे होते हुए एक समुद्र-यात्रा का हाल लिखो। साथ ही साथ यह भी बताओ कि इस यात्रा में महाद्वीप के समीप कौन कौन से समुद्र, खाडी, और द्वीप मिलेंगे? और प्रत्येक देश के बन्दरगाहों के नाम लिखो।

२—यूनान ने इतनी उन्नति कैसे की? यहाँ के मनुष्य कैसे व्यापारी बन गये?

३—बालकान प्रायद्वीप के सब देशों के (मय उनकी राजधानी के) नाम बताओ। योरोपीय महायुद्ध के पश्चात सन्धि में इस प्रायद्वीप के राज्य-प्रबंध में और उनके भाग आदि में कितना अन्तर पड़ा? कौन से नये राज्य स्थापित हुए और किनको अधिक लाभ या हानि हुई?

४—कुस्तुन्तुनिया की स्थिति ने इस नगर के प्रसिद्ध होने में कितना प्रभाव डाला ?

५—बलगेरिया और यूनान के जलवायु बताकर उनके अन्तर लिखो ।

६—टर्की में किस चीज की पैदावार होती है ?

७—रूमानिया का हाल संक्षेप से लिखो ।

८—अल्वानिया के राज्य शासन किस प्रकार से होता है ?

६—बालकान प्रायद्वीप में इतनी रियासतें क्यों स्वतंत्र हैं ? यदि वे सब एक ही राजा के अधिकार में होते तो उनके राज्य में क्या हानि अथवा लाभ होती ?

१०—डैन्यूब नदी ने बालकान प्रायद्वीप को किन बातों में लाभ पहुँचाया ?

११—निम्न की प्रसिद्धता के कारण लिखो और यह भी बताओ कि ये कहाँ हैं ?

एथेन्स, ऐड्रियानोपल, बुखारेस्ट, जैगरेब, अलबानिया ।

१२—यूगोस्लेविया किन किन राज्यों से मिलकर बना है ? इसकी पैदावार बताओ ।

२२—इटली

सीमा और क्षेत्रफल—

इटली का प्रायद्वीप गरम रूम सागर के मध्य में अवस्थित है । इसके उत्तर में आल्पस पर्वत हैं और शेष तीनों ओर यह समुद्र से घिरा हुआ है । पूर्व में ऐड्रियाटिक सागर और पश्चिम और दक्षिण में रूमसागर हैं। महासमर की सन्धि से इटली को आस्ट्रिया के ऐड्रियाटिक सागरवाले बन्दर मिले हैं । प्राय-द्वीप के पश्चिमी भाग में विसूवियस ज्वालामुखी पर्वत है । इसका

क्षेत्रफल १,१४,००० वर्गमील के लगभग है—अर्थात् इसका विस्तार पजाव प्रान्त के बराबर है। इस राज्य मे लिपरी, सिसली और सार्डिनिया के द्वीप भी सम्मिलित हैं।

इटली और भारतवर्ष की समता—

जैसे भारतवर्ष के उत्तर में हिमालय पर्वत रुपी एक विस्तृत प्राकृतिक दीवार खडी है उसी प्रकार इटली के भी उत्तर मे आल्पस पर्वत की श्रेणियाँ हैं। ये दोनो पर्वत क्रमश एशिया और योरोप मे सबसे ऊँचे हैं। हिमालय एशिया मे और आल्पस योरोप में हैं। भारत के उत्तर मे हिमालय के नीचे गगा और उसकी सहायक नदियों का एक चौड़ा मैदान है, वैसे ही इटली के उत्तर में भी पो नदी द्वारा सिंचित एक बड़ा लम्बार्डी का मैदान है। भारत के दक्षिण में लका द्वीप है जिसे पाक का जलडमरूमध्य उससे अलग करता है, उसी भाँति इटली के दक्षिण में सिसिली द्वीप है जिसे मेसीना का जलडमरूमध्य इटली से अलग करता है। दक्षिणी हिन्दुस्तान (प्रायद्वीप भारतवर्ष) पहाड़ी है—इटली का भी दक्षिणी भाग (प्रायद्वीप इटली) पहाड़ी है। दोनो देश किसी समय मे अपने धन, विद्या, कला कौशल मे अद्वितीय थे जब कि और देशो के मनुष्य अपढ़, जगली और मूर्ख थे, अथवा यह कहिये कि तब अन्य प्रान्तो में शिक्षा का सूर्योदय नही हुआ था। इटली मे उस समय ईसाई धर्म का प्रचार हो रहा था, जिसको समस्त योरोपीय देशो ने स्वीकार किया, उसी भाँति भारतवर्ष एक समय आर्य्य भाषा का केन्द्र था और बुद्धमत के आदि बुद्ध भगवान् ने भारत में जन्म लेकर अपने मत का यहाँ तक प्रचार किया कि उसे समस्त एशिया के लोगों ने सहर्ष स्वीकार किया।

प्राकृतिक विभाग और उपज—

इटली प्रायद्वीप के तीन प्राकृतिक विभाग हो सकते हैं। प्रथम लम्बार्डी का मैदान जो कि पो और उसकी सहायक नदियों द्वारा सिंचित होता है। यह भाग बड़ा उपजाऊ और आबाद है। पो नदी 'विसो' की चोटी से, जो फ्रान्स में है, निकल कर ऐड्रिया टिक सागर में गिरती है। मैदान के उत्तरी और पश्चिमी भाग में आल्पस पहाड़ से इसकी सहायक नदियों का निकास होता है। यहाँ मक्का की खेती होती है। सूखे भागों में गेहूँ और अंगूर भी लहलहाते हैं और शहतूत के पेड़ भी अधिक हैं। शहतूत की पत्तियाँ कीड़ों का भोजन होती हैं। कच्चा रेशम फ्रान्स को भेजा जाता है।

दूसरा भाग—प्रायद्वीप इटली है। इसकी सूरत मोजे अथवा बूट जूते से मिलती है। यह भाग पहाड़ी है, जिसे ऐपेनाइन पर्वत दो भागों में विभक्त कर देता है, परन्तु समुद्र तट पर छोटे छोटे मैदान हैं। रोम नगर के आस पास के मैदानों मे एक समय हरे हरे खेत थे, परन्तु अब यहाँ सिवाय दलदल के और कुछ नहीं शेष रहा। विसूवियस के समीप की भूमि बड़ी उर्वरा है, क्योंकि यहाँ ज्वालामुखी पहाड़ों की राख उड़ कर बिछ जाती है। गेहूँ इस भाग की मुख्य पैदावार है। फलों मे नारंगी, अंगूर और जैतून की अधिकता है। पहाड़ों में बन हैं, और जहाँ ये ढालू हो गये हैं, वहाँ थोड़े बहुत आदमी आकर बस गये हैं। इनका जीवन-निर्वाह भेड़ बकरियों से होता है, जिन्हें वे पालते हैं।

तीसरा भाग—द्वीपों का है, जिनमें सिसिली मुख्य है। सिसिली में स्ट्रामबोली नामक एक ज्वालामुखी पहाड़ है। उसके उत्तर और पूर्व में उपजाऊ मैदान हैं, जिनमें नींबू और नारङ्गी के फल होते हैं। गंधक भी पाया जाता है।

दानों आपस में पुल द्वारा मिल कर एक हो गये हैं। इस नगर में भी एक विश्वविद्यालय है। रेशम, मखमल और आटा पीसने का काम होता है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—इटली और हिन्दुस्तान का मुक़ाबिला करो।

२—इटली के कै प्राकृतिक विभाग हो सकते हैं ? उन भागों में किन किन चीजों की पैदावार होती है।

३—ज्वालामुखी पहाड़ों से इटली को क्या लाभ पहुँचता है ? इटली में ज्वालामुखी पहाड़ कहाँ है और उनके नाम लो।

४—' इटली को योरोप की खेलने की भूमि कहते हैं ' सिद्ध करो।

५—इटली के विदेशी राज्यों का थोडा सा हाल लिखो।

६—माल्टा अङ्गरेजों के कब्जे में कैसे आया ? इसका थोडा सा इतिहास और हाल लिखो।

७—सिसिली की क्या पैदावार है ?

८—रोम, जिनेवा, मिलन, वेनिस, नेपिल्स, पालेरमो, बर्न, वीना, बुडा-पेस्ट, ज्यूरिच, जिनौआ और बलेटा की प्रसिद्धता का सक्षेप में हाल लिखो।

९—देश में कोयला न होने से स्विट्जरलैण्ड के लोगों ने क्या उपाय किया है ?

१०—स्विटजरलैण्ड का कश्मीर से मुकाबिला करो।

११—स्विटजरलैण्ड के व्यापार पर किन मुख्य बातों का प्रभाव पड़ा ?

१२—डैन्यूब नदी का हाल लिखो। यह व्यापार के लिये लाभदायक क्यों नहीं है ?

१३—योरोपीय महासमर की सन्धि से आस्ट्रिया हंगारी के राज्य में क्या परिवर्तन हुआ ?

१४—' ब्लैक फ़ारेस्ट ' और ' आइरन गेट ' क्या हैं ? इनके बारे में क्या जानते हो ?

२६—जेको स्लोवैकिया

सीमा—

इस देश की रियासतें पहिले आस्ट्रिया के राजा के आधीन थीं, परन्तु योरोपीय महायुद्ध के पश्चात् ये स्वतन्त्र हो गईं। यह राज्य बोहेमिया, सिलेशिया, मोरेविया, और एक दूसरी रियासत के संयुत होने से बना है। इसके उत्तर में जर्मनी, पूर्व में पोलैंड, दक्षिण में आस्ट्रिया और हंगारी; और पश्चिम में जर्मनी और आस्ट्रिया हैं।

धरातल—

यह देश पहाड़ी है और पर्वत की श्रेणियों ने इसको चार भागों में बाँट दिया है। डैन्यूब नदी इस राज्य की दक्षिणी सीमा है जो कि इसे हंगारी से अलग कर देती है।

जलवायु—

इस राज्य की जलवायु हंगारी के समान है। जाड़े में अधिक सर्दी और गर्मियों में कड़ी गर्मी पड़ती है। वर्षा अधिक होती है।

उपज—

जेको स्लोवेकिया में धातुयें अधिक पायी जाती हैं। उत्तर के पहाड़ों पर विशेष कर बोहीमिया में पत्थर का कोयला, सोना, चाँदी, जस्ता, ताँबा और एक प्रकार का सफेद पत्थर जिसका शीशा बनाया जाता है, निकलते हैं।

प्रसिद्ध नगर—

प्रेग—राजधानी है। यहाँ एक विश्वविद्यालय है और ऊनी व सूती कपड़ों और शीशे का काम होता है।

ब्रन—एक प्रसिद्ध नगर है।

२७–जर्मनी

सीमा—

जर्मन साम्राज्य योरोप के मध्य में अवस्थित है। इसके उत्तर में उत्तर सागर, डेन्मार्क और बालटिक सागर, पूर्व में पोलैंड, दक्षिण पूर्व में जेकोस्लोवेकिया, दक्षिण में आस्ट्रिया और स्विट्जरलैंड और पश्चिम में फ्रांस, बेलजियम और हालैंड हैं। वासजेस पहाड़ जर्मनी को फ्रांस से अलग करता है। इसका क्षेत्रफल मद्रास हाते के बराबर है।

धरातल—

जर्मनी में ढाल साधारणत दक्षिण से उत्तर को है। यह जर्मनी साम्राज्य दो भागों में विभाजित हो सकता है—प्रथम उत्तर का मैदान तथा द्वितीय दक्षिण के ऊँचे देश, जो कि एक पठार है। उत्तर का मैदान योरोप के बड़े मैदान का एक भाग है जो कि रूस में विस्तृत हो गया है। बवेरिया का दक्षिणी भाग पहाड़ी है, जहाँ आल्प्स ८,००० फीट से १०,००० फीट तक ऊँचा है।

नदियाँ—

राइन, एल्ब, ओडर, रोन और डैन्यूब यहाँ की मुख्य नदियाँ हैं। राइन स्विट्जरलैंड के मध्य से निकल कर कान्स्टेंन्स झील में होती हुई जर्मनी में आती है और फिर पश्चिम की ओर बहती हुई हालैण्ड पार कर उत्तर सागर में गिरती है। एल्ब उत्तर समुद्र में गिरती है। ओडर दक्षिण से उत्तर को बहती हुई बालटिक सागर में पतित होती है। डैन्यूब नदी ब्लैक फारेस्ट नामक पहाड़ से निकल कर पूर्व की ओर बहती हुई बवेरिया के पठार को पार करती हुई आस्ट्रिया में चली जाती है।

जलवायु और वर्षा—

जर्मनी की जलवायु इंगलैण्ड की अपेक्षा जाड़ों में अधिक सर्द और गर्मियों में अधिक गर्म रहती है। इस देश के शीतोष्ण कटिबन्ध में स्थित होने तथा एटलान्टिक महासागर के समीप रहने से यहाँ वर्षा भरपूर हो जाती है, परन्तु जाड़े में बर्फ भी गिरती है।

उपज—

उत्तर के दलदल और ऊसर को छोड कर जर्मनी की शेष भूमि उपजाऊ है। मध्य के ऊँचे देशों में आलू और दूसरे प्रकार की तरकारियाँ उत्पन्न होती हैं। यहाँ का मुख्य अन्न राई है। तम्बाकू महुआ और सन का भी उपज है। मैदान के दक्षिण में चुकन्दर बोया जाता है जिसकी शराब बनाई जाती है। बवेरिया के पठार में जौ बोया जाता है। दक्खिन के ऊँचे भाग में धातुयें निकलती हैं जिनमें मुख्य लोहा और कोयला है। इन धातुओं की उपज में जर्मनी संयुक्त राज्य (अमेरिका) को छोड़ कर संसार में पहिला है। चाँदी, जस्ता, सीसा, ताँबा और नमक भी पाये जाते हैं।

शिल्प और व्यापार—

जर्मनी में मशीनों के बनाने के लिये बड़े बड़े और बहुत से कारखाने हैं और ऊनी, सूती, और रेशमी कपड़ों की दस्तकारी होती है। वैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा रङ्ग तैय्यार किया जाता है।

विदेशी वस्तुओं में अनाज कच्चा ऊन और सूत, कहुवा, रेशम, पशु, तेलहन और पेट्रोलियम है। स्वदेश से विदेश को जानेवाली वस्तुयें—कोयला, चमड़ा, चीनी, रङ्ग और मशीनें हैं। जर्मनी से भारतवर्ष में अधिक व्यापार होता है।

मनुष्य और राज्यप्रबन्धादि—

यहाँ के मनुष्य विज्ञान, कलाकौशल तथा रणनीति में संसार प्रसिद्ध हैं। युद्ध और विज्ञान जानने के लिये राज्य की

से सब के लिये आवश्यकीय आशा है। जहाजी फौज की शक्ति में अङ्गरेजो के नीचे जर्मन ही है। इस राज्य मे जर्मन भाषा बोलने वाले लोग शामिल हैं और यह एक प्रजातन्त्र राज्य है।

योरपीय-महायुद्ध का जर्मनी पर प्रभाव—

योरोपीय महायुद्ध के पूर्व जर्मनी ससार के प्रभावशाली और समृद्ध राज्यों मे से एक था। उस समय जर्मनी के अधिकार मे अफ्रीका के कई राज्य थे। पश्चिमी अफ्रीका मे टोगोलैण्ड, कैमेरून, डामरालैण्ड और नामकालैण्ड, कान्गो के स्वतन्त्र राज्य और पूर्व में समुद्री किनारे पर जर्मनो का पूर्वी अफ्रिका था जिसमे निउ गिनी और विसमार्क द्वीप पुज भी शामिल थे। परन्तु उनमें कैमेरून फ्रान्सीसियों को दे दिया गया और इनकी पूर्वी और पश्चिमी अफ्रीका और अफ्रीका मे दूसरे राज्य अग्रेजो के आधीन हो गये। जर्मनी की सेनादि भी घटा दी गई है। आलसेस और लोरेन के सूबे जो १८७३ ई० में फ्रांस से मिले थे, इस अवसर पर फिर इससे छिन कर फ्रान्स को मिल गये। पोलैण्ड का बड़ा भाग इससे निकल कर स्वतन्त्र हो गया। एशिया मे क्याऊ चाऊ को जापानियों ने छीन लिया। जर्मन के उत्तरी भाग का कुछ हिस्सा डेन्मार्क को, पश्चिमी कुछ हिस्सा वेल्जियम को और दक्षिणी हिस्सा जेको स्लोवैकिया को दिया गया है।

प्रसिद्ध नगर—

वर्लिन—जर्मन प्रजातन्त्र की राजधानी है और यहाँ एक विश्वविद्यालय है। इस नगर में बहुत मशीनें बनाई जाती हैं। रेलवे लाइनों का केन्द्र है।

स्टेटिन—बाल्टिक सागर पर एक बन्दरगाह है जहाँ जहाज़ बनाने का काम होता है।

हैम्बर्ग—व्यापारिक नगर तथा प्रसिद्ध बन्दर है। यहां जूट बनाने के कई कारखाने हैं।

नरेमबर्ग—ब्लैक फारेस्ट के निवासियों के व्यापार का केन्द्र है।

इसेन—यहा लाहे और बन्दूक बनाने का बड़ा कारखाना है।

ब्रेसलाओ—ओडर नदी पर बहुत दिनों से व्यापारिक नगर है।

कोलोन और मेगडीबर्ग—व्यापारिक शहर हैं और कपड़े और चीनी के बरतनो की दस्तकारी के लिये मशहूर हैं।

एलाशेपल—(Aix la chapple) ऐतिहासिक नगर है। सन् १८४४ ई० मे इङ्गलिस्तान व जर्मन आदि से सन्धि यहां हुई थी। यहां गरम पानी के सोते हैं।

हेनोवर—सूबे हेनोवर॰ की राजधानी था। यहां व्यापार अच्छा होता है।

म्यूनिच—सूबे बवेरिया की राजधानी है और यहां एक विश्वविद्यालय है और चश्में बनाए जाते हैं।

स्टटगार्ड—वरटनबर्ग की राजधानी है।

अलम—सरहद पर मजबूत किला है।

ड्रेसडन—सैक्सनी की राजधानी है। यहां चीनी के बरतन अच्छे बनते हैं।

लिपजिग—यहाँ किताबों का व्यापार बहुत होता है और यूनीवर्सिटी भी है।

कार्लसरोहा—बर्डन की राजधानी है।

मेहहिम—बर्डन के सूबे में सब से बड़ा नगर है।

२८—हालैण्ड

सीमा—

जर्मनी के पश्चिम में हालैण्ड का छोटा सा राज्य है। इसके उत्तर में उत्तर सागर, पूर्व में जर्मनी, दक्षिण में बेलजियम और पश्चिम में भी उत्तर सागर है।

विस्तार और धरातल—

'हालैण्ड' शब्द का अर्थ है नीचा देश। यह नाम उसके मुख्य प्रदेश से दिया गया है। १८१५ ई० तक यह नीदरलैण्ड के नाम से प्रसिद्ध था। इसका क्षेत्रफल १२,६५० वर्ग मील के लगभग और जनसंख्या ५,२१,७६,००० है।

धरातल—

हालैण्ड का किनारा दन्दानेदार और कहीं कहीं समुद्र के धरातल से नीचा है। इसलिये पानी को रोकने के लिए यहाँ वालों ने बड़े परिश्रम से ऊँचे ऊँचे बाँध बाँध दिये हैं। उन्हें अंग्रेजी में 'डाइक' (Dyke) कहते हैं। कुछ लोगों की राय है कि जुवाइडर जो पहिले हालैण्ड का भाग था और वह इतना नीचा था कि उसमें समुद्र का पानी बढ़ कर उसे डुबा दिया। यहाँ नदियाँ और झीलें अधिक हैं।

जलवायु—

यहाँ का जलवायु इंगलैण्ड से अधिक ठंढा है और नार्वे से मिलता है। जाड़े में अधिक सर्दी पड़ती है, परन्तु वर्षा कृषि के लिये काफी होती है।

उपज—

हालैण्ड के लोग भेड़ बकरी पालते हैं और उन्हें चरागाहों मे जो कि विशेषकर दलदल में हैं, चराते हैं और इन जानवरों के दूध से पनीर और मक्खन बनाते हैं। कई प्रकार की तरकारियाँ भी पैदा होती हैं। राई, आलू, गेहूँ, जई और सन की पैदावार मैदान में होती है। यहाँ खनिज पदार्थ कुछ नहीं होते। यहाँ हवा से मशीन चलाई जाती है।

व्यापार और मनुष्य—

हालैण्ड के मनुष्य मल्लाह हैं और जहाज बनाते हैं। यहाँ के मनुष्य परिश्रम करने, स्वच्छ रहने और कृपणता के लिये प्रसिद्ध हैं। ये मछली के शिकार के प्रेमी हैं और सन से कागज बनाते हैं।

बाहर से स्वदेश को आनेवाले पदार्थ—गेहूँ, आटा, मसाले, चावल, लोहे की बनी हुई चीजें, कहवा, ऊनी व सूती कपड़े और तम्बाकू।

विदेश जानेवाली वस्तुओं में पनीर, मक्खन, पशु, मछली, शराब, कागज़ और बोर्ड (Straw board) मुख्य हैं।

प्रसिद्ध नगर—

हेग—हालैण्ड की राजधानी है और ससार के राजनैतिक सभा का मुख्य स्थान है।

लक्सेम्बर्ग को एक छोटी रियासत वेलजियम के दक्षिण में एक राजा के आधीन में है जहाँ कि ताँबा पैदा होता है। और वह वेलजियम में गलाया जाता है। इसकी राजधानी का भी यही नाम है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—जेकोस्लोवेकिया का राज्य किन किन रियासतों में मिल कर बना है? इसकी उपज लिखो।

२—जर्मनी पर योरापीय महायुद्ध से क्या प्रभाव पड़ा?

३—जर्मन साम्राज्य के मनुष्य क्यों उनति पर हैं?

४—हालैंगड और वेलजियम के धरातल का हाल लिखो।

५—जर्मनी में कोयले की खानें कहां पाई जाती हैं? इसके पैदावार लिखो।

६—हालैंगड और वेलजियम की जलवायु का मुकाबिला करो और यह बताओ कि ये दोनों देश इङ्गलैंगड से क्यों अधिक गर्म और सर्द हैं?

७—निम्न क्या हैं, कहां हैं और क्यों प्रसिद्ध हैं?

बर्लिन, प्रेग, सेल्स, ऐम्स्टरडम, कील, डाइक, लीज, राइन, शेल्ट, और बीट (चुकन्दर)।

८—जर्मनी के आस पास के कौन से जिले और तहसीलें स्वतन्त्र हैं?

९—जर्मनी ने वेलजियम द्वारा फ्रान्स पर हमला क्यों कर किया? इससे उसको क्या लाभ हुआ? उसने सीधे फ्रान्स पर हमला क्यों नहीं किया?

१०—जर्मनी और बृटिश द्वीप का मुकाबिला जलवायु, उपज और व्यापार में करो।

११ जर्मनी और वेलजियम को राइन नदी से क्या क्या फायदे हैं?

१२ वेलजियम में संसार भर से घनी आबादी है, इस का कारण बताओ। यहाँ के व्यापार में इतनी उन्नति क्यों कर हुई? यहाँ धातुएँ किस स्थान पर पाई जाती हैं?

३०–फ्रांस

सीमा–

फ्रांस योरोप के पश्चिम में है। डोवर का मुहाना इसे इङ्गलैण्ड से अलग करता है। इस राज्य के उत्तर में बेलजियम और उत्तर सागर पूर्व में जर्मनी, स्विटजरलैण्ड और इटली, दक्षिण में रूम सागर और स्पेन और पश्चिम में बिस्के की खाड़ी और इंगलिश चेनल हैं। वासजेस पहाड़ इसे जर्मनी से अलग करता है और आल्प्स स्विटजरलैण्ड और इटली से। पेरेनीज पहाड़ फ्रान्स और स्पेन के बीच की सीमा है।

धरातल–

फ्रान्स की भूमि का ढाल दक्षिण पूर्व से उत्तर और पश्चिम को है। यह देश चौरस है, किन्तु बीच की सीमा पर के भागों में पहाड़ हैं। पैरेनीज के उत्तर यह लम्बी पर्वत की श्रेणी दो भागों में विभाजित होकर टूट जाती है जो कि सीन से स्पेन तक सीधी एक लाईन में पूर्व से पश्चिम को चली गई है। पहिली रोम की घाटी है और दूसरी गैरोन नदी की। इन दोनों घाटियों के बीच में ओवर्न का पठार है। सेन, लवायर, गेरोन और रोन यहाँ की बड़ी बड़ी प्रसिद्ध नदियाँ हैं, जिनके अतिरिक्त बहुत सी छोटी छोटी नदियाँ भी हैं।

जलवायु–

इङ्गलिस्तान से गर्म है। देश का पश्चिमी भाग एटलांटिक महासागर के समीप है, इसलिये समुद्री हवाओं द्वारा यहाँ का जलवायु जाड़े में गर्म और गर्मियों में ठढा, रहता है। ये हवायें

अपने साथ पानी भी लातीं हैं, जिससे यह भाग और हिस्सो की अपेक्षा अधिक तर रहता है। यो साधारणत पानी का काल कहीं नहीं है क्योंकि सारे देश में पानी के भाप से भरी हुई पश्चिमी की वायु चलती है। रूम सागर के समीपवाले देश की जलवायु इटली के समान है।

उपज—

फ्रान्स में ऐसी धरती बहुत कम है कि जहां जुताई न हो सकती हो। पहाड़ो पर खेती नहीं हो सकती, परन्तु कहीं कहीं थोड़े से चरागाह अवश्य हैं, जिनमें भेड़ बकरी इत्यादि अन्य जानवर चरते हैं। औवर्न ऊसर है। उत्तर मे गेहूँ और चुकन्दर की पैदावार है। मध्य और दक्षिण मे अंगूर जिससे शराब बनती है उपजती है। पहाड़ो और ऊँचे देशो मे मनुष्य राई बोते हैं। रूम सागर के निकट देशो मे मक्काई, जैतून, नारङ्गी और 'मलबरी' वृक्ष जिससे रेशम बनाया जाता है, पाये जाते हैं। देश के ⅙ भाग मे जङ्गल हैं। फ्रान्स में खनिज पदार्थ की उपज कम है। उत्तर-पूर्व में कुछ कोयले और लाहे की कानें हैं। गैरोन से तरेटी की लाल शराब प्रसिद्ध है।

शिल्प व व्यापारादि—

शिल्प के विचार से फ्रान्स का नम्बर इङ्गलैण्ड और जर्मनी के पश्चात् है। रेशमी और ऊनी कपडो का कार्य्य सर्वप्रथम है। उसके अनन्तर शराब और सूती कपड़ो का नम्बर है। छालटीन के कपड़े और मशीनें भी तैयार की जाती हैं।

फ्रान्स से ऊनी और रेशमी कपड़े, शराब, चमड़ा, सूती और छालटीन के कपड़े विदेश को भेजे जाते हैं और विदेश से

यहाँ पर कच्चा ऊन और सूत, तेलहन, कोयला और लकड़ी आते हैं।

मनुष्य और राज्यशासन—

सब देश ८६ भागो मे विभाजित है और केवल उन्हीं नदियों के नाम से प्रसिद्ध है जो उनमें होकर बहती हैं। फ्रान्स प्रजातन्त्रीय राज्य है जिसका सभापति प्रजा द्वारा हर सातवें वर्ष चुना जाता है।

विदेशी राज्य—

अलजीरिया, ट्यूनिस, सेनेगल, फ्रान्सीसी सुडान, डहोमी, फ्रान्सीसी ईक्वेटोरियल अफ्रिका में और अफ्रिका के पूर्व का द्वीप मैडागास्कर भी इन्हीं के अधीन है। गत महायुद्ध से केमरून जर्मनी से छीन कर फ्रांस को दे दिया है।

भारत मे—पांडिचेरी, यनाम, चन्द्रनगर, माही और कारीकल फ्रान्स की सरकार के कब्जे में हैं।

एशिया में—कोचीन चाइना, फ्रेन्च टान्गकिंग, अनाम और कम्बोडिया के राज्य जिसको कि फ्रेन्चइन्डो चायना कहते हैं।

अमेरिका में—फ्रेन्चगाइना, मार्टीनीक, ग्वाडेलोप, और 'वेस्ट इन्डीज' के बहुत से द्वीप व द्वीप पुञ्ज।

ओशिनिया में—न्यूकलेडोनिया, टाहीटी और बहुत से द्वीप।

नोट—सन् १८७० फ्रान्स और जर्मनी के युद्ध में जर्मनी ने फ्रान्स से अलसेस और लरिन छीन लिया था, परन्तु सन १६१६ को पेरिस की सन्धि में जर्मनी ने उन स्थानों को फ्रेन्च सरकार क हवाले किया।

प्रसिद्ध नगर—

पेरिस—फ्रान्स की राजधानी सीन नदी पर बसा है। जन-संख्या, सुन्दरता और विस्तार के विचार से योरोप में लन्दन के

उपज—

उत्तरी भाग की धरती उपजाऊ नहीं है; परन्तु समुद्र तट के मैदानों में विशेषकर ग्वाडल कीवर के मैदान में—अंगूरी शराब, नारंगी, जैतून, अखरोट, छुहारा, अजीर, केले और कई प्रकार के फल होते हैं। मध्य के पठारों में गेहूँ, मकाई और जौ की कुछ पैदावर है। नदियों की घाटियों में चावल की खेती होती है। कैन्टेब्रीया में बहुत सी लोहे की खानें हैं, जिनसे कच्चा लोहा निकाल कर इङ्गलैण्ड भेजा जाता है। पहाड़ों पर चाँदी, सोना और तांबा पाए जाते हैं। जस्ता, शीशा, टीन और पत्थर भी कहीं कहीं खानों से निकाले जाते हैं।

शिल्प और व्यापार—

सेविल में शराब बनाई जाती है। सूती और रेशमी कपडे और मशीनें भी तैयार होती हैं। चूंकि देश पहाड़ी है अत रेल और सड़कें कठिनाई से बनती हैं। इसलिये स्पेन ने अपने व्यापार में अधिक उन्नति नहीं की।

रुई, कोयला, चीनी, लकडी, मशीनें, लोहा, अनाज, और ऊनी कपड़े बाहर से स्पेन मे आते हैं और शराब, जैतून का तैल, लोहा, तांबा, शीशा, कार्क, मछलियाँ और कई प्रकार के फल विदेश को भेजे जाते हैं।

प्रसिद्ध नगर—

मेड्रिड—स्पेन की राजधानी है और देश के मध्य मे ऊँचे पठार पर बसा है।

कोरूना—उत्तर में जहाजी स्थान है।

टोलिडो—टेगस नदी पर पहिले समय में राजधानी था। यहाँ की तलवार प्रसिद्ध है।

सेविल—यहां कोलम्बस की कब्र है।

वेलिशिया—रेशमी कपड़े के लिये प्रसिद्ध है।

जिब्राल्टर—यह एक बन्दरगाह है, यह 'रूम सागर की कुंजी' कही जाती है। इस पर अंग्रेजों का कब्ज़ा है।

३२—पुर्तगाल

सीमा—

यह देश स्पेन के दक्षिण-पच्छिम में है। पुर्तगाल के उत्तर और पूरब में स्पेन का देश और दक्खिन और पश्चिम में एटलान्टिक महासागर है। इसका क्षेत्रफल ३,६०,००० वर्गमील है।

धरातल, जलवायु और शासन—

स्पेन की जमीन से पुर्तगाल की जमीन बिलकुल मिलती जुलती है। यहां के पहाड़, नदियां और प्लेटो सब स्पेन के सिलसिले हैं। नदियां बहुत छोटी और कम गहरी हैं। सिर्फ तीन नदी मोन्डीगो नेसरी, यहाओ प्रसिद्ध हैं।

जलवायु यहां का स्वास्थ्यकारक है और पानी यहां पर स्पेन से अधिक बरसता है।

यहां प्रजातन्त्र राज्य स्थापित है।

पैदावार—

अंगूर, नारंगी, नीबू, और जैतून के फलों की पैदावार होती है। धातुओं में लोहा, तांबा और नमक पाये जाते हैं। शराब, कार्क, जानवर और मांस बाहर भेजा जाता है।

प्रसिद्ध नगर—

लिसबन—पुर्तगाल की राजधानी है।

ओपोर्टो—बन्दरगाह है और यहां से शराब बाहर भेजी जाती"

कोएम्बरा—यहाँ पर पुर्तगाल का विश्व-विद्यालय है।

सीतोबाल—यहाँ नमक का काम होता है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—फ्रांस की धरातल का हाल लिखो। यहाँ का जलवायु इङ्गलैण्ड से गर्म क्यों है?

२—मलबरी वृक्ष, चुकन्दर, जैतून और ओवनें क्या है?

३—पैरिस, बोर्डो, मैड्रिड, मर्सीलीज, लिसबन ओपोर्टो, लील, टेगस, पैरेनीज, रान और कोरुना क्यों प्रसिद्ध हैं?

४—फ्रान्स के विदेशी राज्य बताओ। पेरिस की सन्धि से फ्रान्स को क्या लाभ हुए?

५—स्पेन की धरातल बताओ। इसकी ऐसी धरातल होने से इसके जलवायु, उपज, व्यापार और शिल्प पर क्या प्रभाव पड़ा है।

६—रूमसागर के पासवाले भाग की जलवायु का स्पेन के पठार की जलवायु से मुकाबिला करो।

७—स्पेन के प्लेटो का दक्षिणी भारत के प्लेटो से मुकाबिला करो।

८—पुर्तगाल की पैदावार बताओ।

९—लीयन्स नगर रेशमी कपड़े बनाने योग्य क्यों है?

१०—स्पेन और फ्रान्स की नदियों के नाम बताकर उनके किनारे के नगर बताओ।

३३—अफ्रिका महाद्वीप

१—इतिहास, अवस्थान और भू-प्रकृति

एशिया को छोड़ कर अफ्रिका संसार के सारे महाद्वीपों से बड़ा है। यह महाद्वीप प्रायः भारतवर्ष के समान ही आकृति का

है। स्वेज की नहर एशिया और जिब्राल्टर का जलडमरूमध्य योरोप से इसे पृथक् करते हैं। अफ्रिका के रूमसागर और लाल सागर के समीपवर्ती उत्तरी देश कई शताब्दियों तक अन्य देशों के निवासियों को विदित थे। प्राचीन काल में एशिया के काफिले नील तक पहुँचे थे और कभी कभी उत्तर के समुद्री किनारे किनारे होते हुए मोराको तक सफर कर डालते थे। इन्हीं उत्तरी प्रान्तों से योरोपवाले व्यापार करते थे। पन्द्रहवीं शताब्दी में, जब कि समुद्र-यात्रा की बड़ी धूम मची थी, अफ्रिका के पूर्वी और पश्चिमी समुद्री किनारों का पता चला था। उत्तमाशा अन्तरीप को सब से पहिले कोलंबस ने १४८७ ई० में मालूम किया और इसी अन्तरीप से होकर दश वर्षानन्तर वास्को डि गामा भारतवर्ष पहुँचा था। अफ्रिका के किनारों पर योरोपीय व्यापार के लिये नगर बसाये गये; परन्तु भीतरी देश का भ्रमण धीरे धीरे होता रहा। कई वर्षों तक अफ्रिका 'अँधेरा महाद्वीप' के नाम से प्रसिद्ध रहा और अब भी कभी कभी ऐसा कहा जाता है, क्योंकि इस समय भी इसका कुछ भाग ऐसा है जिसके बारे में बहुत थोड़ी बातें मालूम हुई हैं। अफ्रिका के इतने दिनों तक सभ्य न होने के भूगोल सम्बन्धी कारण ये हैं—

(१) इसके समुद्री किनारे कटे नहीं हैं।

(२) अफ्रिका की जलवायु अति उष्ण है और दूसरे महाद्वीपों के रहनेवाले यहाँ आकर सुख से नहीं रह सकते। अयन रेखाओं के बीच में इसका समुद्र तट स्वास्थ्य बिगाड़ता है। कहीं कहीं मैदानों में ऐसा ज्वर आता है कि परदेसी मर जाते हैं।

(२) अफ्रिका की नदियों में जहाज आ जा नहीं सकते, क्योंकि उनमें जगह जगह जल-प्रपात हैं।

(४) अफ्रिका के दक्खिन का भाग, उत्तर के पतले समुद्र तटस्थ सहारा उजाड़ खण्ड के बीच में आ जाने से, निपट अलग हो गया है।

(५) सूडान मे नील नदी के किनारों और बीच में सेवार जमते और झरने हैं, इस कारण इसकी ऊपर तरेटी का आविष्कार नहीं हुआ है। समुद्र यात्रा करनेवाले जब नदियों के मुहानों पर पहुँचे तो झरनों के कारण देश के भीतर न जासके।

(६) धरती पर माल मुसाफिर के जाने में 'ट्सेट्सी' नाम की मक्खियों से बड़ी बाधा पड़ती थी, जिनके काटने से घोड़े और दूसरे पशु मर जाते थे।

(७) बहुत से भागो के मनुष्य बड़े निर्दयी थे।

अफ्रिका के धरातल के विषय मे एक बात बड़े महत्व की है। एशिया में पैलेस्टाइन से लेकर अफ्रिका में न्यासा झील तक घाटियाँ चली आई हैं। इसी घाटी का नाम 'रिफ्ट' घाटियाँ हैं। पृथ्वी के पपड़े में लम्बे समानान्तर दरारें हो गई हैं और दोनो के बीच की धरती धँस गई है। लाल सागर ऐसी ही घाटी मे भर गया है। अलबर्ट, टैन्गेनिका और न्यासा झीलें सब विक्टोरिया झील के पच्छिम की घाटी मे भरी हैं। पूर्व मे भी एक घाटी है, जिसमें रुडल्फ झील स्थित है। पच्छिम के घाटी के किनारे पर रुवेनज़ारू का बर्फ से ढका हुआ पहाड है और पूर्व की घाटी से थोडी ही दूर पर केनीआ और किलिमजारो हैं। यह सब पहाड़ विषुवत रेखा के पास हैं। 'मौंट स्टानली' सबसे ऊँची चोटी है, जोकि २७,००० फीट ऊँची है।

अफ्रिका पठारों का महाद्वीप है। पठार एक थाली से मालूम होते हैं। ये दक्खिन में कम ऊँचे हैं, परन्तु पश्चिम को पहुँचते पहुँचते

नीचे मैदान हो जाते हैं। ऊँची धरती की तीन श्रेणियाँ दक्षिणी पठारों से निकलकर उत्तर की ओर बढ़ती गई हैं। एक लाल सागर के तट से सटी हुई पूर्व मे है। दूसरी सहारा को काटती हुई उत्तर पश्चिम को चली गई है। तीसरी गिनि की खाड़ी के समानान्तर है।

पूर्व की ओर उत्तर से दक्षिण तक पर्वत श्रेणियाँ दिखाई देती हैं, जिनमें—

(१) पेटलस पर्वतमाला के मध्य कई श्रेणियाँ हैं। सबसे ऊँची चोटी 'परकाल' है। इस पर्वत की ऊँची ऊँची चोटियाँ सदैव बर्फ मे ढकी रहती हैं।

(२) *पश्चिम की उच्च भूमि में एक पर्वत श्रेणी दिखाई* देती है, जो कि समुद्र से घिरी है। यही कारण है कि उसकी चोटियाँ द्वीप पुज सी दीख पड़ती हैं, जिनमें कैमरून सबसे प्रधान है।

(३) पूर्व की ओर अबीसिनियन पर्वत-श्रेणी हैं।

(४) दक्षिण-पूर्व की ओर हिन्द महासागर के तट पर जो पर्वत-माला है, उसके भिन्न भिन्न अंश के भिन्न भिन्न नाम हैं। इसके सबसे बड़े भाग का नाम 'ड्रेकेन्स बर्ग' है।

अफ्रिका की नदियाँ पठारों के ऊपर बड़ी चक्कर कर बहती हुई नहीं गिरतीं, जिससे कि उसमे जहाजों के आ जा सकने की सम्भावना हो सके। इन नदियों की शाखाओं के मुहानो पर 'डेल्टा' बन जाते हैं, जिनके ऊपर पानी में छोटी छोटी डोंगियाँ ही चल सकती हैं। यो तो अफ्रिका मे छोटी बड़ी अनेकों नदियाँ हैं, परन्तु उनमें चार—कांगो, नील, नाइजर और जेम्बसी—प्रधान हैं।

कांगो और जेम्बसी दोनों पहिले जिस रुख चली थीं, उसी रुख पर घूम जाती हैं। कांगो पटिलांटिक और जेम्बसी हिन्द महासागरों में गिरती हैं। नाइजर समुद्र तट के पहाड़ों से निकलती है और देश के भीतर सैकड़ों मील का चक्कर देकर फिर समुद्र में उसी स्थान के समीप गिरती है, जहां से पहिले उसका निकास हुआ था। यह नदी गिनी की खाड़ी में पतित होती है।

अफ्रिका की सब से प्रसिद्ध नदी नील है। पहिले यह नदी विक्टोरिया न्यान्ज़ा नामक झील से निकल कर अलबर्ट न्यान्ज़ा में गिरती है। अलबर्ट न्यान्ज़ा से होकर यह नदी विषुवत् रेखा के समीपवर्ती ऊंचे देशों में पहुंचती है, जहां कि इसमें झरने और जल-प्रपात बन जाते हैं। उनमें रियन और मर्चीसन नामक जल-प्रपात उल्लेखनीय हैं। बाद नील नदी समभूमि पर बहने लगती है और वहां इसका पाट इससे बढ़ने लगता है और साथ ही साथ गति भी मन्द हो जाती है। जब नदी का पानी १,००० मील तक पहुंच जाता है तब उसकी सहायक सोबट का इससे मिलाप होता है और फिर खारतूम के पास अबीसिनिया से एक धारा और आकर इसमें मिल जाती है, जिसका नाम 'नीली नील' (Blue Nile) है। परन्तु पहिली धारा अर्थात् मुख्य नदी इस स्थान के पूर्व तक 'उज्वल नील' (White Nile) के नाम से पुकारी जाती है। नील नदी के मुहाने से लेकर नीली और उज्वल नील के संगम तक जहाजों के आने जाने में छ स्थानों में रुकावट पड़ती है। मिश्र देश का यश इसी नदी पर निर्भर है, क्योंकि मिश्र में वर्षा तो बिलकुल ही नहीं होती और नील ही के द्वारा आबपाशी हो सकती है।

गर्मियों के दिनों में नील में बाढ़ आने लगती है और अक्टूबर के महीने में कहीं सबसे बढ़ कर होती है। नीली नील के बाद

अटबारा की धार इसमें आकर मिलती है। इन धाराओं के सम्मिलन के पश्चात् नील नदी सहारा नामक एक वृहत मरुभूमि से गुजरती है। फिर नदी कुछ घूम कर बहने लगती और नक़्शे में देखने से पता चलता है कि अपने पथ पर नील अंगरेज़ी अक्षर 'एस्' (S) के आकार का चक्र बनाती है। कैरो नगर के छोड़ने के बाद नदी में 'डेल्टा' बन जाता है। रूम सागर पर इसकी चौड़ाई १५० मील हो जाती है।

उपर्युक्त चार नदियों के अतिरिक्त सेनीगल, गैमबिया, आरेन्ज और दो छोटी नदियाँ प्रसिद्ध हैं। सब नदियाँ पठारों के किनारे पर पहुँच कर समुद्र तट के नीचे मैदानों पर आते समय ऊपर से नीचे गिरती हैं और उनमें झरने बन जाते हैं। ये सब जल-प्रपात देखे जा सकते हैं। आरेन्ज के बारे में यह लिखना आवश्यक है कि यह नदी गर्मियों में सूख जाती है।

अफ्रिका के मध्य में मीठे पानी की बहुत सुन्दर झीलें हैं,जिनका पानी कांगो और जेमबिसी में आता है। यहाँ की विशाल झीलें चारों ओर ऊँची भूमि से वेष्ठित हैं और कहीं पर्वतों पर भी विद्यमान हैं। प्रधानत यह झीलें प्रसिद्ध हैं—

(१) विक्टोरिया न्यान्जा—एक विशाल गोलाकार झील है।

(२) अलबर्ट न्यान्जा—नील नदी द्वारा विक्टोरिया न्यान्जा से मिली हुई है।

(३) टांगेनिका—ससार में मीठे पानी की दूसरे नम्बर की झील है।

(४) न्यायसा
(५) बङ्गायला } भी आवश्यकीय झीलें हैं।

अफ्रिका मे न कोई अच्छे अन्तरीप, न दन्दानेदार किनारा और न कोई उपद्वीप ही हैं। कोई उपसागर भी उल्लेखनीय नहीं। पूर्व में केवल एक द्वीप मेडागास्कर है।

२—जल-वायु, उद्भिज, जीवजन्तु और मनुष्य

विषुवत रेखा अफ्रिका के बीचोबीच मे होकर जाती है और इसका अधिकाश इसी रेखा के दक्षिण में स्थित है, अतएव इस महाद्वीप की जलवायु साधारणत अति उष्ण है। एक विचित्र बात यहाँ यह पाई जाती है कि विषुवत रेखा के दोनों ओर जल-वायु के कटिबन्ध एक ही तरकीब में देखे जाते हैं। ससार के अन्य स्थानों की भाँति यहाँ जाड़े की ऋतु का प्राय अनुभव नहीं हो सकता। समुद्र के किनारे के निकट मे मरुस्थल होने के कारण सामुद्रिक शीत का भी प्रभाव यहाँ वायु पर नहीं पड़ता। धुर उत्तर और दक्षिण निरक्ष स्थान से अक्षाश ३०° पर जलवायु रूम सागर के समीपवर्ती नगरों के समान है अर्थात् जाड़े में पानी बरसता है और गर्मियों मे गर्मी पड़ती है।

पूर्व के समुद्र से वायु चलकर उत्तरी अफ्रिका में जलवृष्टि करती है। उत्तर-पूर्व की हवायें एशिया के ऊपर होती हुई जाती है, जिसमे अफ्रिका पहुँचते पहुँचते इन हवाओं में पानी बिलकुल नहीं रह जाता और सूखी हो जाती हैं। अत सहारा और पश्चिमीय मरुभूमि मे वर्षा का नाम मात्र भी नहीं है। अबीसिनिया के पहाड़ों मे गर्मियों में वर्फ पिघलती है।

रूम सागर के छोटे छोटे देशों के दक्षिण, उत्तरी अफ्रिका में सहारा का बालुकामयी देश है। सहारा के दक्षिण एक पट्टी है जिसको 'सवैना' कहते हैं। यह उष्ण-कटिबन्ध के खुले हुए घास के मैदान हैं, जहाँ गरमी में खेती भर को पानी बरस जाता है, पर

इतना नहीं बरसता कि घने जङ्गल बन सकें। सवैना की पट्टियों के बीच में कांगो बेसिन का बड़ा वर्न है, जिसमें उष्ण कटिबन्ध के पेड़ पौधे हैं। दक्षिण में पश्चिम समुद्र तट पर कालाहारी का ऊसर मैदान है। कालाहारी के पूर्व धरती ऊसर नहीं, क्योंकि दक्षिण-पूर्व की ट्रेड-हवायें हिन्द महासागर से आती हैं और पानी बरसाती हैं। इस मरुभूमि के उत्तर दक्षिण अफ्रिका की भूमि भी कलाहारी के समान है और वहाँ भी वर्षा की न्यूनता है। उष्ण कटिबन्ध-वाले देशों मे जङ्गल ही जङ्गल हैं, जो कि अभी इतने साफ नहीं किये गये हैं, जिससे कि वहाँ बस्ती अधिक हो सके। नील नदी से सींची हुई तरेटी और उसका डेल्टा भारतवर्ष से मिलते जुलते हैं।

मध्य अफ्रिका की नदियो से सोना निकाला जाता है। दक्षिणी भाग में कीमती जवाहिरात मिलते हैं। नमक भी यहाँ निकाला जाता है। निरक्ष स्थान से अक्षाश ३५° वाले देश में मकाई, अंगूर नारङ्गी और गेहूँ की अच्छी पैदावारें होती हैं। ऊँट, बैल, भेड़ और घोड़े यहाँ के प्रधान पालतू जानवर हैं। गोरिला, तेंदुआ, हाथी, सांप, जेबरा, जिराफ और सिंह जङ्गली जानवर हैं। शुतुर्मुग बड़े काम की चिड़िया है।

जब से रेले बन गई हैं, नदियों द्वारा सफर करने की अधिक आवश्यकता नहीं रही।

यहाँ की आबादी का ठीक ठीक पता लगाना कठिन है, परन्तु पन्द्रह सोलह करोड़ के बीच में जन सख्या होगी। अफ्रिका की आबादी दक्षिण अमेरिका से घनी और योरप की अपेक्षा बिखरी है। रेगिस्तानों में कोई नहीं रहता। इनके किनारे किनारे पशु चरानेवाले और इधर उधर फिरनेवाले कुछ लोग रहते हैं। हबशी, मुसलमान और ईसाई इन तीन जातियों का यहाँ ...

है। खासकर सहारा के उत्तर के देशों के निवासी मुसलमान है इसके ठीक नीचे बीच की चिट मे काले हबशियों की आबादी है, जो जङ्गलो और मैदानों मे बसते हैं। इस जाति के लो असभ्य हैं। दक्षिण के प्रायद्वीप मे बैनर जाति के लोग रहते हैं कांगो के बनों और कालाहारी के उजाड़ खंडों में बौनों की कु जातियाँ रहती हैं।

३—अफ्रिका में योरोपीय शक्तियाँ

अफ्रिका का प्राय: सारा भाग योरोपीय राज्यों के अधी है। केवल तीन राज्य स्वतन्त्र हैं, जिनमे एबीसिनिया, मोराको लाइबेरिया हैं। इन तीनो राज्यो का क्षेत्रफल ५,५०,००० व मील के हैं। योरोपीय महासमर की सन्धि के पश्चात् अफ्रिक मे जर्मनी के कुल राज्य मित्र दलो को मिल गये हैं। जर्मनी के आधे मे अधिक भाग बृटिश-साम्राज्य के अन्तर्गत आ गय है, जिससे बृटिश अफ्रिका का क्षेत्रफल बढ़ कर ३२,७७,०० वर्ग मीलो तक हो गया है। फ्रान्सीसियों को कैमेरुन का दे जर्मनो से मिला है। सारे फ्रेन्च अफ्रिका का क्षेत्रफल अ ३६,४०,००० वर्ग मीलो तक पहुँचता है। स्पेन, पुर्तगाल, बेल जियम और इटली की विदेशी रियासतें भी अफ्रिका मे है जिनमें स्पेन का राज्य १,५४,००० और पुर्तगाल का ७,६४,००० वर्ग मीलो मे फैला है। बेलजियम राज्य के आधीन देशों क विस्तार ६,१०,००० वर्ग मीलो मे है। २,३०,००० वर्ग मीलों इटली का झंडा उड़ता है।

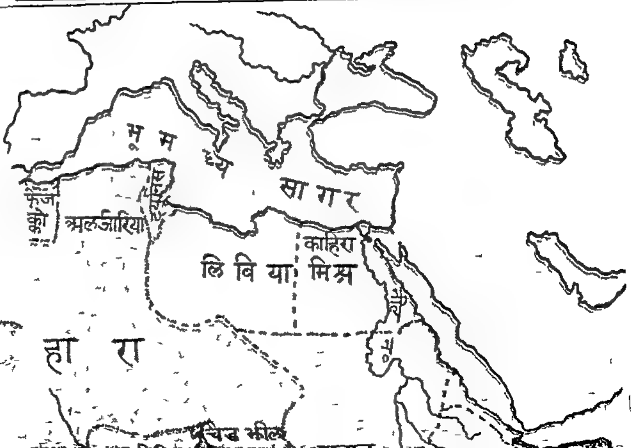
नीचे अफ्रिका के सारे देशों के नाम और उनकी राजधानिय लिखी जाती हैं। साथ ही साथ यह भी दिखाया जाता है कि वे किसके आधीन हैं—

* आनम्ल यह फ्रांस की सरक्षता में है।

मुसलमान हैं
बर्जियों की आबाद
जाति के लोग
के लोग रहते हैं।
में दोनों की हुई

शक्तियाँ
राज्यों के अधीन
सिनिया, मराक्को
५,५०,००० वर्ग
पश्चात् अफ्रिका
हैं। जर्मनी का
त गया

अफ़्रीका-राजनैतिक





फ्रीटाउन
लिबेरिया
एका
केनिया
किस्मायू
बेलजियन कांगो
विक्टोरिया झील
लोम्बागो
मुम्बासा
अटलान्टिक महा सागर
टनगेनिका राज्य
लुआन्डा
पुर्तगाली
बेंगेला
पश्चिमी अफ्रीका
रोडेशिया
मोसामेडी
महा सागर
मडागास्कर
कैप प्रान्त
डर्बन
केपटाउन
बन्दर एलिजबेथ
उत्तमाशा अन्त०



देश	किसके आधीन	राजधानी
मिश्र	वृटिशकी संरक्षतामें	काहिरा (कैरो)
मिश्री सूडान	वृटिश*	खारतूम
गोल्ड कोस्ट	"	कमासी
सीरालियन	"	फ्रीटाउन
नाइजीरिया	"	लोकोज
पूर्वी अफ्रीका का एक भाग	"	मोमबासा
सेमालीलैण्ड	"	वरवरा
उगैन्डा	"	उगैन्डा
टैंगैनीका	"	जैंज़ीबर
न्यासालैंड	"	ब्लेन्टायर
रोडेशिया	"	सौलेसवरी
वेचुआनालैंड	"	मेफकिन
बसूटोलैंड	"	मसेरू
अन्तरीप उपनिवेश	"	केपटाउन
नैटाल	"	पीटरमारिट्जबर्ग
आरेंज की स्वतन्त्र रियासत	"	ब्लोमफान्टीन
ट्रान्सवाल	"	प्रिटोरिया
अलजीरिया	फ्रान्स की	अलजीयर्स
ट्यूनिस	संरक्षता में	ट्यूनिस

*यह भाग वृटिश और मिश्र के संयुक्त संरक्षता में है।

देश	किसके आधीन	राजधानी
कांगो का कुछ भाग (केमेरून आदि)	फ्रान्स	लाइब्रेवाइल
पश्चिमी अफ्रिका व सहारा	,,	डकार
मैडागासकर	,,	अनटनाननारिवो
सहारा का कुछ भाग	स्पेन	रिओ डि ओरो
पश्चिमी अफ्रीका का एक भाग	पुर्तगाल	सेंट पाली डि लोमान्दा
पूर्वी अफ्रीका का कुछ भाग	,,	लारेन्को मारकेस
कांगो का कुछ भाग	बेलजियम	बोमा
ट्रिपोली	इटली	ट्रिपोली
लाल सागर के समीप का कुछ राज्य	,,	मसौआ
सोमालीलैंड	,,	इटला
मोराको	फ्रांस की संरक्षता में	फेज
अबीसिनिया	स्वतन्त्र	अदेस अबेबा
लाइबीरिया	,,	मनरोविया

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—अफ्रिका का इतिहास संक्षेप से लिखो ?

२—अफ्रिका को कभी कभी 'अँधेरा महाद्वीप' क्यों कहते हैं ? इस महाद्वीप के असभ्य होने के कौन कौन से कारण हैं ?

३—अफ्रिका की नदियों का थोड़ा सा हाल लिखकर यह बताओ कि उनमें जहाज क्यों आ जा नहीं सकते ?

४—नील नदी का पूर्ण विवरण लिखो ?

५—'दि ग्रेट रिफ्ट वैली' क्या है, इसके बारे में क्या जानते हो ?

६—अफ्रिका के धरातल का हाल बताओ। यहाँ के पर्वत श्रेणियाँ हैं ?

७—अफ्रिका के किनारा के कटे न होने से इस देश के व्यापार में कितनी बाधायें पड़ी हैं।

८—अफ्रिका की जलवायु साधारणतः कैसी है ? अपने उत्तर का कारण लिखो।

९—नमक कहाँ निकाला जाता है, और फल किस भाग में पाये जाते हैं ?

१०—'अफ्रिका में पानी बिल्कुल नहीं बरसता' इसका क्या कारण है ? मिश्र में सिंचाई कैसे होती है ?

११—इस महाद्वीप में किन जातियों का प्राबल्य है ? यहाँ के मनुष्यों के रहन-सहन और धर्म्म बताओ।

१२—योरोपीय महायुद्ध से जर्मनी के अफ्रिका में क्या नुकसान हुआ और मित्रराष्ट्रों को उनसे कौन कौन नये राज्य मिले ?

१३—अफ्रिका के योरोपीय शक्तियों की तालिका लिखो।

१४—अफ्रिका में मीठे पानी की झीलें कहाँ हैं ? अलबर्ट न्यान्जा की प्रसिद्धता का हाल लिखो।

१५—सीरालीयन, नेटाल, सहारा, कैमेरून, अलजीरिया, ट्रिपोली, लाइबीरिया, मिश्र, ट्यूनिस और मैडागास्कर किसके कब्जे में हैं ? इन राज्यों की राजधानियाँ लिखो।

४—उत्तरी अफ्रिका

उत्तरी अफ्रिका में रूमसागर के किनारेवाले देश शामिल हैं, जिनमें से कुछ, उदाहरणतः मिश्र, प्राचीन काल में सुसभ्यता के लिये बड़े प्रसिद्ध थे। इन राज्यों के दक्षिणी भागों की सीमा सहारा का रेगिस्तान है, जिससे इन देशों की शिक्षा का प्रभाव और दक्षिणी देशों पर न पड़ सका।

यहाँ की जलवायु स्पेन और दक्षिणी इटली के समान है, परन्तु गर्मी वहाँ से कुछ अधिक पड़ती और पानी कुछ कम बरसता है। दक्षिणी योरप और दक्षिण-पश्चिमी एशिया के इतिहास से इसका भी इतिहास मिलता जुलता है। सहारा के दक्षिण अफ्रीका के प्रान्तों से कुछ भी आना जाना नहीं रहा।

उत्तरी अफ्रीका में एटलस पहाड़ की श्रेणियाँ हैं। उत्तर के समुद्र तट का मैदान कुछ सूखा है पर यहाँ अंगूर, गेहूँ, अंजीर और जैतून की खेती होती है। इन्हीं पहाड़ से निकलनेवाली नदियों से सिचाई होती है। एटलस पहाड़ समुद्र की हवा को ऊपर उठा देते हैं, जिससे उनके ढाल पर बनों के लहलहाने के लिये पूरा पानी बरस जाता है। यहाँ की सबसे अच्छी पैदावार काग के पेड़ की छाल है जो स्पेन, पुर्तगाल और फ्रांस आदि शराब बनाने वाले देशों को बहुत भेजी जाती है।

पहाड़ों की श्रेणियों के बीच के सूखे पठारों पर पशु चराये जाते हैं और अच्छा कागज बनाने के लिये 'अलफाफा' घास की खेती होती है। एटलस पहाड के दक्षिणी तट पर कई बड़े नखलिस्तान हैं। वे छोहारों के लिये प्रसिद्ध हैं, जो योरप भेजे जाते हैं। इन नखलिस्तानों की सिंचाई कुछ तो पहाड़ी नदियों से होती है और कुछ पाताल तोड़ कुओं (Artisan well) से। आर्टीजियन कुयें पतले छेद के होते हैं जो सूखे देशों में ऊपर की तह को काटकर पानी भरी हुई नहरों में गलाये जाते हैं।

एटलस के पासवाले नखलिस्तानों से कारवाँ भयङ्कर सहारा को पार करने चलते हैं। इस बालू और चट्टान के सागर में थोड़े मार्ग कुएँ से कुएँ तक हैं। सहारा में प्यास के मारे मृत्यु का भय, चोर और डाकुओं से डर और गर्म बालू की ऐसी भयङ्कर आँधियों का डर रहता है, जिससे मनुष्य और ऊँट दोनों का दम

घुटने लगता है और जिनकी रेत के नीचे कभी कभी कुछ काफिले गड़ जाते हैं।

ऐसी यात्राओं में ऊँट ही काम आता है। उसके नर्म मुर्दा बादल के से पाँव, उसकी दूर तक बिना जल पिये चले जाने की शक्ति और उजाड़ खंड के कटीलों को खाने की योग्यता मानो यह दर्शाते हैं कि सहारा के पार जाने के लिये ही पैदा किये गये हैं। हर काफिले के तिहाई ऊँट मर जाते हैं और यात्रा के अन्त में जो शेष रहते हैं उन्हें सप्ताहों थकावट दूर करने में लगते हैं।

यहाँ के निवासी दो श्रेणियों में बाँटे जा सकते हैं। १—बरबरा—ये लोग कृषि करके अपना जीवन निर्वाह करते हैं। २—अरब जो मिश्र में आकर बस गये हैं। उनका भी पेशा खेती करना है। यहाँ के मनुष्यों का मुख्य धर्म इस्लाम है।

नीचे उत्तरी अफ्रिका के देशों का क्षेत्रफल और जनसंख्या दी जाती है—

नं०	देश	क्षेत्रफल वर्ग मील में	जनसंख्या
१	मोराको	२,२०,०००	३६,००,०००
२	अलजीरिया	१,८०,०००	५०,००,०००
३	ट्यूनिस	५०,०००	१८,००,०००
४	ट्रिपोली	४,००,०००	५,२०,०००
५	मिश्र	४,००,०००	१,११,०२,०००
६	सहारा	२५,००,०००	ठीक पता नहीं; बहुत ही कम है

मोराको

सीमा–

उत्तर पश्चिम में रूम सागर और दक्खिन पश्चिम में सूडान का रेगिस्तान है। यह बारबरी स्टेट का पश्चिमी हिस्सा है और मुसलमानो की पुरानी रियासत है । आजकल यह फ्रांस की सरक्षता में है।

धरातल

यहाँ की पृथ्वी बिलकुल पथरीली है और इस देश के भीतर ऐटलस पहाड की श्रेणियाँ बराबर इस पार से उस पार तक चली गई हैं। इस देश का क्षेत्र फल २,२०,००० वर्ग मील के है। यहाँ कोई नदी नहीं है जिससे पैदावार हो सके।

जलवायु–

यहाँ की जलवायु गर्म और स्वास्थ्यकर है। पहाड़ के द्वारा उत्तर-पश्चिम की हवा पानी बरसाता है, जिससे सिर्फ पश्चिम की ओर वर्षा होती है, परन्तु और बाकी देश उजाड़ हैं। यहाँ की जलवायु रूम सागर वाले देशों के समान है। जाड़े में पानी बरसता है और गर्मियों मे गर्मी पड़ती है।

उपज–

आस पास के पहाड़ों से सोना और चाँदी निकाली जाती है। फल सब प्रकार के पाये जाते हैं, जिनमें कि खजूर बहुत अधिक होता है। फलो की पैदावार होती है। यहाँ का जानवर, जिसके द्वारा व्यापार हो मकता है, वह ऊँट है। यहाँ के माल, जो बाहर भेजे जाते हैं, वह मकाई, ऊन, तेल, चमड़ा और फेज टोपी हैं।

नगर—

फेज—यहां की राजधानी है। यहां पर चमड़े और टर्की टोपी बनाने के कारखाने हैं।

मोराको—यह भी यहां की राजधानी है और बड़ा शहर है। यहां पर कुछ खानें भी हैं।

मोगद्र, राबट, साफी और कासाब्लाका—यहां से माल बाहर भेजा जाता है। ये सब मोराको के मुख्य बन्दरगाह हैं। तंगीर का बन्दरगाह स्वतन्त्र है और योरोपीय शक्तियों के अधिकार में है।

अलजीरिया और ट्यूनिस

सन् १८३० ई० में अलजीरिया फ्रान्सीसियों के आधीन हुआ परन्तु ट्यूनिस देश का राजा १८८१ ई० में फ्रान्सीसी सरकार की रक्षा में आया।

धरातल—

अलजीरिया का धरातल तीन भागों में विभाजित हो सकता है।

१—टेल नामक नीचा देश जो कि समुद्री किनारे के समीप है।

२—ऊँचे देश जिसमें पेटलस की पर्वत श्रेणियां हैं।

३—पहाड़ों के दक्षिण की मरुभूमि।

ट्यूनिस में मेजर्दा नदी की घाटी बड़ी उपजाऊ है।

उपज, मनुष्य आदि—

कृषि में अधिक उन्नति हुई है। रेलवे और सड़कें बनाई गई हैं, आर्टीजियन कुएँ खोदे गए हैं और बहुत सी भूमि में वृक्ष

गये हैं। इन सब बातों के होने से यहाँ की जलवायु स्वास्थ्य-वर्धक और देश अधिक उपजाऊ हो गया है।

बरबर और अरब जातियाँ आबाद हैं, जिनमें पहिली जाति तो कृषि करती है, परन्तु दूसरी जाति के लोग इधर उधर फिरा करते हैं। उत्तरी अफ्रीका में यहूदी लोग निवास करते हैं।

शराब, भेड़, ऊन, आल्फा घास, लोहा, मोती और मूँगे बाहर भेजे जाते हैं।

नगर—

अलजीयर्स—अलजीरिया की राजधानी है। रूम सागर पर अच्छी स्थिति होने से यह प्रसिद्ध बन्दरगाह हो गया है और देश के अन्य नगरों से रेलवे द्वारा मिला हुआ है। ओरन और बोना दूसरे प्रसिद्ध नगर और बन्दरगाह हैं। कान्स्टैन्टाइन में एक मजबूत किला है।

ट्यूनिस नगर में रेशमी और ऊनी कपड़े बुने जाते हैं और चपड़े और मिट्टी के बर्तनों की दस्तकारी होती है। गालेटा बन्दर-गाह है। कैरवाँ मुसलमानों का तीर्थ स्थान है।

ट्रिपोली

सन् १९११ ई० में तुर्कों से छीन कर इटली ने ट्रिपोली पर अपना अधिकार जमाया। 'ट्रिपोली' शब्द का अर्थ है तीन नगर। इसका नाम ऐसा इस लिये पड़ा क्योंकि एक समय यहाँ तीन नगर वर्तमान थे। इस देश का क्षेत्रफल ४,००,००० वर्गमीलों के है और जनसंख्या ५,२०,००० है। इस देश में फेज़न का नखलिस्तान शामिल है। ट्रिपोली का रेगिस्तान रूम सागर तक पहुँचता है और इसी के किनारे की थोड़ी सी-भूमि उपजाऊ है। यहाँ से

एस्पार्टो ' घास बाहर भेजी जाती है और इसी देश से काफिले सुडान के लिये चलते हैं।

ट्रिपोली—राजधानी है। काफिले जो कि मध्य अफ्रिका से चलते हैं यहाँ व्यापारार्थ आते हैं।

बेंघाजी—पूर्वी किनारे पर ' बर्का ' का मुख्य शहर है। मुरजुक इस देश का प्रसिद्ध नगर है।

मिश्र

सीमा—

उत्तर मे रूम सागर पूरब में लाल सागर, दक्खिन मे इजिप्शियन सूडान और पश्चिम मे ट्रिपोली और सहारा का रेगिस्तान है। यद्यपि महायुद्ध के पहिले यह तुर्क लोगों का देश था परन्तु अब यह पूर्णत अंगरेजों की संरक्षता में है। यहाँ की बादशाहत करनेवाले को खादिव कहते हैं जो सन् १६२२ से स्वाधीन है।

धरातल—

मिश्र का देश दो भागों में बाँटा जा सकता है, प्रथम नील नदी की गहरी घाटी, दूसरी नील नदी के डेल्टा की चौरस तिकोनी पृथ्वी। इस देश में सिवाय एक नदी के और कोई नदी नहीं है। इसे नील कहते हैं। यहाँ के मनुष्य नील नदी को बहुत ही मानते हैं, क्योंकि यदि यह नदी न होती तो सारा देश उजाड़ रहता, न तो कोई मनुष्य ही बसता और न कोई पालतू जानवर ही। जब कि अबीसेनिया के पहाड़ों मे जून के महीने में पानी बरसने लगता है तो यह नदी बहुत ही बढ़ चढ़ जाती है और अक्टूबर के महीने तक कुल नदी की तराई

उथले पानी की एक तह भर जाती है, परन्तु जब नदी की बाढ़ खतम हो जाती है तब यही मिट्टी खेतों की खाद हो जाती है। नील नदी की घाटी पतली और लम्बी है। इसके दोनों तरफ एक एक पहाड़ों की श्रेणी चली गई हैं जो कि लगभग दो हजार फ़ीट के ऊँची हैं।

जलवायु और वर्षा–

यहाँ की जलवायु गरम और सूखी है और ऊपरी हिस्से में तो पानी बरसने के नाम ही नहीं है। गर्मी के दिनों में गर्मी अधिक पड़ती है, लेकिन और मौसिमों में जलवायु सुहावनी है और रात में ओस अधिक पड़ती है। यहाँ पानी बहुत ही कम बरसता और जो कुछ देश की सिंचाई या और किसी प्रकार का पानी का काम लिया जाता है वह सिर्फ नील नदी ही के द्वारा। जो हिस्से नील से दूर हैं वह सब रेगिस्तान हैं।

उपज–

यहाँ खेती की जाती है सो भी सिर्फ नील नदी के पास स्थानों पर। यहाँ पर कपास पृथ्वी भर के कपास से बढ़िया और सस्ती होती है। गेहूँ, मकाई, तेलहन और बाकले की फसलें अच्छी होती हैं। यहाँ के खेती करनेवाले किसानों फल्लाहीन कहते हैं।

व्यापार और शिल्प–

यहाँ के खास व्यापार करनेवाले लोग अरब, तुर्क और से योरोपवासी लोग हैं। पहिले इस मुल्क से व्यापार केवल से होता था, लेकिन जब से स्वेज़ नहर खुली है तब से व्यापारी विलायत से भारतवर्ष के। आते हैं या जो व्यापारी से विलायत या योरप को जाते हैं वे सब ...

कर जाते हैं। इसलिये यहाँ का व्यापार भारतवर्ष और विलायत से भी इसी रास्ते द्वारा होने लगा। यहाँ से गेहूँ, कपास, तेल, गुड और नमक बाहर को जाते हैं और अन्य मुल्कों से कपडे, मसाला, चावल, कोयला, धातुयें आती हैं।

प्रसिद्ध नगर—

चूंकि इस मुल्क में उपज केवल नील नदी के किनारे पर होती है इसीलिये यहीं पर मनुष्य भी रहेंगे और जहां मनुष्य रहते हैं वहीं नगर भी होंगे। यहां की आबादी पैदावार की वजह से ६०,००,००० है।

कैरो—(काहिरा)—यह मिश्र की राजधानी है और नील नदी के डेल्टा पर स्थित है। यह अफ्रिका के सब प्रधान शहरों से बड़ा माना गया है। इसके दक्खिन करीब चार मील के लगभग में गिज़ह है, जो कि प्राचीन काल के मिश्री सुलतानों की ऊँची ऊँची कब्र हैं। इनका अङ्गरेजी नाम पीरामिडस् (Pyramids) रक्खा हुआ है। यहां से केपटाउन तक एक 'केप से कैरो' नामक रेलवे खुलनेवाली है. यद्यपि कैरो से खारतूम तक और खारतूम से झीलों तक रेलवे लाइनें हैं। जब कांगों के कुछ जङ्गल कट जायेंगे तब कहीं रेलवे की पूर्ति होवेगी।

अलग्जेन्ड्रिया—यह कैरो के उत्तर और नील नदी के दाहने पर बसा है। यहां से माल बाहर को भेजा जाता है।

खास खास बन्दरगाह पोर्टसैयद, स्वेज, जो कि स्वेज के नहर पर है और रुसेट्टा रूम सागर पर है।

मिश्री सूडान

मिश्री राज्य १८८४ ई० से नील की घाटी मे लेकर विषुवत रेखा तक बढ़ने लगा और कुछ समयान्तर उसमें न्यूबिया

कोडोफन, डारफर आदि मिल गये। बाद में एक बलवा हुआ, जिससे ये रियासतें कुछ काल के लिये निकल गई थीं, परन्तु १८६८ में खलीफा के पराजय होने पर उन सब को फिर हाथ में आना पड़ा। अब यह अङ्गरेजों व मिश्र की सरक्षता में है।

इस देश का उत्तरी भाग तो रेगिस्तान है, परन्तु दक्षिण में वर्षा की अधिकता है और रेगिस्तान का नामो निशां भी नहीं रह जाता।

मिश्री सूडान में नीली नील और सफेद नील का खारतूम के पास सगम होता है। नीली नील अबीसिनिया के पठार से आती है। यही नदी मिश्र के बड़े काम की है। सफेद नील विक्टोरिया अलबर्ट, और एडवर्ड भीलों से निकलती है। पहिले इसकी धारा तेज बहती है। पर लेडो और खारतूम के बीच का पठार चिपटा है और नदी फैल कर पास की धरती को तर कर देती है, जिसके ऊपर घनी सेवार और एक प्रकार का नरकुल, जिसको 'सड' कहते हैं, उगता है। इस कारण नाव या जहाज उसमें चल ही नहीं सकते। थोड़े दिन हुए अङ्गरेजो के इजिनियरों ने सड काट कर राह बनाई, जिससे अब नदी में चलनेवाले जहाज खार-तूम से, जहां रेल का अन्तिम स्टेशन है, भीलों के पासवाले झरनों के नीचे तक आ जा सकते हैं।

तीस बरस हुए मिश्री सूडान में बड़ी भयङ्कर लड़ाइयाँ हुआ करती थीं। जब से यह देश बृटिश राज्य में आ गया है इसकी बड़ी उन्नति हो रही है। मिश्र से खारतूम तक और सूडान से लाल सागर तक रेल की सड़कें बन गई हैं।

डरीह एक किस्म की मक्काई है। छोहारे खाये जाते हैं। भेड़ और ऊँट उपयोगी पालतू जानवर हैं। यहां की जनसख्या करीब ३० लाख के है।

प्रसिद्ध नगर—

खारतूम—इसकी स्थिति ने इस नगर को व्यापारिक बना दिया है। यहीं पर वीर जनरल गार्डन १८८५ में मारे गये थे। यह शहर कारवाँ का जो कि रेगिस्तान में सफर करते हैं, केन्द्र है।

अतबारा—यह शहर अतबारा नदी जो कि नील नदी मे गिरती है, उसके दहाने से थोड़ी दूर उत्तर में है। यहां पर मिश्र की रेलें आकर मिलती हैं और गेहूँ और ऊख बीच के नगरों से ले जाकर बन्दरगाहों पर भेजे जाते हैं।

असवान—यह शहर नील नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है। यहां पर अंगरेजो ने एक बड़ा भारी बाँध बनाया है, जिससे यह लाभ है, कि पानी जो कि नील नदी की बाढ़ से आया है, वह रुक कर झील सा बन गया है और यहां से बाहर को नहर के द्वारा पहुँचाया जाता है।

सवाकिन—केवल एक बन्दरगाह है जो बृटिश के आधीन है।

सहारा

सहारा अथवा 'बड़ी मरुभूमि' मोराको और अलजीरिया रियासतो के दक्षिण मे अवस्थित है और इसका विस्तार एटलांटिक महासागर से मिश्र तक है। इसका क्षेत्रफल २५,००,००० वर्ग मील है अर्थात् यह भारतवर्ष का दुगुना है। इस देश की मरुभूमि समुद्र की धरातल से १,५०० फीट तक ऊँची है। और यहां की पहाड़ियां ७,००० फीट और पठार ३,००० से ४,००० फीट तक ऊँचे हैं। यहां का कुछ भाग नीचा भी है, जिसमे खारे पानी की असंख्य झीलें हैं। यह हिस्सा गेब्ज की खाड़ी से मोराको के दक्षिण तक

(ख) दक्खिनी नाइजिरिया

इसका क्षेत्रफल ७७,००० वर्गमील है और आबादी ७०,००,००० है, जिनमे कि लगभग १०,००० के योरोपियन हैं। ताड़ का तेल, कोका, रुई, कहवा और गोंद यहाँ की असली उपज है। अब कपड़ा बुनने का खास तौर पर इन्तजाम किया जा रहा है। इस प्रान्त में भी व्यापार काफ़िलों के द्वारा किया जाता है और लगभग २०० मील तक रेल जारी है। प्रधान शहर लोकोज है। यह देश अंग्रेजों के आधीन है।

(ग) गोल्ड कोस्ट

४०,००० वर्गमील मे इसका विस्तार है और १५,००,००० मनुष्यो की आबादी है, जिनमे ७०० के लगभग योरोपियन हैं। बाहर भेजा जाता है—ताड़ का तेल, खैर, कोका। सोना की भी खान यहाँ हैं। रबर,अदरक ताड़ का तेल पैदा होते हैं। केपकोस्ट कैसेल, अकरासेरा और लेना प्रसिद्ध नगर हैं।

(घ) सीरिया लोना

अङ्गरेजों का एक उपनिवेश (Colony) है। इसकी राजधानी फ्री टाउन है, जहाँ जहाज को माल लेत हैं।

(ङ) गौम्बिया

बहुत थोड़ा सा बसा है और आबादी ९०,००० मनुष्यो की है। चमड़ा, रुई, और रबर पैदा होते हैं। बैथर्स्ट यहाँ की राजधानी और बन्दरगाह है। यह भी अङ्गरेजों की उपनिवेश (Colony) है।

(च) फ्रान्स का राज्य

(१) सेनिगल—सेंट लुइस इसकी राजधानी है। (२) फ्रेंच ऊष्ण कटिबन्ध अफ्रिका की अस्थायी राजधानी है।

(छ) पोर्तुगीज पश्चिमी अफ्रिका (ऑगेलो)

यह पुर्तगालवालों का एक उपनिवेश है। क्षेत्रफल ५,००,००० वर्गमील के है। कहवा, छुहारा और ताड़ पैदा होते हैं। लोआन्डा राजधानी और बन्दरगाह है। बैङ्गूला, मोज्मदीस और दूसरे नगर हैं।

ताड का तेल, हाथी दाँत, और अखरोट बाहर भेजे जाते हैं।

(ज) लाइबीरिया

लाइबीरिया हबशियों के आधीन है। मोनोरोविया इसकी राजधानी है। क्रूमेन यहाँ के पुराने निवासी हैं।

६—दक्षिणी अफ्रिका

अफ्रिका का दक्षिणी भाग हिन्द महासागर और दक्षिण एटलान्टिक के बीच में अवस्थित है। इसके पूर्वी समुद्र तट पर मोजैम्बी गरम धारा और पश्चिम तट पर बैङ्गोला की ठंडी धारायें बहती हैं। दक्षिण अफ्रिका तमाम प्लेटो ही प्लेटो हैं, जिसे एक पतला समुद्र का मैदान घेरे हुए है। दक्षिणी और पूर्वी पठार का किनारा भारत के समान ऊँचे होते गये हैं और उनमें पहाड़ों की श्रेणियाँ बन गई हैं। इन पर्वतों को न्यू वेल्स और ड्रेकन्सबर्ग कहते हैं। ये समुद्र की ओर धीरे धीरे ढलते हुए पठारों से मिल गये हैं। प्रायद्वीप के पूरब और पश्चिम की जलवायु में

न०	देश	क्षेत्रफल	योरोपियनो की जनसख्या	दूसरी ज की जन
१	उत्तमाशा अन्त-रीप उपनिवेश	२,७६,६६५	५,८२,०००	१६,८
२	नैटाल	३५,२६०	६८,०००	१०,१
३	आरेन्ज का स्वतंत्र राज्य	५०,४००	१,७५,०००	३,५
४	ट्रान्सवाल	१,११,०००	४,२०,०००	१२,६
	योग	४,७३,६८५	१२,७५,०००	४६,8

(ऊ) ट्रान्सवाल

ट्रान्सवाल सूखा है और खेती के काम का नहीं, पर वहाँ हो सकती है। इसका बड़ा धन धरती के नीचे गड़ा है। जो बर्ग के आस पास सोने की खानें हैं। इस प्रान्त को 'रैंड हैं। ससार भर मे जितना सोना एक वर्ष में निकलता है एक तिहाई यहीं से खोदा जाता है। आजकल यह विचार है कि सारी कलें बिजली से चलाई जायँ और बिजली पैदा की शक्ति विक्टोरिया झरनों से ली जाय।

दुनिया भर में जितना हीरा निकलता है वह सब का स से और दक्षिण अफ्रिका के अन्य सम्मिलित राज्यो से है। हीरा नीली मिट्टी में पाया जाता है, जो बड़े गड्ढों होता है।

जोहानेसबर्ग—जनसंख्या २,४०,००० है। यह नगर ट्रान्सवाल में सब से बड़ा है। इस नगर के पास सोना निकलता है।

किम्बरली—यहाँ सबसे बड़ी हीरे की खान है।

प्रिटोरिया—जोहानेसबर्ग से ३० मील की दूरी पर राजधानी है।

(२) नैटाल

नैटाल उपनिवेश में बहुत पानी बरसता है और कई तरह की चीज़ें पैदा होती हैं। समुद्र तट के पास नीचे मैदान में ईख, धान, और उष्ण कटिबन्ध में केवल धान पैदा होता है। कुछ दूर चल कर ऊँची भूमि में मकाई और गेहूँ के अच्छे देश देखे जाते हैं और इससे भी ऊँचे चल कर भेड़ों और ढोर के चराई के मैदान हैं। यहाँ हिन्दुस्तानी लोग जाकर बस गए हैं, जिनकी संख्या बहुत अधिक है; परन्तु यूरोपियन यहाँ कम बसे हैं।

डरबान—यहाँ का मुख्य बन्दर है।

पीटरमार्टिजबर्ग—नैटाल की राजधानी है।

(अ) उत्तमाशा अन्तरीप का उपनिवेश

इस उपनिवेश को पहिले 'केप कालोनी' कहते थे। यह समुद्र से सीढ़ियों के आकार उठती है। केपटाउन के आस पास की भूमि में रूम सागर प्रात के फल और अनाज पैदा होते हैं। परन्तु इस उपनिवेश का बहुत बड़ा हिस्सा सूखा है, जिसमे खेती नहीं हो सकती। यहाँ से ऊन बाहर को भेजा जाता है। सूखे पश्चिमी

भाग में परों के लिये शुतुर्मुर्ग पाले जाते हैं। शुतुर्मुर्ग का अंडा ले जाने वालो पर कड़ा जुर्माना होता है। कई वर्ष हुए एक उत्साही ज़िमीन्दार ने एशिया माइनर से अंगोरा की बकरियाँ मँगाई थीं। जलवायु एक सी होने से बकरियाँ वहाँ और उनका अच्छा ऊन अब इस देश मे बहुत मँहगी वस्तु हो रहा है।

केपटाउन—दक्षिण अफ्रिका का मुख्य बन्दर और राजधानी है। यह जहाज़ो की शरण के लिये बहुत अच्छी जगह है और पानी रोकने के लिये एक भीत बना कर और भी अच्छा कर दिया गया है। यहीं से रेल की सड़कें महाद्वीप के भीतर जाती हैं और यहीं योरप से न्यूज़ीलैण्ड जानेवाले जहाज कोयला पानी के लिये ठहरते हैं।

पोर्ट एलिजाबेथ—अलगोआ खाड़ी पर बन्दरगाह है।

ईस्ट लदन—यह भी एक उत्तम बन्दरगाह है।

(४) आरेन्ज का स्वतन्त्र राज्य

यह राज १८३६ में बुयर युद्ध के पश्चात् अंगरेजों के आधीन हुआ। यह वाल और आरेन्ज नदी के मध्य का देश है। मनुष्यों का खास पेशा खानों मे काम करना है जहां कोयला, हीरा और सोना पाये जाते हैं। धातुयें, हीरा, मकाई, गेहूँ, रेशम, और ऊनी कपड़े यहां से बाहर भेजे जाते हैं।

ब्लोम्फोन्टोन—राजधानी है।

८—पूर्वी अफ्रिका

पूर्वी अफ्रिका मे वह प्रान्त समझना चाहिये जो लाल सागर दक्षिणी सिरे से डेलेगोआ की खाड़ी तक और हिन्द महासागर

के तट से झीलों की पश्चिमी श्रेणी तक फैला है। यहाँ के समुद्री किनारे नीचे हैं। कुछ जगहों पर भूमि बालुकामई हो गई है और कहीं कहीं दलदल हैं। झीलवाले प्रान्तों में पहाड़ हैं, जिनकी चोटियाँ बर्फीली हैं। यहाँ एक 'रिफ्ट घाटी' है, जिसका विवरण अफ्रिका के बयान में दे दिया गया है। जैम्बसी नदी मोजम्बीक चैनल में गिरती है। इस भाग की यही मुख्य नदी है। न्यासा झील से इसकी सहायक शायर निकलती है। हाथी दांत, रबर, मसाले, गोंद और तेल यहाँ से बाहर भेजे जाते हैं, और विदेश से सूती कपड़े यहाँ को आते हैं। इस में थोड़ी बहुत सड़कें हैं, परन्तु मनुष्य असबाब ढोते हैं क्योंकि पशुओं को एक प्रकार की मक्खी काट लेती है, जिससे वे मर जाते हैं। सोमालीलैण्ड का मुख्य जानवर ऊँट है। पूर्वी अफ्रिका कई राज्यों में बँटा है।

जैन्जीबर के द्वीप को छोड़ कर शेष सब भागों में योरापियनों की बस्ती है।

केवल एक अबीसिनिया का राज्य स्वतन्त्र है।

अङ्गरेजों के कब्जे में पूर्वी अफ्रिका में ये उपनिवेश हैं — उगैण्डा, टेंगेनीका उपनिवेश, केनिया और ब्रिटिश सोमालीलैण्ड। इटली के आधीन इरीट्रिया और सोमालीलैण्ड का कुछ भाग है। डलगोआ की खाड़ी से डेलगैडो अन्तरीप तक सारा देश पुर्तगालवालों का है।

(अ) अबीसिनिया

सीमा—

इजिप्शियन सूडान के पूरब में अबीसिनिया का स्वाधीन देश है। इसके पूरब में लाल सागर और सोमालीलैण्ड,

में बृटिश पूर्वी अफ्रीका, पच्छिम और उत्तर में इजिप्शियन सूडान हैं। यह ३६° देशान्तर पूरब से लेकर ४३° देशान्तर पूरब में और १५° अक्षांश उत्तर से लेकर ४०° अक्षांश उत्तर मे स्थित है। क्षेत्रफल ३,२०,००० वर्गमील के लगभग है।

धरातल—

यह देश लगभग ऊँचे प्लेटो से बना है जिसमे कि पहाड़ इस पार से उस पार तक चले गए हैं। कोई कोई पहाड़ १६,००० फीट तक ऊँचे हैं। एक नदी जो कि नोली नील के नाम से प्रसिद्ध है, यहीं के पहाड़ों से निकलती है। यह नदी, अपने साथ बहुत सी नीली मिट्टी ले जाती है, जो कि बड़ी उपजाऊ होती है और इसी से इसका नाम नीली नील पड़ा है। अबीसिनिया एक ऊँचा पठार है, जिसमें नदियो ने गहरी घाटियाँ काट दी हैं। लालसागर और हिन्द महासागर दोनो से गरम रेगिस्तान इसे अलग करते हैं।

जलवायु—

एक गरम हवा का झोका पूरब-दक्खिन से आता है, जो कि यहाँ के पहाड़ों से टकर खाकर यहीं पर पानी बरसा देता है। पहाड़ ऊँचे होने की वजह से हवा और कहीं नहीं जाती। यह देश तीन प्राकृतिक भागो में बाँटा जा सकता है—(१) उत्तरी पहाड़ी देश (२) बीच का प्लेटो (३) पूर्वी किनारा। उत्तरी पहाड़ की जलवायु ठंडी, बीच के प्लेटो की आबहवा समशीतोष्ण और पूर्वी किनारे की ओर गहरी घाटियों की जलवायु बहुत गर्म है।

उपज—

पहाड़ो मे से सोना और चाँदी निकाले जाते हैं और गेहूँ और जव की खेती की जाती है। अबीसिनिया कहवा की जन्मभूमि

है, जिसको खेती अब भी होती है, परन्तु यह बहुत बाहर भेजी जाती है। लालसागर के किनारों से नमक आता है।

पेशा और व्यापार—

यहाँ के लोगों का खास पेशा खान से सोना चाँदी निकालना और पहाड़ों के ढालों पर बकरी और भेड़ पालना। यहाँ कहीं कहीं शेर भी पाये जाते हैं, इसलिये पहाड के रहनेवाले अपने अपने घरों के चारों तरफ काँटे रूंध देते हैं, जिससे कि कोई शेर न आ जावे। यहाँ से हाथी दाँत सोना, कहवा और माँस बाहर भेजे जाते हैं, और कपडा, अनाज, तेलहन इत्यादि विदेश से मँगाये जाते हैं।

मनुष्यों के रहन सहन—

यहाँ की आबादी ४०,२०,००० के लगभग है, लेकिन मनुष्य अधिक सभ्य नहीं हैं। प्राचीन समय में यहाँ इथोपिक भाषा बोली जाती थी, परन्तु अब नहीं। किसी किसी शहरों में अब डेटकट्स भाषा बोली जाती है। लोग ईसाई धर्म के माननेवाले अधिक हैं। किसी समय में अबीसिनिया एक बड़ी मजबूत रियासत थी, परन्तु थोड़े दिनों के बाद वह कई सूबों में बँट गई थी, जो कि अक्सर एक दूसरे से बैर रखते थे। प्रधान रियासतें यह थीं—(१) अमहारा—बीच में है (२) टिगरी—उत्तर पूरब में और (३) शोआ—दक्खिन पूरब में। आजकल ये रियासतें एक बादशाह के आधीन हैं, जिसे कि महाराजाधिराज इथिओपिया कहते हैं।

नगर—

गोन्दार—टिम्बया झील से तीन मील उत्तर है और अमहरा रियासत की किसी समय में राजधानी थी।

मगडाला—यह तिजारती शहर है। अडोवा टिगरी की राजधानी थी।

अकोबार—शोआ की राजधानी थी।

अदिम अबाबा—अबीसिनिया की राजधानी है।

(ब) सोमालीलैंड

सोमालीलैंड रेगिस्तान है। बनों में कुछ कटीला जमता है जिसको ऊँट खा सकते हैं। जहाँ चराई के मैदान हैं वहाँ हिरन फिरते रहते हैं और बहुत से शेर हैं जो उनका शिकार करते हैं। रात को यात्री अपने पड़ाव को काँटों की बाड़ से घेर देते हैं, जिससे शेर नहीं आ सकते। इस देश के लोग बड़े वीर सिपाही होते हैं और बहुतेरे जहाजों पर कोयला झोंकनेवाले खलासी का काम करते हैं।

बृटिश सोमालीलैंड का मुख्य बन्दरगाह 'बरबरा' है और इटालियन सोमालीलैंड की राजधानी मागादिशु है। इरीट्रीया की, जो इटालियन के आधीन है, राजधानी मसावा है।

(स) बृटिश पूर्वी अफ्रिका

इस बड़े राज्य का क्षेत्रफल २,०५,००० वर्गमील है। यह राज्य पहिली जर्मन-पूर्वी अफ्रिका से लेकर जूबा नदी तक विस्तृत है। पश्चिम में नील नदी तक इसकी सीमा है। जूबा नदी में ४०० मील तक जहाज चल सकते हैं।

बृटिश पूर्व अफ्रीका का वह हिस्सा, जो विक्टोरिया, अलबर्ट और एडवर्ड की झीलों के बीच है, उगैन्डा कहलाता है। यह बहुत हरा भरा देश है और इसमें कहवा, गन्ना और तम्बाकू की खेती होती है। कपास भी अब बोया जाने लगा है।

फ्लोरेन्स बन्दर से मोम्बासा बन्दर तक, जो हिन्द महासागर पर स्थित हैं, देश में रेल की एक सड़क बनाई गई है। जँजीबार और पेम्बा टापू थोड़े ही दिन हुए कि अंग्रेजों के हाथ लगा। पहिले दिनों में दास की एक मन्डी थी और दोनों टापुओं में लौङ्ग अधिक पैदा होता है।

इससे कुछ दूर हिन्द महासागर में मिरच का टापू है, जिसमें ईख की खेती होती है और भारत के कुली यहाँ अधिक निवास करते हैं।

दारुस्सलाम—यह अब बृटिश पूर्वी अफ्रिका की राजधानी है।

उजीजी—टैङ्गेनीका झील के पास आबाद है।

जन्जीबर—पूर्वी अफ्रिका के व्यापार का केन्द्र है।

मोमबासा—प्रसिद्ध नगर और अच्छा बन्दरगाह है।

(द) बेलजियम कॉंगो

पानी के प्रमाण में कॉंगो नदी अमेजन से कुछ ही कम है और अमेजन की तरह यह भी घने वनों में होकर बहती है, जिस पर बहुत पानी बरसता है। मुहाने से सौ मील तक तेज धारायें जहाज नहीं चलने देतीं, परन्तु इसके आगे १,००० मील तक धुआँकश चल कर स्टैनली झरने तक पहुँचते हैं। यह घने वन का प्रान्त अभी थोड़े ही दिनों से देखा गया है। इस नदी को पहिले स्टैनली नाम के यात्री ने खोज कर निकाला था। उसने देखा कि वनों में बहुत थोड़े आदमी रहते हैं। बहुधा लोग नदियों के किनारे रहते थे। पर कहीं कहीं वन काट भी डाले गये थे। यहीं जगल में गाँव के रहनेवाले केले, और 'मेनिओक' की

ती करते थे। 'मेनिओक' एक जड़ है। इसमें एक विष होता
जिसको निकालने के लिये उसे पहिले पानी में भिगोते हैं और
र उसको कुचल कर पका लेते हैं। मध्य अफ्रिका के लोगों का
ही मुख्य अन्न है। उस यात्री को बौना की भी कुछ जातियाँ
लीं जो तीन फीट से पाँच फीट तक लम्बे होते और विष के
भे बाणों यह शिकार में काम में लाते और उसके साथियों
र सदा हमला करते थे। स्टैनली के पीछे बहुत से व्यापारी
बर की खोज में कांगो के वनों में चारों ओर चले गये हैं। अब
ह सारा प्रान्त बेलजियमवालों के अधिकार में है।

लीपोल्डविली—यहाँ की राजधानी और बोमा बन्दर-
ाह है।

अफ्रिका के द्वीप

अफ्रिका के अधिक द्वीप पहाड़ी हैं। इन द्वीपों में ज्वालामुखी
र्वत भी है, परन्तु यह बात उल्लेखनीय है कि सब के सब द्वीप
रोपियनों के आधीन हैं।

सकोटरा—

ग्वार्डाफुई अन्तरीप के पूर्व स्थित है। यह द्वीप बृटिश
ाज्याधीन है।

मैडागासकर—

संसार के बड़े द्वीपों में से एक है, जिसका क्षेत्रफल
,२८,००० वर्गमील है और जन संख्या २७,००,००२ है। यह द्वीप
अफ्रिका के पूर्व में अवस्थित है और मोजम्बीक चैनल इसे महा-
द्वीप से अलग करती है। उत्तर से दक्षिण तक एक पर्वत-श्रेणी
चली गई है। अन्दरूनी हिस्सा ठंढा है और जलवायु इसकी
है, परन्तु किनारों पर गर्मी अवश्य पड़ती है और

जहाँ दक्खिन पूर्व के ट्रेड हवा का लाया हुआ पानी बरस जाता है। इससे पूर्व का हिस्सा तर और बनो से ढका है और पच्छिम का हिस्सा सवैना का देश है, जो चराई के काम का है। 'हावास' यहाँ के मनुष्यों की एक जाति है। सोना, आटा और धातुयें विदेश भेजी जाती हैं।

अन्टनानारिवो—राजधानी है। यह नगर पठार के ऊपर बसा है, जहाँ की जलवायु स्वास्थ्यकारक है।

टैमाटवे—बन्दरगाह है।

कैमो द्वीप-समूह—

अफ्रीका और मैडागास्कर के मध्य में वर्तमान है और इस समय फ्रान्सीसियों के कब्जे में है।

रुईनियन और मारीशस—

मैडागास्कर के पूर्व मे है। यहाँ से चीनी बाहर भेजी जाती है। रुईनियन फ्रान्स के और मारीशस अङ्गरेजों के कब्जे में है। पोर्टलियस, मारिशस द्वीपों की राजधानी हैं।

सेशल और अमीरेन्ट—

मारीशस द्वीप समूह के उत्तर में मूंगे के द्वीप हैं। बृटिश राज्याधीन है।

सेंट हेलना और असेनशन—

एटलांटिक महासागर मे बृटिश राज्याधीन हैं।

फरनैन्डोपो और कनारी द्वीप—

स्पेन के कब्जे में हैं, जिनमें से कनारी तो मोराको के दक्षिण पश्चिम में है।

मडीरा—

कनारी के उत्तर पुर्तगालवालों के कब्जे में है।

नम जलवायु और उम्दा शराब के लिये विख्यात है।

केप वर्डे द्वीपसमूह—

यह अन्तरीप के पश्चिम में पुर्तगाल वालों के अधिकार में है।

अमेरिका महाद्वीप

सन् १४९२ ई० में कोलम्बस योरप के पश्चिम होता हुआ एटलांटिक महासागर द्वारा हिन्दुस्तान का आविष्कार करने चला। परन्तु बहुत दिनों की यात्रा के पश्चात् उसे कुछ द्वीप दिखाई पड़े। कोलम्बस ने समझा कि अब वह भारत के अत्यन्त निकट पहुँच गया और उन द्वीपों का नाम उसने पश्चिमी भारतीय टापू अथवा 'वेस्ट इन्डीज' (West Indies) रक्खा। परन्तु कुछ समयानन्तर वह महाद्वीप के पूर्वी भाग में पहुँचा और इस महाद्वीप का नाम अमेरिका और उन द्वीपों के मनुष्यों के नाम 'इन्डियन्स अथवा भारतीय या हिन्दुस्तानी रक्खा। कोलम्बस से सौ वर्ष पीछे अंगरेज, डच, फ्रान्सीसी और स्पेनवाले और योरप के अन्य देशों के मनुष्य अमेरिका में भ्रमण करने लगे। उन्होंने इन्डियन्स को स्थान स्थान पर पराजित कर उनके देश को अपने कब्जे में कर वहाँ बसना प्रारम्भ किया। अब यहाँ के प्राचीन निवासियों को रेड इन्डियन्स (Red Indians) कहते हैं। इस महाद्वीप में उनको नाना प्रकार की जलवायु और तरह तरह की धरती मिली।

जिस समय भारतवर्ष में अकबर का राज्य था, उसी ... अमेरिका में उपनिवेश बसाने के लिये इङ्गलैण्ड की तरफ ... महारानी मेरी ने सर जान रेले को अमेरिका भेजा था। मेरी कुंवारी थीं, इसीलिये 'वर्जिनिया' के नाम से ... में अङ्गरेजों की पहिली कालोनी बसी। अङ्गरेजों

कुमारी कन्या को कहते हैं। 'रेले' के विश्वासघात के कारण उस बार उन्हें सफलता न हुई। हाँ, 'जान स्मिथ' ने अपने उद्योग से काम कर दिखाया।

एक बार अमेरिका के नकशे को देखने से पता चलेगा कि वास्तव में इसका नाम 'नई दुनिया' सार्थक है। पुरानी दुनियाँ तो चारों ओर प्राय समान रूप मे फैली है। परन्तु अमेरिका उत्तर से दक्षिण ही की ओर विस्तृत है। हाँ पुरानी दुनियाँ के पूर्व प्रशान्त महासागर है, और यह नई दुनियाँ के पश्चिम है, एटलाण्टिक महासागर पुरानी दुनियाँ के पश्चिम है, परन्तु अमेरिका के वह पूर्व मे अवस्थित है। उत्तर मे दोनों के उत्तरी सागर हैं, परन्तु अमेरिका के दक्षिण में दक्षिणी महासागर है। बेहरिंग का जलडमरु मध्य इसे एशिया से पृथक् करता है। अन्वेषण करने से पता चलता है कि अमेरिका कभी न कभी पुरानी दुनियाँ से अवश्य मिला था। परन्तु बेहरिंग ने जन्म लेकर दोनों को पृथक कर दिया। बहुत काल तक दोनों दुनियाये एक दूसरे को भूली रहीं और आपस में मेल मिलाप न रहा, किन्तु सन् १४६२ मे कोलम्बस ने इन दोनों का पुनर्मिलन करा दिया।

अमेरिका कुछ त्रिभुजाकार है। उत्तर मे अधिक चौड़ा है और दक्षिण की ओर भारत और अफ्रिका की भाँति क्रमश पतला होता चला गया है। यह पतलापन पनामा मे बहुत ही क्षीण हो गया है जिसके कारण अमेरिका के दो प्रधान भाग हो गये हैं। एक तो ८०° अक्षांश उत्तर से १०° अक्षांश दक्षिण तक विस्तृत है और दूसरा १०° दक्षिण अक्षांश से ५५° अक्षांश दक्षिण तक फैला है। पहिले का नाम उत्तरी अमेरिका पड गया है और दूसरे को दक्षिणी अमेरिका कहते हैं।

पनामा के जल डमरू मध्य को काट कर उसमें से नहर खोद कर संसार के दो महासागरों का समागम करा दिया है। इसके द्वारा एटलांटिक और प्रशान्त महासागर परस्पर मिल जाते हैं। जिस प्रकार स्वेज की नहर ने यूरेशिया को अफ्रीका से पृथक् कर दिया, उसी प्रकार पनामा की नहर ने अमेरिका के दोनों भागों को पृथक कर दिया है।

दोनों अमेरिका का क्षेत्रफल १,६०,००,००० वर्ग मील के लगभग है।

चार सौ वर्ष में उत्तरी अमेरिका में योरोप और पुरानी दुनियाँ के अन्य देशों से कई प्रकार के पौधे और उपयोगी पशु एटलांटिक महासागर द्वारा वहाँ लाये गये।

उत्तरी अमेरिका

सीमा—

उत्तरी अमेरिका, दक्षिण में पनामा के पास छोड़ कर, शेष तीनों ओर समुद्र से घिरा हुआ है। इसके उत्तर में उत्तरी महासागर ग्रीनलैण्ड और छोटे छोटे द्वीप हैं। पूर्व में एटलांटिक महासागर इसके किनारे को छूते हैं। इस महासागर में उत्तरी अमेरिका के 'निउफाउण्डलैण्ड' और 'वेस्ट इन्डीज' नामक द्वीप और द्वीप समूह हैं। पश्चिम में प्रशान्त महासागर है।

खाड़ियाँ—

बाफिन की खाड़ी—ग्रीनलैण्ड के पश्चिम में।

हडसन की खाड़ी—कैनाडा के मध्य में।

मेक्सिको की खाड़ी—संयुक्त देश अमेरिका के दक्षिण में।

केलीफोर्निया की खाड़ी—मेक्सिको के पश्चिम में है।

सेंट लारेन्स की खाड़ी—कैनाडा के पूर्व में स्थित है।

धरातल–

उत्तरी अमेरिका के धरातल का वर्णन नक्शे से भली भांति दर्शाता है। साफ साफ इसके चार प्राकृतिक विभाग किये जा सकते हैं। १—पश्चिमी पहाड़ों की श्रेणियां, २—पूर्वी ऊँचे देश, ३—इन दोनों ऊँचे भागों के बीच का प्रेरी नामक मैदान, और ४—समुद्री किनारे का मैदान।

पेलेगिनी की पहाड़ियां पूर्व में और राकी की पश्चिम में फैल कर उत्तरी अमेरिका में पहाड़ों की श्रेणियां बनाती हैं। इसके अतिरिक्त सुपीरियर झील के निकट की भूमि को छोड़ कर सारा भूभाग समतल है। राकी पर्वत की तीन प्रधान श्रेणियां हैं। पश्चिम में किनारे के निकट कोस्ट रेन्ज और कैसकेड की श्रेणियां हैं। इन श्रेणियों के पूर्व भी एक श्रेणी सियारा नेवादा के नाम की है। अलास्का में पर्वत की ऊँचाई सब स्थानों से बढ़ कर है। मोंट इलीयास १८,५०० फीट ऊँची है।

नदियां–

उत्तरी अमेरिका में मेकन्जी 'ग्रेट बीयर लेक' से निकल कर उत्तरी सागर में गिरती है। सेंट लारेन्स 'बड़ी झील' से निकल कर अपने नाम की खाड़ी में पतित होती है। हडसन न्यूयार्क के पास एटलाटिक महासागर में गिरती है। मिसिसिपी दक्षिण की ओर बह कर मैक्सिको की खाड़ी में गिरती है। यह नदी संसार की सारी नदियों में सब से बड़ी है। इन मुख्य नदियों को छोड़ कर कई छोटी छोटी नदियां हैं, जैसे इलीनस, मिसौरी, लाल, यूकन, नेलसन आदि।

झील–

उत्तरी अमेरिका के उत्तरी अर्द्ध भाग में झीलों की भरमार है। सबसे बड़ी और [illegible] झीलों में सुपीरियर, ह्यू रन, मिशी-

हुआ अवश्य होगा। प्रधानत यहाँ अब योरोपियनों की आबादी है, जो सब इसाई हैं।

राज्य विभाग —उत्तरी अमेरिका के प्रधानत यह भाग हैं:—
बृटिश अमेरिका, अमेरिका के सयुक्त राज्य और अलास्का, मेक्सिको, पश्चिमी भारतीय द्वीपसमूह (West Indies) और ग्रीनलैंड हैं।

बृटिश अमेरिका

बृटिश अमेरिका के दो भाग किये जा सकते हैं—एक तो कैनाडा, दूसरा निउफाउन्लैण्ड।

[अ] कैनाडा

विस्तार—

कनाडा ग्रेट बृटेन का ३० गुना है। वास्तव मे कैनाडा ही केवल योरप के विस्तार का है और उत्तरी ध्रुव वृत तक पहुँचता है और ओन्टैरियो का दक्षिणी भाग फ्रान्स के प्रत्येक हिस्से से दक्षिण है। मान्ट्रीयल उसी अक्षांश मे स्थित है, जिसमे कि इटली का नगर मिलता है। महाद्वीपों में लम्बाई चौडाई के विचार से उत्तरी अमेरिका तीसरा है। यह उत्तर से दक्खिन तक न इतना लम्बा और पूरब से पश्चिम तक न इतना चौड़ा है, जितना यूरेशिया है।

साधारण विवरण—

कैनाडा की धरातल पर विचार करने से हमें पता चलता है कि इस देश के चार प्राकृतिक विभाग हो सकते हैं। यह चारो भाग जलवायु, वर्षा, उपज और मनुष्यों के रहन सहन आदि बातों में एक दूसरे से भिन्न हैं जैसे कि बाद में दर्शाया जाता है—

उत्तरी अमरीका- राजनैतिक



है। इन पहाड़ों पर सोना, चांदी और दूसरे खनिज पदार्थ पाये जाते हैं।

(४) प्रशान्त महासागर के किनारों पर मछलियों का शिकार होता है। कैनेडियन पैसिफिक रेलवे द्वारा माल पूर्व से पश्चिम और पश्चिम से पूर्व को जाता है। कैनाडा की यही रेलवे मुख्य है, जोकि एक महासागर को दूसरे से रेल द्वारा संयुक्त कर देती है। इस रेलवे पर यात्रा करनेवाले यात्री को कैनाडा के प्रायः सभी उद्यम देखने को मिल सकते हैं।

नदियों में सेंटलारेन्स मुख्य है। यह नदी पहिले सेंट लुई के नाम से प्रसिद्ध होती है और फिर कुछ दूर बह कर सुपीरियर झील के पश्चिमी किनारे में गिरती है। इस झील का पानी ह्यूरन झील में बड़े वेग से गिरता है। इस झरने का नाम 'साल्ट सेंट मेरी' है। इसके बाद एरी झील में से होकर यह ओन्टेरियो झील में पहुँचती है और यह जल प्रपात 'नियगरा फाल्स' के नाम से विख्यात है। नियगरा प्रपात सेंट लारेन्स नदी के ऊँचे और कड़े पत्थर के पठार से एक नीचे और मुलायम पत्थर के पठार पर गिरने से बने हैं। इस झरने को देखने के लिये संसार भर से मनुष्य आते हैं। मेकन्जी नदी आर्कटिक महासागर में गिरती है। परन्तु हडसन की खाड़ी में बहुत सी छोटी छोटी नदियाँ पतित होती हैं।

शिल्प व व्यापार—

चूंकि प्रेरी के मैदान में गेहूँ बड़ी अधिकता से उत्पन्न होता है, अतएव वहाँ के नगरों में गेहूँ पीसने के लिये बहुत सी आटा-कलें खुल गई हैं। परन्तु यहाँ लकड़ी नदियों द्वारा बहा कर पहुँचाई

जाती है, अत लकड़ियों के काटने और तख्ते इत्यादि के बनाने के लिये कलें स्थापित की गई हैं। जैसा कि स्वीडन के पाठ में बताया जा चुका है कि 'उड पल्प' एक प्रकार की पेड़ों की छाल होती है, जिससे कागज बनता है, वैसे ही कैनाडा के कुछ नगरों में भी कागज बनाने की कलें हैं, जो कि उन्हीं पेड़ों की खालों अर्थात् 'उड पल्प' से बनते हैं। बहुत से मनुष्य इन्हीं कारखानों मे काम करते हैं। कैनाडा मे जानवरो के चमड़ों की भी दस्तकारी होती है। संयुक्त राज्य अमेरिका, इङ्गलैंड और जापान से इस देश का व्यापार होता है। मछलियाँ, लकड़ियों के लट्ठे, धातुएँ और गेहूँ, पशु और चमड़े आदि वस्तुयें बाहरी देशों को भेजी जाती हैं। परन्तु उन देशो से मशीनें और ऊनी, सूती कपड़े, चीनी, चाय, कोयला इत्यादि दूसरे काम की वस्तुएँ कैनाडा में आती हैं।

राज्य शासन—

कैनाडा का प्रधान शासक गवर्नर जनरल है, जो इङ्गलैंड के राजा द्वारा निर्वाचित होता है। गवर्नर जनरल की सहायता के लिये एक कौंसिल और पार्लियामेंट भी है। प्रत्येक प्रदेश के लिये कैनाडा उपनिवेशिक गवर्नमेंट की ओर से एक लेफ्टिनेन्ट गवर्नर नियत किया जाता है। कैनाडा की जनसंख्या करीब ७०,८२,००० है।

कैनाडा उपनिवेश मे निम्नलिखित प्रान्त है —

ओन्टेरियो—इस प्रान्त की जनसंख्या बहुत घनी है। इसी प्रान्त मे ओटावा नगर सेन्ट लारेन्स की एक सहायक नदी



बसा है। यहाँ पर तख्ते चीरने के सब से बड़ा कारखाना है और (wood pulp) अर्थात् कागज बनाने की लुग्दी तैयार की जाती है। यहाँ की जनसख्या ६५ हजार है। यहाँ पर कैनाडा उपनिवेश की पार्लियामेंट होती है। टोरन्टो—ओन्टेरियो झील पर बसा है। बड़ा व्यापारिक स्थान और दूसरे नम्बर का नगर और बन्दरगाह है। यहाँ की जनसख्या ५,२२,००० है। पोट विलियम और फोर्ट अर्थर प्रसिद्ध नगर हैं।

क्युबेक—इस प्रान्त की भी आबादी घनी है, पर उतनी नहीं जितनी कि ओन्टेरियो की है। इस प्रान्त में भी लकड़ी चीरने व लुग्दी बनाने का व्यवसाय और गेहूँ की खेती होती है। मोन्ट्रियल—कैनाडा का सब से बड़ा नगर और बन्दरगाह है। इसकी जनसख्या ६,१८,००० है।

नोवास्कोशिया, न्यु ब्रन्सविक और प्रीन्स एडवर्ड आइलैण्ड- इन प्रान्तों में मछली पकड़ने, फल पैदा करने और कोयला और लोहा के खोदने का काम होता है। नोवास्कोशिया प्रान्त की राजधानी हेलीफाक्स है, जो कैनाडा का सबसे बड़ा बन्दरगाह है।

है। इस नगर को भारतवर्ष का लायलपुर कह सकते हैं। प्रसिद्ध रेलवे लाइनों का यहाँ जङ्क्शन है।

अलबर्टा प्रान्त में पशु पालने का काम होता है। एडमान्टन इस प्रान्त की राजधानी है।

ब्रिटिश कोलम्बिया प्रान्त में लकड़ी चीरने, मछली पकड़ने, खानों से कोयला व सोना निकालने का व्यवसाय होता है। यहाँ का बन्दरगाह वेनकोवर है जो कि पेसेफिक कैनेडियन रेलवे पर स्थित है। विक्टोरिया यहाँ की राजधानी है।

उत्तरी कैनाडा प्रान्त बड़ा ठंढा है और आबादी कम है। कहीं कहीं सोना पाया जाता है। डासन यहाँ का प्रसिद्ध नगर है।

[व] निउफाउन्डलैण्ड

निउफान्डलैण्ड एक वृटिश उपनिवेश है। इसका कैनाडा से कोई राजकीय सम्बन्ध नहीं। इसमें २,३८,६१४ मनुष्य बसते हैं। यह द्वीप सेंट लारेन्स नदी के दहाने पर अवस्थित है। यहाँ के मनुष्यों के दो उद्योग धन्धे हैं—प्रथम वे लकड़ियाँ काटते हैं, दूसरे मछलियों का शिकार करते हैं। यहाँ की लकड़ियाँ मजबूत नहीं होतीं, अत उसे चक्की में डालकर पीस डालते हैं और उसकी लुबदी से समाचार पत्रों का सस्ता कागज बनाया जाता है। द्वीप के समीप ही मछली मारने के लिये सुगम और योग्य स्थान है। मछली मारने के लिये नावों के बेड़े सयुक्त राज्य और योरप के देशो से इस सुहावने घाटों में तशरीफ लाते हैं और चारा लेने के लिये निउफाउन्डलैण्ड में ठहरते हैं। द्वीप के निवासी विदेशियो को भोजन आदि तो दे देते हैं, परन्तु उन्हीं के साथ स्वय भी इन घाटों मे शिकार करने जाया

बसा है। यहाँ पर तख्ते चीरने के सब से बड़ा कारखाना है और (wood pulp) अर्थात् कागज बनाने की लुग्दी तैयार की जाती है। यहाँ की जनसंख्या ६५ हजार है। यहाँ पर कैनाडा उपनिवेश की पार्लियामेंट होती है। टोरन्टो—ओन्टेरियो झील पर बसा है। बडा व्यापारिक स्थान और दूसरे नम्बर का नगर और बन्दरगाह है। यहाँ की जनसंख्या ५,२२,००० है। पीट विलियम और फोर्ट अर्थर प्रसिद्ध नगर हैं।

क्युवेक—इस प्रान्त की भी आबादी घनी है, पर उतनी नहीं जितनी कि ओन्टेरियो की है। इस प्रान्त मे भी लकडी चीरने व लुग्दी बनाने का व्यवसाय और गेहूँ की खेती होती है। मोन्ट्रियल—कैनाडा का सब से बडा नगर और बन्दरगाह है। इसकी जनसंख्या ६,१८,००० है।

नोवास्कोशिया,न्यु ब्रन्सविक और प्रीन्स एडवर्ड आइलैण्ड—इन प्रान्तों मे मछली पकड़ने, फल पैदा करने और कोयला और लोहा के खोदने का काम होता है। नोवास्कोशिया प्रान्त की राजधानी हेलीफाक्स है, जो कैनाडा का सबसे बडा बन्दरगाह है। यहाँ जाड़ों मे बर्फ नहीं जमता क्योंकि यहाँ पर गल्फस्ट्रीम (gulf stream) का गरम पानी आता है। इसी नगर से पैसे-फिक कैनेडियन रेलवे आरम्भ होती है।

मोनीटोबा और शशकेचवेन—गेहूँ की खेती के लिये प्रसिद्ध हैं विनीपेग—गेहूँ के व्यापार का केन्द्र और मोनीटोबा की राजधानी

है। इस नगर को भारतवर्ष का लायलपुर कह सकते हैं। प्रसिद्ध रेलवे लाइनों का यहाँ जंक्शन है।

अलबर्टा प्रान्त में पशु पालने का काम होता है। एडमान्टन इस प्रान्त की राजधानी है।

ब्रिटिश कोलम्बिया प्रान्त में लकड़ी चीरने, मछली पकड़ने, खानों से कोयला व सोना निकालने का व्यवसाय होता है। यहाँ का बन्दरगाह वेनकोवर है, जो कि पेसेफिक कैनेडियन रेलवे पर स्थित है। विक्टोरिया यहाँ की राजधानी है।

उत्तरी कैनाडा प्रान्त बड़ा ठंढा है और आबादी कम है। कहीं कहीं सोना पाया जाता है। डासन यहाँ का प्रसिद्ध नगर है।

[ब] निउफाउन्डलैण्ड

निउफान्डलैण्ड एक बृटिश उपनिवेश है। इसका कैनाडा से कोई राजकीय सम्बन्ध नहीं। इसमें २,३८,६१४ मनुष्य बसते हैं। यह द्वीप सेंट लारेन्स नदी के दहाने पर अवस्थित है। यहाँ के मनुष्यों के दो उद्योग धन्धे हैं—प्रथम वे लकड़ियाँ काटते हैं, दूसरे मछलियों का शिकार करते हैं। यहाँ की लकड़ियाँ मजबूत नहीं होतीं, अत उसे चक्की में डालकर पीस डालते हैं और उसकी लुग्दी से समाचार पत्रों का सस्ता कागज बनाया जाता है। द्वीप के समीप ही मछली मारने के लिये सुगम और योग्य स्थान है। मछली मारने के लिये नावों के बेड़े संयुक्त राज्य और योरप के देशों से इस सुहावने घाटों में तशरीफ लाते हैं और चारा लेने के लिये निउफाउन्डलैण्ड में ठहरते हैं। द्वीप के निवासी विदेशियों को भोजन आदि तो देते हैं, परन्तु उन्हीं के साथ स्वयं भी इन घाटों में शिकार करने



करते हैं। इनमें जो बड़े साहसी होते हैं वे बसन्त ऋतु में भी उत्तर को चले जाते हैं और जो बर्फ के टुकड़े बैफिन जलडमरूमध्य से निकलते हैं, उन पर पड़े हुए जल-मानुसों का शिकार करते हैं।

सेंट जान्स—निउफाउन्डलेण्ड की राजधानी और मछली के शिकार का केन्द्र है।

[स] बरमूडा द्वीपसमूह

कैनाडा और पश्चिमी भारतीय द्वीप समूह (West Indies) के मध्य में छोटे छोटे द्वीप-समूह हैं। ये सब बृटिश उत्तरी अमेरिका के राज्यशासन की अध्यक्षता में हैं। इन द्वीपों की स्थिति बड़े मार्के की है। कैनाडा, सयुक्त-राज्य और 'वेस्ट इन्डीज' तीनों से करीब करीब एक ही दूरी पड़ती है। मूंगे की भीत इन द्वीपों को चारों ओर से घेरे है। बरमूडा में बृटिश-सरकार की ओर से एटलाण्टिक महासागर की रक्षा के लिये यहाँ एक अङ्गरेजी फौज रहती है। यहाँ की गर्म और स्वास्थ्यप्रिय (वर्धक) जलवायु ने अमेरिका के महाजनों और बड़े पदाधिकारियों को लुभा लिया है जो कि जाड़े में वहाँ बसना प्रिय समझते हैं।

२—अमेरिका का संयुक्त राज्य

सीमा व विस्तार—

सयुक्त राज्यों की सीमा बहुत दूर तक प्राकृतिक है। पूर्व में एटलाण्टिक महासागर, पश्चिम में प्रशान्त महासागर, उत्तर में सेंट लारेन्स नाम की नदी और 'बड़ी झीलें' और दक्षिण में मेक्सिको की खाड़ी और रिओ ग्रैन्डी डेलनोर्ट हैं।

इन राज्यों का क्षेत्रफल (अलास्का के क्षेत्रफल को मिलाकर) ३६ लाख वर्ग मील के लगभग है।

धरातल–

एटलांटिक महासागर के किनारे एक मैदान है, जो उत्तर में पतला और दक्षिण की ओर चौड़ा होता गया है। संयुक्त राज्य का उत्तरी भाग प्रेरी के मैदान हैं, जो अत्यन्त प्रसिद्ध और उपयोगी हैं। इसी भाग में निउयार्क और बोस्टन आदि प्रसिद्ध नगर बने बसे हैं, जिसका कारण यह है कि इनके पीछे अपूलेशियन पहाड़ हैं, जिनमें कई दर्रे हैं और उनके द्वारा मध्य देशों के माल असबाब महासागर के निकटवर्ती नगरों में पहुँचाये जाते हैं। पश्चिम में मिसिस्सिपी नदी का बेसिन है। इस भाग के भी पश्चिम में एक बड़ा पठार है, जिसमें कई पर्वत श्रेणियाँ हैं। इन पर्वत श्रेणियों में राकी पर्वत, वसाच श्रेणी, कोस्ट श्रेणी और कैसेकेड प्रधान हैं।

सेंट लारेन्स, हडसन, कालोराडो, कोलम्बिया और मिसिस्सिपी यहाँ की मुख्य नदियाँ हैं। मिसिस्सिपी संसार की सबसे बड़ी नदी है। इसकी कई सहायक नदियाँ हैं जो कि संयुक्त राज्य के मध्यमी भाग को सींचती हैं। वास्तव में इसकी एक सहायक मिस्सौरी मिसिस्सिपी से बढ़ कर है।

जलवायु–

साधारणतः संयुक्त राज्य के पश्चिमी और पूर्वी किनारों की जलवायु सामान्य है। उत्तरी देश दक्षिणी देशों की अपेक्षा अधिक ठंढे रहते हैं और इनके जाड़ों में दिन छोटे होते हैं। यह अन्तर इतना अधिक नहीं है, जितना कि २,००० मील की दूरी

चाहिये। कैलीफोर्निया के पासवाले देशों की जलवायु रूमसागर के पासवाले देशों के समान है। राकी पहाड़ो मे उत्तर की ओर जल अधिक गिरता है।

उपज–

अप्लेशियन पहाड और उनके पश्चिमी ढाल पर पत्थर के कोयले और लोहे की खदान और मिट्टी के तेल के सोते हैं। पूर्व मैदानों मे तम्बाकू, धान और कपास के खेत लहलहाते हैं। मिसिस्सिपी बेसिन के उत्तरी भाग में गेहूँ खूब उपजता है और मध्य भाग में मकाई की पैदावार की भरमार है। इसी बेसिन के दक्षिणी भाग में कपास की कृषि इतनी कसरत से होती है, जितना कि ससार के किसी भी देश में नहीं होती। राकी पर्वत के निकटवर्ती देश सूखे हैं, जिससे यहां किसी किस्म की खेती नहीं हो सकती परन्तु यहां पर पशुओ के लिये चरागाह अवश्य हैं। साथ ही इसके यह बात जान लेनी चाहिये कि इन देशों में सोना, चाँदी, तांबा, पारा आदि कई प्रकार के खनिज पदार्थ पाये जाते हैं। प्रशान्त महासागर के तट पर गेहूँ की खेती होती है और फल बहुत पैदा होते हैं, जिनमें नीबू और नारङ्गी प्रधान हैं। यही पैदावार कैलीफोर्निया के पासवाले देशों की भी है। पूर्व तरफ से समुद्र मछलियों के शिकार के लिये प्रसिद्ध हैं।

इन सब पैदावारों को देखते हुए हमे ज्ञात होता है कि सयुक्त राज्य कोयला, लोहा, तांबा, शीशा, लकडी, गेहूँ, मकाई, कपास और तम्बाकू की पैदावार में ससार के तमाम देशों से प्रधान और बढ़ कर है।

व्यापार और शिल्प–

चीनी, कहवा, रसायनिक ५९

से संयुक्त राज्य में भेजे जाते हैं। नाना प्रकार के बढ़िया फल भी मनुष्यों के खाने के लिये यहाँ आते हैं। मशीनरी, पशु, लकड़ी, खाने पीने की चीजें, गेहूँ और सब तरह के कपड़े देशावर भेजे जाते हैं।

मनुष्य–

यहाँ के मनुष्य शिल्प, कृषि, शिक्षा आदि विषयों में उन्नति के शिखर पर पहुँच गये हैं और संसार भर से अधिक उदार और उन्नति पथ के पथिक समझे जाते हैं। इन राज्यों की जन संख्या ६,३४,०२,१५१ है।

शासन प्रणाली–

कैनाडा की भांति यहाँ भी छोटी छोटी रियासतें हैं। इसीलिये इनकी संयुक्त-शक्ति संयुक्त राज्य कहलाती है। प्रत्येक राज्य में स्वतन्त्र पार्लियामेंट और स्वतन्त्र आईन अदालत है, परन्तु अन्य देशों के साथ उनका व्यवहार संयुक्त शक्ति के अधिकार में है, संयुक्त-राज्य कुछ वर्ष तक शासन करने के लिये अपने में से एक प्रधान को निर्वाचित करता है, जो कि इन राज्यों का सभापति या 'प्रेसीडेन्ट' कहलाता है। उसकी मदद के लिये एक कांग्रेस अथवा कौंसिल है, जिसकी राय से 'प्रेसीडेन्ट' को शासन करने में सुविधा रहती है।

संयुक्त-राज्य अमेरिका की शासन प्रणाली संसार भर में प्रजा सत्तात्मक राज्य का लक्ष्य है। ५० राज्य के सम्मिलन से संयुक्त राज्य बना है।

पचास स्वतन्त्र राज्यों की तालिका अगले पृष्ठों में दी जाती है—

१—उत्तरी एटलान्टिक डिवीजन

(६—राज्य)

सख्या	राज्य का नाम	प्रसिद्ध नगर	क्या वस्तु प्रसिद्ध है
१	मेन	ग्रागस्टा	
२	न्यु हैम्पशायर	कनकर्ड ग्रौर मैनेचेस्टर	
३	वैरमोन्ट	मोन्टपिलियर ग्रौर वेलिंग्टन	
४	मसाचेसटस	बोस्टन, केम्ब्रिज वार्सेस्टर, सोयल	यहाँ का स्कूल
५	रोडे द्वीप	प्राविडेन्स, न्यूपोर्ट	सबसे छोटा राज्य है
६	कनेक्टीक्ट	न्यू हेविन	
७	न्यूयार्क	न्यूयार्क, बोलक्नि, बाफालो	व्यापार
८	न्यूजर्सी	ट्रन्टन, न्यूवर्क, जर्सीसिटी	
९	पेन्सलवेनिया	हरिसवर्ग, फिलाडल्फिया, पिट्सबर्ग	लोहा, कोयला ग्रौर मिट्टी का तेल

२—उत्तरी एटलाँन्टिक डिवीजन

(६—राज्य)

ख्या	राज्य का नाम	प्रसिद्ध नगर	क्या वस्तु प्रसिद्ध है
१०	डेलावर	डोवर, विलिमनटन	
११	मैरीलैंड	एनापोलीन, बलूटीमोर	
१२	कलम्बिया का उप-निवेश	वाशिंगटन, जार्ज टाउन	(केवल एक स्वतन्त्र जिला)
१३	पूर्वी वर्जनिया	रिचमड, नार्फोक	सर वालटर रैले की प्रथम कालोनी
१४	पश्चिमी वर्जिनिया	चार्लस्टन, व्हीलिंग	
१५	उत्तरी कारोलिना	रैले, विलिंग्टन	राल और धूना
१६	दक्षिणी कारोलिना	कोलम्बिया, चार्लस्टन	चावल
१७	जार्जिया	एटलान्टा, अगस्टा, सभाना	जार्ज द्वितीय के नाम पर बसा है
१८	फ्लोरिडा	टलाहासी, सेन्ट अगस्टाइन, कीवेट	सुन्दर फूलों के

३—उत्तरी मध्य डिवीजन
(१२ राज्य)

संख्या	राज्य का नाम	प्रसिद्ध नगर	क्या वस्तु प्रसिद्ध है
१९	ओहियो	कोलम्बस, सिन्सिनाटी, क्लीवलैंड	अधिक जन-संख्या के लिये
२०	इण्डियाना	इण्डियानापोलीज, इविन्सविल	गेहूँ की खेती के लिये
२१	इलीनोईस	स्प्रिङ्फील्ड, शिकागो	घास का बड़ा मैदान
२२	मिशीगन	लासिङ्, डिट्रिओट	ताँबा
२३	विसकोंसिन	मेडिसन, मिलावाकी	
२४	मिनेसोटा	सेन्टपाल, मिनियापोलिस	गेहूँ की खेती
२५	आयोवा	डिमोनीज, सेक्रूस सीटी आयोवा	
२६	मिसूरी	जेफरसन् सिटी, सेन्ट लुई, कन्सास	लोहा और कोयला
२७	उत्तरी डकोटा	बिस्मार्क फर्गो	गेहूँ की
२८	दक्षिणी डकोटा	याङ्कटन, सिक्सफाल	
२९	नेब्रास्का	लिङ्कन, उमाहा	
३०	कन्सास	टोपिका	

४—दक्षिणी मध्य डिवीजन

(६ राज्य)

संख्या	राज्य का नाम	प्रसिद्ध नगर	क्या वस्तु प्रसिद्ध है
३१	केन्टकी	फ्रैंकोट, लुइसवेली	खोह और गुफायें
३२	टेनेसी	नशवीली, मेम्फिस, एलिगनी	
३३	एल्बामा	मोंटगोमरी, मोविली	कपास की खेती
३४	मिसिसिपी	जैक्सन, नेट्चेज,विक्सबर्ग	
३५	ल्यूसियान	वेटनरोग,न्यू ओरलियन्स	गन्ने की खेती
३६	टक्सास	अस्टिन, गैल्वेस्टन	
३७	ओक्लोहोमा	ओक्लोहोमा	
३८	इण्डियाना टेरिटरी		
३६	एर्कन्सास	लिटिल रॉक	

५—पश्चिमी डिवीजन
(११ राज्य)

संख्या	राज्य का नाम	प्रसिद्ध नगर	क्या वस्तु प्रसिद्ध है
४०	मोन्टाना	हेलना	
४१	व्योमिङ्	चेना, लेरोमी	
४२	कालोरेडो	डेन्वर	सोने, चाँदी की खानें
४३	कैलीफोर्निया	सक्रामेन्टो, सान्फ्रान्सिस्को, लास एँजेलिस	,,
४४	नेवादा	कार्सन सिटी	,,
४५	न्यू मेक्सिकोटेरिटरी	सानटाफे	
४६	एरीजोना टेरिटरी	फोनिक्स	
४७	उटा	साल्ट लेक सिटि	नमक की बड़ी झील
४८	इडाहो	ब्वयज सिटी	
४९	वाशिङ्गटन	ओलमपिया, सियटल, टाकोमा	यहाँ समुद्री दुर्ग हैं
५०	ओरेगन	सालेम, पोर्टलैंड	,,

प्रसिद्ध नगर—

न्यूयार्क—यह नगर धन में, जन मे और क्षेत्रफल में [illegible] में बड़ा नगर हो रहा है । अमेरिकावाले [illegible]

व्यापारिक राजधानी कहते हैं और यह आजकल ऐसा हो भी गया है। धरती महँगी होने से यहां पृथ्वी में सबसे ऊँचा ६० तल्ले तक का मकान बना है, जिसका नाम ' उलवर्थ बिल्डिंग ' है। इसकी जनसख्या ५८ लाख है। यह नगर हडसन नदी के मुहाने पर बसा हुआ है। परन्तु सबसे चहल पहल वाला भाग एक द्वीप पर है। लंदन को छोड़कर न्यूयार्क ही सबसे बड़ा बन्दरगाह है और यहाँ प्रति दिन हजारों जहाज देखे जाते हैं। इन्हीं सब विशेषताओं के होने से दसो दिशाओं की बीसों ओर से रेल की सड़कें यहां मिलती हैं।

बोस्टन—न्यूयार्क के बाद यही प्रधान बन्दर सयुक्त राज्य में है।

फिलाडेलफ़िया, बाल्टीमोर, निउ आर्लीयन्स, और सनफ्रानसिसको सयुक्त-राज्य के प्रसिद्ध बन्दरगाह हैं।

मिनियापेलिस—मिसिस्सिपी पर बसा है। यहाँ की आटाकल ससार की सारी आटाकलो से बढ़कर है।

सेंट लुई—में मिसिस्सिपी और मिसौरी के सगम पर मकाई की बड़ी मडी है।

निउ आर्लीयन्स—मिसिस्सिपी के मुहाने से १०० मील की दूरी पर कपास के व्यापार का मुख्य नगर है। यहां से कपास मेनचेस्टर और लिवरपूल को भेजी जाती है।

पिटसबर्ग—इस नगर के आस पास कोयला, लोहा और पेट्रोलियम पाये जाते हैं। फौलाद की भी खानें यहाँ हैं।

शिकागो—मिशिगन झील पर बसा है। यहाँ एक ससार-प्रसिद्ध विश्वविद्यालय स्थापित है। इस नगर की जन-सख्या

लाख है। यह रेलवे केन्द्र है और यहाँ के बिजली की शक्ति का तमाशा दर्शनीय है। गेहूँ और मांस को सब से बड़ी मंडी है।

वाशिंगटन—संयुक्त राज्य की राजधानी है।

अलास्का

अलास्का को संयुक्त-राज्यवालों ने रूस से मोल लिया है। यह देश कैनाडा के पश्चिम में अवस्थित है। यह प्रान्त बहुत ठंढा है और इसका अधिकांश ऊसर है। पर यहाँ सोना निकलता है और मील मछली पकड़ी जाती है। अलास्का के वनो की लकड़ियो से बड़ा धन मिलता है। देश भर की जनसंख्या करीब तीन चार लाख से भी कम है।

३—मेक्सिको

सीमा व विस्तार—

उत्तरी अमेरिका का दक्षिणी भाग मेक्सिको के नाम से प्रसिद्ध है। रियो ग्रेन्डी इसे उत्तर मे संयुक्त राज्य से अलग करता है। दक्षिण मे राजकीय सीमा बनाई गई है—मध्य अमेरिका इसके दक्षिण मे अवस्थित है और यूकेटन का प्रायद्वीप भी इसी राज्यान्तर्गत है। शेष दोनों ओर महासागर है—पूर्व मे एटलांटिक और पश्चिम में प्रशान्त। भारतवर्ष और मेक्सिको प्रायः एक ही अक्षांश पर स्थित हैं, इसी कारण दोनो देशों मे बहुत समानता है।

मेक्सिको का क्षेत्रफल ७,६७,००० वर्गमील के लगभग है अर्थात् विस्तार में यह देश भारतवर्ष का आधा है।

धरातल—

मेक्सिको का माध्यमिक हिस्सा एक बड़ा पठार है, जो कि भारतवर्ष से वास्तव में ठीक मिलता जुलता है। यहाँ कई पर्वत-श्रेणियाँ हैं, जिनमें पश्चिमी पर्वत-श्रेणी सब से ऊँची है। इसका नाम 'सिरा निवादा' है। समुद्र के किनारे के मैदान धीरे धीरे चौड़े होते जाते हैं, यहाँ तक कि यूकेटन प्रायद्वीप के नजदीक बहुत ही अधिक फैलते हैं। पठार के दक्खिन यूकेटन को नीचा व रेतीला मैदान है।

जलवायु—

देश के मध्य में कर्क वृत्त गुजरता है। समुद्री किनारों की जलवायु तो गर्मियों में गर्म और जाड़ों में सर्द है, परन्तु मध्य वाला हिस्सा अक्षांश के अनुसार गर्म और सर्द रहता है। समुद्री किनारों के समीप जो पर्वत श्रेणियाँ हैं, वे पानी लानेवाली हवाओं को रोक देती हैं। परन्तु एक कारण पानी न बरसने का यह है कि देश के अधिकांश पर उत्तर पूर्व की जो हवायें चलती हैं, वे बहुधा स्थल से जल की ओर चला करती हैं, जिससे बीच का सारा देश उजाड़ पड़ गया है।

उपज—

मेक्सिको में खनिज पदार्थ बहुत हैं जिनमें चाँदी विशेषकर है। इसके पश्चात् ताँबा का नम्बर है। मेक्सिको की खाड़ी के पास मकाई, चावल, चीनी और तम्बाकू उत्पन्न होते हैं। ऊँचे देशों में जहाँ थोड़ा बहुत पानी मिल सकता है वहाँ गेहूँ, जौ और फलों की पैदावार है। जानवरों में यहाँ घोड़े, चौपाये, भेड़ें और बकरियाँ पाली जाती हैं।

व्यापार—

ऊनी, सूती और रेशमी कपड़े, लोहे की वस्तुयें मशीनें और चमड़ा स्वदेश में आते हैं। परन्तु विदेश जानेवाली वस्तुओं में चांदी, कहवा, सन, सोना, लकडी और तम्बाकू प्रधान हैं।

राज्य-शासन—

मेक्सिको स्वतन्त्र ता है, परन्तु यहाँ कोई शासक नहीं पहिले कभी यह अच्छी दशा मे था, जब कि उस पर स्पेन का अधिकार था।

प्रसिद्ध नगर—

वेराक्रुज—मेक्सिको का मुख्य बन्दर है।

मेक्सिको—राजधानी है। यह प्राचीन नगर है, जिसे स्पेन वालों से पहिले निवासी ऐजटेको ने बसाया था।

प्युएवला—खनिज पदार्थ निकालने का और चीजों के बना का मुख्य स्थान है।

एकापुलका—पेसेफिक सागर पर बन्दरगाह है।

४—मध्य अमेरिका

मध्य अमेरिका का नाम उन पतले और तङ्ग देशों को दिया गया है, जो कि मेक्सिको और दक्षिणी अमेरिका के बीच मे अवस्थित हैं और अमेरिका के दो भाग कर उन्हें आपस में मिला देते हैं।

इस देश की धरातल मेक्सिको के समान पहाड़ी है। यहाँ की नदियाँ छोटी और तेज बहनेवाली हैं, जिनमें सान जुवान मुख्य है।

यहाँ की जलवायु और पैदावार भी मेक्सिको से मिलती जुलती है, परन्तु मध्य अमेरिका कुछ अधिक दक्षिण की ओर है और कम ऊँचा है। अतएव मेक्सिको की अपेक्षा यहाँ थोड़ी अधिक गर्मी पड़ती है। पूर्वी भाग मे जल अधिक गिरता है, परन्तु पश्चिमी हिस्से मे कुछ भी न होने तक की नौबत आ जाती है। दोनों ओर की जलवायु एक दूसरे से भिन्न है यही कारण है कि यहाँ की पैदावार मे भी विभिन्नता है।

सारा देश सात रियासतों मे बँटा है, जो ये हैं—गाटेमाला, ब्रिटिश हाण्डुराज, हाण्डुराज, सैलवाडोर, निकारागुआ, कास्टै रिका और पनामा।

इन सब राज्यों की शासन प्रणाली बड़ी शोचनीय है। हमेशा दो तीन बरसों में बलवा हुआ करता है।

पनामा नहर

पनामा के पास स्थलडमरूमध्य बहुत तङ्ग और नीचा है। कई बरसों से उत्तरी और दक्षिणी अमेरिकाओं को अलग करने और प्रशान्त और एटलाटिक महासागरों के मिलाने की चर्चा चली आ रही थी। इससे यह भारी लाभ है कि एटलाटिक वाले जहाजों को दक्षिणी अमेरिका के दक्षिण से हो कर जाने की बिलकुल ही आवश्यकता न पड़ेगी और वह बड़ी यात्रा थोड़े ही दिनों म पनामा नहर द्वारा प्रशान्त महासागर में हो सकेगी। इस इसी लाभ के कारण संयुक्त-राज्य की गवर्नमेंट ने पनामा राज्य को किराये पर ले ली और फिर पनामा को नहर खोद र दोनों महासागरों का पुनर्मिलन करा दिया। यह सब तो ठीक परन्तु ध्यान रहे कि इस नहर के खोदवाने में बहुत सी [illegible]यों का सामना करना [illegible] बहुत सा रुपया खर्च

गया। चाहे जो कुछ भी हो इस नहर के खुद जाने से मनु
को बड़ा लाभ हुआ है। यही यात्रा जो पाँच छः दिन में हो
थी, उसमें अब केवल दो तीन दिन ही लगते हैं। नहर का स
ऊँचा भाग समुद्र को धरातल से ५० फीट ऊँचा है और जह
को उठाने के लिये बड़ी भारी झील बना दिये गये हैं, जिस
जहाज नहर से आ जा सकें।

५—पश्चिमी भारतीय द्वीपसमूह

पश्चिमी भारतीय द्वीप समूह केरबियन सागर के उत्तर-पू
दो बराबर पंक्ति में हैं। क्रिष्टफर कोलम्बस जब भारत को
करने निकला, तो उसे रास्ते में पश्चिमी द्वीप समूह दिख
दिया। उसने समझा कि यही भारतवर्ष है, इसलिये उसने
द्वीप का नाम इन्डीज (Indies) रख दिया। यह उसके समीपव
द्वीप हैं।

पश्चिमी भारतीय द्वीप समूह का क्षेत्रफल बहुत कम है य
लगभग जापान के बराबर होगा।

जलवायु और पैदावार—

सारे टापू प्राय पहाड़ी हैं, इसीलिये समुद्र से ऊँचे होने
कारण उनमें तरह तरह की जलवायु और अनेक प्रकार की पै
वार होती है। नीचे टापू में तम्बाकू, गन्ना, केला, और पहाड़
ढालों पर कोको, कहवा, मसाला और कई प्रकार की उम्दा लक
मिलती है। सारा देश बहुधा राख और ज्वालामुखी पत्थरों
टूटने से बना है, जिससे उपजाऊ होगया है। शकरकन्द
मुख्य करके बोए जाते हैं। पश्चिमी द्वीपसमूह प
ट्रेड हवाएं चला करती हैं, जिनके द्वारा

भरा देख पड़ता है और अच्छे वनो और हरे खेतों के ढके रहने और सुहावनी नदियों के कारण दुनिया भर में सब से सुहावना टापू माना जाता है। इन टापुओं पर कभी कभी भयङ्कर आँधियां चला करती हैं, जो कि चीन के टैफून के समान होती है। इनके चलने से देश को बड़ी हानि पहुँचती है। इनमें दो बड़े क्यूबा और छोटी द्वीप है।

क्यूबा सबसे बड़ा टापू है, जो शक्कर और तम्बाकू के लिए प्रसिद्ध हैं।

हवाना—क्यूबा की राजधानी है और यहीं से इस टापू का माल बाहर आता और जाता है।

जमेका और बामा-फ्लोरिडा के किनारे पर हैं। जमेका सुन्दर टापू है और यहां ईख बोया जाता है। यहां से गरम मसाला और फल योरप और संयुक्त राज्य को भेजे जाते हैं। जमेका की राजधानी किङ्गस्टन है।

६—ग्रीनलैण्ड* और अन्य द्वीप समूह

ग्रीनलैण्ड नाम का एक विस्तृत द्वीप उत्तरी अमेरिका के उत्तर में है। इस द्वीप के पास से उत्तर-ध्रुव रेखा गुजरती है, जिससे हमें पता चल सकता है कि इस टापू की जलवायु और उपज आदि कैसे होगी। यहां बारहों मास बर्फ जमी रहती है, जो कि कहीं ७,००० फीट मोटी हो गई है। यह बर्फ घाटियों में ग्लेशियर के रूप में बहती है और समुद्र के किनारे पहुँच कर टूट जाती है, जिससे बर्फ के बड़े बड़े टुकड़े समुद्र में तैरने लगते हैं। इनको

* इस टापू का थोड़ा सा वर्णन डेन्मार्क के विवरण में कर दिया गया है, परन्तु चूंकि इसका उत्तरी अमेरिका से अधिक सम्बन्ध है, इस लिए यहां भी विस्तृत रूप से बयान देना आवश्यकीय समझा गया।

'आइस वर्ग' कहते हैं और इनमे अमेरिका आने जाने वाले जहाजों को बड़ी हानि पहुँचती है और कभी कभी तो आना जाना ही दुष्कर हो जाता है। टापू के पश्चिम में डेनिश लोगों की थोड़ी बस्तियां हैं। परन्तु अधिकाश में 'एस्किमो' ही रहते हैं। सच ता यह है कि यहां और इसके निकट द्वीपों के यही खास निवासी या रहनेवाले हैं। ये सब एसिया में 'टुन्ड्रा' के निवासियों के सदृश मछलियों का शिकार करते हैं और यदि बन पड़ा तो और नाना प्रकार के जलजन्तुओं और जल मानुसों का भो शिकार करते हैं। यही इनके जीवन का साधन है। जानवरों की खाल से वे अपने तनों का ढाकते हैं।

दक्षिणी अमेरिका

प्राकृतिक वर्णन

जिस प्रकार उत्तरी अमेरिका विषुवत् रेखा के उत्तर विस्तृत है, ठीक उसके प्रतिकूल दक्षिणी अमेरिका विषुवत् रेखा के दक्षिण है। उत्तरी अमेरिका उत्तरी ध्रुव के निकट है, उसी प्रकार दक्षिणी अमेरिका का दक्षिणी भाग दक्षिणी ध्रुव के समीप है। इस विवरण से इसकी जलवायु का पता सहज ही मे चल सकता है। यहां का मध्यांश उष्ण है, परन्तु दक्षिणी भाग कुछ शीतल है।

इसका क्षेत्रफल ७०,००,००० वर्गमील हैं। यहां योरोपवासी ही अधिक रहते हैं। कुछ सकर वर्ण के भी लोग बसते हैं। इसमें ४,८०,००,००० मनुष्य वसते हैं।

दक्षिणी अमेरिका के पश्चिम की ओर एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक—पनामा से हार्न अन्तरीप तक ऐण्डीस पहाड़ की श्रेणियां फैली हुई हैं। इसकी १२ से अधिक चोटियां २०,०००


दक्षिणी अमरीका
राजनैतिक
पेनामा
कोलम्बिया
वेनीजूएला
आर्जटाउन
पारामारिबो
केयेन
मेनाओस
पाय
लीमा

...ट से अधिक ऊँची है जिनमें सबसे ऊँची चोटी चिलं... एकन्‌कागोया २३,००० फ़ीट ऊँचा है।

दक्षिणी अमेरिका में तीन प्रधान नद हैं—(१) ओरीनाको (... अमेजन (३) ला प्लाटा। इनमें अमेजन ४,००० मील लम्बी है ... जो संसार भर की नदियों से अधिक चौड़ी है। यह स... नदियाँ एटलान्टिक महासागर में गिरती हैं।

दक्षिणी अमेरिका में कुल १० स्वाधीन देश हैं। इनके अति... शेष भाग अँगरेज़, फ्रान्सीसी और डच जातियों के आधीन है

राज्य-विभाग

स्वाधीन देशों के नाम यह हैं—कोलम्बिया, वेनेज़ुएला, ...ज़ील, परेगुआ, यूरेगवा, अर्जनटाइन, चिली, बोलेविया, पीरू और एकाडार।

कोलम्बिया—उत्तरी अमेरिका के संयुक्त राज्य के अनुसार कुछ ...ों का सम्मिलन है। यहाँ से मेहागनी, सिन्कोना (कुनाइन) ... बाहर को भेजी जाती है। बगोटा यहाँ की राजधानी है। ... देश की ज...या ४३,०३,००० है।

वेनेज़ुएला ... ...न प्रणाली कोलम्बिया की भाँति है। ...रेनन, ...शी यहाँ के अधिवासी हैं। यहाँ सोने की ... है। २६,८४,६०६ मनुष्य यहाँ

... दिनों से स्वतन्त्र ... पोर्चुगीज़ ही ... ों के जङ्गलों ... की खानें

(स्टीमर) चल सकते हैं, परन्तु ग्रीष्म ऋतु में दोनो नदियाँ
क रहती हैं। तिस पर भी मरे की धार कभी बन्द नहीं होती।
श्चिमी ढलान पर अनेक बड़ी बड़ी नदियाँ बहती हैं, परन्तु वर्षा
पश्चात् उनमें जल की अधिकता नहीं रहती। एशिया के
कास्पियन और अरल समुद्रों की भाँति आस्ट्रेलिया में भी आयर
और टारेंस नामक बड़ी झीलें हैं। यूराडं आमेडस, साल्ट मार्श,
प्रास्टन, मेंगर, फेरा, फाउन और ग्रेगरी नामक छोटी छोटी और
भी झीलें हैं।

आस्ट्रेलिया के पूर्वी तट पर अधिक वर्षा होती है। प्रशान्त
महासमुद्र से जो जलीय वाष्पपूर्ण वायु आती है, वह पर्वतों
से टकरा कर पूर्व की ओर वर्षा करती है। पश्चिम की
ओर वर्षा सामान्य रूप से होती है, इसलिये पश्चिमी आस्ट्रेलिया
अत्यन्त शुष्क है।

इन्हीं कारणों से आस्ट्रेलिया का पूर्वी भाग और उत्तरी अंश ही
अधिक उर्वरा है। इसके अन्य सब देश प्राय मरुस्थल हैं।

२—जलवायु, उद्भिज और जीवजन्तु

आस्ट्रेलिया के किसी अङ्ग में शीत की अधिकता नहीं है,
परन्तु ग्रीष्म की भीषणता भी खूब है। इसके किन किन भागों में
वर्षा अधिक होती है, यह तो हम जान ही चुके। गर्मियों में समुद्र
से होकर उत्तर-पश्चिम और उत्तर पूर्व से वायु आती है। इसलिये
उत्तर और पूर्व भाग में वर्षा हो जाने के कारण शुष्क वायु शेष
रहकर मरुस्थलों में पहुँचती है। इसलिये उत्तरी अफ्रिका या अरब
की जलवायु से आस्ट्रेलिया के मध्यभाग की जलवायु की तुलना
की जा सकती है।

जिस भाँति यूरोप, एशिया और अफ्रिका ५९
आस्ट्रेलिया किसी महादेश से उस भाँति संयुक्त

बहुत दूर है, किनारा भी सपाट और चिकना है। यही कारण है कि यहाँ अच्छे अच्छे बन्दर कम हैं। आस्ट्रेलिया के उत्तर-पूर्व उपकूल भाग से 'ग्रेट बैरियर रीफ' नामक मूँगे की ऊँची दीवाल प्रायः १,४०० मील की दूरी में फैली हुई है। यह दीवाल आस्ट्रेलिया महाद्वीप के उपकूल से २० से ७० मील तक की दूरी पर समुद्र के पास पास रहती है।

आस्ट्रेलिया के पूर्व की ओर जरा देखो—उत्तर मे दक्षिण तक एक पर्वतमाला चली गई है, जिसका नाम अग्रेजी में है 'दि ग्रेट डिवाइडिङ्ग रेंज' अर्थात् भाषा में 'वृहत् विभाजक पर्वतमाला' कह सकते हैं। यह पूर्व की ओर बहुत दूरी पर उच्च होकर पश्चिम की ओर ढालू होती गयी है। ढलान क्रमश निम्नतर होता हुआ आस्ट्रेलिया के मध्य मे विस्तृत, शुष्क और प्राय. पेड पत्तियों से रहित एक समतल भूमि बनाता है। किन्तु पश्चिमी आस्ट्रेलिया की-ओर फिर वह भूमि ऊँची होकर एक माल-भूमि के आकार में परिणत हो जाती है। आस्ट्रेलिया के दक्षिण में भी एक उच्च-भूमि विद्यमान है।

यह वृहत् विभाजक पर्वतमाला भिन्न भिन्न स्थानो में पृथक् पृथक् नामों से प्रसिद्ध है, जिनके बताने की हम कोई आवश्यकता नहीं समझते।

इस 'वृहत् विभाजक पर्वत-माला' के दोनों ओर दोनो ढलानों से अनेक नदियाँ प्रवाहित होती हैं। पूर्व का ढलान पश्चिमी ढलान मे छोटा है, इसलिये उधर की नदियाँ भी बड़ी नहीं हैं।

दक्षिण-पूर्व की ओर मरे, और डार्लिङ्ग नाम की दो नदियों की धाराएँ उल्लेखनीय हैं। मरे, दक्षिण में और डार्लिङ्ग पूर्व की ओर से निकलती हैं और परस्पर मिलकर समुद्र के निकट स्पेन्सर एक खाड़ी में पतित होती है। वर्षा के दिनो में उनमें धुर्

(स्टीमर) चल सकते हैं, परन्तु ग्रीष्म ऋतु में दोनों नदियाँ क रहती हैं। तिस पर भी मरे की धार कभी बन्द नहीं होती। श्चिमी ढलान पर अनेक बड़ी बड़ी नदियाँ बहती हैं, परन्तु वर्षा पश्चात् उनमें जल की अधिकता नहीं रहती। एशिया के स्पियन और अरल समुद्रों की भाँति- आस्ट्रेलिया में भी ग्रायर, और टारस नामक बड़ी झीलें हैं। यूराई आमेडस, साल्ट मार्श, ाइडन, मैंगर, फ़ेरा, काउन और ग्रेगरी नामक छोटी छोटी और ी झीलें हैं।

आस्ट्रेलिया के पूर्वी तट पर अधिक वर्षा होती है। प्रशान्त महासमुद्र से जो जलीय वाष्पपूर्ण वायु आती है, वह पर्वतों से टकरा कर पूर्व की ओर वर्षण करती है। पश्चिम की ओर वर्षा सामान्य रूप से होती है, इसलिये पश्चिमी आस्ट्रेलिया अत्यन्त शुष्क है।

इन्हीं कारणों से आस्ट्रेलिया का पूर्वी भाग और उत्तरी अंश ही अधिक उर्वरा है। इसके अन्य सब देश प्राय मरुस्थल हैं।

२—जलवायु, उद्भिज और जीवजन्तु

आस्ट्रेलिया के किसी अंश में शीत की अधिकता नहीं है, परन्तु ग्रीष्म की भीषणता भी स्पष्ट है। इसके किन किन भागों में वर्षा अधिक होती है, यह तो हम जान ही चुके। गर्मियों में समुद्र से होकर उत्तर पश्चिम और उत्तर पूर्व से वायु आती है। इसलिये उत्तर और पूर्व भाग में वर्षा हो जाने के कारण शुष्क वायु शेष रहकर मरुस्थलों में पहुँचती है। इसलिये इसकी अफ्रिका वा अरब की जलवायु से आस्ट्रेलिया के मध्यभाग की जलवायु की तुलना की जा सकती है।

जिस भाँति यूरोप, एशिया और अफ्रिका परस्पर संयुक्त हैं, आस्ट्रेलिया किसी महादेश से उस भाँति संयुक्त

। इस

लिये यहाँ के उद्भिज और जीव, जन्तुओं में अति अभि
आश्चर्ययुक्त बातें देखी जाती हैं। यहाँ 'यूकेलिपटस' ना
प्रकार का वृक्ष है जिसमें छाया नहीं होती। इसका कार
कि इसके पत्ते ऊपर की ओर विस्तार नहीं करते, किन्तु
नीचे की ओर झुकते और बढ़ते हैं। यह वृक्ष बड़ा ऊँचा
पतझड़ तो कभी इसमें आता ही नहीं। हाँ इसकी छाल
झड़ जाती है। इस वृक्ष से तेल निकाला जाता है।

जन्तु भी यहाँ नूतन ही पाये जाते हैं। दृष्टान्त-स्वरू
नामक पशु को देखिये। यह मनुष्य के समान ही लम्बा
अगले दो पैर पिछले दो पैरों की अपेक्षा बहुत छोटे हैं, इस
कूदता हुआ चलता है। इस पशु की मादा के पेट में
होती है। इसीमें वह अपने नवजात शावक को धर कर च
उपोसम नामक एक और गिलहरी की जाति का जन्तु
प्रकार का है। सबसे अद्भुत जन्तु आस्ट्रेलिया का प्लै
जो हंसों के समान नेत्रधारी होता है। इसके पीठ की ब
होती हैं—सामने नहीं। आस्ट्रेलिया की भेड़ें संसार की
निराली हैं। यहाँ इनकी संख्या १५ करोड़ के निकट है।
आस्ट्रेलिया से बाहर जानेवाली वस्तुओं में भेड़ की ऊ
है। यहाँ गोंद, भुट्टा, ऊख और अन्न की फसलें अब होने
भाँति भाँति के फल भी रोपे गये हैं। परन्तु भेड़ पालने के
यहाँ का कोई अन्य व्यवसाय नहीं है। यहाँ की जनसंख
४४,४६,४६५ है, जो लण्डन नामक अकेले शहर से कम है

३—उपनिवेश-विभाग और प्रधान नग

आस्ट्रेलिया में निउ साउथ वेल्स, विक्टोरिया, दक्षि

आस्ट्रेलिया व न्यू



हिन्द महा सागर

ा व न्यूजीलैंड-राजनैतिक

प्रशान्त महा सागर
ब्रिसबेन
न्यूसाउथ वेल्स
सिडनी
उत्तरी द्वीप

उपनिवेश में एक गवर्नर और दो व्यवस्थापिका सभाएँ हैं जो कि राज्य सम्बन्धी प्रान्तिक बातों (Internal affairs) में स्वतन्त्र हैं पर बाहरी बातों (foreign affairs) के लिए एक सम्मिलित सभा है जो कि केनबेरा नगर मे स्थापित है और सभी की देख रेख करती है।

निउ साउथ वेल्स—जन-सख्या १६,४८,३१२ है। यहाँ का पर्वतीय और समुद्र के मध्यवर्ती भाग कृषि के उपयुक्त है। यहाँ की जल वायु इङ्गलैण्ड से उष्ण है। उत्तरी भाग में गन्ना और केले की खेती अच्छी होती है। पर्वत के पश्चिम में भेड़ों के चरने की भूमि है, जहाँ भेड़ें अधिक हैं। मूल्यवान खनिज पदार्थ यहाँ खूब निकलता है। सोना और चाँदी यहाँ से ससार को भेजे जाते हैं। इसकी राजधानी सिडनी है। सिडनी एक सुन्दर बन्दर है। समुद्र के किनारे किनारे यह दूर तक बसा हुआ है। यहाँ एक विश्वविद्यालय भी है।

विक्टोरिया—इसका आकार या विस्तार सब उपनिवेशों से कम है। परन्तु फिर भी इसमें १३,४०,००० मनुष्य बसते हैं। जल वायु मे इङ्गलैण्ड की समानता कुछ पाई जाती है। न्यू साउथ वेल्स की भाँति कृषि क्षेत्र और चारागाह भूमि ही से देश परिपूर्ण है। यहाँ भी सोने की खान हैं। मेलबोर्न यहाँ की राजधानी है।

क्वीन्सलैण्ड—यह विस्तृत देश है। इसमें ६,०३,१०८ मनुष्य बसते हैं। यहाँ भी भेड़ों को चरागाह खूब है। जल वायु उत्ताप प्रधान हैं और वृष्टि अल्प होती है। यहाँ भी सोने की खान है। ब्रिसबेन इसकी राजधानी का नाम है।

दक्षिण आस्ट्रेलिया—इसके कुछ भाग में मनुष्यों की ... हैं। धातु द्रव्य की सम्पदा यहाँ भी खूब है। ताँबे की

न में एक गवर्नर और दो व्यवस्थापिका सभाएँ हैं जो
सम्बन्धी घानिक बातों (Internal affairs) में स्वतन्त्र
बातों (foreign affairs) के लिए एक सम्मिलित
जो कि केनबेरा नगर में स्थापित है और सभी की
करती है।

...राज्य—जन-संख्या १६,५८,३१० है। यहाँ का पर्वतीय
...मध्यवर्ती भाग कृषि के उपयुक्त है। यहाँ की
...इंग्लैण्ड से उष्ण है। उत्तरी भाग में गन्ना और केले की
...होती है। पर्वत के पश्चिम में भेड़ों के चरने की भूमि
...भेड़ें अधिक हैं। मूल्यवान खनिज-पदार्थ यहाँ खूब
...है। सोना और चाँदी यहाँ से संसार को भेजे जाते
...राजधानी सिडनी है। सिडनी एक सुन्दर बन्दर है।
...के किनारे किनारे यह दूर तक बसा हुआ है। यहाँ एक
...विद्यालय भी है।

...—इसका आकार या विस्तार सब उपनिवेशों से
...है। परन्तु फिर भी इसमें १३,५०,००० मनुष्य बसते हैं। जल-
...इंग्लैंड की समानता कुछ पाई जाती है। न्यू साउथ
...की भाँति कृषि-क्षेत्र और चारण भूमि ही से देश परिपूर्ण है।
...सोने की खानें हैं। मेलबोर्न यहाँ की राजधानी है।

...—यह विस्तृत देश है। इसमें ६,०३,१०८ मनुष्य
...है। यहाँ भी भेड़ों की चरागाह खूब है। जलवायु उत्ताप-
...है और वृष्टि अल्प होती है। यहाँ भी सोने की खान
...इसकी राजधानी का नाम है।

...आस्ट्रेलिया—इसके कुछ भाग में मनुष्यों की
...द्रव्य की सम्पदा यहाँ भी खूब है। ताँबे की खान

अधिक है। इसमे ४,११,१६१ मनुष्य वास करते हैं। इसका प्रधान नगर एडीलेड है।

पश्चिम आस्ट्रेलिया—यह सबसे बड़ा प्रदेश है, परन्तु इसकी आबादी सबसे कम अर्थात् २८० ३१३ है, इसे अब भी उपनिवेश नहीं कहना चाहिये। सोयन नामक नदी के तट पर इस प्रदेश का पर्थ नामक रमणीक नगर बसा हुआ है।

टसमानिया टापू—जन संख्या १,६०,८१८ है। होवर्ट इसकी राजधानी है, जो एक चमत्कारिक बन्दर है।

अब हमने आस्ट्रेलिया का बयान खतम किया। इसी के साथ ही हम इस पुस्तक की इति श्री करते हैं। परन्तु एक बात और भी उल्लेखनीय है। वह यह कि आस्ट्रेलिया के चारो ओर अनेक द्वीप हैं। देखो, इनके उत्तर में वृटिश न्यूगिनी और उसके दक्षिण-पूर्व में न्यूज़ीलैण्ड के द्वीप हैं। इसके परे भू मण्डल का कुछ मानचित्र देखो। तो इस अवल में असंख्य द्वीप पुंज दिखाई देंगे।

पालिनेशिया

इनके अधिकांश में ज्वालामुखी पर्वत हैं। तटों पर नारियल के वृक्ष उगे हैं। भीतरी भूमि उर्वरा है परन्तु असभ्य जातियां उनमें वास करती हैं। इस समस्त द्वीपमाला का सम्मिलित नाम पालिनेशिया' है।

उनमें टसमानिया, न्यू जीलैण्ड, नार्थ आइलैण्ड, न्यू कलेडोनिया फिजी, सलामन और मार्शल नाम के द्वीप अधिक प्रसिद्ध हैं।

निउज़ीलैण्ड

आस्ट्रेलिया के दक्खिन-पूर्व १,२०० मील की दूरी पर निउज़ीलैण्ड अवस्थित है। यह महासागरों के मध्य में उसी प्रकार

स्थित है, जिस प्रकार वृटिश द्वीपसमूह कुल महाद्वीपों के मध्य स्थित है। न्यूजीलैंड का आविष्कार हालैंड के मांझियों ने किया था। हालैंड के एक हिस्से का नाम अब भी जीलैंड है और इसी पर निउजीलैंड का नामकरण हुआ। डचलोगों ने टसमन को आस्ट्रेलिया महाद्वीप की परिक्रमा करने को भेजा था। वह आस्ट्रेलिया को गया और टसमानिया का आविष्कार किया और फिर चक्कर लगाता लगाता निउजीलैंड पहुँचा। ज्योंही समुद्र के किनारे उसका जहाज रुका कि तत्काल निउजीलैंड के जंगली निवासी उसके उतरने में बाधा डालने लगे। यहाँ तक कि उन्होंने उसके बहुत से मल्लाहों को भी मार डाला। इस कारण टसमन को वहाँ से लौटना पड़ा।

पहिला अँगरेज़ कैपटेन कूक था जिसने कि निउजीलैंड के आस पास के सबसे छोटे द्वीप 'स्टुवर्ड' को खोजा। यद्यपि यह कहा जा सकता है कि वह पहिला योरोपियन न था जिसने निउजीलैंड की पहिली परिक्रमा की, तथापि इसी कैपटेन कुक ने निउजीलैंड भर का भ्रमण किया। १७६८ ई० जार्ज तीसरे के नाम के वृटिश झंडे को निउजीलैंड की भूमि में गाड़ा। इसके पश्चात् बहुत से अँगरेज व्यापारी यहाँ आये। उन्हें निउजीलैंड के निवासी मयोरियों से लड़ना पड़ा, जो कि बड़े डीलडौल के और वीर थे। ये उस समय लकड़ी के सुन्दर घर बना सकते थे, कपड़ा बुनते थे। और सुन्दर नावें बना लेते थे। इन सब बातें होते हुए भी वे मनुष्य मांस के प्रेमी थे। जहाँ समय जो ही सामने आता था उसे [illegible] न छोड़ते और मांस को खा जाते थे।

निउजीलैंड को कभी 'दक्षिणी वृटेन' भी कहते हैं कहना अयुक्त नहीं, क्योंकि इन द्वीपों की लंबाई चौड़ाई ५५

जो कि वृटिश टापुओं की है। उन्हीं की भांति इसके चारों ओ
समुद्र हैं, जिनके द्वारा यहाँ गर्मियों में कम गर्मी और जाड़ों
कम सर्दी पड़ती है। वर्षा भी उन्हीं की वजह से अधिक होती है
इसके पर्वतों को देखकर अंग्रेजों को स्काटलैण्ड के पर्वत य
आते हैं। इसकी बढ़िया जलवायु और उपजाऊ भूमि ने सहस
वृटिश द्वीप निवासियों के मनों को आकर्षित किया है। यहाँ
पर्वतों की चोटियाँ इतनी ऊँची हैं कि जिनके ऊपर चढ़ कर मनु
समुद्र को भली भांति देख सकता है।

'निउजीलैण्ड दो द्वीपों को मिला कर कहते हैं। पहिले
नाम उत्तरी द्वीप और दूसरा दक्षिनी टापू है। उत्तरी टापू में
ज्वालामुखी और गरम पानी के सोते हैं, जो गैसर कहलाते
दोनों टापुओं के मनुष्यों का उद्यम जानवरों का चराना है। उत्त
टापू ढोरों के काम का है और दक्षिनी भेड़ों की चराई का। भे
के मांस और ऊन विदेश भेजे जाते हैं।

पहाड़ी प्रान्त अच्छे वनों से ढके हैं। यहां कावरी गोंद
जाते हैं। जिन वृक्षों म गोंद लगे थे वे गिर गये हैं। इस
से मेज कुरसी पर लगाने का अच्छा रोगन तैयार होता है। दक्षि
टापू मे कुक-मुहाने के समीप पत्थर के कोयले की खानें हैं
दक्षिण में सोना भी निकाला जाता है।

वेलिंगटन—न्यूजीलैण्ड की राजधानी है। यह नगर दो
टापुओं के मध्य मे अवस्थित है।

॥ इति ॥